ललन-सागर

लेखक—पं० ललनपियाजी सारस्वत,

प्रकाशक—नवलकिशोर प्रेस (बुकडिपो), लखनऊ.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ललनसागर

जिसको—

"नाद-विद्या" और "तंत्र-विद्या" के सुयोग्य अनुभवी श्री० गुरु नन्हेमलजी के लघु भ्राता (गानविद्या के गुणी) भारद्वाजी श्री० पं० ज्वालाप्रसादजी शर्मा सारस्वत के स्वनाम-धन्य स्वर्गीय, सुपुत्र, सुकवि पण्डित "ललनपिया" मित्तूकूचा, फर्रुख़ाबाद निवासी ने ठुमरी के प्रेमी-पाठकों के लिए बनाया।

द्वितीय बार

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित।

सन् १९२७ ई०

सर्वाधिकार रक्षित हैं।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ललनसागर का सूचीपत्र ॥

विषय				पृष्ठ
(अ)				
अहो जगपति शुभमतिदातार	...	...	...	२९५
अनबोलारी मोसो लियो ननँदियाने	...	...	...	३०६
आंखड़ियां लगजांदियां तन कछुन सांणूं बिसांदियां	...		...	३१०
अजहूं न लजौ अपनी कृतिपै कैसी कैसी ये बानि तिहारी है			...	३११
अरी क्या बकै भौज बैना ...	...	...	...	३२१
आगमनो बसंत माई	...	...	...	३२४
अखिल असार बिहार जक्त	...	...	...	३३२
अरे हांरे मुरलियावारे सैयां पैयां परत बैयां मोरी छांड़दे			...	३५०
अमरैयन की डार बोलत पापी पपिहारे पिया पिया	...		...	३५५
आज सुखवती युवती यक फुलबगिया में आई	...		...	३६०
आज नँदभवन बधाई बाजे	...	...	...	३६२
आज माई सरस बधाई बाजे	...	...	...	३६३
आज छलो छली मोहिं ...	...	...	...	३६६
अपनि बिनति की करु सुरत सैयां	...	...	...	३६८
अपडर कुलडर परडर निन्दरियां	...	...	...	३६८
अपने जियाकी बिथा सगरी	...	...	...	३७१
अलखरूप अनजोत जगतकरता कीरति नइरे		...	...	३७९
अनुचितहि लखहु जो नाथ तुम्हैं	...	...	...	३८२
अब घन गरजत बरसत मेहा	...	...	...	३०३
आज मिलबे को जियरा मेरा चहत	...	...	...	४३
अब मोहिं जानदे कन्हाई	...	...	...	४६
अँचरा मोरा छांड़दे कर जनि ऐसी लँगराईरे		...	...	४७
आजारे राजा मोरे सवतिया	...	...	...	५९
औचक उचक गरवा मोहिं लगायोरे श्यामरो कँधैया ...			...	६४
अटपटी पनघट घाट कैसे जाऊं पनियां काजरी		...	...	८६
अजी मोराजी न जराओजी तुम्हरी मरजी जो हो सो करोजी			...	८७
आयो घनराजसाज दल अकाश अटापै ...		...	...	८९
अरी मैंतो मानगई तोरी सिखवन कैसी कीन्ही		...	...	९३
अँगपरसत मगमें जात निपट निलज निडर कान्ह		...	...	९९
अपनी कहत ना सुनत काहू और कीरे ...		...	...	१०३
अष्टसिद्धिदाता हौ नवनिद्धि के निधि विद्यावर विद्यापती गणपती पार्वती शिव सुत श्रेष्ठ सुमिरुरे	...	...	...	१०४
अँचरा ना गहो ना गहो मोहन	...	...	...	१०५
आने ना दूंगी पिया मैं आज	...	...	...	११०

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
आज समलिया ने लाज लीन्ही	१११
अब तोरी मोहनि मोहनि मुरति	१२२
आज की रात बिहात भई	४१
आली बनमाली की निराली छबि की उजाली ग्वाली... ...	१३०
आओजी आओजी सोचिये समुझके विचारियेजी	१४२
ओ बेदरदा दरश दिखलादे तोरे दरशन दीमाती	१४४
अरे मन धीर धररे सुमिररे हरे श्रीहरे	१४६
आयो अषाढ़ आगम शोच को दिखाई परत पिय बिन जिया ...	१५६
आसरा आसौज को अधिक मनमाहीं लाग	१५७
आई बसंत वहार भँवरा गूँजत डार डार कर गुझाररे... ...	१५८
आज हमरे सुफल सुहागरी सुहागरी भागरी	१५९
अधर बाँसुरी बाजी बाजी गुइँयां	१६०
अजब दृग आँजो अँजनवा निरखि नैना	१६३
अवकाशहिकी बात करम गति	१६५
अरे नाथ तू जो दरश न दिखावेगा	१६६
अचानक पियसों भेंटभई...	१६८
आज घिरत घनघोर अबरसे	१७३
अपने पियासे पराई हुई श्याम	१७४
आयोरी सावन झूले हिंडोले दोऊ	१९०
आरे पियरवा मोरे मँदिरवा	१९२
अब कौन यतन सों री मिलब दरश उमँगो जुबना	१९३
आली ऐसी बतियां करत हमसों मुरारी डगर बगर ठठोली करतरी गँवार	२०६
आली मैं तो नाजैहौं नाजैहौं कैसेहु गोकुल गोपिन के साथ गोरस बेंचन के काज	२०६
अब तो रीति प्रीति कासों मनमोहन करी करीरे	२०६
आजकल कासन हित प्रबली कौन मितई नइ नारि छली ...	२०९
अलबेली चलत चपल चंचल चाल लचक लचक चटक मटकसी कराल	२१०
अँचरा छांड़ मुहिं घरवा जानदे कैसोरे अनारी है विहारी कह मनमानी बाट रोकत मोसे ठठोली ठान के	२१४
आओजी आओजी मोरे आज मोहन	२१५
आजुरी हमारो हरि गोरस नवनीत छीन लीन हीन मटकी कीन्ह अवनि कछु बगेरोरी	२२२
आयोरी सावन झूलैं हिंडोले दोऊ लरज लरज गरज गरज वरसत घन घुमड़ घोर	२२२

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
आलीरी मन मोह्योरे बांकी बांकी चितवन पलकमार	२३०
आली चलु बनमाली तोरी मग निरखत बिसरत पल छिन न मनसों सुधि रसना रट दृगसों दृगसों नेह सरसत	२३६
अँचरा पकर मोरी सारी मसकाईरे मानत नाहीं नाहींरे कुटिल कन्हाईरे	४०४
आशा के निवासा माहिं तृष्णा तिदवारी बीच मोह पर्यंक अंक ममता को बिस्तरा	२४०
आज लाज लई मुरारी मोरी चूनर बिगारी सारी सखि कछु कहि न बनि आवे पनघट पर झिगरोरी न मानो मोरी लपक झपक मटकी पटकीरे	२२४
अबतो न ऐहौं तोरे पास बेदरदी बलमारे	२४७
अबतो मैं जानी तोरी बात सैयां सौत घर जात मैं जानी तोरी बात...	२४८
अब न सहौंगी हांजी निपट लँगराई मोहन की	२४६
अरे मोरेरामा कह भई यह गति बीर	२५०
अबतो लाज पियाके काज दरशी बदन जोबन अङ्ग अङ्ग वनठन रसरंग छबि फब तन सुख समाज बरसी लाज पिया के काज दरशी ...	२५२
अरे एरे सैयां छांड़दे गहु न मोरी बैयां परत तिहारे हूं पैयां बलि जैयां एरे सैयां छांड़दे गहु न मोरी बैयां	२५६
अधर बांसुरी बाजी बाजी गुइँयां उचट गई निंदिया भनक पड़ी कान	२५७
आली धनि तोरे भाग पिया पग परसत निरखत ढँगसों ढँग रँगसों रँग परसपर दृगसों दृगसों भाव बरसत...	२५६
आयो आयो सखी ऋतु बसंत सघन बन फूले तरु नये नये पशुपक्षी पशुपक्षी मगन सकल बोलें मधुरेसे बैन	२७६
आयो आयो नाहीं अजहूँ बीर सजीवन लेन पठायो हम बीतीजात बीतीजात रात सिगरीरे करैं कौनसे उपाये	२७८
आई आई सखी बरषा बैरी उमड़ घन घुमड़ गरज रहे थरर थोम्ब दिर दिर नारे तनानारे बाजैं इन्द्र नगारे...	२८६
आयो आयो सखी पावस मास हुलास हिया पशुपक्षी उपचारे मौजकरैं मौजकरैं यमुना किनारे बोलैं बचन सुहाये	२८७
अब मोसे बार बार ऐसो गँवार एरी सखी मग चलत रोकत मग चंचल चपल चित चलांक करत रारि	४११
आज धुनि सुनरी बांसुरी की बावरी भई बिसरगइ सुधिबुधि तनकी आली मदन तनजगो उमँगरी कल न परत बिन दरश साँवरे के... ...	४१४
आज सखी सपने में रात बालम सों भेंट भईरे	४१७
अँखियनसों सैन चलावे भ्रकुटी मटकावे मोहिं देख अठलावे खिझावे लँगरावे सुन एरी ननँदिया कान्ह कुँवर जुवना पर हाथ लगावे ...	४२१
अब भवन गवन करनदे दुलारे हांरे वारी बलिजाऊं तोरे श्यामसुन्दर प्यारे	४२६

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
अब उन बिन नहिं परत चैन हांरे जियरारे बदन बेधन लागो जागो मदन बान मारे	४२६
अदा अलबेली बांकी चाल छबि मदनभरी घूंघरवारे बाल अलबेली बांकी चाल	४२८
आयो बलम घर ना बीते बहुत दिना	४३५
आवत सखि मोहन संग ग्वाल गोहन युथप सोहन चलुरी चलुरी दौर दौर मार पौर पटनु बाल	४३६
अयसी बँसिया बजाई मन बश कीन्हा तोरी अधर धरन बांकी गहन करन आड़ी तिरछी परन अँगुरिन की चलन	४४१
अकेली मतजैयो गोरी गोकुल गैल	४४४
आजुरी बैरिनियां बंशी बाजी कहूं श्याम की सुन भनक तनक न सुधि बुधि रही काज कामकी	४४५
आवत फागुन मास सखी थिरु क्यों दुलरात दुलारी रहत है ...	४५०
आंक चुकीहौं नारि नवेली तुहि यक ब्रज रँग वारी रहत है ...	४५०
आग लगै जर जाय फाग मुहिं पिय बिन कछु नाहिं नीको लगत है ...	४५१
अँखियां सखियन की लाज कैसे जाऊं पिय सों मिलन प्रीति किंकर लै सँदेश आयो री इन	४६०
अर्जुन मद मंगल तोष मना मन्सुखा रेंदापेंदा श्यामाष्ट सखा जिनके परम प्रिया	४
अपनो अवध पै लूंगी मैं सैयां समुझ जिय सजनी खूबलेरी तोसे ...	४८२
आयोरी सावन सुहावन दुरावन मुहिं आवन मनभावन कहि गयो सो न आयोरी	४६२
अब तोरे औरहि दिन दुलरी न बीथिन बिहरैरी ब्रजनगरी सो ...	४८८
ओ बंशीवाले बँसिया बजाउ बनवारी	१६६
ओ बेदरदा दरश दिखलादे तोरे दरशन दी माती अकुलाती ये दुखड़ा मिटादे	१४४

(इ)

विषय	पृष्ठ
इतना संदेशवा हमरारे ऊधो उग हरिसों जाय कहियो ...	३०८
इतरावतहौ न लजावतहौ सनमुख सखियन लँगरावतहौ ...	३१७
इतै आ गोरस बेंचनहारी	३७१
इन्द्रके नगारे भार बाजें धूम धारे न्यारे	३६६
इतनी मिनति मोरी मान ले सैयां	१३७
इतनी मिनती मोरी मान पिय प्यारे	१६४
इन नैनकी नइ देख बानि तनमन सुधि हरगइरे मोर तनमन सुधि हरगइरे	४५७

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
इन ढँगन न प्रीति निभैगी श्याम अबहीं सों यह रंग दिखावतहौ ...	४८१
(उ–ऊ)	
उचट गई गुइँयाँ निंदिया बैरन मोरी	६१
उमड़ घुमड़ घन गरज गगन आई घटा...	८५
ऊधो मधुबनवां छाये जो श्याम	६४
उन्नती उमंग उर आनंद प्रकाश	१००
उन बिन घरि पल छिन परे न चैन	१२०
उन बिन जिय को नहिं नेक चैन	१२७
उमड़ घुमड़ घन बरसे लरज लरज जिय पिय बिन तरसे ...	६०
उतरन को मोरे ला नई नैया	७३
उमड़ घुमड़ घन गरज गगन आई छाई घटा घन घोर लहलहाई ...	८५
उन बिन मोरा जियरा तरफै दिन रात...	१८१
उन बिन तरफ तरफ गुजर गई सगरी रतिया	१६२
उन बिन मांडा जीयरा तरफत दिन रतियां कल न परत मुहिं ...	२२५
उमड़ घुमड़ छाये घन दइमारे कारे कजरारे न्यारे भारे अँधियारे वारे डरपत जिय लखि गगन घटारे	२३७
ऊधो ऊधम को धूम धाम रहि भूम झाम ब्रजगाम श्याम की ...	२५५
उन बिन ग्वैयां मुहिं का ना चैनरी दरश देखे बिन अँखियां तरसें मोरी	
आली का कहूं तोसे अपने जियाकी बिथा मैं सारी कल न पड़त छिन	४०२
ऊधो छल बल रँग ढँग औगुन तुम देख लिये मनमोहन के ...	४०६
उन बिन न चैन मुहिं पड़त आज जिय तरफरात दरशन के काज ...	४२७
उन्नति उतसाहनै उछाहनै उपावन रुचि रीति अंकुरावन भल भावनै भलाई छै	४८३
(ऋ)	
ऋतुराज साज बनरा बसन्त बनठन समाज बन बिच लसन्त ...	२४०
(ए–ऐ)	
ऐसो बनवारी रोकै डगर हमारी	२६७
ऐसोरी अनारी निरदैया कन्हैया बैयां गहत हमारी	२६७
एहो लालन मुहिंका दरशदे	३११
एजी एजी गुइयां रैनियां पिया न मोरे आये	३७५
एरी डरत मोरा जिया पियाके लँगरैया	४३
एरी यशुदा तोरे कृष्ण कन्हैया ने बाट चलत मुहिं अंकभरोरी ...	४४
एहो ब्रजईश जक्त जीवनेश गूढ़ गुरु कबधहुँ सनाथ मोहिं करिहौ जन चरनन को	४६०
एरी यशोदा तेरो कुँवर कँधाई डगर चलत मोसे करत ढिठाई ...	१२४

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
कानकरी रसरीति प्रीति सौतन सों कर हित प्यारे... ...	१४१
काहे की ज्योति प्रकाश रही यह पुष्प की वाटिका माहिं कहा है ...	१४२
कंचुकी मैं बिउँत नाप राखी रे दरजिया तोरे करनवारे ...	१४५
करको कँगनवा खुल खुल जावे अँगिया को बंद सरक ...	१४७
काहे को बढ़ाई मोसे कुटिल कन्हाई रार कैसोरे अनारी ...	१४८
कृष्ण कहि घरन घरन डोलत फिरत गोरस चोरस तुहि न ...	१५०
काहे गहेरी गुमान एतो बार बार अलबेली आली	१५१
क्यों निठुर बनी पियसोंरी कहि कहि कठोर बचनोंरी... ...	१५८
कवन बिधि जाऊँ डगर बिच ठाढ़ो भवन की बारी	१६२
कर कँगन केदार को गढ़ लादे सुनरारे...	१६८
कान्हा दै दे बँसुरी मैं नेक बजाऊँ नइ रँगीली	१६६
काहे को रारि करत बनवारी चलु हटु जा	१७१
कवन भवन जागे जाय यामिन कामिन के साथ	१७१
काहे नैनों में नीरा भरे अधर धरे री कालमा	२००
कान्हा गगरिया छुइयो न मोरि नहिं बिगाड़ भल होनारे हो ...	२०४
कसक कसक रहिजात करिजवा बिन पिय सजनी सुघर श्याम के ...	२०५
करु न कान्ह ऐसी लँगरैयां निठुरैयां सैयां लरकैयां	२१२
कैसे जाऊं कैसे जाऊं पनियां भरन भोरहीते सांवरो कन्हैया मुहिं मारग में टोकै मग रोकै	२१५
कामिनी काम जगावत है जो बजावत श्याम कहीं बसुरी ...	२२३
कमाया सो पाया लेआया यहां जो बिहाया बहाया न पाया कछू ...	२३६
क्यों जोराजोरी करकरे बरजोरियां मैं तो चरनन चेरियां तेरियां ...	२४५
करकरके प्रीतिकी रीति मीत अनरीति नीति काहे को चीत ...	२४८
काको ये छैल मोसों रहो इतराईरे नैननकी सैननसों टेरत बुलाईरे ...	२६२
कलक यह कैसे जाय जियाकोरे लगत सखि नीको न मैको मैंकोरे ...	२६३
क्या कहूं ढिठई सांवरे की बतियां निरखु मोरी आली (यह ठुमरी तेईस आवृत्ति की है)	२६५
कैसे कैसे आऊं तोरे पास पायल मोरी बाजे सास जागे परी कैसी करूं कैसी कछु बन नहीं आवे जिया मोरा सकुचाई ...	२६६
कैसे कैसे पनियां भरन जाऊं रोकत मग नँद को छैल आली कैसी करूं कैसी करूं मानत नाहिं करूं कौन यतन	२६६
करे करे सखी मोहन रारि सकल व्रजबालन को संग लीन्हे परी सखी परी सखी कैसी करूं कैसी करूं मोरी रोकत गैल ...	२७४
कैसे कैसे सखी चंचल नैन रसीली रँग भरी मदमाती छवि गति गोये गति गोये चपला चितौन छल भौन अँखियां	२८१

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय ... पृष्ठ

करुँ करुँ आली यतन कौन मोहन नित छेड़त चलत मग परी आली परी आली ऐसो दुखदायी देत नेकहू न कल २८१

कैसी कैसी करुँ आयो बसंत भवन नाहीं कंत हमारे प्यारे जागो आली जागो आली अंग अनंग दूजे बिरहा बिथारे २८४

करुँ करुँ सखी कौन उपाय अनोखो छैल रसिया मोहन भयो माने नाहीं माने नाहीं काहूकी हटक ढीठ नँदको कुमार २८५

काहे काहे नाहीं बरजो कान्ह अनोखो तुम्हरोही सुत छैलाभयो छेड़े मुहिंका छेड़े मुहिंका डगर में माई ढीठ ऐसो दुखदाई २८७

कारे छैल गैल मोरी रोके मगमें बराजोरी रचन लछन रहोरे ठानरे नदान ४०२

काहेको निडर मगमें रारि बढ़ाईरे बराजोरी करके कलाई मुरकाईरे... ४०३

काहेको लँगर मोसे करत ढिठाईरे जानत मैं गोरी सारी सारी लँगराईरे ४०४

काहेको हठीले हठि करत ढिठाईरे ऐसोरी अनारी सारी दीन्हीं मसकाईरे ४०५

कैसोरी निडरभयो निलज कन्हाईरे गगरी गिराई खाई दधि ढरकाईरे ४०५

करे मन मैला छैला मोरा न कन्हाईरे कैसोरे रसिक निरमोही यदुराईरे ४०५

कमल दल दृगवर द्युतीले छबि छबीले रँग रँगीले कजरारे बिन कजरा के बांके बांके तिरछी तिरछी चपलासी चपल बानि ४०८

कहँ रहे न जानोंरी सखीरी श्यामसुंदर मोरे अजहूं न आये अकेली सिजिया निंदिया बैरिनियां न आवे ४२२

कुंजन में औचक आन कान्ह मुहिं अंकभरी अरे हारे कान्ह मुहिं अंकभरी ४२३

काहे को लँगरवा कीन्हीं रारि बराजोरी कर अँचरा गहत मोरारे बार बार लँगरवा कीन्हीं रारि ४३२

कहां को श्रीराज आज महाराज साज सजे काके भवन हित उछाहन केरि होगी धूमधाम ४३४

कुटिल कान्ह कुँवर तेरो अँचरा गहत मेरो पनियां नहिं भरन देत अंक लेत अलबेलो ४३५

कैसोरे लँगर लँगरत न लजाईरे नरम कलाई मोरी गहि मुरकाईरे ... ४३६

क्रीट मुकुटवारे डारी मोहनियां ग़ज़ब करत मृग दृग चितवनियां ... ४४५

कजरी खेलै क्यों ना गुरियारे गुमनवा काहे कीन्ह ४४८

कर गहतहौ प्रीति करत जो लला तौ निबाह करन परिहै हमसों ... ४६५

कान्ह कपटी सखि छल लियो मुहिंका मृदु मृदु बतियन कर ... ११

कांवर कारी झलकत कदमनके निकट समुझ परत ठाढ़ो कान्ह ... १२

कआन्हर कहँ सिंईखे ये कुटिलाई को करिबो तुम डगर बगर नित करो नइ नइ रारि १३

करम की गति कछ कहिये ये हमरे ये सनेही सजन सवत सन बिलसनरी १७

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय — पृष्ठ

कजरा कापर आंजूं बिंदिया माथ झलक अलक मुतियनकी मांग सिंधुरा सुहाग मंजन मुख ताम्बूल किमि राजूं... ... ... ४७६
कारी कारी कमरी लकुट मोरी कहां धरी मैया बता दे मोहिं ... ४७६
कैसी कीन्हीं तैंने मोंसे प्रीति कन्हैयारे कपटी कठिन कठोर निपट निरदैया मीत मुरन लागे करके नेहासों अबहीं सों यह रँग ढँगकरन लागे छलन लागे भल न लागे भल न लागे... ... ... ४७७
काहू को दुशाला काहू मोतिन की माला काहू तुरँग विशाला दै कीन्हिस निहाला है ४७८
करम कुबिजा को कैसो कैसो जगो मोर मुकुटवारो हमरो पिया सांवरिया वाके रस बसहि पगो ४८८
करहु काहे देरदार एती अब श्रीमुरारि दासन को काज है सहाय बेगि सारिये ४९१

(ख)

खोले केश खड़ी अटापै ९६
खबरिया मुहिका लादे रे पपीहरा पीतम केरी १४५
खेलै खेलै होली नँदको लाल निकट बंशीवट यमुनाके आली चलें रँग चलें पिचकारी भर भर इत ग्वाला उत गोरी २८४
खेलत नित नइ होरी सखी मोरे बिरहा संग खिलारी रहत है ... ४४९

(ग)

गोबिंद तुहिं बोल पठयो बेगि चलु किशोरी ३५९
गति मति हिरायगई सारी कल न ३८३
गोकुल को गोपाल गगरिया गेर गयो गोरी ३८९
गुहि गूंधो जूड़ोरी जासों देर भई मोहिं ३९७
गोरी गोरी भामिनि नैन रसीले अतिसुन्दर सुकुमारिरे ... ४५
गोरे गोरे गात जोबनवाली ४५
गोरी चितचोरी मोरी जोराजोरी होगई ५४
गोबिंदनाम को आधारारे भज मन नंदकुमारारे ६०
गरजत घन बरसत झूम झूम ७२
गरज गरज बरसत बदरारे ७८
गरज गरज बरसावे बेदरदी बदरा पिय बिनु ७९
गगरिया दैदे हरि मोरी १०५
गिराई गिरिधारी गगरिया मोरी रे ढरक गयो दहिया कैसी करूँ मैं दैया २४३
गौर गात शशिबदन मदन भरी २४६

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
गवन मोरा सजनी पिया के घर आज	२५३
गूंजें गूंजें सखी भौंरा भौंरि चकोर मोर शोर चहुँ ओर घोर घिरे घन घिरे घन कारे अँधियारे भारे भारे बारिवारे	२७६
गिरो गिरो मेरो कँगना छैल मरोर डारी बैयां क्यों अनारी मोरी कैसी करूँ कैसी घर किस बिधि जाऊं मोरा बलम रिसाई ...	२८५
गहरे मोहन मति मारी तनक जनि जिय सकुचत है	४१६
गुइयां गुसैयां सौं कन्हैया बड़ो दधिचोर सखन समाज लिये डोलत निलाज घर घर छैला ताकत फिरत भये भोर गुसैयां सौं कन्हैया बड़ो दधिचोर	४५२
गारी दीन्हीं मुहिंका समलिया न नीकी कीन्हीं जाय कहूंगी यशुदासों मैं आज तोरी कौन बानि नटखट नटवर लीन्हीं	४६०
गेर गयो गँवार बिंदिया माथे से मोरी घूंघटवा टार नकबेसर दीन्हीं डार लिपट चिपट तोरो गल को हार	४५६
गरज घुमड़ बरसन घन लागे श्याम सखी सौतन रस पागे अनुरागे सर्बस मुहिं त्यागे	४६३
गोरी होरी में कर लँगराई बैर परोरी साजना	४६७
गिरिवर धरन दलन दल दनुजन सुखद मुनिन मन आनँद सदन घन...	१५
गोरी होरी में चलोरी गोकुल ओरी कुंज मँझार	४७०
गगरिया मोरी गेर गयो ऐसो ढीठ कान्ह मुरलीवारोरे	४८४
(घ)	
घन घुमड़ गन घिर आये मद जोबन माते	३५४
घिरि आयो बादरा बैरी हां गरजैरी बरसैरी हां	३३६
घन गगन गन अगम अब कीन्हों	८४
घिरि आये बारिवारे दुरन लागे दिन के सूर्य्य	८८
घन गरज सुनत जिय लरज जावे	१०१
घुमड़ घिरि आये बदरा कारे कारे	१२२
घिरि आये बदर दइ मारे कारे	१२७
घेरि घेरि परिकरसों बिन डरसों झरि झरसों थिरसों बरसों ...	८०
घरि पल छिन कल (दून) पावतना	१६७
घेर आये बदरा चहुं पासे कंत सौत घर जाय निवासे चैन है न बैरी बिरहासे	२३७
घिरे घिरे घन गगन कारे पपीहा पिया पिया धुनि धारे आली घर नाहीं घर नाहीं बलम हमारे तन अतन जगारे	२७६
घड़ि पल छिन गिन गिन काटत दिन बिन उन मनमोहन सौतन दुख...	४६४
घरि पल रे ये जनि बिसरे ये मनमहँ बिहरे ये सदा आतुहिं सदा आ तुहिं	१६

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय पृष्ठ

(च)

चन्द्रबदन गात गोरे चतुर नारि आई शृंगार सजे ३००
चहन चित साधन की यह टेक ३०५
चितवन में कछु कर गयो टुनवा मनु डारी मोहनियां... ... ३३१
चलु अलाबेली झूलन झूल आवें ३३६
चलो सैयां सोरहें गहि गल बैयां ३४८
चोरे न तोरे चुरैगी प्रतीतै ३५६
चोरे चुरै केहु तोरे तुरै नेहु ३५६
चलुरी चलुरी सखि चंद्रावलि चन्द्रमुखि चकोरी ३५८
चल जान दे कान्ह न बात कछू रिस रोकु रिसहु न भई सो भई ... ३१६
चारा ना हमारारे करूँ का मोरे रामरे ५४
चोरी रे कमरिया मोरी कौन ५५
चलो हटो जाओ छांड़ो मोरी मगरी ७१
चतुरँग चित चतुरता धारि गावे ६२
चुनरिया मोरी दैदेरे ढीठढोटा साँवरे १०६
चलो हटो जाओ छांड़ो मोरी मगरी मोसे लँगर ७१
चलत चाल मतवाली आली लचक लचक १३१
चन्द्रबदन गोरेगात छबीली तोरी छबि न्यारी न्यारी १५०
चलो जाओजी जाओजी मोसे करौ न रार १५२
चलुरे चलुरे सैयां सोरहें बखरिया अटरिया सेजरिया आऊं मैं साज... २३३
चन्द्रबदन गोरेगात गोरी आई यक चतुर नारि सज शिंगार भोरी ... २३५
चलजारे छैला करु मत लँगरैयां तजु बैयां परूं पैयां बलिजैयां जारे छैला करु मत लँगरैयां २४५
चतुर चतुराई करके बातकरे २४६
चल सखी आज सैयां मिलन २५६
चलत मग डार गयो सखि टोना २६३
चलो चलो सखी भरन नीर कन्हाई अठलाई जो ढिठाई करलीजै सखी लीजै सखी घेर वाहि लाओ यशुदातीर २७०
चलो चलो सखी नँद के द्वार कन्हाई जन्मेरी यशुदा के गृह परी सखी परी सखी सज शिंगार भर दूबसों थार २७२
चलो चलोजी जाओजी नँदलाल सनेहाकर तोसे पछितार्इ मैं तो जान लीन्हों जान लीन्हों निठुर कन्हाई हरजाई अधिकाई ... २७६
चलो चलोरी गोरी ऐसी गैल भरन यमुना सों जल बड़े भोर परी बीर परी बीर रवि के प्रकाश मिल जाय न कन्हाई २८२
चन्द्रबदन गोरे गात गोरीरे ढँगनयोरी आई यक चतुर नारि सज

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
शिंगार भारी	४२५
चलो हटो जाओ काहे करत ढिठाई रे मानत नाहीं रे मोरी तनक कन्हाई रे	४२६
चलो हटो जाओ छांड़ो छैल मोरी बांईरे मुरकी जात मोरी नरमकलाईरे	४३१
चलत चाल अलबेली अलबेली कह कहूं सखी वाकी जोबनवा की छबि फवनव निरख मन बसगइ	४३२
चलुरी चलुरी मोरी बैयां छांड़दे दूर दूर मग में चल मोसेरी आली जानलई तू हरिकी मीत रामरे	४३६
चारिनैन जबसन उनसन भये एरी सखीरी कल न परत मुहिं तड़पतड़प तरस तरस हरिबशभये	४४३
चलुरी चलुरी सखि फुलबगिया फुलवा बीनै सुन्दर नारि ...	४४८
चलिये मीत गोपाल जगावन	४५२
चलोरी गोरी गोकुलगलीको बरजोर मतीजोहो सखि तोर सुनु मैं कहूं निहोर सँगले जनानो जोर बनिता बटोरी! गोरी गोकुल गलीको बरजोर ...	४५३
चन्द्रबदन गोरे गात छबीली नारी छबि न्यारी न्यारी चितवन जादूवारी	४५५
चलत चितचोरत चालमदभरी पगन ठुमकैयां धरत मगमैयां ...	४५६
चतुर ऐसी गोरीसी उमर थोरीरे अजब छबिदारी निपट सुकुमारी ...	४५८
चलत मग बैयां मरोर डारीरे मुरक गई वँगरी नरम मोरी नसरी ...	४५८
चलि जाओ श्याम हम देख लई तुम्हरी बतियां घतियां छलकी ...	४६६
चवभुज से चतुर कुंभनसे कर्मटीसो शूरसम शूरबीर परमानन्द पावनसे	३
चपल चऊंचल चआलपै वआरीई मन	५
चलुरी चलुरी मधुबनै मिलन मदनमोहन कहोरी झूलन झुलनहित सखि कहु न सुन केहू सों गुपचुपसन	१६
चलुरी चलुरी सखि मदनमुहन प्रभु रहस रचिस व्रजलखियटुक चखिय सुख	२१
चलि है ह्यां सीने जोरी ना होरीमें	३७२

(छ)

छांड़ो जी डगर मोरी ढीठ लँगरवा	२८६
छांड़ कलाई करको मोर कँगनवा	२६०
छैल तोरी नेक न गईरे नदानी	३१७
छल कीन्हा साखि समलिया ने कैसा मोसे	३२६
छांड़ो जी अँचरवा मोरारे ऐसो ढीठ छैला	३५०
छायो जुबना उमँग छतियन मद मोरी सीदे दरकियारे अँगिया ...	३५६
छांड़दे लँगरवा बैयां मोर मुरकि जात नरम कलाई	३६१
छांड़दो हमरी नगरिया को ऐबो जैबो	३६७
छांड़ो छांड़ो कोमल कलाई सैयां	४४

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
छैला गैला रोंकै मैला वासों जियामोररे...	५३
छायोरे बिदेशवा सैयांरे	५८
छिन छिन बदरवा घुमरात	६७
छल बल भल सखि लड़ैती ललन	१२३
छाइस तेरेरी तन मनमथ मद अब थिर हो बैठगृहा	१३६
छल बल प्रपंच सागरिया श्याम मोसे नित उठि करत ढिठाई ...	१४८
छल बल कर छतियां मसकदई ऐसो ढीठ लँगर मतवारो छैला ...	१५०
छांड़ अँचरा मेरा मेरा एजी एजी माई...	१६२
छल बतियन में कारे कारे कृष्ण अटि पटि प्रीति तिहारी ...	१६६
छांड़ो जी अँचरवा मोरारे ऐसो ढीठ छैला	१६६
छांड़दे लँगरवा बैयाँ मोरि मुरकि जात नरम कलाई	१८२
छांड़दे डगर मोसे करत काहे ढिठाई	१८८
छांड़ो जी डगर निडर निठुर लँगर मोरी मान करको कँगन करकोरे कोमल कलाई न गहो न गहो जी कुँवर कान्ह	२०६
छबीले छैला छँड़ो न मुंहिका भलारे निठुरभये तुम ऐसे काहे ललारे ...	२१८
छांड़ो छांड़ो मोहन व्रजको बास त्याग दियो सखिन सनेह सारो दास भये दास भये कुबिजाके जाके ऐसे निठुर मुरारी	२८२
छिपो छिपो सखी मोहनलाल कुंजन बिच देत न दिखाई वो तो देखो सखी देखो सखी बेगही बिहारी प्यारी बिकल हमारी ...	२८१
छलो छलो मुंहिका मोहनलाल जातरही हीं नीर भरन हौंतो संग लीन्हें संग लीन्हें सखन दशक ठाढ़ो बंशीबट तट	२८०
छांड़ो छांड़ो मोरी बैयां श्याम करकगई चुरियां हमारी सारी नाहीं मानो नाहीं मानो निपट अनारी नोखे छैला बनवारी ...	२७४
छलबलिया छैल छलगयोरी वोतो सांवरी सुरतवारो सांवरिया ...	४१५
छांड़ोजी छांड़ोजी मोरा अँचरा कन्हाईरे काहे को कुटिल मगमें रारि बढ़ाईरे	४३०
छयल मनमोहन निपट छली	४३३
छाँई सावन छबि मन भावनि मानो फागुन की बहार... ...	४७३

(ज)

विषय	पृष्ठ
जाओ जी श्याम सौतन के मितवा	२८६
जय जगेश महेश पूरण ब्रह्म आनँद मय बना	२६६
जबसों सौतन के भये श्याम तबसों अँखियां बदलीरे... ...	२६६
जोहत बीती रात बाट सैयांकी ऐरी सखीरी	२६६
जगजीवन श्रीजगन्नाथ यशुपती पती	३१४
जागे जाके भाग जाके भौन यामिनि जागे जाके	३१५

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
जाको वेद ध्यावत व्यास ब्रह्मा	३१५
जननी जग जीवन वृथा मोर	३२१
जाओजी तुमतो सौतन के हौ मीत कान्ह	३२३
जनि हरि जनि हरि मन बिसार	३२५
जारे जारे छैला मोपै नजरिया न डारे	३२५
जो कोई ध्यावे मनावे तुहिं सोई पावे सुख संपति	३३१
जाओ जी मन मैला करो ना गुपाल	३४४
जानदे न जानदे न पनघटरी	३४७
जै जै जगदेव हरे जै जै जगदेव	३६४
जय जय प्रभु पूरण ब्रह्म पतितपावन दुखमोचन पापहरन ...	३८०
जन जान निवाजहु नाथ हमैं	३८२
जनम जनम की मैं चेरी गिरिवरधरनलाल मुरारी	३९७
जोरा जोरी मोरी चूनर पै दीन्हो रंगडाल नैननसों तकमारी पिचकारी नँदलाल	४२६
जबसों हमसों की छलबतियां तबसों परतीति गई	४१
जारे बलमारे नाहीं करूंगी तोसे बात	४१२
जियाको अँदेशा मोरा कैसे जाय बिरहारे मारे डारे	५८
जारे छलबलिया क्यों रारिकरे भयो निपट अनारी नहिं काहू को डरे	४१७
छलबलिया क्यों रारिकरे	६०
जोगिया भा मन मोर पिय बियोग दुख प्यारे	
जात रही यमुन पनियां को मैं माई दौड़ झपट मोरे औचक निकट आई	४३१
माई गिराई गगरी कन्हाई अठलाई	६३
जा जा रे भँवरा निजगरजी बेपीर	४६६
जो मनभावन को सावन में पाती तो लै सोती सैयां सेजरिया राम...	६५
जारे बलमारे नाहीं करूंगी तोसे बात	१९
जय ब्रजपाल बलनिधि खरे श्रीई हरि यदुपति मदनलाल नऊंदलाल...	६६
जाउ जी जाउ जी तुमसे प्रीति करूंरी ना	८८
जी मिलन को तरसन लागो	
जाउजी देखी तुम्हरी छलबतियां औरन सों करिये अस घतियां खोल	२२६
दिहौं अबहीं सारी पतियां	१०४
जहँ तहँ कदर हित गुनि जात कदर नहाय नितहि नशात ...	११५
जगमगा रही दम्पति की छबि माधुरी महा सुहालईरी... ...	१३२
जारे जारे पिया प्यारे जिनके गृह रस बस कीन्हेरे	१३२
जाउ जी श्याम वाके धाम जेहिसों प्रेम पारो	१३३
जिय तरसै पियको तरस कुछ सजनी हिय न आने मोर ...	

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
जारे जारे पपीहारे पिय को शब्द सुना न रे	१३४
जागो जग स्वामी तुम जागे जग जागे	१४३
जोरा जोरी मोरी चूनर पै दीन्हो रँग डाल	१४६
जागिये गुपाललाल भोर भयो प्यारेरे	१५०
जोरा जोरी ना मैं ना जाऊंगी	१५२
जो हम तुम राजी मिलतरहैं का करब काहूकी	१६५
जगकर्त्तार सुखार परम परमेश्वर दीनानाथ	१७४
जै जै अनंदकारी तुम्हारी सुचलियां	१७६
जारे जारे सैयां देख लईरे तोरी बात	१८१
जै राधा गिरिराजधरनकी	१६४
जै सिय पिय राधिका रमन की	१६४
जहँ मीता हमार गोरी वाकी नगरिया में लै चलुरे	२०२
जाय बसे मधुबन बेनीमाधो अब न जाने कह होनारेहो ...	२०४
जारे सैयां गहु न मोरी बैयां मुरकी नरम कलैयां बलि बलि जैयां ...	२१२
जोरा जोरी रारि कर कन्हाई पनियां भरत मोरी गगरी गिराई रसरी बहाई	२१६
जा जारे सैयां देखलईरे तोरी बात करत नित हमसों छल बल घात ...	२२४
जै जै जै गिरिजानंदन श्री जै जै जै गिरिजानंदन	२२८
जारे जारे सैयां बैयां मोरी छांड़ इतनी बिनती मोरी मान रसियारे प्यारे सैयां बैयां मोरी छांड़	२३२
जानी जानी जानी नाहीं जात पियाके जियाकी बात	२४५
जाओजी जाओजी मत मारग मोरी रोको	२४६
जान पड़ेगी आजी मोहन कुटिलाई तुम्हारी	२४६
जारे निठुर बनमाली प्रीति पिय मोसे लगाउ ना	२५०
जाने जानेदे मुहिं मँदिर छैल नाहक मोरी रोकत डगर ठाढ़ो नाहीं माने नाहीं माने निपट अनारी ऐसो कुटिल कान्ह	२७३
जैसी जैसी चाहो मोहनलाल करो सो जामें रहे जिया खुश तेरो मानों छैल मानों पर पती बात मोरी हाहा करूं शिरनाई... ...	२७८
जीराजी मोरा मदनको आगम लखि मन मतंग रहतरी आली ...	४७७
जब देखो तब नइ बात घात बिन पर की श्याम उड़ावत है ...	४८०
जन गरीब निवाज शाह समलिया मोर मुकुटवाला मोरारे स्वामी ...	४८१
जाऊं काके द्वारहूं अशक्त जन अपार नाथ सुर नर मुनि सारे आश धारे सरकार की	४६२
जोबनवां पियापै वारी कीन्हारे	२६२
जुबन पर हाथ चलावे	४१६

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
(झ)	
झुक झुक झूम झूम झूलैं वृन्दावन सघन मध्य दंपति मिल ...	३४८
झूलन चलब हमहुँ तोर संग प्यारे नँदलला	३४२
झूठी झूठी बतियों में हमरा माधो जीरा जरे	६६
झुलवन तिहारी पै वारी राधा रुकमिनजी	७५
झुलन पर मोरा जिया अतिघबराय	७६
झमक झमक झरलाईरे बदरियां दमक दमक दमकत दामिनि घनि घन घुमंड नभ छाई छटा	२१०
झूलै झूलै सखी नँदको लाल हिंडोला ब्रज कुंजन में राधे सँग एरी सखी एरी सखी डाले गलबैयां प्रिया प्यारो निहाल	२७२
झूला झूलन मैं ना जाऊँगी काहे को कन्हाई बैयां गहत जोरे ...	४१५
झूलत युगलकिशोर परसपर	४६१
झिझक झुक झूलत मदन भरी	४६२
(ट)	
टेरत तुहिं सजनी अरी कोऊ छैल छबीलो	११४
(ठ)	
ठाढ़ो मनमोहन यमुना तीर	२१२
ठुमक ठुमक चलत चाल चंचल चपलासी	६८
ठनगन भल सीखि मुरारी मुहन	१२३
ठाढ़ी थी अपनी अटापै सखी मुहिंका लागी नजरिया	१८३
ठाढ़े ठाढ़े रहो नँदके छैल तुहिंका मैं शठ देत बताई अभी अब कहो अब कहो कौन है सहाई यहाँ तुम्हरो कन्हाई	२७१
ठेका इकताला समसे	२२
ठेका दुताला रूपक पहिली से	२२
ठेका द्वितीय रूपक समसे	२२
ठेका दुताला फाक्ता पहिली से	२२
ठेका त्रैताल पंजाबी समसे	२३
ठेका द्वितीय पंजाबी समसे	२३
ठेका नृत्य त्रैताल पहिली से	२३
ठेका त्रैताल देहलीवार पहिली से	२३
ठेका त्रैताल लखनवी पहिली से	२३
ठेका सितारखानी त्रैताल फर्रुखाबादी पहिली से	२३
ठेका धीमा तिताला पहिली से	२३
ठेका द्वितीय धीमा तिताला समसे	२३
ठेका आड़ा तिताला पहिली से	२३

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
ठेका तीसरा धीमा तिताला पहिली से	२३
ठेका जल तिताला पहिली से	२३
ठेका त्रैताल खेमटा	२३
ठेका मुखड़ा संयुति त्रैताल समसे	२४
ठेका त्रिताली ताल त्योरा पहिली से	२४
ठेका त्रैताल झपताल पहिली से	२४
ठेका त्रैताली ताल झूमड़ा पहिली से	२४
ठेका द्वितीय ताल झूमड़ा पहिली से	२४
ठेका त्रैताली ताल धम्मार समसे	२४
ठेका द्वितीय त्रैताली ताल धम्मार खाली की तृतीया से ...	२४
ठेका धम्मार ताल के मुखड़े के बोल	२५
ठेका ध्रुपद चारिताल समसे	२५
ठेका आड़ा चौताला पहिली से	२५
ठेका द्वितीय आड़ा चौताला लखनवी पहिली से	२५
ठेका तृतीय आड़ा चौताला पहिली से	२५
ठेका सवारी चारिताल समसे	२५
ठेका द्वितीय सवारी चारिताल पहिली से	२५
ठेका तृतीय सवारी चारिताल पहिली से	२५
ठेका लक्ष्मीताल पहिली से	२५
ठेका अपूर्व्व बहुतालिक बोलसम समान रूप की प्रारंभ यकताला समसे	२६

(ड)

डगर चलत मोसे करत झिगरवा	२६०
डगर मोरी छोरो छैलवा छल न करो जी हठ छांरो	४७
डगर मोरी छांडो छैलवारे मोरी मानो जी	१६२
डगर चलत ठठोली करत मैं न जाऊँ यमुना जलको	१८३
डगर चलत ठठोली करत पनियां भरत लँगरत अतिनिपट निडर लँगर ढीठ छलिया अतिगोरी	२१८
डरे डरे नाहीं नँदको लाल अनोखो छैल रसिया अनारी बड़ो ढीठ भयो ढीठ भयो ऐसोरी निलज हग लाज न निपट	२७७

(ढ)

ढीठ कन्हाई मोरी बैयां छांड़दे	२६६
ढरकादी गोरस की गगरी ऐसो ढीठ निडर नागरनटरी ...	४२०
ढीठ लँगरवा अँचरवा मोरा छांड़ श्यामसुन्दर सकुचत न तनक जिया ठठोली करत मोरी डगर रोके ठाड़	४३२

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय पृष्ठ

(त)

तूही को मानत मनावत अरु ध्यावत बसावत हिय माहिं गुनन गावत गुहारे नित ४८६
तुमहीं को जान मान ज्ञान भयो एतो मुहिं यशु को तुम्हारेहि मैं सदा सों रहत हौं ४०६
तुन्तिरकिट तिरकिट तक् तिरकिट तीं तात्ता तीं तात्ता ... ४८१
तजे बनै ब्रजबास अबतो तजे बने ब्रजबासरी ३०१
तोरी चितवन कीधौं जादू रे समलिया ३०७
तैंतो मन में तो दुबिधासी धारे ३१०
तोरी नजरिया सैयां मारेडारे ३२०
तुम तो दांउ धरे सो मैं जानति हूं तोरी सारी चतुराई पहिंचानतिहूं ... ३२६
तोरी सुरत मन बसगईरे मन बसगईरे कन्हैया ३३०
तोरी सुघरता मनमोहनी अनूप प्यारी... ... ... ३३४
तोर लला कि थला विमला बुधिबीर बलाकी बलाकी बलाहै ... ५५२
तोर लला है कि अकला है कपट कला छलछन्दथला है ... ३५२
तैं लखु सखि अपनी ओरि ललिता लंपटिया ३५७
तुम ना सगे काहू केरि निमोही कान्हारे ३६६
तोरे भोरे भोरे पन परे पनपत मनकी रुचि कछु न्यारी न्यारी ... ३७०
तैं निमोही किन केरा बे चलि जारे सैयां ३७०
तिहारी प्यारी दृग चितवन चितचोर ३७६
तोरी मिनती करकर शिर धर धर पग पर पर गई मैं हार मीतमुरारि ... ३८१
तोरी नगरिया मैं कैसे पैहौं जानत नाहीं ३६१
तजी मरियादा तजी मरियादा शाहिजादा तोरा श्याम ३६६
तमक अति दिखावैरी जोबनमाता नँदको कान्ह ४३
तुम जाओजी जाओजी श्याम वहाँ जिनसे रसरीति करी नतिया ... ५१
तोरी चितवन जादू जाईरे सँवरिया ५७
तोरी सैयां टुनवावारी नजरिया मुहिंकारे मारेडारे ६६
तिहारी गोरी जानलई करतूत ६८
तिहारे सँग मैं ना झुलोंगी ब्रजराज ७६
तोरी प्यारी बतियों ने लुभाया जिया मोरारे ८२
तुम काहू के न हौ असके बसके रसके चसके हित जोरतहौ ... ४७८
तोरी सुघर मालिनियां बननवारलाई गुइयाँ ८३
तुम्हारी सैयां मुख देखे की प्रीति ६६
तुम रसके रूप कहाय कृष्ण रसिकनके सब गुण बोरत हौ ... ४८०
तनक थम जा थम जा थम जारे बदरवा १०२

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
तपन बुझाय जा प्यारे तपन बुझायजा बेदरदा जियरा तरफै मोरारे...	१०९
तुमसों लागी सुरतिया हमारी	१०९
तिहारी प्यारी नैनन सैनन न काकही	११०
तमुलिया सों सैयां बीरी बनवाये लैयोरे	११७
तोरी मोरी बात सो मोरी तोरी निरखली तोरी मोरे जियकी ...	१३३
तुमने नामनिशान जगत में हितको रखो न आँकुरे	१४०
तन जहान उर गृह गृही इन्द्री मन नृपजीवन नेहरे	१४०
तरफ तरफ तुम बिन सगरी मैं गँवाई रैनियारे	१६६
तुमतो रहे सौतनकी सेज मुहिं तरफत बीती रातरे	१८७
तुमतो प्रीति करी सौतनसों क्यों तरसावत साँवरे	१८८
तट यमुना के ठाढ़ो नँदलाल बजावे रसबांसुरिया	१९८
तोसों अनारी कोउ न जग दूजारी	२५१
तोरी दृगचितवन मोह्यो मनरी मोहनि बशीकरन जादू टुनवा सी सैन पेन चैन दैन मँदिरवा मैन	४०३
तनक सुनाये जैयोरे बँसिया के बजवैया	४११
तोरी हाहा करजोरी मनमोहन लाल चलो मत करो बराजोरी मोसे जोराजोरी	४१४
तिहारी चितवनधौं टुनवा भरी नैनन बशीकरन मोहनि जनु जादूगरी चितवनधौं टुनवा भरी	४२८
तिहारी चितवन चितचोरन लाल रँगीली गजगतिमराल चपलासी चाल चितवन चितचोरन लाल	४२८
तुमसों बड़भागी कौन तुमसों अनुरागी कौन तुमसों सर्वत्यागी कौन हरिसों हित बनोई रहे	४३४
तरफत भई बरसन दिनरतियां पतियहु नाहिं पीतम लिखपठई ...	४३८
तोरी थोरीसी ऊमरिया गुरिया गजब करे	४४८
तिहारी जादूवारी चितवन चितचोर नैना अनियारे कजरारे रतनारे भरीमोहनी बशीकरन टुनवा करोर जादूवारी चितवन चितचोर ...	४५३
तेरोहि रँग रँगो प्रिय लगो सो जिय अँगो	४५५
तैं मदभरी बाल जोबन रँगमाती अकेली डोलत क्यहि काज ...	१२
तुमतो बड़निरदई देवत पिय दरशनहू न अस न चहि अस न चहि	२०
तराना राग गौड़सारंग...	३४

(थ)

थिर करु थिर करु पिया मनमोहनियां...	३६६

(द)

देख सखी बालम की बतियां	२६१

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
देखी बतियां घतियां नटखट की	२९८
दया न तोरे जिया में रही	३००
देखो मोरी ढरक न जाय गगरी	३०७
दगन भरि मारी पिचकारी प्रेमकी रे	३१२
दासन को दास दास हौं तिहारोही	३१४
दर्शन दीजै नाथ मुहिंका बिलँब न कीजै	३१६
दारिहजरा रँग डार गयो सुदामा सांवरे को सखा मोपै ...	३२४
दइ निर्दैया सों नेहा लगैना नेहा लगैना कहूं नेहा लगैना ...	३३८
दगन नित नेह की रीस रहे न माने गुइयां मनहु मतंग कहे ...	३८४
दुलहनि दुलराय गई निपट	३८५
देखी तोरी चाल ढाल तुम छलनिधि नन्दलाल	३८८
दइरे दइरे मारेडारे कोइल कूकन जिय निकारे	३८९
देखी चंचल चपल चितचोर श्याम बरन	३८
दीन प्रतिपाल औ कृपाल द्विज दासन को राखत सुफल प्रन करुणानिधानीस	६३
दैयारे दैया नैया झाँझिरी नदिया गहिरी गँभीर बहतरे ...	७४
दमकि दमकि चमकि चमकि जावे डरावे चपला द्युति निरखि ...	७८
दगन द्युति दरशत पिय की प्रीति	८१
दारादीम् दारादीम् दारादीम् दारा दारा दारादीम्	८८
दरशन मोहिं दीजिये कीजिये कृपा कृपाकर कृपानिधि ...	९४
दैजा दैजा इतर गंधीवाले छैल मोरा सिजिया सजन आनेवाला ...	११६
देखु मुरारी को अनारीपनवारी मोरे तक तक मारो अबिर ...	१३६
दैया मुहिं मारैरे सौतन बोल कहे बचन कठोर बिष घोल घोल मुहिं मारै रे सौतन बोल	४१६
देखो सखी नंदनँदनको मैं कहँ लग बरजूं गोकुल गैल औचक आन बैयां गही मोरी नाहीं मानै छैला	४२०
दगन सुदृष्ट्र बलिष्ट धरो ये कलिष्ट कलेश हरो श्रीराधिके ...	१३७
द्रीम तोम तनाना ताना तादेरना देरना दीम दीम	१४६
दरशन के काज रहे अटक नैन	१६०
दरवजवा मोरा झाँको भोरहीते	१६४
दिया दिया न दिया दिल पराये पै अपना	१७२
दुखित प्रान बदर से नित प्रति गरज बरस नभ दरसे ...	१७३
दग अरबिन्द सिन्धु रस रँगके छल बलके झलके गाढ़ेरी ...	१८५
देखी सैयां झूठी तोरी बात	१८६
द्रीम द्रीम दीम ददाया नारे तदारे दानी तुम दिर दिर ...	१९२

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
दरशे जा घन गरजे जा घन बरसे जा बारि	१६५
दामिनि दमक जोहत जमक गगन गुमक भारि	१६५
दइमारे बदरवा गरज रहे रे बारि बरस रहेरे जिया तरस रहेरेहां ...	२१८
देखी देखी कान्हा झूठी तोरी बात नये रँग ढँग छल बल सिखतजात दिनरात कान्हा झूठी तोरी बात	२२५
द्रुमद्रुम नबेलीबेली पातपात रंगरूप उमँग नव गातगात ...	२३१
देखी यक चतुर नारि अतिचंचल नबेली सहेली अलबेली संग लिये श्याम गात रँग चुआत जोबन तन सरसत रस दरसत बरसत छबि	२३७
द्रवहु प्रभु दीन बड़ो परिवारी न तुम बिन नाथ अनाथ सुखारी ...	२३८
दइमारे बदरवा करत शोर घानानानानाना गरगर गरगर गरज घोर कारे कारे पीरे पीरे नीरे नीरे चहुँ ओर	२३८
देखो सखि बार बार बरजोरी त्यौं त्यौं वोरी जोराजोरी मोरी बैयां गहे ऐसोरी कन्हाई अधिकाई लँगराई करे नाहीं डरे ...	२४१
दिल ऐसे बेदरदों को हरगिज़ न दे दिल लेकर रहिमदिल न होवें ज़रा	२४२
देखो कैसी आज बँसिया बजाईरे स्वरन सुधा नया रँग रसबोरी मन मोहनि बशीकरन कन्हाई	२४४
दरशन के काज रहे अटक नैन दिखला जा सूरत सांवरिया ...	२५६
द्रीम तननन ना द्रीमतनान त्रानधा निरतत मनमोहन ताथेई ताताथेई सखा सखी संयुत बाजत ढफ मृदंग झांझ तबल तँबूरा तराल साज बाज विविध भांति	२६६
द्वितिया को चन्द श्रीगोविन्द तुम तो अब तो रहत दुरदुर दरशात सघन बसन ओट घनन करके	२६८
देखो देखो आली यमुना तीर वृन्द ब्रजग्वालन को संगलीन्हे रचो आली रचो आली रहस रँगीलो आयो सांवरो कन्हैया ...	२७१
देखो देखो सखी राम जात बनै प्रिय जनकनंदनी बारी बैस बारी बैस कोमल गात संग लषन साथ	२७३
द्रीम तनाना त्रोम तनानाना पधम गारे धिकिट धा तकधा तकधा तकिट तोम्ब गिदधिध धा किणान धा धानी धाम किन्नाना ...	२८८
देवकी के नंदन जगवंदन कृपासिन्धु गिरिवरधर बासुदेव यदुपति जगदीश्वर	४२४
देख सखी बनआये मोहनजू मनिहारी कर पिटारी चुरिहारी चुरियां रतनारी सारी	४३८
दरशन लागे अबतो रंग ढंग तोरे छलत चलत छल बलकी चाल मोसे घतियां करके रतियां काके भवनवा जागे	४४३

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय पृष्ठ

दूर दूर रहत श्याम रूठ रहेहो मोसे कहा कवन गुन बिसारी मोहिं बोलत मुखहू न बचन ४५४
दमक दमक चपलारी चमके डरप डरप जिय जारी मोरी आली ... ४६४
दरश परश बिन पिय जिय बरसन भई तरसत हिय परम दुखित करत मदन बिरह बिपति १४
दुरवत काहे छल बल कर हमसन जानत तिहारे सब रँग ढँग गिरिधर १५
दीरघ उठानसो अटपटीसी अलबेली चाल चलत नबेली नइ नइ नारि... ४७५
देव देव दानदे तू मैंका कमल चरन की भक्ति वरदान सो सनमान दे तू मुहिंका ४७६
दीम तनूम तन देरना तदियन तोम तोम तारे तदरे दिर दिर दिर तुम दिर दिर दिर दिर दिर तदानी उदित न दिरना दीम तादियन ताना ना दिर दिर तानानाना दिर दिर दिर दिर तानानाना दिर दिर तानानाना तदीम ४८६
देख ढिठई ढीठ नटवर की गोकुल गैल मोसे कुंजनके तट आली ठठोली करत मग बिच निधरकी २६८

(ध)

धनि सौतन धनि वाके भाग धनि धनि सुहाग धनि धनिरी ... २६६
धारीरे मोरी जान मटुकिया मोहन मुरारी ने मोरी ३२५
धीर न लावतहै मन मेरोरी जबसों बंशी रस बैन सुनोरी परी सखि... ३३४
धरु मन धीर भजिये नन्दकुमार ३६१
धुबिया के छैलवा अँगिया मोरी धोला चुनरसारी १३८
धूम धूम मचाई झूम झूम घूम घूम रहे मदसों १७८
धर मन धीर भजिये नंदकुमार १८१
ध्रुपद अधिपतीश जगत ईश निधि हमारे १९१
धनि धनि लाला तोरी मांय सुभागिन नँदरनियां १६५
धावत आवत ठुमुक चाल मन्द मन्द अति रसाल निरतत पिया प्यारो लाल नेहित गल बैयां ३७
धारी धारीरे आनि बानि कारे लोचन नाहीं लाज तिहारे हांरे दुख पावें दुख पावें नर नारी सारी चलो बेगि ब्रजप्यारे २८४
धनि ललन लाल अवतार सुखद शुभ सगुन सकल आनँद सुरूप धर आगमने वहि बार निहद ४५७
धावत आवत ठुमुक चाल मंद मंद गति रसाल निरतत पिय प्यारी दोऊ नेहित गलबैयां सैयां २६६
धनि सुबरन की घरि आज बधावा बाजैरी आली सुखनिधि ... ३८६

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
(न)	
नामाने ननँदि बरजो मोर मुहनवा	२८६
ना ऐहौं सजन सिजिया तोर नियरवा...	२६१
ना भावे निपट लँगराई मोहनकी	२६१
ना सैहौं सजन सौतनकी बतियां	२६२
नागरी नेह नयोरी करजोरी निंदिया आजा पलछिनको ...	२६३
नेक नजर नारि मोरा हरत प्रान	२६४
नाथ प्रबल जन गरीब तिहारो	२६६
न माने गुइयां मन वृति चपल तुरंग	३३
नैया मोरी कौन लगावे पार...	३४७
न्हात नित नैनन नीर शरीर	३०५
ननँदिया सों अब न बनब मोरे राम	३०५
निंदिया नींदोरी निरदैया बेदरदी	३०७
नैन बान मारत सजनी कैसी	३१८
नाथ किस बिधि हमरा ये बेड़ा पार लगैहौ	४७६
निठुर सैयां मोरा जियरा न जराओ	३२६
निशान्त आवनदे क्षपाकर छिप जावनदे	३२७
नतियां घतियां कर पिरतियां कीन्हीं सुरतियां तज दीन्हीं ...	३३६
नित बराजोरी मोसे करत ना लजावे	३४०
नैन बान बांकी तिरछी बरछी कटरिया...	३४५
नंद नटवार छयल मोरी मान पनघटवाकी गयल मोरी छांड़दे ...	३५१
नँदको ढीठ कन्हैया ऐसो ना माने	३५२
नवला नवला नवला की बला	३५३
निकसत हौ क्यों नाहीं बखरिया के बाहर	३५४
ना थिर है चित मोरारी हमसों न बोलरी	३६०
नजरिया तोरी किधौं तिरछी तरवार	३६५
नैनों दी मार नैनों दी मार	३७६
न भावे सैयां तोरी छल बल की बात	३८२
निभै न गुइयां निरमोहिया की प्रीति	३८४
निंदिया उनींदे नैना झुकि झुकि आवें	३८६
नवल जोबन जगमगात देखी नवल नारि प्रात	३८७
नाथ कछु करि नहिं मोहिं दिखायो	३६०
ननँदी निरदैया दैया दैया	३६२
न सरबर तोरी मोरी मात बिचारु	३६५
नागरि नैन न मानत हैं नित प्रेम पगे नट नागरनटके ...	३६

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
नागरि नयन न नेह निभाउरी नटखट नटनागर नटवरसों ...	३६
नागर नवेली अलबेली अलबेली भांति पियको जगावत ...	४०
नैना मानत ना हटके फँसे जाल नागर नटके नट खटके मानत ना हटके	४२
नैना निपट निलज तुम्हरे नाहिं प्रीति पीर काहूकी करें ...	४२
नाजो प्याड़ा मुखड़ा म्हारे मन भाँदा	६२
निंदिया परे नाहींरे प्यारे बलमाबिन मोहिंका	६५
नाहक मारै नैना बानरे नाहकमारै नैनाबान	६७
न मारै नैनाबान तोरे कहीं न मारै नैनाबान	६७
न पिया हमसों करो न निठुरैयां	६६
निडर रँगडारी सारी मोर चुनरिया बिगारी न्यारी रँगबोर ...	७२
नाहीं माने नहीं माने मोरी कान्ह जियरा जराये जारे मोरारे ...	७३
निडर ऐसो मोहन काहे को भयोरे	७५
नीरलिये गँभीर घन घुमड़ आये गरजगरज बरसत	७६
नैनबान मारत सजनी कैसी लचक चलत चाल	८०
नवलनारि सखि एक मैं देखिआई	८०
नैनबानि बाँकी नैनवा निकाई बाँकी रसीली बाँकी	८१
नैननीर लागीरहत झरिपै झरि छिनपै छिन	८१
नजरलागी काहू रसियाकी तुहिंका	८१
नन्दके फरज़ंदके मुखचंद के माइल हमीं	८२
नाअंजना अंजना अंजना दग वैसेहि मोरडारे	८६
नाद्रिरि द्रिरितान्न तूम तनानानानाना दिर दिर	८७
न भेजो भैया लगनहेत शिशुपाल बरूँ मैं मन बच कृष्णसों गोपाल ...	६३
न मैं बाँधूँ मैया असुर काज कँगना	६३
नेहा निपट बेपीर ये मोरी गुइयाँ	६६
नँदजूको लाल वही गोपनको ग्वाल	६६
नगरिया तोरी केती दूर	१००
न्यारी गति सबसों करनीकी करनिय कमनीय	१०१
न कहो न सुनो नहिं बोलो बताओ	१०२
नागरियारे प्रीतिबुरीरे मतपरिये वाके फेरमी	१०७
निन्दरी मोहिं निंदरियाने पियबिन प्यारे पलछिनरहत नाहिं नहित ...	१०७
न्यारमत हैयोरे मीतहमार यहि बिनति तोसन मोरी लाखोंबार ...	१०८
नाथ सुनो बिनती दासकेरी मैं त्राहि, त्राहि करजोर कहतहौं ...	१११
निवत गृह जहँ जहँ गयेरी हमार	११३
ननँदी कोऊ छैल खड़ो तुहिं देहग सैन बुलावतरी	११४
नजरिया लागरही नेहकीरे	१२५

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
नैना रसमातेभये तोरे रस मदमाते सेरी	१४०
नाकहो नाकहो नाकहोजी प्यारी रूखा वचन मोसे ना कहोजी ...	१४३
नन्दकी करत कान कान्हा न जाना मोहिं कंसेरजाकी ...	१४५
नाजैहौं नाजैहौं आली यमुन भरन नीर	१४८
नटखट निपट नटवर अली	१५३
न मानी सैयाँ गहिलीन्हीं नरम कलाईरे	१५५
नजाओ सैयाँ सिजियापराई सो पराईरे	१५५
निद्रा नदान नदिया बैरिनभई आवतु नाहीं	१८७
नैन भरिआये पिया देख हरष लिये प्रेम	१६१
नाक़दर मोरी कीरे सनद पिया	१६१
निडर ऐसो का करों कान्हा सखीरी	१६३
निरखि ललिता सखि लाड़ली सँगलीन्हे	१६४
नमो नमो नारायणो जै जै हरे हरे	१७५
न जानूं सैयाँ कासों लगाईं नतियाँरे	१८०
निरतत नन्दलाल संगलिये गोपीग्वाल	१६०
नँदरानीने ढोटाजायो बधावालाईं ढाढ़िनियां	१६६
न माने मोरी तनक हटक यदुरैया	२००
ननद्रैया हमार सैयांको तनु समुझाय दीजौ	२०१
नेक नजर नारि मोरा हरत प्रान	२०५
नैन भरि आये पिय देख हरष लिये प्रेम उमँग आयो जिय अधीर अनँद कीन्हो कल न परी बेगि उठिधाई उरलाई पकर कंजकरसों सखि ...	२०५
नीरा भरत मोहन मटकीलो चटकीलोने अचरा पकररे बराजोरी मुहिंका गरवा भरलीन्हो सखि	२१६
निपट हठि नट कीन्हीं नटखट मोहन मुरलीवारे पगपरि चिरौरी चिकुर गहि कर करन जोरि कहारे	२१७
नहिं ढीठ कोऊ हरिके समान मुहिं छेड़त डगर बिच जान जान ...	२२०
निलज अति भयो सखी नँदको कान्ह कठिन अब व्रजकोहु बसब प्रमान	२२१
नान्हीं नान्हीं बुंदियन घन झरलाई बन बन फूले फूल विटप खग कोयल मोर चकोर कोकिला बोलत पपिहा पिया पिया धुनि सुनि चैन पड़त उन विन नाहिं माई	२२७
नयो तुम्हरोही सुत भयो माय रसिक मुहिं छेड़त बाट चलत मिधरक	२२६
ननद्रैया दियना बालोरी साजनवा के आवन की बिरियांरे दियना बालोरी	२३०
निपट निडर डगर बगर मारग मोरी छांड़ छैल न गलबैयां डार बराजोरी थोरी छांड़	२३२

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
निपट निडर ये लँगर हमरा कहा मान जानेदे पनियां भरन पनघटवा छैल गैल न मोरी रोको कुँवर कान्ह	२३४
नइ बानि यह देखु सखीरी कुबिजा मीतकरी बनवारी ...	२३४
न माने सैयां सौतन की सिजिया पै जाय जागे यामिनि करे लड़कैयां	२३५
नँदलला निरदई सखीरी ऐसी करके घतियां छतियां मसक दईं चुलिया मोरी तनक न जिय डरपतरी जाही से मैं जाऊँ यमुन जल भरन	२४४
निरदैया नाहिं मानी निपट शठ सांवरे लँगर मोरी	२४९
निंदिया तजो करोरी नैना चार चार	२६०
नाहीं नाहीं रही दृगन लाज दासभये कुबिजा के जाके हरि शीश धारी शीश धारी कलंक की मोट दाग कुलमें लगायो	२८३
निरत करत नंदलाल संग सोहत ब्रजकी बाल नइ नइ गति चलत चाल थुन् थुन् थिरकिट धगतिट नगतिट धित्तणान धा ...	४०१
न भावें छलबतीयां सजन तुम्हरी गइ प्रतीति प्रीति रीतिकी ...	४०३
नाहींरे नाहींरे तुहिंका ये लाज कन्हाईरे घूंघट उघारत न जिय सकुचाईरे	४०४
नई नारि नयो रँग ढँग छल बल वो देखा आली आई रँगीली छबीली छबिसों	४०७
नइ चलन नइ फिरन नैनकी सैन की चितवन की हेरन की शोभा सखीरी	४०८
नैनों का निज़ारा मारा परी मुसिक्या के दुबारा दुबारा परी ...	४११
निंदिया न आवे नैनोंदी ननँदी मुहिंका प्यारे सैयां बिन पल छिन ...	४१५
नइ रारि नित करत कन्हैया मोसे न माने सजनी देखो मैं कहां लग हटको	४१८
नारायण नरोत्तम नरसिंह नरहरी नागर नवल निराधार निरगुण निजन्म निरंकारी	४२४
ना जैहौं ना जैहौं आली यमुन भरन नीर ठाढ़ोरी कन्हैया होरी खेलत कुंजन तीर	४२७
नई रँगीलीसी छबीली त्रिया आई देखो हांरे हांरे नयो यौवन उभँग आली निराली अति छबि फबि की सुघराई देखो	४४२
नैन चतुर चितवन मिलतहि भये गई सखीरी निसर लाज अंक बेगही युगल हँस हँस हरष परस लये	४४२
नैन तड़प तरसत बरसत भये परी सखीरी सजन मिले ऐसे निठुर सुधि बुधि तज सौतन के भवन गये	४४२
नटवर थारो नन्ददुलारो घुँघुट पट हमारो टारो लुगरा लिपट फारो चीर न्यारो चीरडारो	४४४
निपट निडर डगर बगर मारग मोरी छांड़ छैला न गलबैयां डार बराजोरी थोरी छांड़	४५१

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
निरमुहिया दैया मोरी मटकी पटकदई कान्ह ऐसो ढीठ मानी ना कहीं हां	४५५
निरख गोरी पियाको परम हुलसी झपट झट सैयां डारत गलबैयां	४५६
नटवर नटनागर बांकी सैन चितवन मनहरलियोरे मोर चितवन मन-हरलियोरे	४५६
नयन लागे नटवर सों मोर सखि निडर भयेरी नहिं काहू को नेक डरत	४६५
ननँदि मोरा मैं ना जाऊँ यामुना निडर ऐसो करत ढिठाई मोसे कुँवर कन्हाई दूजे छुवत चलत मगमें जोबना कान्ह मैं ना जाऊं यामुना	४६७
नाद नीरधि स्वर प्रवाह राग रूप रस अथाह त्रिवट तिल्लाना चतुरँग रँग की तरँग सरगमादि	२
नागरि नवीइनी कृइत्य सा आ आरु पिय के मिलन को सुकुमआरि	६
नागर नबेली नारि नैनन की सैन मार मोहनीसी दीन्हीं डार ...	११
नाम तुम्हरो रटत मदन मनोहर पुरनहो मनकाम	२२
नटवर न रे पकर मेरो अँचरवारे	३४६
न माने गोरी तैं सिख मोर अरी	४६२
(प)	
पियाके बरन मोहिं नीको न लआगे जगत कोऊ	३००
पिय कँगनवा मोरारे सुनरवा को बुला गढ़वादे	३०२
पिया सों जिया परसन चहत हमारेरे	३०३
परे न गुइयां अनचाहत को संग	३०४
पिय की नगरिया में जाय रैहौं मनकी मनशा पुरैंगी ...	३१८
प्रबल प्रताप आप कोरी जानत नाहीं शठ मन मोरारे ...	३२४
प्रभुता देत दिखावत बार न कछु तुहिं लागत	३७२
परै न गुइयां निरमोही सों हेत	३८३
प्रणमु परमात्म परम परबीन	२८४
पद्धति प्रबीन दासु चातुरी नबीनदासु बाणीहु रँगीनदा ...	३७
प्रीति पराये बशकी सखी दई मारी बैरन बँसियाने मनमोहा मोरा	४१
पिया बियोगवा भयो मोरी सजनी मुहिंका नींद न आवत रजनी ...	४०
परबश प्रान करडारो हम जानी जानी ना प्रीति बुरी ये आली ...	४३
पनियाँ न जाऊँ आलीरी बीच मगरी ठगरी झगरी पकरी बहियां गुइयां	४४
प्यारी प्यारी बतियां करके मोह्यो बनमालिया	४७
प्रिया प्रेमछ्रा मोही मुहनवा की मुहिनी मुरातिया	४६
पेखने को रसपरिको तनको दरकवाको ननँदीनीरे	५०
पनियां चलु भरन सबेरीरे	५५
पतिया लिखलिख पिया हारीरे	५६
पिया काहेको रारमचाई मुरकगई न मोरी पकरो कलाई ...	६०

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
प्रीतितुरंग चढ़ो जियरा रख नेहचै जीन जड़ी मणियांरे ...	६७
पिया तोपै वारूं तन मन धन पेसी सुघर बतियां	७३
पिय कँगनवा मोरारे सोनरवा को बुला गढ़वादे	८७
प्रान मोरारे पिया बिना घबरात कैसी करुँ सजनी मीत समलियासों नेहा लगो घरि पल छिन कल न देत बिरहा बैरी मनोज ...	४७६
प्रभु मोरे उरका किंवारा खोलो	६५
प्रीतिकी धूम परी जगत मम	६५
पिया मैं तोरे मैं तोररे वारी जैहौं	११०
प्रीतिकरीरे पछिताई तोसे कान्ह	१२०
प्राणपति पिय के मँदिर साखि भागवति बनती परसती ...	१२२
पिया पिया मचाई पपीहा पापीरे	१२२
परडर कुलडर बिचार मिलत मैं हरिसों न नार	३८७
प्रीति लगा दैगयोरे दगा नहिं मानी वो दगाबाजरे	१३३
पूरन मनकामना करी करतार भरतार मेटो मेटो	१३६
पूरी करै प्रभु तोर कामना प्रिय प्रीतम मिल	१३७
पिया नदानरे नदानरे मेरो सारो जुबना बीतोजातरे	१३८
पूरीकरै प्रभु तोर कामना प्रिय प्रीतम मिल बिलसौमामना ...	१४२
पिय लागी मैं तुम्हरे पायँन करजोरी मिनती कर	१४७
पिय पाय लाय उरलीन्हा	१५४
पिया तोरी निठुराई मुहिंका न भाईरे	१५६
प्रीति कन्हाई निभाई भली झूँठी सरकी कसम मेरे	१७२
प्रेमिक मुकुर सुरत कलह लाजवाब जड़ी मढ़न कुशलपत्र पेखी शुभ हित अथोरे की	४८२
प्रबल दुख दरद जिया तरसो	१७७
पाइलिया मोरी बाजैरी नूपुरकी झनकार	१८६
प्यारी सोजारी बिनियां डुलाये जायँगे	१६६
पहरुआ बोलन लागेरी	२३२
पिय बिन लाजमरुँ गुरुजनकी साजनके आवनकी अवध गई सुधि न लई निरदई बिरहन की	२३५
पिया सों मिलन चली रसिक नवेली अली	२५३
पिया सँग रात जगी छिनहू ना पलक लगी	२५४
प्रीति रीति उपजी तब सैयां हमरी तुम्हरी जबसों लरकैयां ...	२५७
परसलीन्हेरी बिहारी कहा करिये परी आली यमुन जलसों भरी झारी अशुधि करडारी हमारी	२६२
पियापराध नहिं जानो हमरा बिसरो बार आवनको तुम्हरा ...	४७५

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
पिय परदेश सिधारो री किन सौतन मोह्यो	२६२
प्रबल भल दई दई दुख दीन्ह लगाकर नैन चैन हर लीन्ह ...	२६३
पऊँ पऊँ तोरी पैयां श्याम जानेदे दधि बेंचन कारन मोहिं हाहा करूँ हाहा करूँ बिनती तिहारी मानो मानो जी हमारी	२८६
प्रात भयो बोलैं कगवा उठो उठो लाल अब जागोरी	४१०
प्रानपति अब आये परभात कर सौतन सों बात	४२१
पड़ी यह कौन तिहारी बानि जो छेड़त हौ नितप्रति अबलान ...	४२२
पिय छाय रहे सौतन के पास तन मदन सतावत जिय उदास ...	४२८
प्रियाको पिया जगावे कर प्यार प्यार तन मन धन मानो सखी वार वार	४४०
पिय घर सावन में ना जैहौं कहि दो बाबुल से सखियां ...	४४७
पारब्रह्म परमेश्वर परमहि दयाल भक्तवत्सल सुरनरक्षपाल ...	४५४
पिय पिय पपीहा भनता बनता सनन सनन पवन पुरवा करत गरज गरज घन नीनीधा नीनीधा नीनीधा	४६३
परसन लागो अँखियन नेहरी गेहरी करत देहरी शिथिल सुधि न पिय की मेहरी जिमु न्हागई प्रेम रँग सँग लागो अँखियन नेहरी ...	४६४
प्रात मोरे आइयो जू मदनमोहन धेनु दुहन गाइयो सुनाइयो जू मुरलि मधुरि मधुरि तान	२
पूरत युथप नित अघन कर अधम मति अधमता आन त्याआगे करत निगम बचन कोबिद कथन कबिनु मातिनु मुनिनु गुनिनु ...	७
प्रेम मधुवा मुहिं पिलाआदे मदवारे प्यारे तोरे बलि बलि मैं जाऊं ...	१२
पगन परत पिय तोरे बरण बरण बिनति बिरच शीशहू निवत हाहा कर तुमसन दोऊ कर जोरे	१४
प्रफुलित निरख वदन बिलसि विपिन उपवन छबि सुघर सुघर नव फव हरित हरत मन द्रुम द्रुम प्रति	१६
पनघट तट गेरो मेरो घट नटखट नटवर न मआना न मआनआ ...	२०
(१) परन ध्रुपद चारिताल समसे	२६
(२) परन ध्रुपद चारिताल समसे	२६
(३) परन ध्रुपद चारिताल समकी खाली से	२६
(४) परन ध्रुपद चारिताल सम से	२७
(५) परन ध्रुपद चारिताल सम से	२७
(६) परन ध्रुपद चारिताल सम से	२७
(७) परन ध्रुपद चारिताल तिया की प्रथमा की खाली से ...	२७
(८) परन ध्रुपद चारिताल सम से	२८
(९) परन ध्रुपद चारिताल सम से	२८

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
(१०) परन ध्रुपद चारिताल सम से	२८
(११) परन ध्रुपद चारिताल इक्काकी खाली से	२८
(१२) परन ध्रुपद चारिताल सम से	२६
(१३) परन ध्रुपद चारिताल सम से	२६
(१४) परन ध्रुपद चारिताल सम से	२६
(१५) परन बोल ध्रुपद चारिताल सम से समतक	२६
(१६) परन बोल ध्रुपद चारिताल सम से समतक	२६
(फ)	
फाग में लाग लगाउ श्याम सों यह अवसर सुखकारी रहत है ...	४५०
(ब-व)	
बाजी कहुँ मधुवन में बँसुरी	२६३
बन्द बन्द पदारबिन्द गोबिन्द आनँद कन्दके	२६५
बलमाने मुंहिका बोलन मारारे	२६७
बँसिया बजावे मोहनलाल मुरारी	२६८
बरज यशोदारानी अपनो कन्हैया	३०१
बुरोरी गुइयां ओछन को सत्संग	३०६
वृथा मत ग्वालिन गाल बजाउ	३०६
विमलामुखी शशिबदनी सुन्दरी उमा	३११
बिन मोहन यार कैसे कटैंगे दिन	३१२
बलमारे चूनरिया मुंहिका मोल मँगादे बजजवासों	३१३
बनीरी देख बनरी बनरे को मुदित गात	३२०
बनरी लुभाई बना देख मोहना	३२०
वोही मोरारे जीवन प्रान प्यारा दुलारा नँदका बारारे ...	३३२
बदरवा तू रमजा देश बिगाने मोरा पिय परदेश न माने ...	३३५
बोलो न हमसों या छिन पिय करो न मोसे मसकरी ...	३४१
वाही नगरिया में जायरैहौं जहां छैल कन्हैया बसै	३४८
बराजोरी करत निडर मगमें रार	३५०
बनाबना जगजीवना सांवरी सूरतवारो मोहना सोहना ...	३५२
बड़ घरकी बहू बेटी लली रुचि का तोरे जिया प्रिया भाई भली ...	३६२
बेला चमेली केतकी निवारी जुही मोतिया गुलाब दौना मरुवा ...	३६४
वाही कुबिजा के धाम गये ये श्याम	३७१
बतियां न बनाओ मोंसे फेर फेर	३७४
बिन लाग सजन गये नैन फेर	३७४
बरन बदनाम भई मैं न हितसों तोरे अँचई मैं	३७५
बरा जोरी बैयां गहि चुरियां दरकादई करको करको कँगनवा ...	३८१

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
बुरीरे गुइयां परदेशी की प्रीति मिलत सुख बिछुरत दुख बहुरीत ...	३८४
बैरिन भई हमरी सवत कुबरी	३८५
बलमारे मोरी खबरिया तुमने ना लई ना लईरे महाराज ...	३६०
बालमारे नदान मोरी ज्वानी उमरिया	३६६
बलमारे जवान मोरी बारी उमरिया	३६६
बँसियाँ बजाय जादू कीन्हा श्यामले सलोने कान्हाने ...	४४
बाँकेबिहारी राधारुकमिन कान्ह	४६
बाट चलत गारी देगयो मोहिं नँदको ढीठ नटवा सजनी ...	४८
बेदरदा काहे पिय जिय तरसाये	५२
बैरी पपिहा डारो मार कोई मोरा जियरा न जराये	५२
बैरी मुरिला केरी कूक मुरिला केरी कूक करे डारे करेजवा के टूकरे	५३
बिपिनबिहारीरे साँवरिया तोरेवारने	५३
बिरची पिय निपट नदानीरे	५६
बावरे को ब्याही क्या समझ के बाबुल मोररे	५७
बाँसुरी लला की मोरे कौने बिसराईरे	५८
बेदरदी बलमारे किनु सौतन बिलमायेरी	६१
बरसन बिनु बीती बहु बरसन आली अरज कहो नटवरसन ...	६१
बारी उमर की हो लगनियां पिया मारे डारेरे	६६
बलम बलिगई मोरी सिजिया आउ	६८
बतियाँ हँसि कीन्हीं कैसी कैसी मोसे	७७
बरसै बदरा जिय तरसै बिरहा के डरसे	७८
बीर बदरवा बारिया बारि बरन लागे	८६
बृन्दबारि बरषे बादरिया	६१
बदरिया बारि भरे ठाढ़ी कटरिया बूँदनदीमारी	६८
बरषा के बरसो बदरा मीत	६८
बदर अब बरसो अमीनिधि नीर	६८
बोलन लागे पपीहा पिया पिया को शब्द येरी मेरी आली ...	१०३
बिमलामुखी बिमल दे बुधि बानी	१०४
वो तो नाहीं मानै ढीठ कन्हैया कहिना मोर	१०८
बखरिया को नहिं मोल तिहारी येते दामन की चूनर हमारी ...	११२
बलम बिन रूपनागरिया उजार	११२
बेदरदी मोरारे मैका छुड़ाये लिये जात	११६
बिसाला गुइयाँ बिंदिया बिसतियासों	११७
बरषा के बरसो बदरा मीत	११८
बनमलिया चटके मटके अटके अनारी मोसे मारग में अटके ...	१२१

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
बदरन नभ दल बहु भीरभार चहुँ छाये श्वेत रतनार कार ...	१२४
बिरहन बैरी बरषा बहार षट ऋतु को कर दीन्हीं प्रचार ...	१२४
बदरिया मारे कटरिया बूँद	१२६
बहुत मैया ललन को लाड़ लड़ाना	१३४
बँसिया न सुनावो मोहिं टेर टेर पग परत जोर करकहत टेर ...	१३५
बावरो रह्योरी कान्ह बापरो मैं आज मात न्हान जात यमुन ...	१४५
बन ठन आई आली देखो नइ नइ नार	१४८
बराजोरी जोराजोरी मोसे करत रार	१५१
बेदरदा बनवारी झपट झट बइयां गहत है	१५३
बारी मैं मोरी ननँदिया बारी बारी	१६५
बराजोरी करत निडर मग में रारि ऐसो छैल	१७०
बरषा ऋतु दरसत बिनु बरसे	१७३
बिलमरहे बलम बिदिसवा मोर	१७६
वो तो लचक चलत आवत चाल नई जोवन के मद में ...	१८०
बन ठन के नारि यक आई सखीरी	१८४
बँसिया कहुँ बाजी कुंजन में सखि कुंजन में	१८६
बरषनको आये बदरारे पीले	१६०
बालम तुम हमरी न मानत कोटि यतन करहारी	१६३
बलि बलि गइ सियराम श्याम की	१६४
बजजवा यार सारी अपनी दुकनियां से लाय दीजै	२०२
बड़ोरी ब्रजवाला श्याम छली छैल मोरी नरम कलाई मसकी पतिलीरे ब्रजवाला श्याम छली	२०५
बाट चलत छेड़ो बनिता पराईरे दीजत नाहीं कन्हाई ऐसी लँगराईरे	२०८
बरष गई बरष गई घन गगन आली आज कह कहुँ जिया पिय बिन रहो न जात तरस रहीं तरस रहीं भाग लाग अपने सुहाग ...	२१४
बराजोरी जानके कन्हाई मारगमें बैयां गही गरवा लगायो करके ढिठाई	२१५
बैयां मोरी छांड़दे अनारी करको कँगन मुरकी कलाई जारे निठुर मुरारी	२१६
बाट चलत मोरी बैयांरे गहीरे मैंतो नाहीं जैहौं पनियां जिठनियां भरन	२१६
बोलेरे पपीहरा पापीरे पिय पिय रटत रैनि दिन	२१६
बलि बलि गइ सखि नागरनटके गटकै दधिलै घट बनसटकै ...	२२१
ब्रजमें यों कहि टेरैं गुजरी कोई दहियालो दहियालोरी ...	२२२
बहुत दिनान पीछे लाल आज भेंट भई धनि धनि यह घड़ी सो दिनलगन धनि सुहाग भरी	२२३
बँसिया किधौं मोहनि मोहनकी	२२८
बेहरत बन बागन नइ बहार भइ भूमि कुसूमित हरित झार ...	२३०

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
बन ठन आवत लखु गोपाल	२४१
बनड़ा उनींदारे नींदाभरे दोउ नैन ऐन	२४५
बेदरदा बनवारी झपट झट बैयां गहतु है	२५०
बिपिनबिहारी ठाढ़ो यमुना तीर	२५७
बात बात में बात बनावे घात से घातमें घात चलावे रात प्रात दिनरात न आवे	२५८
बतियां ऐसी करो न मोसे बार बार सौतकी बात सखीरी मोपै ढार ढार	२६१
बाजी बाजी बंशी बैरिन श्याम सुनत अकुलाय उठोरी जिया एरी सखी एरी सखी बेगि बताउ जाय मिलूं बनवारी	२७२
बसो बसो मोरे मँदिर आज बिहारी करो कृपाजी मुरारी मोपै सजि आऊं सजि आऊं सिजिया सुघर जापे सोवो रैनिभर ...	२७६
बनो बनो आली गंधिन नारि अनोखो किये सोलहू सिंगार छैला सोहै शीश सोहै शीश पचरँगी सारी रची जर्वा मेहँदी हाथ ...	२७८
बनो बनो बना नृपको लाल सजोरी शिर सेहरा सुभग अति भाल सोहै भाल सोहै चंदन की खौर क्रीट कुंडल श्रवन	२८२
बंशी को बजाके सुनाके सखी मन हरलीन्हों कर बावरिया ...	४१०
बारी सखी जोराजोरी बेदरदाने गरवा लगाय लीन्हो मगमें मुरारी ...	४१२
बार बार बलिजाऊं छबीले नेक बँसिया सुनादे रसीले ...	४२६
बाट चलत मोसे करतरी ढिठाई ढीठ लँगर चुलिया मोरी मसकाई दौड़ झपट छैल गरवा सों लगाई	४३१
बैर परोरी मोरे कुँवर कन्हाईरे ब्रजको बसब अब भयो कठिनाईरे ...	४३६
बांकी बांकी चितवन मन बश कीन्हारे बांकी बांकी सैन बांके नैनन की आली जादू सों कछु कर दीन्हा	४३७
बतियां काहे करे नागोरी चारि चारिबांकी नइसी रँगीली छबिवारी नारि	४३६
बारो वारो कृष्ण थारो बरजत जनि यशुदा जननि बन बन ब्रज बीथिन गलिन डोलत फिरत मारो मारो	४४१
बरसन लागीं अँखियां ये बारिरी बिन दरश परश नहीं सखीरी चैन	४६४
बंशी बैरन बजाय मदनबान दियो बिधाय बिरहा बिष फौज लाय धाय धाय चढ़ो आन	४६५
बिसर गइ सुधि जननि जठारिक प्रण बिहय सकल भजत भगवत नहिं अधम पुनि अघहि सृजत	१८
बलम बलिबलि गइ परत पग निपट निठुर मानत नाहिं मानत नाहिं ...	२०
बरन बरन की बानि भली तुम्हरी मनमोहन प्यारे	४७३
बटोहिया आयो आनँद की खबर सुनावन	४७४
बिन दरश परश श्याम ऊधो अब न सरबरे	४८४

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय पृष्ठ

बेगि दरश दिखला जारे मुहिंका तोरेबिन जिय घबराय समलिया ... ४८६
बैरन बनमें बाजी कहूं मुरलिया सुनत मधुर धुनि ब्याकुल भयोरि जिया
कल न पड़त दहे मदन बिनु पिया २६२
बराजोरी करके मोरी बैयां मरोरी कन्हैया ऐसो ढीठ सजनोरी ... ३२६

(भ)

भाई सो भई भईरे पिय मिलबेकी आश मनमां मनमां रही ... ३३६
भरन गई पनियां जिठनियां मैं नाहिं ३६५
भरन गई पनियां पनघटवा के घाट कालिन्दी के कूले कूले ... ३६६
भजिये जगजीवन परममीत जन मन रंजन दइरे ३७६
भोरी भोरी युगल जोरी मुहनी मुरत ढँग नयोरी ३८८
भोरी भोरी भामिन रूपनवेली ४५
भई बैरिन ब्रजकी बँसिया ब्रजबसिया बैरबिरौनारेहो ... ५१
भरन जो गई आज जल यमुना पनघट के निकट ११३
भयेरी पिय आवन के आसार १२५
भगत बगुलई दिखा श्याम मोरा मनु ठगाठगारे १४१
भाग अपना अपना सबकारी १५४
भावे न भादौं मास पिया नाहीं मोरे पास १५६
भ्रमत भ्रमत आज बावरी भई कैसी करूँ बनमाली १६०
भयोरे सिपहिया कान्हारे कान्हा तोर लपक झपक १६२
भली भली आनि बानि दानरीति ठानि कान्ह २२१
भजो भजो आली श्यामा श्याम पवित्र मुखहोई नाम लियेसेती स्वर्गगति
स्वर्गगति बेगि मिलजाई येही सुफल कमाई २८७
भरो भरो सखीरी बेगि नीर गँभीर भीर ग्वालनकी राजरही ठाढ़ो आली
ठाढ़ो आली कृष्ण यदुराई करैगो आन ढिठाई २८८
भजो भजो सखी शिव महेश कैलासपती जक्तगुरू अविनाशी नाम लिये
नाम लिये कटें यमफांसी मिले स्वर्ग गति खासी २८३
भयेरी कुब्जिा के मीत गुपाल तजगये सकल हर ब्रजकी बाल कुबिजा
के मीत गुपाल ४१६
भजु सियवर भजु सियवर गिरिवरधर गिरिवरधर १
भजुमन कैलासी बासी अविनाशी सब सुखराशी भूर ... ४७०
भोला भाला डमरुवाला गुरिया बसो मनमोर ४७०
भ्रमन को मिटावत जो गावत तिहारे गुन पापन नशावत जो ध्यावत
यक बार नाम ४६०

(म)

मोरे प्रभुको नित नाम अधार २६४

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
मुहिंका नाहीं भावे मोहन तोरी बात	२६८
मोरी मोरकीसी रहन	३०६
मैंतो बिनति करत कर जोर जोर	३०८
मुख देखेकी प्रीति के मीत रसिक तिनसों कह नेह लगावत है ...	३१२
मोर मुकुटवाला मोरारे मुरली को बजैया कन्हैया मुहालियोरे ...	३१४
मोरी सेजरिया सैयां अब काहे आवत	३२३
मोहि लिया जियरारे हमारा वा बंशीवाले कृष्ण कन्हैयाने ...	३२७
मोसे करके मिताई श्रीकृष्ण कन्हाई सौतन बशभये भयेरे ...	३२७
मन लाइये दयाल जू दया गोबिंद गुपालरे	३३१
मोरा अँचरा पकर गारीदीन्हींरे सांवरिया सखीरीरी अरी ...	३३२
माधुरी मुरति सांवरी सुरत वारे तारे हगानके	३४०
मैंतो ऐसे बेदरदाके नारहूंरे	३४३
मन्द मान से सुथिर अलबेली अलबेली भांति	३४४
मोरा मन मोहारे मुरलिया वारे	३४४
मोरी सेजरिया सैयां अब काहे आवत	३४६
मोरे बलमारे तू मोरी खबरिया लेनजावेरे लेनजावेरे ...	३५१
मीत मोरे मुख जातहै तुमतौ	३६०
मोहिं नन्दा महर सुत मोहि लारे	३६२
मोसे नाबोलो जी नाबोलो जी दूंगी गारीरे	३६८
मुहिं गुहि लादे मोगरा को हार	३७२
मांडारे मन भांदां बनरा	३७२
मैया मोहिं मुरलिया लैदे	३७२
मोहिं माई मुरली मोल मँगादे	३७३
मोरी कनक मुँदरिया खोगई बलमा ले ढुँढ़ाय अपनी सिजिया पै देख कनक मुँदरिया खोगई	४८२
भाल मुकुट मुक्ता कलँगीको दाऊ के मुकुट कैसो लीहौं मैं ...	३७४
मोहिं जानदे छैला पनियां भरन बंशीबट पनघटवा के रे घाट ...	३७७
मनकीजे न मैलारे नन्द के छैलारे वो ब्रजवारी गँवारी है नारि ...	३७७
मुबारिकबादी शाहेज़ादी शाहेज़ादेकी	३७८
मोहन मनमोहन मोहनियां प्यारे	३७८
मनहुँ मग जुगवत निंदिया नैन	३८६
माधुरी मूरत मनबसी मोहनि मोहनि सोहनि सोहनि सुरत सुघरसी	३६१
मांडे दिलोंदा दिलजांण सानूं थांडा मुखड़ा मांडे मनभांदां ...	३६१
मुख मोरौ न श्याम दुलारे हांरे	३२६

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
मैं तोरे वारी वारी सैयां परत तिहारी पैयां बलि बलि जैयां ...	३१३
मोरी यहि टेक रखो महराज	३१४
मुरारी मोरी ब्रजबिच लाजलई	३१४
मोरी खबरिया लीजिये जी श्रीयशुदाकेलाल	३१६
मोर मनुवा मोहि लीन्हो माधुरि मुरति वारे	३८
माधुरी मुरतिया मुहिंका नीकी लागे	३९
मानतेरही ब्रज गोकुलधाम बरसाने बृन्दाबन नँदगाम... ...	४८
मुहिंका निंदरिया बैरन भईरे प्यारे सैयाँबिन परी ननँदिया ...	५०
मोहनियाँ मोहनकी बँसुरिया बशीकरन जादू टोना रे हो ...	५०
मोरीरे गगरिया फोरीरे निडर ऐसो मोहन कृष्ण अनारी ...	५५
मुहिंका नहीं भावे तोरी ऐसी चतुराई रे	६४
मग चलत करत लँगराईरे	६४
मोहन मोसन आज सखीरी मारग में औचक अटकोरी ...	६५
मोरारे बदरवा बैरीरे पिया बिन बरसत बूँदन बार बार रे बदरवा बैरीरे	६५
मतजारे बाला जोबनवाली रे पनघटकी मारगमें हो जोबन ठगोरी ...	२४६
मोरी कोमल कलाई सैयाँ ना छुओ	७०
मोरी गली आजा बँसुरियावारे	७०
मैयारी मैया मोरी ना मानै ढीठ कन्हैया निर्दैया	७२
मोरे सजन सनेही सांचे सतगुरु कैसी बानेरे	८९
मोहिं इतना ना गुमान रहो पिय की तरफ	९५
महराजरे बदनाम भइ मैं	९६
मान तजि गोरी येरी वृषभानकिशोरी	१०३
मोरे तो जिया में ऐसी आवतु है खाय मरूँ विष सैयाँ ...	१०३
मानैना मानैना मानैना करत बराजोरी लँगरैयाँ	१०६
मूढ़ सुधारु कर्म तजु तृष्णा मिथ्या जक्त असाररे	४८५
मोहत मन मृदुलबानी हँसन मधुरी माधुर्वी	१०७
मधुकर मंड़रान लागे सुमन बरनभइ अबतो आलि मकरन्द भालसी ...	१०८
मसकरी सुहाय ना मुहिका मसकरी सुहायना चलिजारे अनारी ...	१०९
मनुवां मोर जन नागरनटका	१०९
मन मनशा मानी जौन मोरीरे सुन बिधना साईं	११९
मोहन मदनमोहनलाल मोहनीमूरति अति विशाल	१२१
मैया मत हो कछु मन उदास मोरे कर्मलिखा बिधनाने त्रास ...	१२८
माई सुघर बनीरी बनरेकी बहुरिया श्याम सरोरुहसे... ...	१२९
माई सुघर बनीरी बनरेकी बहुरिया श्याम सरोरुहसे ...	१२९
माई लकुट कमरिया काँधे बाँधे पट पीताम्बर कटिसों ...	१३१

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
मलिया करको कँगनवाँ गूँधे लादे कुमुदन को	१३७
मोरा मन लैगयोरी मुरालिवारा	१३९
मोरी चुलिया नशायडारीरे पेसोरी अनारी दिउरा	१४१
मोरी सिजिया बिगोयडारीरे ननँदिया निचली नारहेरी ...	१४२
मोरी कनक मुँदरिया सैयाँ खोयडारीरे हाँ ढूंढ़हारी	१४६
मोहनकी मैं छलबतियों पैवारी वारी	१४७
मारखावोगे सुनोजी इसरै बाजग्राग्रोगे न पेसे तुम निडर ...	१५१
मनमोहन अनारी अँगिया हमरी फारी	१५२
मुरारी मोरी बहियाँ मरोरडारीरे	१५३
मोरे जागे भाग नवीना	१५४
मैंका निटर निडर गरवा लीन्होरे	१५५
मैंहा बराजोरी गरवा लगायो श्याम	१५६
मोहन कहँ जागे लागे किन सौतिनियाँ के गरवा	१६५
मनमोहन मनमोहन प्यारे सखि जातरहि यमुना	१६६
मोरे बारे उमरकी मीत रसिया कहँरे गये	१७८
मोरे मारा नैनै निजारा लगा जिया तीररे	१७८
मोरा पलकमार मन लीन्हा सखीरी साँवरिया	१७९
मोरी आन अचानक जान कान्ह दई	१८२
मानले लँगरवा वो देखो ननँदि मोरी आवत	१८२
मीनसे प्रवीनसे दोउ खंजनसे कंजनसे गनसे चपलसे... ...	१८५
मोहिका निपट निडर दीन्हीं गारीरे	१८६
मोहनी मुरत सोहनीसुरत वारेरी कन्हैया ने मेरो मन... ...	१९३
मैं कान्हा तोरी मैयासे जाय कहूंगी	१९८
माईला माईला मोरी बांसुरी गऊ चरावन जात मधुबन लकुट कमरी दाऊ के हाथरी	२०७
मैंने तोरी जानी चतुराई नँद की दुहाई चल चलरे कन्हाई कीजै न ढिठाई	२१६
मोरी लागल पिरतियारे सांवरिया सँग बीर	४६६
माथ का इँडुलि मोरि भगो दधि मटुकि चोरि नन्द महर को कन्हाई कुँवर पेसो	२१७
मगमें गलबैयां देत डार पेसो चंचल चपल छैला नँदकुमार गल बैयां देत डार	२२०
मोरी मटुकि पटक दइ नँदकुमार मोसे करत लँगर नित नई रारि ...	२२०
मुहिका ना सतावो श्याम अनोखे छैलारे	२२३
मोरे पिया सों बनत न करुं कौन यतन कैसे मिटव जिया की सखि	

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
करक कसन	२२७
मुहिंका ना सुनावो श्याम बँसुरिया रस भरीरे	२२६
मुख मयंक छबि अनूप आली जोबनवाली ग्वाली गोरे गोरे गात अति सुहात उमरवाली	२३६
माने न नँद को कान्ह ऐसोरी निपट नदान	२४२
मोसे बोलो ना जाओ जी मनमोहनलाल नाहिं दे बैठूंगी गारी तुहिंका अपने जसे पै	२४३
मैंका नाहीं भावे तोरी ऐसी लँगराईरे डगर चलत मोसे करत ढिठाईरे...	२४६
मोरा मन बश कीन्हो सुन्दर नारि देखी ऐसी श्यामली सुरत मतवारे नैनवा नया रंग सों निहार जादू टुनवां मोहनियांसी दीन्हीं कछु डार	२५२
मोरारे बिदिशवा सैयांरे चैन नाहीं पड़े दिन रतियां	२५१
मानो मानो जी मोरी बैयां न मरोरोरे मुरकी जात बँगरी छोंरो छोंरोरे	२५३
मुरारी कह तोरी रजा रही हूं वारी वारी तुम पर जान प्रान धन कहु पिय सच छल न बिरच प्रेमको परच तोरी रजा रही ...	२५४
मोरी नई चुनरिया मलक दई रे	२५६
मुख चूम चूम लीं बलैयां	२५६
मोसे मत बोलरे कन्हाई तुम्हरी दुहाई अभी यशुदा सों जाई कहि दूंगी ढिठाई मत बोलरे कन्हाई	२५७
मदनमोहन बिन दरशन स्रवतहि रहत दृगन प्रबल जलकर झरन ...	१७
मन मनशाकी काह कहत बलमा प्रानरती प्रानाधार जीवनप्रान प्रानन प्यारे हम तुम्हारे तुम हमारे समलियारे हारे	४८३
मोरी सुधि लिजिय बैलवाला होरी में	४७२
मधुबन श्यामगये जब सैयां भुलत न सुधि पल छिन तब सैयां नींद न आवत दृग कब सैयां	२५८
मो पति प्रभु तुम हाथ नाथ तुम कह चित धरो धरोरे	४८७
मोरे मारा नैन नजारा लगा जिया तीररे	२६१
मोहन मोसे आज सखीरी मगमें जोराजोरी आ अटकोरी ...	२६१
मतवारे तोररे जदुवाभरे दोऊ नैन	२६४
मदनलाल गोपीग्वाल बालगण विशाल	२६८
मचो मचो आली ब्रजमें फाग फिकुत रँग केसर केरे सरसे जुरे यूथ जुरे यूथ बीथिन बिहारें ग्वाला गोरी नँदलाला	२८६
माने माने नाहीं नँदको लाल छेंड़त नित ब्रजकीबाल वोतो ढीठभयो ढीठभयो निपट निडर रही लोचन न लाज	२७४
मोरी मग निरखत ठाढ़ो छैलरी निडर सखी ऐसो नँदको ढीठ ढोटा नदान मोरे पाछही पड़ो रहन नित	४०२

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय — पृष्ठ

मोरा नेक नज़र मन बश कीन्हांरे हां श्यामलीसुरत मतवारे नयन जादू टुनवा बशीकरन मोहनी सयन ४०७

मारत बान नैननकी सैन सखि भ्रकुटी धौं कमान पलक बान तान बेप्रमान बांकी बांकी तिरछी तिरछी बरछी नज़र घाइल करत ... ४०७

माटी के मोल बिकाय जियरा खरीदारो सनम क्यों लेते नहीं ... ४११

मोरीरे गगरिया फोरीरे नागरनटवा नटखट ऐसो ढीठ... ... ४१२

मोरारे बिदिशवा सैयांरे चैन नाहीं पड़े दिन रतियां ४१३

मोहन मोसे मग में लिपट गयेरे सो कीन्हीं बराजोरी मोसन जोराजोरी ४१३

मग डोलत मरोरी मोरी बैयां श्याम ऐसो ढीठ लँगरवा नागरनटवा... ४१३

मग चलत करत लँगराई रे सांवरो कन्हया ऐसो ढीठ अनोखो छैला चंचल चपल चुलिया मोरी मसकाई रे चलत करत लँगराईरे ... ४१४

मैं आज पनघट गई सखीरी श्यामसुन्दर मुहिं गरवा लगायो छीन छैल मटकी पटकी दैया मोरी ४१८

मैं का मत छेड़रे कन्हाई तुम्हरी दुहाई अभी यशुदासों जाई कहि दूंगी ढिठाई ४१६

मंदिर मुहिं जाने देउ महराज ४२०

मोसे बतियां करत छलबल की ढीठ ढिठाई नाहीं छांड़त छबीलो छैला बार बार बिनती बलब्रलाकी ४२१

मुखमयंक छबि अनूपआली निराली बदन मदन फवन दिपित दामिनि उजियाली ४२५

मोहिं मिलो सखी सुखना कह कहूं दुख अपना ४३५

मधवा मँगाऊं पिय अधारो सदन सिजिय सजूं सिधारो फुलबगिया सों मालिया सों फुलवा मँगाऊं गेंदा गुलाब बेला चमेली केतकी निवारी जुही मोतिया को हरवा गरवा डारो मुकुर मुख निहारो काको प्यारो लगत रूप यहिहै बदन थारो म्हारो ४४१

मोरमुकुटकी लटक छबिसनियां जियरा लुभाय लियो चितवनियां ४४५

मचलत श्याम करत ठनगनियां मानत ना सिखवत नँदरनियां ... ४४६

मैंका ना ऐसी भावे बराजोरी तोरी कान्ह कुटिल कन्हाई कैसी करत ढिठाई तैं तो नेक ना लजाई करे जिय नकवान ऐसी भावे बराजोरी तोरी कान्ह ४५३

माई लरजतरी म्हारा जीयरा बिन बालम बिकल रहत घरिपल छिनछिन उन बिन घन गगन आय छिन लाय बदरियां कारी कारी घुमड़त गरजत बरसत मिघवा ४६०

मो ओहन मुरलीहइह लखु सखि कहुँ बआजी इ मधुरि मधुरि धुनि लिया जिय बशकर १२

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
(य)	
ये निंदिया जा ढूंढ़ला पिया मोरा	२६३
यमुना तीर सुहावन गोकुल नगरि बिराजत पावन	३२६
या हरी तुम सांचे मनके मीता	३५१
येरी आजु आईरी अलबेली राधा रुकमिनजी हरि मिलन ...	४६
यह भ्रकुटी बंक कीधौं कमान वा श्यामबरनसी नागिनियां ...	६२
ये सखि मद पिलादे पियको आज हमरी सौं	८३
ये कान्हा तुहिं द्वार खड़ी टेरत एकजनी	११५
ये द्रुम द्रुम लता लता पता पता बेली बेली	१५८
ये बालमा तुमसोंरी मोरी अरज	१५८
यौवनवाली का बाँका जुबनवा परी	१७६
ये आली आली आज मैं पियाको पकर पायौं	१७६
यक चतुर नार देखो देखो वो आली ठाढ़ी फुलबगिया ...	१८०
यह साँवरे ललाने मेराजी लुभालिया	१८४
ये मैया मोरी अब ब्रज मैं न रहोंगी	१६६
ये लाला तोरी मुरली ने मन हरलीन्हा	२००
यहाँ कान्हा न बँसिया बजाया करे	२०४
यक नइसी नारि जोबन नवीन सैननसौं बान मारत प्रवीन गजकी चलत चाल ढाल शोभा सखीरी देख मोरे तन मनमें बस गइरे ...	४०६
यमुना कैसे जाऊं बीर मैं यमुना कैसे जाऊंरे	४१२
यमुना केर हनैबो तजु न नीको आली प्रबल बनमाली वाही डगरिया में डोलत रहतरी	४८०
यशुदा के कान्ह रुक्मिनि के प्रान मुकुटधारी मोहनी मुरतवारे सोहनी सुरत वारे बनवारी तोरी बलिहारीरे	४८६
ये एजू आयेरी नन्दकान्ह नये नये वेष किये मुरलि अधर धारे बजावत	५०६
(र)	
रहे हितकी लोभी मन मोर सखी रसिकनु कर बेगि बिकावत है ...	३१३
रघुबर रमापती रघुपति रघुबंशमणी रामरावरे राजीवदग राघव श्रीरामचन्द	३२१
रुनुक झुनुक चलत चाल अतिप्रिय रुक्मिनियां	३२२
रँगीले मदमाते नैना बांके कजरारे अरुनारे अनियारे न्यारे छबि छाके	३२७
रूम झूम बदरवा बरसन लागे जागे मोरेभाग	३३०
राम करै कहुँ नैना उरझैना	३३७
राम करै कहूं जीरा लगैना	३३८
राम करै कहूं नेहा जुरैना	३३६
रैनि गँवाय आये कहँ मनमोहन	३६१

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
रबिना करै हो वासों प्रीति	३६७
रँग रहे रँग मेरा वे मान मता सैयां	३७०
रँगीले रसमाते सलोने नैन	३७६
रखो लाज महराजाधराज जग जीवन यदपि दियोरे ...	३७६
रखो प्रभु शरण गहेकी लाज	३६३
रहत मोररे जियाको पियाको अँदेश	३६५
राजें राजें तोरे रूपनवीने रसिया तनु देहु बताई मोहिं किते कीन्हे किते कीन्हे बिवरण वेष तुम बड़े प्रवीने	२७३
रात उन बिन निंदिया मुहिं न आईरे	२६१
राखो राखो मोरा मान कन्हैया मानोजी मोरी इतनी बिनती छैल लूटो ना लूटो ना मांग लीजै दधि मोल तोरे बारी यदुरैया ...	२८५
री अलबेली मान गहेली मान हठीली नारि	४७
रँगीली बँसिया धुनि बाजरही सखीरी चलु देख कहीं व्रज कुंज महीं बँसिया धुनि बाजरही	४२६
रँगीलो माई ये ऋतुराज बसंत	४६
रात सपुन सखि दीन्ह दिखाई	४३२
रार करत नित नई नईरे मोसों मैंतो तोरी नगरिया में नारहिहौं	७१
रँग बरसावत आई आलीरी बांके बांके नैना बांकी बांकी भ्रकुटि बांकी बांकी चितवन बांकी बांकी सैन छबि छाजतरे	४४३
रात को बात पिया की सखी मोरे जियमें कसकरहीरे ...	८३
रात पियाने ऐसा जादू कियारे गोरी लूटा हमारारे बाला जोबन ...	४४४
रामरे कैसे धरों पग भुइयां गुइयां मोरी दरद करे करिहैयां ...	६२
रातसों पिय सजनी न आये सौतन लुभाये कल न परत उन बिन मुहिंका	४५६
राधारानी रुकमिन जी कृष्ण भगवान प्राणपति	६४
रसिकपन तेरो मैं सब बिधि हेरो	१०१
रंगभरे पिचकारी मदन मदमातोहि डोले	४१६
राधा रुक्मिणी रमण भगवाआआन जीवन प्राआणाधाआर काआन्ह	६
राधावर राधावर कहुरे ये ये ये पआप श्रआप तआप दहुरे ...	१०
राधारमण सुमिर मन मेरे तेरो सब कारज बनजाय	४६८
रात पिय बशभई सखीरी जोराजोरी मोरी बहियां गहिलइ ...	१४६
रे मोरे योगी आयो जाके गल मुंडमाल ओढ़े मृगछाल भस्म चिता की तन बिशाल	४७७
रँगलादेरे रँगरेजवा सब सखियन सों चुनरिया	१५७
रसिया कैसी बजाई बँसिया प्राण हरलीन्हो	२५६
रँगीले रसमाते गाते मुरली तान बजाते	१६२

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
रखौं कैसे प्रान तड़फ तड़फ उन बिन जायरे	१६६
रखबतियां कीन्हीं मोसे रात मोह्यो तन मन	१६८
रैनि गँवाय आये कहँ मनमोहन	१८३
रँगरेजवा यार मोरे सैयां से सारी मँगाय लीजै	२०१
राजत छबि शशि मुख सुन्दरसी मोरमुकुट दामिनि द्युति दरसी ...	२१३
राजीरे राजी रे मोरे आउ मोहन मँदिर महाराज अंकभर सोवैं हम तुम सिजिया पै दोऊ करसों करडार	२१४
रारि मत मोसे कर गँवार तुहिं बरजूं हूं मोहन बार बार ...	२१६
रात पिया की बाट तकत गइ बीत रैनि सगरी सजनी ...	२४२
रात पियाने मोरी तनक न मानीरे ऐसी बराजोरी जोराजोरी मोसे ... ठानीरे	२५२
रँगीले सैयां नेहाकर कियो बदनाम मिलत तुम नाहीं ये नीके नकाम	२५५
रीति प्रीति विछुरी जगमैयां रसिक करनलागे निठुरैयां ...	२५८
रसिया कैसी बजाई बँसिया प्रान हरलीन्हो उचटगई निंदिया सेजरिया न भावे मुहिंका श्रवन सुनत सुधि बुधि गइ हिराय गइ हिरायरे ...	२५९
रात उन बिन निंदिया मोहिं न आईरे	२६१
राजत मयंक भाल चिता भस्म तन विशाल लोचन रसाल व्याल जटा जूट गंग जाके	२६४
रँगलादेरे मोरी सारी रँगेरे तू रँगलादेरे मोरीसारी	३५९

(ल)

विषय	पृष्ठ
लँबर लँगरत निपट नाहीं मानत सखि डपट	३४६
ललना ललनी दोउ भूलत भूलन	३४७
ललिता ललि अबन तैंतो मैं तुहिं शिखोंरी	३५७
ललिता तनुगई न तोरी अबलौं लरकाई	३५८
लाये कस जिय धीर उन बिन एमोरी आली	३६४
लैदे कमरिया कारी कारी मुहिंका मैया	३७३
लँगरैयां सैयां काहे लँगरैयां सैयां काहे करे	३८२
लखत तोरे अब औरै ढँगरी	४००
लाड़िलिलाल लड़ैतो लड़ैती रँगभीने दोउभूलैं	४६
लागनियाँ मोसे लगाये कहँ छाये	५२
लालाकी लकुटिया मोरे को लंपटै लुकाईरे	५६
लोगवाजानै न मोहिं नेहा करूँगी मैं तोसे नंदललन	५९
लगन मोरे सैयां सों न सौत लगाउ	६८
लार भर बारि बदरवा मीत मोरे पियाको खबर कर आरे बरसा ...	७७
लागिरही लौ पियदरशन की घन बरसन परसन बरसन की ...	८५

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
लगन मोरी लागी हाँजी हो महराज	६५
लालन देखु न मानत तेरो	१०५
लागी सभा नृपकेरि भवन बिच	१२८
१ २ ३ ४ १ २ ३ ४ लालन लइ दधिचोर तोर सैयां मोर पति कैसे रहैगी बलमा ...	१३०
लखु माई मोहन को लरिकापन	१३४
लागी लागी पिरतिया न पारपरी	१५३
लगाई मोसे बाँकुरी प्रीति बावरी बनाई बिसराई	१६१
ललित छबि बाँकी बाँकी सैयां की लागे	१६३
लीजै दधिदान कान्ह जेतो मनभाईरे सखन खवाओ खाओ तुमहूं कन्हाईरे	४०५
लागो नेह लागनदे जागनदे भाग अपनो जागनदे परीआली कछुक दिन निबाहुकीजै हाव भाव रँग रस नीति रीति सील लीजै चितमें दीजै	४०६
लागा सो लागा मोरी जान अबतो नेह साँवरे से	१८७
लागी पियाके अँग ना जबसों ले आये गवना	२०८
लगोरी नेह अँखियाँ किशोरी मोरीसों। सुनोरी मोरी सखियां बिपति दिन रतियां	२०६
लागी लगन मोरी श्यामसों सुरतियां	२११
ललित मनोहर गात पिताम्बर अति सुहात मस्तक मलयागिरि कीट मुकुट शिर चन्द्रकलाकर	२१३
लगन मोरी तोसे लगीरे गोपाल मेहर कर मिलजारे दीनदयाल ...	२१७
लँगर लँगरत नित गोकुल बीच कसपरी कान्हकी बानि नीच लँगरै नित गोकुल बीच	२२०
लागा सो लागा मोरी जान अबतो नेहा सांवरे सों	२२६
लाज तुहिंका निडर न आईरे	२३२
लगाकर दिल हमसे सनेही श्याम तुमने खूब निबाही यह प्रीति भली	२४३
लखो लखो सखी कान्ह तो नाहिं लखत कहूं यमुना निकट ठाढ़ो परी सखी परीसखी आवत न होय सब रहियो हुशियार ...	२७५
लागो लागो सखी ऋतु बसंत बागन उपबन चहूं दिश फूलरहे फूलरहे सुमन नियारे लाल पीले श्वेत कारे	२७७
लँगर लँगरो न बतियां मोरी मानोरे डगर चलत मोसे ठठोली न ठानोरे	४३०
लागो सावन मास सुहावन चलु सखि झूलें झुलवा	४४६
लाड़िली झूलत मानकिये चिबुक चुटकी धर अधर तट झूलत मानकिये	४६२
लइ लइ मुरलि चुरय किन सखि हरिकी ईईई पकर बुलाओ सखिअन ब्रज घर घर कीईईई	८
लँगर डगर चलत सखि नटखट नटवर दधिकी गगर गेरी गोरी कियो	

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
अति अनरथ अग्र	८
लगन लगाई सो लगाई अघकर्म बीच वृथाही गँवाई बयस सारी तीनपनकी	४६१
(श-ष-स)	
सुघर सुघर रँग रसभरी रे बनठन बनिआई अलबेली आली ...	११६
शुभ मुहूरत शुभलग्न घरी धनधन भाग अरु सुहाग जागे ...	१२१
सैयां बिनु सूनीरे सेजरिया डरावे भई निशि नींद हरामरे हो ...	१२६
सखीरी मोरे नैना लोभी लागे	१३२
सैयां मोरी नजरिया तुमतो आओना	१४३
सावन उमगावन मन बरसन को आवत घन ऐसी ऋतु ...	१५६
सनद मोरी आज लगन भई पिय सों मिली रतियां	१६१
सब रँगन रँगलाई सब रँगसों पै मैं रँगलाई तोरा	१६४
२ ३ ४ १	
शुभ दिन (दून) मुरली मुकुटवारे आज दरश दीन्ह	१६७
सनद जात कदर के पास सब रँग अलम लख सदा	१७०
श्याम अबतो यह प्रीति निभाये बनै जो करीसो करी	१७२
सकल सुखनिधि भक्तहितकारीरे	१७५
सजन सखि सौतन घर गये मोर लगन लागी उनसों हमरी डोर ...	१७६
सुरत लागी जबसों माधवसों बिसरगये सुख सकल तबसों ...	१७७
सुनत कलपरी न धुनि मुरली प्रबल बिरहा सों आतुरली ...	१७७
सजन बिन तरसत जियरा मोर	१८०
सखीरी श्याम लँगरावत है बराजोरी	१८३
सजन बिन सिजिया न सुखदई रे	१८६
शुभ घड़ि शुभ दिन आज कुँवर जायो नँदरनियां	१९६
सांवरा सलोना बंशीवाले कन्हैया ने मोरा मन बशकर लीन्हा सोहनी सुरत मोहनी मुरत जिय मोहा	२०३
सैयां तोरी बतियां घतियां सों मैं गइ हार अब ना बोलूंगी तोसों हूंगी जो असल नारि	२०७
श्यामसुन्दर मन बसो राधा रुक्मिनिजी प्रानाधार सर्व्वदा मोरे ...	२०८
श्याम सुघर छबि पर बलिजैयां नैन कमल चितवन मन भैयां कजरा की रेख देख हुलसैयां	२१२
शंभू दरश दिखादो हरि को शंभू दरश दिखादो हरिको ...	४८६
सजन बिन तरसत जियरा मोर	२२४
सजन बिन सिजिया न सुख दई रे न आवे निशि निंदिया नैननदी ननँदिया	२२५
सखि छाये बदर अँधियारे कारे गोरे बिजुली से उजियारे गरज गुहारें तानानातोम् तानानादिर दिरना दिर दिरना दानी थरर थोम्त ताना-	

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
नारे तानानारे	२२६
सखीरी मुहिंका निरदइ निंदिया न आई रे रात बिरहा बिथा सों रही बिकल न कल जिय पियकी मग हेरत रैनिया गँवाई नखत गिनगिन	२३१
शिव सों न देव दूजो दयाल	४८७
सखि कवन भवन गवन कीन्ह प्यारे उन बिन नहिं देतचैन बैरी बिरहारे	२३३
श्याम सलोने की बांकी अदा पै फिदा दिल को भावे न कुछ भी अली	२४२
सैयां न आयो सारी रात सखी मोरारे	२४७
सैयां ने गँवाई कहूं रात काहू सौतिन की सेजरियारे गँवाई कहूं रात...	२४७
सुनरी ननँदिया मोरी बात सैयां बिन मुहिंका ना सुहात मुहिंका नाहीं भात कछूरे दिन रात ननँदिया मोरी बात	२४७
सोयेरी ननँदिया सारी रात सैयां सौतन के साथ सौतनके साथ सोयेरी सारी रात ननँदिया सारी रात	२४८
सुन्दर श्याम सलोनारे कियो चितवनमें कछु टोनारे	२५४
साजन मुहिंका चुलिया लादे छतियन मद उमँग आयो यौवन रस रँग चुआत छवि दरशत	२६०
सनद गुनदा समलिया मोर	४७४
सुनो सुनो माई तुम्हरो कान्ह मांगत दधि जोबनको दान मोसे माने नाहीं माने नाहीं हटक हुँकारी ऐसो निडर मुरारी	२७५
सजे सजे समूह व्रजराज बनाये बहु भांतिन रँगीले रूप एरी सखी एरी सखी खेलें घनघोरी होरी एक एकसोंरी	२७५
सुनो सुनो मोरी बात छैल मजा क्या दधि लूट चाखनमें हानि नाहीं मोरी कछु जामें मानो थोड़ो गिरपड़ोई दहिया	२७७
सीखे सीखे नये नये ढँग श्याम छलन आये मोसे चतुराई कर मैंतो जानूं मैंतोजानूं छल तुम्हरे सकल हटो चलो जाओ ...	२८०
सुनो सुनो मोहन मोरी बात छलत काहेको बिरच छल बल लूटो चाहो लूटो चाहो माखन हमारो तोरी जानूं सारी घाती	२८२
सघन बन फूले तरु नये नये दौना मरुवा गेंदा गुलाब बेला चमेली जुही मुतिया हिना हजारा केवड़ा सुगंधदार	४०८
सांची सांची कहो बात कासों रात केलि कीन्हीं कौन भौन जागे प्रेम पागे को सखी के संग	४०६
सब जग जग जन जागोरी तुम जागो मोहनलाल	४०६
सैयां ने गँवाई कहूं रात काहू सौतन की सेजरिया	४१६
सैयां मोरी मानले बतियां	४१६
सौतन बिलमायेरी हमारे सैयां आज	४१७
सोयेरी ननँदिया सारी रात सैयां सौतन के साथ सौतन के साथ	

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
सोयेरी सारी रात ननँदिया सारी रात	४१८
सुनिये ननँदी यकबात अरी दधि दान की रीति नई सँचरी ...	४२३
सखि लखु नये ढँग नटनागरके छिप जात कुंजनमें अंकभरके ...	४२७
सदा रँग तेरोही मनमानो	४३७
सेजपर सोइये श्यामा श्याम	४३९
सुन्दर सावनका महिनवा चलु सखि खेलैं काजरी ...	४४७
सैयां सोवै ना सेजरिया सावन योंही बीतो जाय	४४७
सखीरी मुहिंका निरदई निंदिया न आईरे रात बिरहा बिथा सों रही बिकल न कल जिय पियकी मग हेरत रैनियां गँवाई नखत गिन गिन	४५१
सप्तस्वर प्रकट कीन्हे सासारेरे गागा मापा धानीसा... ...	४५४
श्यामसुन्दर की मधुर हँसन चितवन जिय बसगईरे आज चितवन जिय बसगईरे	४५६
सकुचि प्रिय पियको निरख सजनी धरकगई छुतियां लजतभई अँखियां	४५७
सखि श्याम पनघट की मग बिच ठाढ़ो कैसे के जाऊं पनियां भरन प मोरी आली	४६१
सलोनी राधे झुलवत ललिता श्याम	४६१
सखी आज मैं पनघट कैसे जाऊं मोरमुकुटवारो लँगरैगो हमसों ढीठ	४६३
सैयां तो सौतन के पाले परेरी मुहिं भावै न सावन की रतियां राम...	४६७
शुभघरी लगन मुहूरत मयंक योग योगिनी अभद्रा सुखदा सदा तिथी बासरे पाक	४६८
सोहनो सितार सुर बहार स्रोद सुर शिंगार सहनई सरंगी सीठी मीठी साज साजन मैं	३७
श्यामरो सलोनी भोरी भोरीसी गोरीसी राधा जोरी रँग रूपसोंरी बोरी पोरी पोरी है	४०
श्यामा की सुरतिया गुइयां मोरे मन मानीरे	५७
श्याम सनेही मुरलीवारे कँधैया सों जीरा लगाय हारीरे ...	६७
सुन्दर कामिनि रूप अनूपम मदन भरी मोहनि चितवन चित ...	१२०
सैयां बहियां मोरी छांड़देरे बतियां मोरी मान	१४६
शिव शिव शिव भजरे ये ये ये ये ये जगतजननि उमहि सुमिरु ...	१०
सुमिरण कर अरे मन राधा कृष्ण रुकमिणि पद जगतजननि मनधन श्रीई मआधो ओ	१३
श्याम सलोनोरी छबि मनोहर नँदको लआड़िलो ओ ओ ओ ओ ओ...	२
षड़ज शिष वृष ऋषभ छाग गँधाआर मध्यम श्टगाल कोकिल पंचम धैवट तुरँग गज निषाआद स्वर	५
साअआंगीईत सुखद सुख साआर लसत चाआरु भेयेद नीईके चाआरि	

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
गश्रान तऊंत्र कृइत्य निरत कश्रारी हश्राव भा श्राव विकट विकट तीक्ष्ण खय कश्रारी	६
सियवर सुन्दर चरन निशिदिन सुमिरिय मन कलिमल सकल शमन अखिल दुख दल दलन	७
श्रवण सुनत सखि मुरलि मधुरि धुनि सुधि न रहत कछु असन कर बसन कर	२१
सरगम रागिनी रामकली	३०
सरगम राग भैरव	३०
सरगम रागिनी भैरवी	३०
सरगम रागिनी अलहिया	३१
सरगम राग मालकौश	३१
सरगम राग हिंडोल	३१
सरगम राग हमीर	३२
सरगम राग पमन	३२
सरगम रागिनी भैरवी	३२
सरगम रागिनी धानी	३२
सरगम रागिनी खम्माच	३३
सरगम रागिनी खम्माच	३३
सरगम रागिनी सोहिनी	३३
सरगम राग गौड़ सारंग	३३
सरगम राग बिहागरा	३४
सरगम राग पमन कलयाण	३४
सरगम राग बिहाग	३४
सरगम रागिनी मियांकी मलार	३५
सरगम राग श्री	३५
सरगम राग अड़ाना कान्हरा	३५
शिवसुत बसहु निरंतर मेरे सेवत सदा चरण में तेरे ...	३२८
सखिरी कहूंका निठुराई श्याम की	२६१
सैयांरे होरी आई घर आजा अमरैयन की डार पपीहा बोलन लागेरे	२६६
साधन मन लघुता नेमले निरखु	३०२
सज्जनवारे तैंतो मोसे काहेको गुमान करे	३०२
सजन बिन कछु न मोहिं सुहात	३०८
साजन सँगाती हेत शंकर मनाती	३१६
सुत मत ऐसी मुखसों उचार	३२२
सारीदे मँगवाय बजरवा सों बजजवा के बीरसों मुहिका ...	३२५

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
सांवरी सुरतवारे सांवरिया मोरे मीत मुरारी मिलजा अबतो मुहिं देर न कर	४७९
श्रीवृन्दावन सुखद स्थल रुचिर रमणीक मुक्तिधाम	३३३
स्वामी इतनि बिनति मोरी मान जान जन दया दहेज दे मुहिं ...	३३४
सुखद सलोनो यशुदाको छैल बांको सखि सदन सकारेही दुआरे आन झलको	३३५
सजनी सुजान श्याम सों कयहि विधि सों मिलब हो	४८५
सोहनि सुरत मोहनि मुरत मोहि लीन्ह सांवरे	३४१
सैयां पैयां अपनि गरज परब तब बताऊँगी	३४१
सागरा गई न गागरा हिरागयो घरा	३४२
सैयां सौतन के बुलवा मैं न सहूंरे	३४३
सकल गुन गोबिन्द की बलिहारी	३५४
सखि सैयां की सुरतिया जियरा हरे	३५५
शीश भुजंग गंग की तरंग रमणीय	३५५
शीश सुरसरिता हरिता अघन गन	३५६
सलोने तोरि श्यामली सुरतिया मोहनि मुरतिया मोरे मन भाईरे ...	३६५
सलोनी तोरी कौन परी यह बानि	३६७
सैयां छांड़दे अपनि लड़कैयां परूं पैयां परूं पैयां बलि बलि जैयां ...	३६८
शुभ घड़ि शुभ लग्न मुहूरत साधरी आई पिय मिलबे को सखी आज	३९०
सैयां उचित न ये लँगरैयां ऐसी काहे करत निठुरैयां	३९२
सदा मैं तो शरण तोरी ब्रजराज	३९३
समाये इन नैनन बिच मोरे श्यामा श्याम सदा रहियोजी ...	३९६
सामने न घण आंदाबे सैयां घरना बसदा मांडा	४७६
सांवरिया सुन्दर कन्हाई जन्म लियो यशुदा गृह गोकुल	३९८
सजन मन सम्हरन दे मेरो तब देखूंगी तेरो छल बल	४००
सुन्दर कामिनि रूप अनूप मदन भरी मोहनी	४८
श्रीगोकुलचंद अनंद कंद दुख द्वंद फंद मेरो दूरकरो	६३
सोहत मयंकमुखी शोभा निधि प्रबल तेज ऐसी अरुणारी छविहारी	६३
सिजिया कैसे आऊँरे सिजिया कैसे आऊँरे हो प्यारे बलमा मैं ...	६६
सांवरी सुरतियावारे मुरारी सों नेह लगाय हारीरे	६६
सजन तोरी छलबतियों सों गई हार	७१

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
सखीरी देखो नाहीं मानै छैल कन्हैया करत बराजोरी ...	७२
सुन एरे सँवरिया कान्हरे मुतियन की माल नरे नरे पहिरै ...	७४
शादहो शादीहो आवादी मुबारिकबादी	७५
शुभ घरी लग्न मुहूरत सायत योग नक्षत्र ग्रह व तार ...	७७
सुमति गति मोरी कीजै नाथ	८२
श्याम सनेही सों लागी पिरतियां	८५
समलियाने मोंहिका जगायो सोवतिसों	६१
सबन सादा रँग नया रँग राचै छिन बूँदरियन	६१
सँवरिया मुहिंका बसंत त्रास बरन लागो	१००
सबही को समझत नारिप्रपंची तू	१०२
श्यामरा निरदई सखीरी मैं तो वाकी नगारिया में ना जैहौं ...	११५
सुनरवासों मोरा लादे कँगन यहि बेर	११७
सजन कासे मनाऊं मन मनशा की रीति	४७५

(ह)

विषय	पृष्ठ
हरि सों कहो दुहिजाय मोरी गैया	२०१
हमरा क्या किया निस्तारा	२०७
हो हरी तुम सांचे मनके मीता आन मिलो जन कोरी ...	३२३
हमारा रँग दिया तन नँदलाला	३३१
है घट में घट बाहर भीतर जाने बिना नहिं होत मिलाप है ...	३३३
हमारा मन लैगयो मुरलीवाला बँसुरिया में का पढ़ जादू सा डाला	३३६
हमारे दग रावरे नैन बसे	३३७
होजायगा झगड़ा हमारा तुम्हारा	३४६
हमसे तुमसे न होगा गुज़ारा रे	३४६
हे हितकारी नेही शीलधारी सुखारी बनवारी	३७८
हूं चेरी तेरी चरनन केरीरे सांवरिया	३८०
हूं तो चरण शरण नाथ क्यों बिसराये जात साथ	३८६
हर बार हमारी हानि करत तुम्हरो सुतरी	४२
हमसों सगाई कर सौतन मिताई पिय जरवर जाय तोरी ऐसी पिरातिया	५८
हमसे ना करो करो ना ऐसी प्रीति	७०

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
हम से तुमसे बनाउ बनै ना निभै मा घरी एकहू	७४
हरषि हरषि झूलत दोउ रसिक रँग हिंडोलना	७६
हमरो सँदिशवा सजनी सैयाँ सों जाय कहियो	६७
हमका काहूपरी जो हम पग परसैं बिनती करैं तिहारी ...	११२
हिरनाकुश कुरूप कुल कंटक सहिजा दूत लिये सँग आयो ...	१२८
हाय देव हाय दैव कैसो कीन्हो बिगार	१४३
हीया मंशाके बादल छाये	१४४
हम से प्रीति लगाय सैयाँ सौतन घर गये गये रे	१८८
हमसों छल बलकी बतियां घतियां कर कहाँ रहेरे	१८८
हमारे स्वामी गोबिंद नाम अधारा	२०१
हित शुभ गुण को अंश प्रपंच न जाने गुणको अंश	४७४
हाथ तिहारे कौन बिकै जो बिकै सो बिकै न बिकूं मैं बिकाये ...	४७४
हां चटक मटक दधि की मटुक पटक दइ मुरारीरे	२०२
हां मदनमोहन मुरलिवारे पर तन मन वारीरे	२०२
हां बम्बम्बम्बैजनाथ शंकर बम्भोलारे	२०३
हमसों करो न कान्हा ऐसी छलबतियां बसत जाय औरन ढिग रतियां	२११
हरि अनरीति करी सखि सोंरी	२१३
हमसों तू क्यों झुर झुरजात	२२१
हो प्यारे सैयां नेक नजर भर निरख इधर तू जो मोरे कारन ...	२३४
हमारी बैयां ढीठ लँगर न गहो डगर मैयां रारि करन का चहो ...	२३३
होगा वोही था वोही था वोही है वोही है वोही है वोही है वोही ...	२३८
हरबार हमारी हानि करत तुम्हरो सुतरी	२६५
हिरिये हरि तनु जन ओर छोर बेदरदगरी	२६६
होवो होवो सखी शरन श्याम नशै जो नित की झिगर झिझटहू मिलै आली मिलै आली नेक जिय चैन जामें लाज न तो जाई ...	२८८
हटो हटो काके निडर छैल औचक अटकत मगमाहीं मोसे डरो नाहीं डरो नाहीं काहू को अनारी ठाढ़े चूनरी को थाम	२७६
हटो हटो मोहन रसिया देखे से तोहिं जागत मदन तन प्रीति बाढ़े प्रीति बाढ़े मोरे मनमाहीं ऐसी मूरति तिहारी	२७०

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषय	पृष्ठ
हटो हटो छांड़ो डगर कान्ह ठठोली कर रारि बढ़ाई घरजाओ घरजाओ नँद के कन्हाई मोसे करो न ढिठाई...	२७०
हटो हटो जाओ जाओ डगर मोरी छाँड़ोरे काहे को घूंघट पट उलट उघारोरे	४३०
हँ चलुरी जहँ गोरी खिलारी मुरारी रहत है	४४६
हमसन करत पिअरवा काहे रामा ना हरी	४६८
हमरि तुम्हरि न बनब मआधव तुमतो अपन मन के मउजिक नइ सवत नितप्रति करत मानोना	१८
होरियां खेल के सांवरिया दइ बावरियासीहि बनाय	४६६
होरी में गोरी चोरी ना होरी में	४७१
होरीमें जोराजोरी ना होरी में	४७१
हमारा सांवरा सरताज	४८५
हमरे श्याम भये मधुबनियां	४८४

॥ इति ॥

ललनसागर का निर्णयनिरूपणपत्र ॥

सर्व्व सुमति सभ्यजन व कविकुलशिरोमणि व सकलगुणमंडित कुल पंडित व समस्त संत सज्जन महाशय अभिन्न प्रिय वर्गोंको ज्ञात और विख्यात होगा कि भारतवर्ष की समस्त विद्याओं में यह नाद आदिविद्या कैसी है जिसको कि समस्त सुरासुर कवि कोविद महीसुर नरेन्द्र मुनीश्वरादि अखिल जगत्जीव भी अमित आदर देते चलेआये हैं और इतना आदर योग्य है कि देखो सामवेदके मन्त्रमात्र इस गानशास्त्र की रीति से गाये जाते हैं फिर ऐसा कहा भी है कि आदि नाद पश्चात् वेद तो इस कथन से भी सूचित होता है कि नादही वेद आत्मा है कि अपार संसार के व्यवहारों को नादही सूचित करानेवाला है और फिर इस नादही विद्या में वह प्रबल सुखदायी शक्ति है कि सरल सुगमही परिश्रम से परब्रह्म परमात्मा में लौलीन कराय आवागमन से छुड़ाय भव दुखदहाय मनुष्यमात्र को मोक्षपदवी का देनेवाला है ॥

यह नाद अथाह देवविद्या है जिसका कि पारावार देव मुनि महात्मा नहीं पासक्ते हैं फिर योगीराज देवन के देव श्रीमहादेव जी (व) विज्ञानेश्वर विज्ञानरूप श्रीविष्णुभगवान् (व) षोड़शकलावतारी गिरिवरधारी श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् (व) जगज्जीवनसुबुधवानी दयानी श्रीमहासरस्वती महारानी (व) धर्म्मधुरीण नीतिनिपुण सुकृतिसिन्धु श्रीभरतजी महाराज (व) मर्यादापुरुषोत्तमावतारी संसारी सुखकारी श्रीकौशल्यानन्दनस्य पदपंकजसेवी अंजनीकुमार श्रीहनुमान् बलबुद्धिनिधान (व)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चतुर्मुखधारक सृष्टिसजात्मज देवऋषि श्रीनारद महाराज (व) कुशलकलानिलय श्रीकलानाथजी (व) सुमतिसागरा श्रीसोमेश्वरादि गंधर्वादिक इस नादनिरूपिणी सांगीतविद्याके पुनीताचार्य्य हैं जिनके कि निर्माणिक अनेक मत इस संसार में अपार रीतिसे गानविद्या के यावत् भेद राग रागिनी ताल स्वर वाद्य नृत्य भावादि के हैं सविस्तारणीय प्रचलित थे देखो प्राचीन काल में यह गानशास्त्र कैसा माननीय और गुणगणनाओंमें गंभीर था परन्तु हा अब कलिकालमें इसभारतवर्षका सम्पूर्ण साङ्गीत केवल नकटे दादरों पर आरहा है हाय जिस नाद ध्वनि स्वरालापमात्रही से पशु पक्षी तक विमोह को प्राप्त होजाते हैं और देवता तक वश में हो शीघ्र प्रसन्न होजाते हैं तिस विद्या का हाय हमारी आलस्यरूपी मूर्खता से ऐसा लोप होगया है कि इस पृथ्वीपर हम मनुष्ययोनि पावने के रसानंद को नहीं जानसके इस नरतनको सुफल भी नहीं करसकेहैं सो कारण है कि इस कलिकाल के राजाओंने केवल वारवधू चन्द्रमुख की चाहना व ग्राहकता मुख्य समझ कर इस नादविद्याको ऐसा निरादर कररक्खाहै कि किसी गुणी की गुणग्राहकता करना तो दुर्गम दुस्तरहै उसकी बात तक नहीं पूंछते अपने धनोन्मादही में भुलाने रहते हैं तो फिर गुणीजनोंके गुण की वृद्धि कैसे होवै जो कुछ कि उनके मनकी उन्नति है शनैः शनैः ऐसे २ दुर्भावों को देखकर शान्त होतीजाती है यही विद्या दिन बदिन लोप होजाने का हेतु है ॥

महाशयो ! अब हम इस गानविद्या की विलक्षणता और सुन्दरता सूक्ष्म रीतिसे लिख दिखलाते हैं ॥

विदित हो कि गाना बजाना नाचना और बताना इसके समु-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चय को सङ्गीत कहते हैं प्राचीन पूर्व्वकाल में भरत, हनुमत, कलानाथ और सोमेश्वर यह चारमत कोई २ शारद, शिव, भरत, हनुमत यह चारमत और बहुत से लोग शिव, शारद, नारद, गंधर्व यह चार मत सङ्गीतके मानते थे इन आचार्य्यों ने इस गानशास्त्र के समुच्चय को सप्ताध्यायों में विस्तृत किया है ॥ यथा ॥ (१) स्वर (२) राग (३) ताल (४) नृत्य (५) भाव (६) कोक और (७) हस्त ॥

पूर्ण प्रकार से गायाजावे उसे सङ्गीत कहते हैं धातु और मातु संयुक्त सर्व्व गीत होते हैं ॥ नादात्मक धातु और अक्षरात्मक मातु कहेजाते हैं गीत यन्त्र और गात्र विभाग से युगल जाति के होते हैं वीणावेणु इत्यादिकों से गायाजाय वह यन्त्र और कण्ठ से गाया जाय वह गात्र गीत गिने जाते हैं, गीत निबद्ध और अनिबद्ध दो प्रकार के मानेजाते हैं जो अक्षरों और गमक के नियमों से रहित हों उन्हें अनिबद्ध और ताल संयुति गमक युति अक्षर रसादि के नियम सहित हों उन्हें निबद्ध कहते हैं और प्रबन्धकी रीतिसे यथा शुद्ध शालग और संकीर्ण इन भेदों से गीत तीन प्रकार के निर्माणे जाते हैं ॥ शुद्ध के इक्कीस भेद हैं ॥ यथा ॥ १ । एला । २ । शोध्यभवा । ३ । पाटकरण । ४ । पञ्चतालेश्वर । ५ । शतरुद्रतालकौ । ६ । कैरात । ७ । स्मर । ८ । चक्रपाल । ९ । विजया । १० । गद्य । ११ । मद्य । १२ । त्रिभंगी । १३ । टेंकोवर्णपुट । १४ । सर्गपुट । १५ । द्विपदिका । १६ । मुक्तावली । १७ । माहका । १८ । लंबु । १९ । दण्डक । २० । और । २१ । वर्त्तनी ॥ पुनः इन समस्त गीतों के छः अङ्ग हैं ॥ यथा । १ । पद । २ । तान । ३ । विरद । ४ । ताल । ५ । पाट । ६ । स्वर ॥ अथ ध्रुवक, मंडक, प्रतिमंडक, निसारक, वासक, प्रतिलाभ, एकतालिका, यति,

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भूमरो यह नव शालगके भेद हैं॥ और चैत्र, मंगलक, नगनिका, चर्चा, अतिनाट, उन्नवी, दोहा, बहुला, गुरुबला, गीता, गोनिका, हेम्ना, कोषी, कारिका, त्रिपदिका, अधा यह षोड़श संकीर्ण के भेद हैं॥ गाना बजाना दो प्रकार का होता है। (१) ध्वन्यात्मक (२) रागात्मक॥ रागात्मक चारि प्रकारका होता है॥ यथा॥ स्वर प्रधान अर्थात् स्वरालाप में तालकी मुख्यता का अभाव॥ दूसरा उभय प्रधान जिसमें कि ताल और स्वर दोनों का सुघरापा रहे॥ तीसरा शुद्धता प्रधान जिसमें कि राग का रूप शुद्ध रहे चाहे स्वरों में माधुर्य्यता हो चाहे न हो॥ चौथा माधुर्य्य प्रधान जिस में रागांग चाहे शुद्ध न भी रहे परन्तु माधुर्य्यता रहे॥ सप्त स्वर इन इन जीवों के शब्दों से अनुमान किये गये हैं॥ यथा॥ १। स्वर षड्ज (मयूर)। २। ऋषभ (गऊ)। ३। गान्धार (बकरी)। ४। मध्यम (क्रौंच)। ५। पंचम (कोकिल)। ६। धैवत (अश्व)। ७। निषाद (हस्ती) अतः नासा, कण्ठ, उर, तालु, जिह्वा और दन्त इन छः स्थानों से जो उत्पन्न हो वह षड्ज। (ऋषीगतौ) स्वर की गति नाभि से शिर तक पहुँचे उसे ऋषभ। गन्धवाही वायुकी नलिकाओं में जो स्वर पूर्ण हो उसे गन्धार। फिर वह स्वर नाभितक प्राप्त हो तो उसे मध्यम। पूर्व्वोक्त पांचो स्वरों को पूर्ण करै या पञ्चम स्थान मुर्द्धातक पहुँचै उसे पंचम। (धयति स्वरान् इति धैवतः) पंचम के आगेभी स्वरों को खींचै उसे धैवत। (निषीदन्ति स्वरा अस्मिन् इति निषादः) जिस में जहां स्वरोंका विरामहो अर्थात् जिससे ऊँचा और कोई स्वर न लगै उसे निषाद कहते हैं॥ स्वरालाप के वास्ते इन्हीं सातों स्वरों के प्रथमाक्षर॥ यथा॥ स रि ग म प ध नी यह वर्ण नियत हैं सप्त

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

स्वरों के तारा, उदारा, मुदारा यह तीनि ग्राम मानेगये हैं तारा ग्रामका तो पातालखोक में उदारा ग्रामका मृत्युलोक में और मुदारा ग्राम के स्वरों का बर्ताव स्वर्ग में प्रचलित है सप्त स्वरों की एक सप्तक भी कहलाती है और सप्तस्वर नामक तीन ग्राम हैं॥ यथा॥ षड्ज ग्राम, गन्धार ग्राम और मध्यम ग्राम और सात स्वरोंकी इक्कीस मूर्च्छना होती हैं मूर्च्छना वह पदार्थ है जोकि षड्ज से ऋषभ तक पहुँचने में जहां स्वर बदलैगा वहां लगै यह तो हनुमत मतका वाक्य है और स्वरोंके अलाप में गलेका कँपाना यह भरत मतके मतों से मूर्च्छना मानीजाती हैं और अन्य मतों में ग्राम के सातवें भागका नाम मूर्च्छना है॥ यथा मूर्च्छना नामानि॥ ३॥ अथ षड्ज ग्रामकी मूर्च्छना॥ ६॥ यथा॥ १ ललिता २ मध्यमा ३ चित्रा ४ रोहिणी ५ मातङ्गजा ६ सौवीरा॥ गान्धार ग्रामकी मूर्च्छना॥ ७॥ यथा॥ १ रौद्री २ ब्राह्मी ३ वैष्णवी ४ स्वेदरी ५ सुरा ६ नादावती ७ विशाखा॥ मध्यम ग्रामकी मूर्च्छना॥ ८॥ यथा॥ १ पञ्चमी २ मत्सरी ३ मधु ४ मध्या ५ शुद्धा ६ अन्ता ७ कलावती और ८ तीव्रा इन्हीं मूर्च्छनाओंका जहां शेषमें विस्तार होताहै उन्हें तान कहते हैं॥ तानें उञ्चास कोटि हैं इन्हीं में स्वरों के मेल से कूट तानें होती हैं और स रि ग म प ध नी इन सात स्वरोंके स्वरूपसे और १२ रूप भी इस रीति से मानेगये हैं॥ यथा॥ षड्ज, पंचम, समान, ऋषभ, गान्धार, धैवत, निषाद, कोमल और अतिकोमल और मध्यम, तीव्र और तीव्रतर, परन्तु अब आजकल सात स्वरों के रूप यही प्रचलित हैं॥ यथा॥ षड्ज, पंचम, समान, ऋषभ, गन्धार, धैवत, निषाद, उतरी और मध्यम, कड़ी इन्हीं रूपों का

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रचार है और सप्त स्वरों में २२ श्रुतियां हैं श्रुति वह वस्तु है जो स्वरों का आरम्भ करती है और सूक्ष्मरूप से स्वरों में व्याप्त रहती है अथ श्रुति अनुमान ॥ यथा ॥ ४ षड्ज में, ३ ऋषभ में, २ गन्धार में, ४ मध्यम में, ४ पंचम में, ३ धैवत में, २ निषाद में, यही २२ श्रुति हैं और स्वरों का कोमल, अतिकोमल, समान, तीव्र, तीव्रतर, हर रीति से रागों में बर्ताव किया जाता है और जहां सूक्ष्म और स्फुट स्वर लगते हैं वह काकली कहलाते हैं जीवमात्रों का मनरंजन कर उमंगरूपी प्रफुल्लता को बढ़ावते हैं इससे ही उन निर्माणिक स्वरोंके अनुमान को रागसंज्ञा कहते हैं ॥

अथ अलापमाप ॥

जैसे कि स्वर शब्दों के प्रथमाक्षर स्वर साधनाके हेतु नियत किये गये हैं वैसेही रागरूपादर्श (व) रागांग दृढ़ करने के ताईं अलाप नियत है त ना रि इत्यादि यह अक्षर माननीय आचार्य्यों के नाम यथा हनुमत से त, नारदसे ना, शारदा से र, लेकर अलापते हैं ॥ इसे अलाप कहते हैं ॥ अथ ताल हाल महादेवजी के तांडव नृत्य का ता और पार्व्वती के लास्य नृत्यसे ल लेकर ताल शब्द बना है व तल नाम हाथकी हथेली व पैर के तलवेको कहते हैं इसीसे ताल शब्द कहा गया है क्योंकि हाथ पैर सेही अक्सर ताल दियाजाता है लयके अंगके शुद्धरूपका प्रकाश करनेवाला तालही है और सूक्ष्म से सूक्ष्म व बड़े से बड़े गति की चाल के काल को लय कहते हैं जैसे कि एक गिरह भरकी लकीर खींचने में जो कुछ कि समय व्यतीत होगा वह तो लय और काल के सूक्ष्मसे सूक्ष्म व बड़े से बड़े विभागों के नियमित से नियमितान्त बिन्दुके अनुमानका ज्ञान करावनेवाला ताल है

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तालों के बनाने में प्रथम तालसे दूसरी तालके नियमित कालतक प्रायः त चारि मात्राकी कल्पना कीजाती है यथा एक नियमित कालकी स्थूलमात्रा से द्वितीय स्थूलमात्रा के अन्तरीय तीन मात्रा होती हैं उन तीन अन्तरीय मात्राओंका नाम यथा अनसरलाखाली और स्थूलकी खालीकी खाली कहीजाती है इस गणना के सिवाय अन्य रीति भी मात्राओं के नियत करने का नियम है सो इस पूर्ण वृत्तान्तकी व्याख्या विदित करने में विपुल विस्तार होजायेगा क्योंकि एक तालसे क्रमशः १११ तालतककी तालें फिर उनके भेद रूप मात्रा गणना युति मिलायकर ३६० तालें हैं वह तालें जिनके प्रचारकी कौन कहे किसी उत्तम गायन से उनका नाम भी सुनने में नहीं आवत परन्तु मैं अपने गुरुकी कृपा से इस धनका धनी भी हूं मेरे इसलेखको देखकर पाठकजन अपने मन यही विचारकर बैठैं कि ऐसा असंभव तो सभी लिखदेते हैं अगर यह विषय विधान मालूम होता तौ ताल नामान्वय मात्रा गणना लिखही न देते ऐसा कोई ध्यान पाठक न करें कदापि कोई सभ्य धनीपात्र राजा महाराजा इस महादुस्तर पदार्थ को जानना व पूंछना चाहें तो मेरी इच्छानुसार द्रव्य देकर मुझसे ज्ञात करसकैंगे फिर अपने आपको मिथ्यावादी न ठहराने के कारण इसी हेतु प्रचलित तालों के व्यतिरिक्त दश पांच नवीन तालों के पद मैंने ललनसागर के उत्तरार्द्ध भागके अन्तमें ललनाशिरोमणिका की व्याख्यामें रचित कर मुद्रित भी करादिये हैं कि जिनको देख व पढ़कर आपलोग मेरी सचावट को सराहना और सन्मान देवैंगे अब इस दुलर्भ पदार्थ के छिपावने और हाथ आवने का ब्योरा लिखते हैं खुलासा यह है कि मेरे कुल में चार पुस्तों से इस

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

संगीतशास्त्र नादविद्या का प्रचार चला आता था और मेरे देखते में मेरे जनकस्याग्रज श्रीवर श्री १०५ गुरु नन्हेमल शर्म्मा सारस्वत अष्टवंशी भारद्वाजीजी महाराज निज कुलोत्तमो में शिरोमणि कुलदीपक उत्पन्न हुये गानतंत्रविद्याकी प्रबल पुष्ट कमाई कर अपने धन संचय के व्यय से पूर्णानन्द को सदैव प्राप्त रहे और यावत् संसारी व्यसन विलासों को भोग करतेरहे आश्चर्य्य है कि मैं भी उसी कुलमें एकमहामूर्ख जीव उत्पन्नहुआ और ललननामक नामको पाया कुलजनोंने तो सबकुछ चाहा कि कुछ निपुणता को प्राप्त हो परन्तु मेरे नाम से तो और निपुणता शब्दमात्रही से विरोध रहनेसे मैं नादान ही रहा अंगरेज़ी भी पढ़ाई मिडिलक्लास तक पढ़ा और बैठा फ़ारसी उर्दूदांओं के पासतक कुछ देखा संस्कृत भाषा विलासतक परन्तु सिवाय झकझक तकतक भरसक के किसी मतलब तक न पहुँचने पाया कि इतने में ताऊ साहब श्रीगुरु श्रीनन्हेमलजी को अपनी मृत्यु आदर्श हुई बीमार हो परमाशक्तता को प्राप्त हुये महाशोक में ग्रसित हो उस असमर्थ समयपर मेरे पर तरसखाय मुझे अपनी सेवामें आरूढ़कर जोकुछ कि मेरी बुद्धिअनुसार उचित शिक्षा समझी गई उससे मुझे ज्ञात करतेभये परन्तु मेरी अल्पबुद्धि की क्या सामर्थ्य थी कि जो मैं उनके गुणसागर से गोता लगाय उत्तम २ जो संगीतांग के अमोल रत्नों की प्राप्ति करपावता परन्तु यह भी उनकीही कृपा और आशीर्वाद का फल है कि फिर भी मैं आप गुणियों व विद्वज्जनों की चरणरेणु अधिकारी होनेका उत्साही हुआ और गुणियोंही की कृपा से मेरे ताऊ साहब की संग्रह कीहुई संगीतशास्त्र सम्पत्ति कमाई में से एक मुनीन्द्रमुनिविरचित तालाध्यायी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नामक महाप्राचीन ग्रन्थ जिसके कि लेखसंवत्का अनुमान मैं ललनशिरोमणिका में मुद्रित करचुकाहूं उस ग्रन्थमें ३६० तीनसौ साठों तालोंकारूप भेद और मात्रा गणित संयुक्त विस्तार विस्तृत हैं मेरे हाथ आया उसग्रन्थको दीमकोंने पान करलियाथा बड़े परिश्रम से मैंने उसकी भाषामें प्रति उतारकर उसको तो श्रीगंगार्पण कर दिया और उसकी प्रति को अपने प्राणों के समतुल्य रखता हूं क्योंकि वह एक ऐसा अपूर्व अनमोल पदार्थ है कि जिसको केवल देख पढ़ और समुझकर कुशल संगीतशास्त्रका अधिकारी सर्व साधारण भी होसक्ता है और इसी हेतु अपने पास रख छोड़ा है कि यद्यपि कोई नृप गुणग्राहक होगा तौ उसको निवेदन करने के उद्योग में तत्पर होरहूंगा अतएव इसी कारण से प्रथमबार मैंने एक ताल से क्रमशः बीस तालों के रूप भेद मात्रा गणना और पद प्रकाश किये हैं अगर इस परिश्रम का मान सन्मान को प्राप्तकरपाऊंगा तौ आगे को भी पूर्ण उद्योग कियाजायगा क्योंकि मन मेरा सदैव इस हेतु से छोटा छोटा रहता है कि अब इसकाल में इस विद्या के मान देनेवाले बहुतही कमती लोग सुनाई व दिखाई पड़ते हैं बड़े आश्चर्य की बात है देखो सङ्गीत दामोदर, संगीतकल्पतरु व सङ्गीतसारादिक ग्रन्थों के अवलोकन करनेवालों के मुखारबिन्द से संगीतामृतरसरूप के सुननेही से इसका आदरत्व व गंभीरता मालूम होजाती है और जो इन ग्रन्थों को पढ़कर उनकी क्रियाओं की प्रणाली पर आरूढ़ हो अध्ययन करे तो जन्म उसका सुफलताको प्राप्तकर परब्रह्म में लौलीन होने में कुछ शंका नहीं ज्ञात होती है परन्तु, हा महाशयो! इस काल में इस संगीत की कैसी दशा होरही है कि अनेक राग

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रागिनियों का गाना कौनकहे उनका नाम भी कोई नहीं जानता यद्यपि जिस किसी ने थोड़ा बारा अभ्यास करभी लिया तो फिर वह अपनी बराबर किसीको समझतेही नहीं हैं अपने अभिमान में ऐसे मत्त रहते हैं कि मानो इन्द्र कुबेर की पदवी उन्हीं के हाथ आगई होय इसी अभिमानरूपी मूर्खता से शनैः शनैः यह सुख-दायी रागों के प्रभाव यथा पत्थर पिघलना मुर्दा जीउठना पानी बरसना शुष्क उपवन हरित होजाना दीपक जल उठना वायु विहरना इत्यादिक समस्त फलोंका लोप होगया हा किसी काल में इस गानशास्त्रका कैसा कठिन नियम था देखो पुराणों में बराबर लिखा है कि ब्रह्माने शिव ने इन्द्र ने अमुक २ गन्धर्व को ताल स्वर से चूकजाने से अमुक २ शाप दिया और वही संगीत शास्त्र अबहै कि जिसकी नियमिक रीतैं भी कोई नहीं जानता ऐसेही बहुत से शास्त्र अमिल होगये कुछ तो जैनों ने विनाश करदिये और कुछ मुसल्मानों ने और जो मुसल्मानों में मुहम्म-दशाह व अकबरशाह को इस विद्याकी तरफ ध्यान भी हुआ तो उन्हों ने बड़े बड़े नामी ग्रामी हिन्दू व ब्राह्मण गवैयों को मुसल्मान बनायडाला जिससे कि अनाथ हिन्दुओं का जो कुछ कि रहा सहा जी था सो और भी टूटगया जो कुछ कि शेष विद्या थी भी सोभी धूलिमें मिलगई और मिलतीजातीहै महाशय! अब देखिये औरसुनिये श्रीमान् सांगीताध्यक्ष श्रीतन्नामिश्रजी महाराज (उपनाम तानसेन) का एक थोड़ासा हाल हम वर्णन करते हैं कि जिस समय यह दोनों गुरुभाई बैजूनामक गानाध्यक्ष और तन्ना-मिश्रजी महाराज अपने श्रीगुरु श्रीहरिदास स्वामीजी महाराज से इस नाद विद्या को पूर्णरीति से अध्ययनकर श्री गुरु आज्ञा से

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देशाटन करनेको सिधारे तो बैजू तो पहिली बार शाह अकबरही के दरबार में पहुँचे इनको बादशाहने सुनकर पूर्ण गन्धर्व जान के बड़ेही सन्मान सत्कारपूर्वक इनको और इनके साथ इनकी माता भी थी दोनों जीवों को ठहराय लिया इनको पूर्ण विद्या के प्रभाव से ज्ञान प्राप्त होने से इनके अन्तरीय कपाट खुल गये और इनको बड़ होगई तभी से इनका नाम बैजूबावरे पड़ा तौ यह तो किंचित् काल व्यतीते राजदरबार को छोड़कर नगर बाहर एक घोर जंगल में जाय वृक्षोंपर वास लेनेलगे और माता इनकी प्रतिदिन इनको उसी घोरवन में मध्याह्न समयपर भोजन बनाय पहुँचावने लगी व्यवस्था इनकी यह होगई थी कि मनकी रौज मौज आगई तब तो भोजन करलिया और जो माताके कहने से भोजन नहीं किया तो माता इनकी भोजनको किसी वृक्षकी शाखामें बाँधकर यह चिताय आवतीथी बेटा मुझे बहुत दूर जाना है जब तेरी इच्छा होवे तब तू इस अशनको पायलेना आप घरको चली आवती रही अब कुछ काल गयेपर श्रीमान् तन्ना-मिश्र भी भूमण्डलका पर्यटन करते करते शाह अकबर के यहां आये बादशाहने बड़े आदरपूर्वक इनका आशश्वास कर अपनी गन्धर्वसभा में महाराज को व्यासासन दिया इन्होंने अपनी विद्याके बल प्रतापसे समस्त सभाको विजयकर बादशाहको प्रसन्न किया और विजयपत्र पावने की प्रार्थना की तब अकबरशाह ने कहा कि हमारे यहां एक बैजूबावरे हैं उनको सुनिये सुनाइये फिर आपको विजयपत्र दिया जायगा बैजूका कुछ बावरेका खिताब तो पहले से था ही नहीं तन्नामिश्र ने किसी और गवैये का अनुमान कर कह सुनाया कि उनको बुलवाया जाय बाद-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शाहने दो हलकारों को भेजकर दरयाफ़्त करवाया न पतालगने से हलकारे उनकी माताके समीप जाय पूछतेभये कि बादशाहने बुलायाहै वह कहां हैं एक तन्नामिश्र नामक गवैया आयाहै वह कहताहै कि मेरा और बैजूबावरे का सामना होना चाहिये वह बोली कि बेटा बैजू तो बरसों से अमुक जंगल में रहाकरता है मैं उसे भोजनदेने को जाया करतीहूं मैं जायकर यह संदेशा कहूंगी तुम सायंकालको मेरे पास आना जो कुछ वह मुझसे कहेगा सो मैं तुम से कहदूंगी ग़रज़ माता गई उस दिन दैवयोग से कहीं प्रसन्नचित्त एक वृक्षपर बैठे हुये थे माताके एकही बार कहने पर पेड़परसे उतर आय भोजन किया तब उनसे उनकी माताने तन्नामिश्र का समस्त हाल जो कुछ कि हलकारों की ज़बानी सुना था कह सुनाया बैजूबावरेजी तन्नामिश्र अपने गुरुभाईको उसी समय जान गये परन्तु उनका अभिमानिक वचन सुनकर क्रोधित हो माता से बोले कि तू अकबरासे कहलाय भेजना कि जो उसको ऐसा गुमान है तो उसे यहां मेरे पास बुलायलावे मैं उसे सुनूंगा और सुनाऊंगा हलकारों से माताने यथावत् कहदिया बादशाह ने सुनकर अपनी समाज को हुक्म दिया कि कल मध्याह्न समय अमुक जंगलमें चलना होगा फ़रश फ़रूस वहां सब पहुँचजावे उनकी आज्ञानुसार दूसरेही दिन सब डेरा तंबू दरी ग़लीचादिक सामान पहुँचगये समाज रच गया था वहांपर कहीं एक पाषाण की शिला जोकि उठाये नहीं उठसक्ती थी पड़ीथी तंबू कनातोंको खड़ाकर फ़राशों ने बिस्तरों के बीचमें उस शिला को घेरकर उसके ऊपर शोभाके वास्ते अनेक सामानादिकों के गमले सुशोभित करादिये और तीन गद्दियां एक बादशाह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

एक तन्नामिश्र और एक बैजूबावरे के वास्ते लगा दीगई और अनेक नगरनिवासी सब राजसमाजीलोग वहांपर जाय जमाहुये बादशाह सहित मन्त्री जनादिकों जिस विटप पर बैजूबावेरजी विराजमान थे वहां नंगेपैर जाकर बड़े सत्कारसे उनकोलाय उसी गन्धर्व सभा समाजमें बैठारता भया परन्तु तन्नामिश्र ने उनका कुवेष देखकर फिर श्रीबैजूजीको न पहिचाना बादशाहकी आज्ञावत् श्रीराग गाने लगे मनुष्यमात्र तो समस्त विमोहित होगये ही थे परन्तु जहांतक कि जितनी दूर आवाज़ उस वनके वनचरों के कानों में पहुँची तासीरी गाना था अनेक हरिणादिक जीव आनकर तन्नामिश्र के रागरसमें आसक्तहो शरीर की सुधि बुधिसे रहित होजाते भये तभी तन्नामिश्र ने अपने गले से हीरों का हार उतार एक हरिणके सींगों में डालकर गाना बन्दकरदिया हरिणादिक वनमें रमगये तब बादशाह से तन्नामिश्र ने कहा कि अब जौन मेरा हार मँगवाय देवे उस गवैये को आप बुलवाइये यह भी अभिमानिक वचन सुनकर बैजूबावरे ने बादशाह की ओर निहार तन्नामिश्र से तानपूरा लेकर उसी रागका जोई आरम्भ किया तौ इनके तो कपाट खुलेहुये थे तन्नामिश्र के गाने में जो कुछ कि वनके जीव आये थे उनसे कितनेही गुना ज्यादा जीव आनकर मौजूद होगये और वह हारसंयुक्त हरिणभी आनकर विमोहित होजाता भया बैजूबावरे ने उसके सींगों से हार उतराय तन्नामिश्र को देदिया और फिर मालकौश रागका अलाप करनेलगे तौ समस्त थलचर वनचरादिक शिथिल होगये प्रवाहधारा नेत्रों से आंसुओं की बहनेलगी और वह पाषाण की शिला मोम के सम तुल्यहो पानी की तरह पिघलकर बहनेलगी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तभी बैजूबावरेजी ने मँजीरों की जोड़ी उठाय शिलापै रख गाना बन्द करदिया जीवों को सावधानी हुई शिला जमगई मँजीरे उसी में चिपटकर रहिगये तब बैजूबावरे ने कहा कि अब दो चार पहर यही रागानन्द हमारा तुम्हारा होना चाहिये लो मँजीरे की जोड़ीको निकालो और जो जी चाहे सो राग प्रारम्भ करो अब तो तन्नामिश्रजी बैजूबावरे की वाणी रागरूप और अपनेही गुरुशिक्षासी प्रणाली देख जानजातेभये कि अरे यह तो मेरेही गुरुभाई बैजूजी मालूम होते हैं उसी समय पैरोंपर गिरपड़े और हाथजोड़कर कहा कि श्रीगुरुभाई मैंने पहिँचाना नहीं मेरा अपराध क्षमापन कीजिये मैं आपकी बराबरी नहीं करसक्ताहूं सभा समाप्त हुई मगर बादशाह बैजूबावरे का गुरुभाई जानकर और भी तन्नामिश्र से प्रसन्नहुये और बड़ी खातिरदारी के साथ अपने साथ हाथीपर बैठालकर उनको अपने घरपर लाये इसक़दर गाना उनका मन भागया कि खाना पीना सोना बैठना बादशाहका कुल तन्नामिश्र के गाने के आधीन होगया भोजनका थाल परसकर आया करे जब तन्नामिश्र तानपूरा खोलकर राग अलापकरें तब बादशाह भोजन पेट भरकर करपावें सोनेको शय्या लगाई जावे जब तन्नामिश्र रागालाप करें तो उसी आनन्द में बादशाह सोजायाकरें तब वह अपना तानपूरा लेकर बादशाह को सुलायकर अपने डेरे को चले आयाकरें इसी व्यवस्था से जब बहुत दिन व्यतीत होगये बालबच्चों की याद आने पर बादशाह से दश बीस बार घर जाने की आज्ञा मांगी तो बादशाह के तो मिश्रजी जीवनप्राण थे बरसों टालेबाले बताते बितालेगये एक दिन अकुलाकर बादशाह से मिश्रजी ने यह कहा कि हुजूर मैं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बहुतबार घरजाने को प्रार्थना करचुकाहूं परन्तु मुझे आज्ञा नहीं होती अब मैं इसबात को डराताहूं कि ऐसा न हो कि किसी दिन मुझे आपसे बग़ैरही कहे सुने कहीं यहां से भागजाना न पड़े इस बात को सुनकरके तो बादशाह घबराये कहीं ऐसा यह न कर बैठे तौ मैं तो मरजाऊंगा सोच समझकर कहा कि अच्छा तन्नामिश्रजी जो अब तुम्हारा मन नहीं लगता है तौ मैं तुमको हुक्म दिये देताहूं कि एक महीनें तुम और मेरेपास ठहरो बाद महीने के जो मैं तुमको न भेजदूं तौ फिर तुम मुझसे विना पूछेही चाहे चलेजाना यह सुनकरके मिश्रजी ने विचार किया कि ख़ैर अब तो एकही महीने की बात रहगई है तौ अब इतने दिन के वास्ते बादशाह की मरज़ी और करना चाहिये आशीर्वाद देकर मिश्रजी अपने डेरेपर आये उधर बादशाह ने अपने दरबार की जितनी वेश्यायें थीं सबको सभामें बुलवाय उनसे यह कहा कि जो कोई मिश्रजी को रोकलेय तौ जो मांगे सो मैं उस को इनाम दूं उनमें से एक अत्यन्त रूपवती बारवधू उठ बोली कि हुज़ूर रोकलेना कितनी बड़ी बात है आप कहें तो मैं उनको अपने दीनमें मिलायलूं मगर जो मैं चहूं वह कियाजाय हुक्म होगया उस वेश्या ने सब वेश्याओं को अपने घरपर बुलायकर यह कहा कि देखो तुम जितनीहो सब अपना २ सुन्दर शृंगार साज २ बारी बारी रोज़ मिश्रजी को मिलने को नज़र न्याज़ ले लेकर बेगमातों के नाम से जायाकरो सब तो बारी बारी पर जानेलगीं और वह नित नये शृंगार कर कर बादशाह की बेगम बनकर रोज़ महाराजकी सेवामें हज़ारों रुपयों की भेंट तरह तरह के पदार्थ ले लेकर जानेलगी जब २ जायाकरे तब तब यही कह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुनाया करे कि महाराज अब तो आप हमारे यहां एकही महीने के महिमान हैं अब २५ ही दिन के महिमान अब २० ही दिन के महिमान हैं परन्तु यहां से जायकर हमलोगों को भुलाय न दीजियेगा आप तो हमारे सबों के जीवनधनहैं ईश्वरने आपको देवतारूप इस संसारमें बनाया है इसतरह से महाराज से प्रीति पैदा करतीभई और दिन बदिन उनसे प्रीति परिचय करलेनेका हाल बादशाह से कहा करती दैवयोगसे एकदिन कहीं तन्ना-मिश्रजी अपने मकानपर तानपूरा मिलाये कुछ गाना गारहे थे इसको जो खबर लगी यह उसी समय सुन्दर शृंगार सज बहुतसी भेंट पूजाका सामान लेकर इसने जायकर महाराज से इत्तला कराई कि अमुक बेगम महाराज के दर्शनों को आई है गई बहुत कुछ भेंटकिया महाराज गा तो रहेही थे गाना सुनते २ इसने जाल फैलाया एकाएकी रोनेलगी मूर्च्छा खायकर गिरपड़ी महाराजने गाना बन्दकर गुलाब केवड़ा छिरकवायकर उसे सावधान किया तब तो वह हाथजोड़ विलाप करतीहुई मिश्रजी के चरणों पर गिर चरण महाराज के आंसुओं से धोय देतीभई और यह कहने लगी कि हे श्रीमन्महाराज! मेरी थोड़ीसी प्रार्थना आप अंगी-कारकरें कहा क्या बोली अब आपके घर चलेजाने के दिन स-मीप आगये हैं फिर आप गुणवान् हैं आपकी सेवा शुश्रूषा करनेवाले इस अकबर बादशाह सरीखे करोड़ों संसार में मौजूद हैं यहां से जायकर अब आपका फिर यहां आवनामुझे तो बहुत दुर्लभ दिखाई पड़ता है और जितने दिन आप इस दरबार में रोकेगये सो उस आपके रोकनेका कारण मैंही हूं मेरेही हेतु बादशाह ने आपका गाना मेरा प्राणजीवन जानकर रोकरक्खा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

था और अब आप जो जाते हैं तो मुझ दासीपर इतनी दया करें कि कोई एक चीज़ रागकी मुझे बतलाये जायें तौ तो अच्छा है नहीं तो आपके चलेजाने पर मेरे प्राण न रहेंगे मिश्रजी ने कहा कि आपका वचन तो ठीकही मानना चाहिये परन्तु ऐसा तो मैं नहीं करसक्काहूं क्योंकि यह नादवेद का तो सिवाय ब्राह्मण के दूसरी जातिको अधिकारही नहीं है तो मैं तुम्हारे बतलाने को कैसे हामीभरूं महाराजका मन न जानकर वो तुरत चुपहोगई और बादशाह से उसी समय जाय सुनाया कि आज मैंने ऐसा ऐसा कहा उन्हों ने अंगीकार नहीं किया अब आप एक कामकरें आज रातको जब मिश्रजी गाने बैठें तब आप खुश होकर आज कुछ उनको इनामदे उनकी तारीफ़ प्रशंसा करने लगना मैं आप के चिकके पीछे मौजूद रहूंगी उसी समय मैं रुदन करके बेहोश हो जाऊंगी तभी आप मेरी तरफ़ से सिफ़ारिश करदीजियेगा आपका कहना वह टाल न सकैंगे एक चीज़ सिखाने को भी अंगीकार करलेंगे तौ फिर मैं मनमाना काम आपका बनालूंगी बादशाह ने वैसाही किया उन्हें इनाम इकराम देकर राज़ी किया सोई वह वेश्या बेहोश हो गिरपड़ी बादशाह ने मिश्रजी से कहा कि अगर आप इसकी जान बचासकें तो इसको कोई एक चीज़ बतलाये जाइये नहीं तो यह मेरी परमप्यारी है इसके मरजानेसे मेरे भी शरीरका सुख जातारहेगा अब इनको बड़ा असमंजस प्राप्तहुआ और सोचा कि क्या करना चाहिये बादशाहकी मुरव्वतन् लाचार होकर यह कहा कि अच्छा हुज़ूर मैंने आपका नमक खायाहै तो आपका हुक्म मुझे मानना उचित है लेकिन एक बात की मैं प्रार्थना करताहूं कि आपके कहने से इसको जौन रागकी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चीज़ बतलादूं वह राग आप कभी मुझसे सुनानेको न कहें क्योंकि वह राग फिर मेरे गाने के लायक़ न रहेगा बादशाह ने मंज़ूर किया वह मिश्रजी के पास सीखने के बहाने समय कुसमय जाने लगी तो यह मसल सचहै कि जब आग फूस एक जगह जमा होताहै तो फिर आग लगते कितनी देर लगती है निदान उसने महाराज को अपने रूपकी मोहनी से मोहित कर संयोग करते समय मुँहसे मुँह लगाय दिया और उसी समय बादशाह से जाय कहा कि लीजिये हुज़ूर आज आपका काम मैं सिद्धकर आईहूं मिश्रजीको इस इस तरह मैंने भ्रष्टकरलिया बादशाहने उसी समय, अपनी चौधारतनी सभा जोरकर तन्नामिश्र को बुलाय समस्त समाजके सम्मुख मिश्रजी से कहा कि यह वेश्या जो कुछ कि तुम्हारे बारे में कहती है सो झूंठ है या सच तौ अगले ज़माने में लोग झूंठ नहीं बोला करते थे इन्होंने कहा कि हुज़ूर मेरा तो कुछ अपराध है नहीं परन्तु यह जो कुछ कहती है सो ठीक है यह समाचार सुनकर सकल सभा में हाहाकार पड़गया सब लोग परस्पर कहनेलगे कि बड़ा ग़ज़ब होगया हाय ऐसे गुणी पर ऐसी विपत्ति पड़गई इस हाहाकाररूपी ताली पिटने से मिश्र जी के जीमें भी अत्यन्त शोक उत्पन्न होने से मुख मलिनता से आच्छादित होगया इधर बादशाह ने मिश्रजी की मलिनता देखकर मनमें यह विचार किया कि कहीं ऐसा न हो कि इस शोक से यह अपना प्राण किसीतरह से हत करडाले तो मेरा किया कराया सब काम विनाश होजाय इधर यह अपने प्राणोंपर खेलजाय और उधर मेरे जीपर भी आनपड़े ऐसा समुझकर तु-रत उसी समय जौन २ उत्तम २ गवैये हज़ूर पसन्द थे उनको

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अपने पास बुलाय कर कहा कि यह तो बड़ाभारी अनर्थ होगया है और अब उसपर मुझे यह डर है कि इस शोक के भय से कहीं यह गुणी अपना वध न करडाले तो फिर इस काल में ऐसा कोई दूसरा गुणी देखने में न आवेगा सबों ने कहा जो आप हम से कहें सो हम सबलोग करने को उद्यत होवें बादशाह मन माना अवसर अवलोककर उनसे कहा कि मैं जो कुछ उचित समझकर तुमलोगों से कहूं उसपर आरूढ़ होगे सबों ने कहा कि हुजूर आपका कहना कौन टालसक्ता है सब लोगों से हामी भरवाय बादशाह ने कहा कि मेरी सम्मति में तो यह आवता है कि तुम लोग मिश्रजी का साथ न देवगे तो यह हीरे की कनी खायकर मरजायगा इससे तुमलोग इसके साथ में खाना खाओ इससे बढ़कर और दूसरा कोई उत्तम उपाय नहीं है ऐसा सुन करके तो सबलोग अपने २ कानोंपर हाथ रखकर यह कहनेलगे कि सरकार और कहो सो हम सब करसक्ते हैं परन्तु किसी के पीछे हम अपना दीन धर्म्म नहीं देदेवैंगे तब तो बादशाह ने क्रोधित हो सिपाहको हुक्मदिया कि अभी सभा में बिठलायकर तन्नामिश्र के साथ ज़बरदस्ती इनको खाना खिलवादो निदान चन्द्रसेन आदिक छः आदमियोंको ज़बरन् खाना खिलवाय उनको भी मुसल्मान बनालिया और तन्नामिश्र के साथ उसी दम उस वेश्या के साथ निकाह (विवाह) करवाय दिया और उनका नाम तभी से तानसेन रक्खागया चन्द्रसेन का नाम चांदखां ऐसेही सबों के उलट २ कर नाम धरकर अपना काम किया बाद थोड़े काल में जब उस वेश्या से मिश्रजी के औलाद पैदा हुई म्लेच्छ होजाने से जोकि संगीतविद्या को वेदमन्त्रों सहित अध्ययन किया था सो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अपने आपको वेदमन्त्रका अधिकारी न समुझ अपनी सन्ततिको भी उन्हों ने केवल स्वरोंही के ब्योरों से इस नादविद्या को बतलाया यह गान वेदमंत्र रहित होनेपर तभी से रागों का असर जातारहा और दिन बदिन यह विद्या लोपही होती जाती है हा इसपर भी हमारे हिन्दू राजा महाराजा इस देवविद्या पर कुछ भी नहीं ध्यान देते कोटिशः धन्यवाद तो ऐसों को है देखो राजा यतीन्द्रमोहन ठाकुर और शौरीन्द्रमोहन ठाकुर जिन्हों ने इस समय में इस विद्या की अत्यन्तही वृद्धि कर रक्खी है श्रीक्षेत्रमोहन गोस्वामी ने एक सितारशिक्षा भी छपवाई बंगालप्रान्त के सभ्य सज्जन विद्वज्जन धनीपात्रों ने तन मन धन लगायकर इस संगीतशास्त्र की वृद्धि करने में आप लौलीन हो देशनिवासियों को भी आरूढ़ कर रक्खा और करते रहते हैं धन्य उनके माता पिता हैं और धन्य २ वो अपने माता पिता के जाये सुपूत हैं कि इस देवविद्या की वृद्धि में तत्पर होरहे हैं ऐसेही हमारे हिन्दुस्तानी अमीरों रईसों को भी चाहिये कि इस शास्त्रोन्नति पर भी ध्यान देवें केवल वारांगना विलासही पर इस विद्यापर सुन्न न लगावें नहीं तो यह शास्त्र थोड़े दिनों में बिल्कुलही लुप्त होजायगा अधिक क्या लिखें ॥

दो० जानहु बहु थोड़ी कहन हौ सब चतुर सुजान ॥
सीख वाहि दीबो उचित जो हो ललन नदान १
चतुर इशारहि में लखत चतुरन केरी बात ॥
दियें न सिख सीखै ललन सोइ शठेश नरगात २
अघ विषयन व्ययकरत धन तन मन ललन लगाय ॥
दया धर्म्म सुख सृजक गुण रहे ताहि बिदराय ३
सुजन उचित नहिं मूर्खता चहिं गहिबो कुल मेंड़ ॥
बिन सींचे सांचे ललन फूलत फलत न पेंड़ ४
जिन्ह सींचा तिन्ह पाइयां सुन्दर फल अरु फूल ॥
श्रम न वृथा कबहूं ललन हरिसुमिरन सुखमूल ५

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ ललनसागर की भूमिका।

प्रकट हो कि यह नादविद्या का अपारसागर है इस घोर सिन्धु के पारावार पावने की किसी मनुष्यमात्र की सामर्थ्य नहीं है यह उंचास कोटि राग रागिनीरूपी अमोल रत्नों से परिपूर्ण है जिन्ह एक एक रत्नकी प्राप्ति होना महादुर्लभ और दुर्गम है जिसमें अमित ध्वनिरूपी लहरों के लहलहे लहरे कोटिन तान-रूपी भ्रमर अनन्त लय लसन्ती चादरें अनेक तालरूपी धारा अनगिनत स्वर सम्बन्धी सरिताओं के प्रबल प्रवाह का अवगाह और अथाह नियम निरूपिणी तरंगें अपूर्व उद्धंग की उमंगों की जंगें जिसके कठिन काट फांसके क़रारे क़रारे करारे किनारे किनारे निहारे में आवते हैं उनके किनारेही दृढ़ित होना दीर्घ दुस्तर है परन्तु किया क्या जावे यह मन तो चपला से भी चर्बे चंचलहै अपने लोभरूपी चापल्यता से स्थिर न रहकर रत्नों के लालच में लुभियाताही रहताहै और यह बात भी सत्यहै कि ऐसा कौनसा मनुष्य होगा जोकि रत्नों के लाभकी लालसा न रखता होगा अतएव इसी कारण मैंने भी इस रागरसरूपी रत्नों की चा-हना में चित्त लगाय किंचित सा लघुमति के अनुसार श्रीवर षोड़शकलावतारी श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्द यशोदानन्दनका गुणानुवाद काव्यालंकार संयुति गायन सम्बन्धी ध्रुपद धमार ख्याल आस्ताई टप्पा ठुमरी अद्धा दादरा खेमटा ग़ज़ल लावनी ख्याल बरसात बारहमासा कजरी कहरवा आदि अनेक छन्द

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बन्द भजनीक भजन व पदोंमें श्रीप्रभुपदसेवी हरिभक्तों के मनोरंजनार्थ यह एक ललनसागर नामक पुस्तक जो कि अनेक राग रागिनियां व अमित ध्वनि और अनेक तालमाल में विरचित कर प्रतिष्ठित रईस निवासी लखनऊ मालिक मतबे मुंशी नवलकिशोर (सी,आई,ई) के मुंशी प्रयागनारायण साहब की सेवामें निवेदन करदिया है आशाहै कि आप महाशय हरिजन इस ललनमतीवारे ललन की सरल सलोनी हरिचरित्ररूपी कविता को प्रेमप्रीति सहित विलोक कर और मुझे अपना ललन सदृश ललन समुझकर इस ग्रन्थको गम्भीर सन्मान से सुशोभित कर इसकी चाहना के चाव का उत्साह कीजियेगा क्योंकि जनकजन तो अपने ललन के लबरापन को भी लाड़ियापन ही समुझकर महान् मोदही माना करते हैं अधिक क्या कहूं कदापि किसी प्रकार की मेरी भूल चूक पद पदार्थ राग रागिनी ताल प्रकरण मात्रा गणना इत्यादि कोई प्रसंग में होगई होय तौ क्षमा करना क्योंकि मैं तो चाहे लाखों चतुरई करूं परन्तु फिरभी ललन याने नादानही कहाऊंगा और छोटोंपर बड़े सदैव दाया माया और रक्षाकी छाया करतेही आये हैं तौ मेरा प्रार्थना करना सकल भांति से उचितही है और जो आप मुझ पामरपर कोई महाशय कृपा नहीं करने का विचार करेंगे तौ भी मैं ललन पितुके नाते से आपसे लड़ झगड़कर आपकी कृपा कटाक्षका ज़बरदस्ती व ज़बरन अधिकारत्व प्राप्त करूंगा यह मुझे दृढ़ विश्वास भी है कि अन्त में मेरी दीनता पर आपको अनुग्रहरूपी घन वर्षा से मुझे संतुष्ट करनाही पड़ैगा क्योंकि प्रेमैवश परमेश्वर है और हरएक जीवात्मा सो साक्षात् परमात्माका रूप है

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तौ फिर मुझे किस बात का खटका है मैं तो सुखियों का सुखिया और आप सर्व सज्जन सुजानों के सनेह का सुखिया हूं ॥

दो० राधारमण रटहुँ सदा नटहुं न निवन समेत ॥
हटहुँ न हरि हितसन कबहुँ ललन हिया यहि हेत १
यहि मारग राखा हिये नन्दललन सों सांच ॥
जहँ जन्महुँ ज्यहि योनिमहँ हो हरिसुमिरण जांच २
सात पांच जानहुँ नहीं नेहू और न नांच ॥
पांच आंच नँदललन भज काढ़ि विंगावत कांच ३
यहि भरोस बल विपुल मुहिं गुरुकटाक्ष को जोम ॥
गुनि मुनि मुहिं लेखैं ललन होत न मैलो रोम ४
सुजन सनेहिन को सदा सेवक ललन समान ॥
पुनि किमि नहिं अपनायहैं मुहिं द्विज सन्तसुजान ५

अग्रे इस ललनसागर के अन्त में ललनशिरोमणिका कि जिसमें ताल मात्रा गणित चिह्नित अङ्कमुद्रित पद अनेक तालों में वह तालैं जो कि जाग्रत् व विदित नहीं हैं प्रकाशित कियेगये हैं जिन महाशयों की अभिलाषा हो वह अवलोकनकर अपना प्रयोजन सिद्ध कर अपनी अभ्यासित विद्या की उन्नति कर सकते हैं ॥

वही आपका
पण्डित ललनपिया शर्म्मा
फ़र्रुखाबादी-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ ललनसागर का समर्पण।

श्रीमानाधिपति सुधर्म्मनिरति सदनसुमति नीतिज्ञअति सत् कर्म्मरति भार्गवकुलमुकुटमणिनपति परमब्रह्मभक्त गुणियन गुण ग्राहक यशु जस चाहक प्रीति उछाहक कुमतिनु डाहक कुकृतिनु दाहक द्रोहनुदाहक मनुजनुथाहक हरि यशुलाहक श्रीवर वैकुण्ठवासी मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के प्रिय पुत्र धर्म्मधुरीण प्रभुरतिपारायण श्रीमुन्शी प्रयागनारायण साहब समीपेषु॥

यह तो मैंने समझ रक्खा है कि आपने सैकड़ों तड़ाग पुष्करादि व अनेक दीर्घ दुर्लभ देव सरिताओं में स्नान करडालेहोंगे परन्तु फिर भी जो कोई जीव किसी विद्वान्, गुणवान्, गुरु, गुसाईं व किसी राजा महाराजा से मिलता है तो कुछ न कुछ उचित नज़र भेंट लेकरही मिलताहै और आजकल ग्रीष्मऋतुभी है अतएव इसीकारण मैं आपको सुन्दर सुपात्र और सज्जन सुजान सिहार के श्रीगंगासागर समतुल्य सुधा सदृश श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्द नन्दनन्दन के चित्रविचित्र चरित्ररूपी संगीतशास्त्र कला सुशोभित यह एक ललनसागर नामक ग्रन्थ जो कि अनेक रागरागिनियोंकी उमंगोंसे भरा लाखों लय लहरों आदरा विविध ताल तरंगोंसे हराभरा है सो आपके निवेदन करताहूं इसमें आप मज्जनकर अपने मनके मैलों को धोय बहाय दिव्यदृष्टि दृढ़ाय परमानंदको प्राप्तकीजियेगा यह वह सुखदायी सागरहै जिसमें कि प्रपुंज प्रबलिका पद पाथकी श्रेणियां यथा ध्रुपद, धमार, सादरा सचार, ख्याल, आस्ताई, चतुरंग सुहाई, त्रिवट, तराना, टप्पा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी विधाना, ग़ज़ल चौबोला, रेखता अनमोला, लावनी सुडोला, फाग अतोला, कवितनु कोहा, अनगण दोहा, अद्धा अमीले, नक्टा रसीले, अमित दादरा, योग आदरा, बहु मर्य्यादी, सरगम आदी, छन्द अपारौ, विविध प्रकारौ, शीतल सुगन्धित लयकी प्रवाहों से प्रवाहक होरहीं और अनेक तालों की तरंगों से परिपूर्ण होरहैं कि जिसमें गोता लगाने से मन हरा भराही बना रहताहै इस राग रसकी रसायन का भी रस आप अपनी रसीली रसनासे चाखकर इसका फल प्राप्त कीजियेगा ॥यथा॥

क० ॥ रागीकाहिं राग औ विरागी को विराग रस रसकहि हेत विधिबनये जहानमें। शठ शठताई चतुराई चतुरन काहिं कर्म्मटी सुकर्म्म कुकृती कुयशु दानमें ॥ प्रेमी रस राग प्रेम दोहिन दिमाग नेम धार्मिक ललनवंत धनी धनियानमें। निरख सुयोग लोग विधनौ बरत भोग येही राह रस्म जग विदित विधानमें ॥

दो० भेंट यथोचित समझकै देत अशीश समेति ॥
जिओ लगो फूलो फलो लहि सुख संपति नेति १
भार्गवकुल अवतंसमणि प्रागनरायण पूज ॥
नन्दललन की कृपासे दिन दिन बढ़ै उरूज २
द्विजआशिष लै साहिताहित दिजिय प्रेम सुठि दान ॥
विपुल बेलि वृद्धै ललन सुयशु देश देशान ३

वही आपका शुभचिन्तक
पण्डित ललनपिया शर्म्मा सारस्वत
फर्रुखाबाद मुहल्ला मिट्टूकूंचानिवासी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ स्वदेशजन्मभूमिभूमिकावर्णनिका ॥

दो० जन्मस्थल मम सुखद शुभ खान पान पहिराउ ॥
रहन वसन बोलन मधुर नन्द ललन रति चाउ १
धर्म्म दया उपकारनिधि गुणग्राहकता भूर ॥
कथा वार्त्ता हरि चरित मान दान भरपूर २
मिलनसार हँसमुख मनुज दानी वित्त विहान ॥
अतिथि विदेशी गुणिनपर वारत तनमन प्रान ३
देश नवाबी बांकुरो रसिक गुणिनको थान ॥
ललनहुँ तक चीन्हत जिसे जानत हिन्दुस्तान ४

स० फरुखसेन अबाद कियो ज्यहि नाम फरकाबाद पड़ो ।
बावन गद्दि नवाबन की जहँ हिन्दमें जासु पताक गड़ो ॥
चौदहु रत्न गुणीयन वृन्दन दीन दोऊ में कछू झगड़ो ।
देशसमीपहि गंग लसै यशुदाललनै रतिभावबड़ो १ ॥

दो० देश नाभि हनुमन्त थल कूंचा मिस्तरसेन ॥
कुतवाली अरु चौक के मध्य महासुखदेन १
जुम्मामसजिद निकट पुनि मिशनस्कूल विलास ॥
खतराना कूंचा द्वितिय कोटापार्चा पास २
कटरा अहिमद गंज है श्रीहनुमत दरबार ॥
वृद्ध युवा ललनहु सकल जानत देश मँझार ३
बनत रामलीला जहां बुढ़वा मंगल होत ॥
प्रति मंगल नित गानहो दिपित गुणिन की जोत ४
सारस्वत वसु वंशमें भारद्वाजी गोत ॥
कुल संगीताध्यक्ष जहँ पुराचीन अद्योत ५
कुल मर्य्यादा जासुकी गायन व्यसन महान ॥
त्यहि कुलमहँ युग भ्रातभे वंश मुकुटमणि जान ६
भे संगीत नरेश बड़ नन्हेमल अस नाम ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लघु ज्वालापरसाद को सुयश चहूँ सरनाम ७
पितुहि भ्रातको शिष्य मैं ललन गुणिनको दास ॥
ललनपिया उपनाम मम मन रुचि कविता वास ८
श्रीगुरु चरण प्रतापते हरि यशु ग्रंथ अनंत ॥
रचि पद संगीताभरण विदित किये सुखमंत ९
अँगरेज़ी उरदू पढ़ी संस्कृत्य भाषाहु ॥
काव्य रचन रस राग चुभ बिसरो सर्व्व उमाहु १०
गुरुप्रसाद गुणियन दया बड़न अशीश प्रभाव ॥
संतन कृपा कटाक्षते पूर्ण भयो मन चाव ११
जानत देश विदेशि जन राजा राव रईस ॥
द्विजजन ललन निहार हित राखत बिस्वाबीस १२
हौं कछु बुध बुधिवन्त नहिं कवि नहिं चतुर अनूप ॥
दास दीनता द्विज निरख सनमानत गुणि भूप १३
सज्जनकुलकी सुजनता असयेहु होत निहाल ॥
बड़ेन बड़ाई कौन मुख वरणन करत मुहाल १४
जानत बड़भागी महूं अपन आपको भूर ॥
सभ्य सुजन दाया करत तापर जो अति क्रूर १५
हौंतौ यह जग आनिकर यही कमाई कीन ॥
नन्दललन गुण गायबो कविता रचि सनवीन १६
प्रभु गुण गाय निहालभो सुफल कमाई मोर ॥
नामरूप फल लहि फलो फूलो सुयशु न थोर १७
पुनि गुविन्द की कृपा को है मुहिं दृढ़ विश्वास ॥
विविध भांति जन ललनकी पुरिहै सब मनआस १८
निशिदिन यहि मांगत सदा श्रीनँदललन निहोर ॥
जन्मजन्मप्रभु दीजिये निजु पद रति हिय मोर १९ ॥ इति ॥

वही आपका
पण्डित ललनपिया शर्म्मा
फर्रुखाबादनिवासी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ ललनसागरका मङ्गलाचरण ॥

दो० इष्टदेव गोविन्द मम श्यामा श्याम सुवेश ॥
पदपंकज रजधार हृद करि बुधि विमल सुवेश १
सिद्धिसुमतिसम्पातिसदन उमा ललन गुरु शम्भु ॥
शारद देवि सहाय हो हरि यशु करत अरम्भु २
ब्रह्म पितामह वंदि पद लक्ष्मीपति भगवान ॥
सूर्य्यवंश अवतंस प्रभु सियपद भव जलयान ३
जग दीपक उर तम हरण जन हृद लोचन दीप ॥
प्रणवहुँ सकल सनेह युत सुर मुनि किन्नर नीप ४
कवि कोविद श्रुति सभ्यजन गायन गुणि गंधर्व्व ॥
जल थल नभचर जीवजड़ वंदहुँ साहित सर्व्व ५

क० सुमति सुधाकी औ सुबुद्धि वसुधा की नेति दायनी दयाल बलिजाऊं बलिहारी है। ऋद्धि सिद्धि नवौ निद्धि वरदा सुकृति वृद्धि दीन द्विज दासपै सुहाय हर वारी है ॥ कुमति कदन मोद गोददा ललन नादवेद कविता भरन सुयश अपारी है। सोई हौं सगाई भाई शारदा सहाई माई वोही जन प्रतिपाल मोर महतारी है १ ॥

दो० पै नर तन लहि उचित यहि यामें मीन न मेष ॥
दोउ पुर महँ सुखदा ललन प्रभु गुण गान विशेष १
मानुज तन धर जो न भज कृष्ण राधिका नाम ॥
तिनको नित दुख आदरैं मिलहि न सुख परिणाम २
यहि मिस हरियशु सुखद लखि करन सुफल नर देह ॥
लघुमति सम कछु प्रभु चरित कहु रचि पद युत नेह ३
क्षमा कीजियो खोर मम ओर निहोर निहार ॥
लखि निजु ललन सनेहियो समुझ सुयश करतार ४

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ ललनशिरोमणिका ॥

अर्थात् सांगीत कला तालाध्यायीका सूचनिका भूषण ॥

सर्व्व विद्वज्जन महाशयों को ज्ञात हो कि इस नादआदि नर मोक्षपदप्रदा परब्रह्म परमात्मा के सुरूप में लय कर देनेवाली महोत्तम सुखसागरी मनोहर विद्यामें सांगीताध्यक्ष देवाचार्य्य श्री महादेवजी महाराज व श्रीविष्णु भगवान्, श्रीमहासरस्वतीजी, श्रीहनुमान्जी महाराज, श्रीभरतजी, सोमेश्वरनाथ (व) कलानाथजी (व) श्रीमुनिवर नारदजी इत्यादि महान् ऋषियों के निर्मित मतों के निरूपण से छः राग तीस ३० रागिनी के कुलोत्पन्निक उनचासकोटि४९०००००००राग रागिनी और भिन्न भिन्न भेदरूप लय मात्रालंकृत और ३६० तालें वर्णित हैं और ऐसेही अनेक माननीय सांगीताधिपति गान कला कुशल कोविद यथा तन्नामिश्र सारस्वत ब्राह्मण (उपनाम तानसेन) व बैजुबावरे, गोपालनायक, (व) मीरामद नायकादिकों के वाक्य विलासों से भी विदित होताहै परंच अब यह कलिकाल में इस नादविद्या के निरादर भावको लोप होजाने के कारण करके सम्पूर्ण राग रागिनी (व) समस्त तालोंका विस्तार बिलकुल न्यूनताको प्राप्त होगयाहै यहांतक कि लोप संक्षेप होते होते इतना अभाव दृश्य होताहै कि १० व २० तालें यथा दादरा, ग़ज़ल, त्रैताल, झप, झूमड़ा, त्योरा, धमार, शूल, फाका, रूपक, आड़ा, सवारी, ध्रुपद, फरोदस्त, पचकौल, षट्ताल, सालमेंटी, गणेश, हनुमान्, दुर्गा, ब्रह्म, रुद्र, विष्णु, लक्ष्मीआदिक तालें भी सिवाय किसी किसी परमगुणीजनोंही के पास अवलोकन में कभी कभी आती हैं पर तिसपर भी अभावही होता जाता है और अन्य

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तालोंका प्रचार प्रस्तार कौन कहे उनका नाम भी बहुधा सुनने में भी नहीं आता अतएव इसी कारण से मैं एक अत्यन्त हर्षानन्द की वार्त्ता आप विद्वान् महाशय (व) भूपाल भाग्यवन्तों की सेवामें मुद्रितकर प्रकाश करताहूं कि मेरे सारस्वत अष्टवंश भारद्वाजी विप्रवंश में मेरे पिताके जेठे सहोदर भ्राता सांगीत नाद विद्या नरेश मेरे ताऊसाहब श्री १०५ गुरु नन्हेमल निजकुल दीपक उत्पन्नहुये उनको स्वर्गवास होजानेपर उनके संगृहीत नाद गुणगुप्त संपत्तिक कोषद्वारा एक महान् महाशय अनन्य श्रीकृष्ण भक्त परमप्राचीन सांगीताचार्य्य श्री मुनीन्द्रमुनि विरचित तालाध्यायी नामक पुस्तक जो कि ११०१ सं० की लिखीहुई ३६० समस्त तालभेद रूप लय मात्रा प्रकरण सम्पन्नित जो कि भींगुरादि दीमकोंकी खाजी होरहीथी अनायास मेरेहाथ लगी तौ उस पुस्तक से तालभेदों को जानकर मैंने एक समय यह कांक्षा की कि अब इस अमोल पदार्थ को प्रकट और प्रकाशकर सुफल करना चाहिये तो उक्त लिखित प्रचलित ध्रुपदताल के पश्चात् सवारी फरोदस्त पांच तालसे लेकर २० तालों तकके तालांक चिह्नित पद इस मनोरथपर रचकर विद्यमान किये कि इन समस्त ३६० तालों के पद मात्रा प्रस्तार संयुति विरचितकर एक नवीन सांगीत भानुनामक पुस्तक सुशोभित करूंगा परन्तु जब मैंने दश पांच गुणियों को दिखलायकर उनसे सलाहलीन्हीं तौ उन्होंने मुझे यह सम्मति दी कि इस पदार्थ को जिसका कि प्रचार इससमय पर नहीं रहाहै कौन इसे मानदे इसका गुणग्राहक होयगा तुम्हारा परिश्रम भी वृथा होयगा उनके ऐसे वचनों को सुनतेही मेरा हराभरा हृदय कमल शुष्क होजाने से उस उमंगित

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चंचल तुरंगकी सवारी का सवार मन कम हिम्मतहो उतर बैठा अग्रपदों के बनावनेसे अरुचि होगई अब जो कुछ कि जितने पद जौन जौन तालों में बनगये थे सो पद इस ललनसागर के मध्य ललनशिरोमणिका में इसतरह पर मुद्रित कर दिये गये हैं कि सर्व्व साधारण के समझने के योग्य दादरा, खेमटा, ग़ज़ल, रेखता, ख़्याल, आस्ताई, ध्रुपद, धमार, चतुरंग, तराना, त्रिवटप्रबंध, ठुमरी, टप्पा अनेक राग रागिनियों (व) अनेक ध्वनों (व) त्रैताल, रूपक, झप, झूमड़ा, त्योरा, धमार, आड़ा, शूल, फाक्ता, पुट, पट, इकतालादि तालों के पद, भजन, दादरा तो ललनसागर में और चक्रताल, सवारी ४ चारिताल, ध्रुपद, फरोदस्त पांचताला से विंशति तालपर्यन्त के पद केवल इस ललनशिरोमणिकामें मुद्रित कराये गये हैं ॥ पश्चात् इसके गुणग्राहकता की टटोल के हेतु अब मैं आप सभ्यजन महाशय नृपालादिकों को सूचितकर निवेदन करताहूं कि शायद जो कोई महाशय इस अपूर्व पदार्थ के जानने (व) प्रकाश करने (व) छापने छपवावने की इच्छा किया चाहें तो मेरे इस परिश्रम को देखकर मुझे सूचित करें मैं जिसतरह पर इन अनमोल रत्नोंको अपनी सज्जनता (व) गुणवृद्धि के वास्ते देना अंगीकार करसकूंगा सो सूचना सदृश्य उसका उत्तर देनेमें तत्पर होजाऊंगा और जो केवल ३६० तालों के नामही जानना चाहेंगे या कि तालप्रति तालानुमान (व) तालप्रति मात्रानुमान जानने के अभिलाषी होंगे तो उनकी आनुरागिक यांचना का प्रश्न करनेपर उचित उत्तर निवेदन होगा ॥ ततः ॥

इस ललनशिरोमणिकामें जो कुछ कि जितने पद मुद्रित किये

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गये हैं उन पदों के शब्दों के अक्षरों पर जहां २ पर ताल की ज़र्ब बैठती है तालांक चिह्नित कर और अक्षरों के अन्तरीयमात्रादर्श पर ऐसी–चिह्नकी लकीरकर उस लकीरपर अंक चिह्नित करदिये और प्रति खालीकी ज़र्बपर ऐसा + निशान देकर प्रति आवृत्तिकी मात्राभी दर्शित कर दीगई हैं और कहीं कहीं मात्रादर्श के स्थान पर ऐसी–लकीर नहीं की है पूर्ण अक्षरही लिख दियेगये हैं जिसमें कि ज्ञातज्ञ और सर्व्व साधारणोंको भी समझकर जानलेने (व) याद करलेने में कुछ परिश्रम और अड़चल न पड़ैगा और जो कि लय तालके जाननेवाले हैं आशाहै कि वह तो निहायतही मन लगायकर इन अनमिल रत्नों की खानि पायकर तनमन से आरूढ़ हो इनके प्रकाश करने के उद्योग में तत्पर होयँगे क्योंकि यह वह पदार्थ हैं कि जो बड़ी २ आयुवाले गुणियों व राजा महाराजों के हाथ न आये होंगे और न नसीब होसक्के हैं इस कलि-काल में इस गुण की ग्राहकताका अभाव जानकर मैंने भी दीर्घ विस्तार इसी हेतु नहीं किया काहेसे कि जब किसी गुणीका गुण-ग्राहक मानदाता कोई नहीं होताहै तौ उसका गुण चमत्कार को नहीं प्राप्त होता अगर कोई इसके मानदाता होयँगे तौ इस पुस्तक के दूसरे विभागमें कुछ और नवीनता करदिखलाई जायगी॥यथा॥

दो० सुजन सनेही जानि हैं यह श्रम को अवगाह॥
ललनमती कह लहि सकै गुण सांगीत अथाह १
मूर्ख मूर्खता में मगन गुणी मगन गुण माहिं॥
नन्दललन अनुकूल ज्यहि पावत गुण धनकाहिं २

पण्डित ललनपिया ठुमरी बनायक
फरक्काबादी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ ललनशिरोमणिका ।

अर्थात्

सांगीतकला तालाध्यायी का प्रारम्भ ।

दो० नमो उमा गुरु शिव ललन सुखदा बिस्वाबीश ॥
श्यामा श्याम युगलचरण निबहु शारदा शीश १
जय मुनीन्द्र मुनि मत सुखद तालाध्यायीग्रंथ ॥
तिन्हकृति कुशल प्रसादकर बरणत कछुक सुपंथ २
ताल काल परकालपद लय लावण्य सुडौल ॥
ललनशिरोमणिका महीं बरणत तालनु तौल ३

प्रथम (३) त्रैताली (१२) द्वादशमात्रिक माधवी ताल ॥ इसका सम नवीं मात्रा (व) तीसरी तालपर मानाजाता और पहिली से प्रारम्भित है ॥

अथ एकावृत्तिका मात्रानुमानिक तालांक चिह्नित उदाहण ॥

यथा ॥

१ २ + ३
हरि सुमिररे हरि सुमिररे ॥

माधवीताल ॥

अथ श्रीपद तालांक मुद्रित रागिनी परज समान मात्रिक उठान पहिली से ॥

१ २ + ३ १ २ + ३
(१) भजु सियवर भजु सियवर गिरिवरधर गिरिवरधर ॥

१ २ + ३ १ २
अन्तरा उठान पहिली से ॥ मन वच क्रम हित चित धन दशरथ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

+ ३ १ २ + ३ १
सुत धरु हिय हरि ॥ १ ॥ यह कलि बिच वो ललन धनि ज्यहि
२ + ३
व्रति सृजि सुमिरण कर ॥ २ ॥ इति ॥

पद जोड़े का रागिनी बिहारी माधवी ताल (१२) द्वादश मात्रिकी मात्रा कन प्रकाशिक तालांक चिह्नित समान मात्रिक उठान पहिली से ॥

१ २ + ३ १ २ +
(२) श्याम सलोनोरी छवि मनोहर नँद को लाआड़िलो ओ
३ १ २ + ३
ओओओओ ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥ शीश पै मुकुट श्रवण
१ २ + ३ १ २ +
कुंडल अंगित झांआंगिलो ओओओओओ ॥ माल वैजंती विरा-
३ १ २ + ३ १ २
जत हृद पै चिह्न भृगूपद छाआंजिलो ओओ ॥ १ ॥ मीन मधूप
+ ३ १ २ + ३ १ २
मृगा दृग अंबुज खंजन अंजन आं आंजिलो ओओ ॥ चोर चितौ-
+ ३ १ २ + ३ १
न चला चपला सम भ्रू धनु खंड सुहाआवलो ओओ॥२॥सिन्धु
२ + ३ १ २ + ३ १ २
पियूष धरा अधरा मुरली बच मोहनि वा आसिलो ओओ ॥ यशुदा
+ ३ १ २ + ३
ललन मोह्यो मोरा मन सोहनि सूरत सांआंवलो ओओ॥३॥इति॥

चौताला ॥

अथ ध्रुपद राग भैरव (४) चारि ताल (१२) द्वादशमात्री उठान प्रथमा की खाली से ॥

(३) प्रात मोरे आइयो जू मदनमोहन धेनु दुहन गाइयो सुनाइयो जू मुरलि मधुरि मधुरि तान ॥ अंतरा उठान समसे ॥ षड़ज ऋषभ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गान्धार मध्यम पंचम सुखार धैवट अरु निषाद सप्तस्वर प्रमान ॥१॥ (अभोग) तारा उदारा मुदारा ग्राम कोमल तीव्र द्वादश धाम इक्किस मूर्च्छनानु बाइस श्रुति युति रचना विधान ॥ २ ॥ (भोग) आना तूम तना नेरी रे नीनै तूम तना अलाप अधर राग रचिये नन्द ललन जीवन प्रान ॥ ३ ॥ इति ॥

चौताला ॥

ध्रुपद रागिनी रामकली समान मात्रिक (४) चारि ताल (१२) द्वादशमात्री उठान सम से ॥

(४) नाद नीरध स्वर प्रवाह रागरूप रस अथाह त्रिवट तिल्लाना चतुरँग रँग की तरँग सरगमादि ॥ अंतरा उठान सम से ॥ सप्त स्वर सारे गा मा पा धा नी तारा उदारा मुदारा त्रै ग्राम उनञ्चास कोटिक तान त्रैशत साठ तालेत्यादि ॥ १ ॥ (अभोग) डागुरि नौहारी खड़हारि गुवर हारि वाणी चारि शुध शुध मुद्रा अलाप जीव सिंधु संवाद ॥ २ ॥ (भोग) लै अनन्त भमर जाल दुरत मध्य विमल चाल जापहि नंद ललन ख्याल नाद को सोइ लहत स्वाद ॥ ३ ॥ इति ॥

अथ श्रीगुसाइँ अष्टसखा नामान (व) भक्त प्रभाव वर्णन ॥

ताल सवारी ॥

ध्रुपद राग श्यामकल्याण ताल (४) चारिताल सवारी तालांक मुद्रित (३२) बत्तिस मात्रिकी उठान तीसरीकी खाली से ॥

+ ४ + १ + २

(५) चत्रभुज से चतुर कुंभन से कर्मटी सो शूर सम शूरवीर

+ ३ ४ +

पर्मानन्द पावन से ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ नन्ददास से नि-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

१ + २ + ३
पुण कृष्णदास से कामिल क्षीत स्वामी गोविन्ददास मनसे ॥ १ ॥
४ + १ + २
(अभोग) सखा ये गुसाईं वसु नन्द ललन सुयशु गाय लह्यो
+ ३ ४ + १ +
मोक्षरस भजनसे ॥ २ ॥ (भोग) कीर्ति जिनकी वेदन मुनिजनहूं
२ + ३
कथन गावत जहान कुल सुजन से ॥ ३ ॥ इति ॥

अथ श्रीकृष्ण भगवानस्य अष्टसखा नामान वर्णन ॥

ताल सवारी ॥

ध्रुपद जोड़ेकी राग श्यामकल्याण ताल (४) चारितालसवारी तालांक मुद्रित (३२) बत्तिस मात्रिकी उठानसमसे ॥

४ + १ + २ +
(६) अर्जुन मद मंगल तोषमना मंसुखा रैंदा पैंदास्यामाष्ट
३ + ४ +
सखा जिनके परमप्रिया ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ नन्द ललन
१ + २ + ३
को ध्याय पर्म्मपद लीन्हो पाय जिन्हु यशु गाय लहे मोक्षफल
+
सुखजिया ॥ १ ॥ इति ॥

अथ चौताली षोड़श (१६) मात्रिकी चक्रताल ॥ इसका सम पहिलीपर होताहै आड़े चौताले के सदृश (४) चारितालें दीजाती हैं परन्तु भेद इतना है कि जिसतरह आड़े में तीसरी चौथी तालके बीचमें दम बैठती है वैसी इसमें चौथीताल के बाद एक ताल त्रै-मात्रिकीसी दम ज्यादा बैठती है औ सम इसका पहिली पै माना जाता है ॥ यथा ॥

ध्रुपद रागिनी खंमाच समान मात्रिक तालांक मुद्रित चौताली (१६) मात्रा प्रकाशिक मात्री चक्र ताल उठान समसे ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

१ २ ३ ४ +
(७) चपल चऊंचल चश्रालपै वश्रारी ईं मन ॥ अन्तरा उठान
१ २ ३ ४ १ २ ३
समसे ॥ मदन फवन तन मन मत उमगति नंदको ललन मुरली
४ +
वश्रारोजी हरन ॥ इति ॥

चक्रताल ॥

विद्याश्रादि भनौमदेव इस धुनिपर ॥ ताल फरोदस्त ॥
ध्रुपद राग एमन कल्याण तालांक मुद्रित ताल सवारी फरोदस्त
(५) पंचताली (१४) चतुर्दश मात्रिक उठान समसे ॥

४ + ५ + १ २ ३ ४ + ५ + १
(८) षड़ज शिष वृष ऋषभ छाग गंधार मध्यम शृगाल को-
२ ३ ४ + ५ + १ २ ३
किल पंचम धैवट तुरंग गज निषाद स्वर ॥ अन्तरा उठान सम
४ + ५ + १ २ ३ ४ + ५ + १
से ॥ त्रै ग्राम की विधि गुनिजन कहे इमु तरा की षड़ज ते टीप
२ ३ ४ + ५ + १ २ ३
स्वर तलक अष्ट स्वर को षड़ज ग्राम कह्यो वर ॥ १ ॥ (अभोग)
४ + ५ + १ २ ३ ४ + ५ + १ २
पुनि तराकी मध्यम षड़ज मान छः स्वर उदारा केरिप्रमान
३ ४ + ५ + १ २ ३ ४
इमु दश स्वर को गुनै मध्यम ग्राम कर ॥ २ ॥ (भोग) तारा
+ ५ + १ २ ३ ४ + ५ + १ २ ३
की निषाद की षड़ज सप्त स्वर उदारा के धर तीन स्वर मुदरा को
४ + ५ + १ २ ३
निषाद ग्राम कह्यो ललन सुघर ॥ ३ ॥ इति ॥

पचकौलताल ॥

ध्रुपद राग तिलक कामोद ताल पचकौल (१६) षोड़श मात्रिक
(५) पंचताली मात्रा श्रादर्शित तालांक मुद्रित उठानसमसे ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

५ + १ + २ + ३ ४ ५ + १ +
(६) साअआं गिईत सुखद सुख सआर लसत चआरु भेयेद
२ + ३ ४ ५ + १ + २ + ३ ४
नीई के चाआरि गाआन तऊंत्र कृइत्य निरत काआरी हाआव
५ + १ + २ + ३ ४
भाआव बिकट बिकट तीक्षण लय काआरी॥ अंतरा उठान समसे॥
५ + १ + २ + ३ ४ ५ + १ +
सप्त शुध स्वरन द्वादश सुरूऊप अआआ आरो ओही अमाआरो
२ + ३ ४ ५ + १ + २ +
ओही स्वर अलाआप कांआल मआध्ये सो ओ ओ ई ई ई
३ ४ ५ + १ + २ + ३ ४
इकिस मुऊर्च्छना आंआं बाइस श्रुति गति क्लेष्टभारी ॥ १ ॥
५ + १ + २ + ३ ४ ५ + १
(अभोग) ऋषभ धैवट त्रैत्रै श्रुति षड़ज मध्यम पंचमकी चारि
+ २ + ३ ४ ५ + १ +
चारि द्वै द्वै निषादी गंधारी ॥ २ ॥ (भोग) राग रूप लै अमित
२ + ३ ४ ५ + १ + २ + ३ ४
ताल सत गुरुजन जोई धरत ख्याल नन्द ललन जापे हो
५ + १ + २ + ३ ४
निहाल नाद धनको सोई हो अधिई काआरी ॥ ३ ॥ इति ॥

अब इसी ध्रुपद का शुद्ध शाब्दिक सुरूप॥

सांगीत सुखद सुख सार लसत चारु भेद नीके चारि गान तंत्र कृत्य निरत कारी हाव भाव बिकट बिकट तीक्षण लय कारी अंतरा उठान समसे॥ सप्त शुध स्वरन द्वादश सुरूप आरोही अमरोही स्वर अलाप काल मध्य सोई इकिस मूर्च्छना बाइस श्रुति गति क्लेष्ट भारी॥ १॥ (अभोग) ऋषभ धैवट त्रैत्रै श्रुति षड़ज मध्यम पंचमकी चारि चारि द्वै द्वै निषादी गंधारी॥ २॥ (भोग) राग रूप लै अमित ताल सत गुरुजन जोई धरत ख्याल नन्द ललन जापे हो निहाल नाद धन को सोई हो अधिकारी॥ ३॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुटताल ॥

ध्रुपद रागिनी बरुआ तालांक मुद्रित पुटताल (५) पंचताली
(१०) दश मात्रिक उठान समसे ॥

इसतालकी तीसरी जो मध्यकी तालहै उसपर सम मानाजाताहै ॥

३ ४ ५ + १ २ ३ ४ ५ + १ २ ३ ४
(१०) सिय वर सुखद चरन निशि दिन सुमिरिय मनकलि-
५ + १ २ ३ ४ ५ + १ २
मल सकल शमन अखिल दुख दल दलन ॥ अंतरा उठानसमसे ॥
३ ४ ५ + १ २ ३ ४ ५ + १ २ ३ ४ ५ + १ २
सरन असरन भरन गन रुचि रुचिर करन दशरथ नृपति ललन
३ ४ ५ + १ २
कुशल चहुँ रहु शरन ॥ १ ॥ इति ॥

षट्ताल ॥

ध्रुपद मात्राकन प्रकाशक राग हमीर समान मात्रिक
तालांक मुद्रित (१८) अठारह मात्री (६)
षट्ताल उठान समसे ॥

इसका तालानुमान प्रथमा से करना चाहिये और सम
इसका दूसरी ताल पर माना जाता है ॥

६ + १ + २ + ३ ४ ५ ६ + १
(११) पूरत युथप नित अघन कर अधम मति अधमता आन
+ २ + ३ ४ ५ ६ + १ + २ + ३
त्याआग करत निगम वचन कोविद कथन कविन मतिनु मु-
४ ५ ६ + १ + २
निनु गुनिनु ॥ अंतरा उठान षष्ठी से ॥ चऊऊ रासिक कोटिक
+ ३ ४ ५ ६ + १ + २ + ३
नरक शोओग रोओग भोओग भोओग तव पाआयो ओ नर
४ ५ ६ + १ + २ + ३ ४ ५
तनरे मूरख ललन पन धारत ध्यायेना नंद ललन ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सरवनताल ॥

ध्रुपद मात्राकन प्रकाशक समान मात्रिकतालांक
मुद्रित (२०) विंशति मात्रिका (७) सप्त ताली
सरवन ताल जिसको कि (अङ्ग) साल्मेंट
भी कहते हैं उठान पहिली से ॥

इस तालमें प्रारंभिक तालसे दूसरी तालपर सम माना जाता है ॥
ततः ॥ तालांक चिह्नित एक आवृत्ति का उदाहरण ॥ यथा ॥

१ २ ३ ४ ५६ ७
हरि हर सुमिरन कर तन मन अरपन कर ॥

अथ ध्रुपद राग पूरिया ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ १ २
(१२) लइ लइ मुरलि चुरय किन सखि हरिकी ईईई ॥ पकर
३ ४ ५ ६ ७
बुलाओ सखियन व्रज घर घरकी ई ईई ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ १ २
हर घरि को प्रबल ललन पनो न भल अ अ अ अ ॥ चाहो जो
३ ४ ५ ६ ७
कुशल बंशी दो मोरे कुँवरकी इइइईई ॥ १ ॥ इति ॥

सालमेन्ट (व) सरवन ताल ॥

ध्रुपद जोड़े की रागिनी खंबावाती ॥ सरवन ताल (व) सालमेन्ट
ताल ॥ समान मात्रिकतालांक मुद्रित उठान पहिली से ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ १ २
(१३) लँगरत डगर चलत सखि नटखट नटवर दधिकी गगर
३ ४ ५ ६ ७
गेरी गोरी कियो असि अनरथ अ अ ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ १ २
नँद के ललन केरी घत की निरख सखि तैंने गति करत खेदित
३ ४ ५ ६ ७
हिया हरि अगणित रचि कृत अथ ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गणेशताल ॥

ध्रुपद मात्राकन प्रकाशक राग अड़ाना कान्हरा समानमात्रिक तालांकमुद्रित (८) अष्टताली (२६) छब्बिस मात्रिकी गणेशताल उठान पहिलीसे ॥

यथा तालांक मुद्रित एक आवृत्ति का उदाहरण ॥

१ + २ ३ + ४ + ५ + ६ + ७ ८
हरिपद सुखद सुमिरु निशि दिन कुशल चहत यदपि जगत ॥

इस गणेशताल में चौथी तालपर सम माना जाता है ॥

१ + २ ३ + ४ + ५ + ६ +
(१४) नागरि नवीइनी कृइत्य साअअरु पिय के मिलन को
७ ८ १ + २ ३ +
सुकुमआरि ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ घरके न लुगवा जआनें
४ + ५ + ६ + ७ ८ १ + २ ३ + ४ +
बीइइर भरन चलु कालिइन्दी नीईर यहि मिसकी सुघर ततबीइइर
५ + ६ + ७ ८
नन्दके ललन संग विहाआरु ॥ १ ॥ इति ॥

गणेशताल ॥

ध्रुपद जोड़ेका रागदेश मात्रा कन प्रकाशक समानमात्रिक तालांकमुद्रित गणेशताल उठान पहिली से ॥

१ + २ ३ + ४ + ५ + ६
(१५) राधा रुक्मिणीरमण भगवाअअन जीवन प्राआणा-
+ ७ ८ १ + २ ३
धाआर काआन्ह ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ कृपा कर कृपा कर
+ ४ + ५ + ६ + ७ ८ १ + २ ३ +
जन पर प्रभु दिजिये दरश दीईन जाआन सुमिरत तुहि सुमिरत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

४ + ५ + ६ + ७ ८ १ + २ ३ +
तुहि नित रजनि वासर धरत ध्याआन तुम्हरी शरन नँदके
४ + ५ + ६ + ७ ८
ललन मोरी सुनिये विनति दया निधाआन ॥ १ ॥ इति ॥

हनुमानताल ॥

ध्रुपद मात्राकण प्रकाशक रागिनी सोहिनी समानमात्रिक
तालांकमुद्रित (९) नवताली (२६) छब्बिस मात्रिका
हनुमान ताल उठान पहिली से ॥
इस ताल में भी चौथी ताल पर सम मानाजाता है ॥

१ + २ ३ + ४ + ५ ६ ७
(१६) राधावर राधावर कहुरे ये ये ये पाआप आआप ता-
८ ९ १ + २ ३
आप दहुरे ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥ सिय बर सिय बर ध्या-
४ + ५ ६ ७ ८ ९ १ + २ ३ +
आये ये ये ये शउंभ उमआ मनहि लाआये गुरुपद शिरनाआये
४ + ५ ६ ७ ८ ९
पाआये ये ये ललन धन अनऊंद वहुरे ॥ १ ॥ इति ॥

हनुमानताल ॥

ध्रुपद जोड़ेकी मात्राकण प्रकाशक राग कान्हरा समान मात्रिक
तालांकमुद्रित हनुमान ताल उठान पहिली से ॥

१ + २ ३ + ४ + ५ ६
(१७) शिव शिव शिव भजरे ये ये ये ये ये जगत जननि
७ ८ ९ १ + २ ३
उमहि सुमिरु ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ चेततु न अजहू है
+ ४ + ५ ६ ७ ८ ९ १ + २ ३ +
शठ रे ये ये ये धारत ललन पनहि नित रे दुरलभ लहि नर तन
४ + ५ ६ ७ ८ ९
रे ये ये ये वृथहि खोवत अमुल धनरे ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ब्रह्मताल ॥

ध्रुपद मात्राकणप्रकाशक राग बिहाग ॥ समान मात्रिक तालांक
मुद्रित (१०) दशताली (२८) अट्ठाइस मात्रिका
ब्रह्मताल उठान समसे ॥

यथा एक आवृत्तिका तालांक चिह्नित उदाहरण ॥

१ + २ ३ + ४ ५ ६ + ७ ८ ९ १० +
कमल चरनकी शरन नितप्रति निशिदिन गहु मन वच क्रम सन ॥
१ + २ ३ ४ ५ ६ + ७ ८
(१८) नागर नवेली नारि नैननकी सैन मार मोहनी सी
९ १० १ + २ ३ ४ ५ ६
दीन्ही डार ॥ अन्तरा उठानसे ॥ व्याकुलहूं तब सों यशुदा ललन
+ ७ ८ ९ १०
सौं भयो सब सुख छार ॥ १ ॥ इति ॥

ब्रह्मताल ॥

ध्रुपद रागिनी भूपाली ॥ समान मात्रिक तालांक मुद्रित
ब्रह्मताल उठान सम से ॥

१ २ ३ + ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
(१९) कान्ह कपटी सखि छल लियो मुहिका मृदु मृदु बतियन
+ १ + २ ३ ४ ५ ६
कर ॥ अंतरा उठान सम से ॥ दधि को मुलै मोर खाय घट दियो
+ ७ ८ ९ १० +
फोर नँद को ललन री निडर ॥ १ ॥ इति ॥

रुद्रताल ॥

ध्रुपद रागिनी परज ॥ समान मात्रिक तालांक मुद्रित (११)
रुद्रताली (३०) त्रिंशतिमात्रिका रुद्रताल उठान सम से ॥

अथ तालांक चिह्नित एक आवृत्ति का उदाहरण ॥

१ + २ ३ + ४ ५ ६ ७ + ८ ९ १० ११ १२
भजु रघुवर यदुवर गुरु गुरु शिव शिव करु धनु गिरिसुरसर धर ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

१ + २ ३ + ४ ५ ६ + ७ ८ ९
(२०) कांवर कारी झलकत कदमनु के निकट समुझ परत
१० ११ १ + २ ३ ४ ५ ६
ठाढ़ो कान्ह ॥ अन्तरा उठान सम से ॥ थिरु थिरु धरु धीर हर बरन
७ ८ ९ १० ११
बीर नँद के ललन को दे जान ॥ १ ॥ इति ॥

रुद्रताल ॥

ध्रुपद रागिनी सोहिनी ॥ समान मात्रिक तालांक मुद्रित
रुद्रताल उठान सम से ॥

१ + २ ३ ४ ५ ६ + ७ ८ ९ १०
(२१) तैं मद भरी बाल यौवन रँग माती अकेली डोलत क्यहि
११ १ + २ ३ ४ ५ ६
काज ॥ अन्तरा उठान सम से ॥ यह न समय कुंजन बिच बिहरन
७ ८ ९ १० ११ १ + २ ३ ४ ५ ६
को कारण कछु जचत आज ॥ १ ॥ नन्द ललन के प्रेम पगी कह
७ ८ ९ १० ११
तन मन सोई रँग छाज ॥ २ ॥ इति ॥

रुद्रताल ॥

ध्रुपद जोड़े की राग शङ्कराभरण ॥ समान मात्रिक तालांक
मुद्रित ॥ रुद्रताल उठान सम से ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
(२२) प्रेम मदवा मुहि पिलाआदे मदवारे प्यारे तोरे बलि
१० ११ १ + २ ३ +
बलि मैं जाऊं ॥ अंतरा उठान समसे ॥ रँगीलो रँगीलो मदवा
४ ५ ६ + ७ ८ ९ १० ११
पी मिलूं सजनवा यशुदा ललन के गुण गाऊं ॥ १ ॥ इति ॥

विष्णुताल ॥

ध्रुपद मात्रा प्रकाशक राग मालकौश ॥ समान मात्रिक
तालांक मुद्रित ॥ (१२) बारहताली (३६)
छत्तिस मात्रिका ॥ विष्णु ताल उठान सम से ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
(२३) मोओहन मुरली इइइ लखु सखि कहुँ बा अजी ई म-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

९ १० ११ १२
धुरि मधुरि धुनि लियो जिय बसकर ॥ अंतरा उठान सम से ॥
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
नँद के ललन प्रिय सन बसुरी सुघर सुन सखि तनकी मन की
१० ११ १२
सुधि बुधि सब गइ हर ॥ १ ॥ इति ॥

विष्णुताल ॥

ध्रुपद मात्राकरण प्रकाशक राग मालकौंश समान मात्रिक तालांक मुद्रित विष्णुताल उठान सम से ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
(२४) सुमिरण कर अरे मन राधा कृष्ण रुक्मिण पद जगत
९ १० १
जनन मन धन श्रीइ माअधोओ ॥ अंतरा उठान समसे ॥ मन
२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
मनसा पुरन प्रभु यशुमति नँद ललन श्रि रआधा व्यआधा की
कदन अअर आधोओ ॥ १ ॥ इति ॥

विष्णुताल ॥

ध्रुपद मात्राकण प्रकाशक राग मालकौंश समान मात्रिक तालांक मुदित विष्णुताल उठान सम से ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
(२५) कआन्हर कहँ सिइखे ये कुटिलाई को करिबो तुम
८ ९ १० ११ १२ १
डगर बगर नित करो नइ नइ रारि ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ छुओ
२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
मेरो अचरुआ जनि ओजी ढीठ नँद के ललन मानो न मोओरी
१० ११ १२
सिखवन दूंगी मैं गआरि ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वरुणताल ॥

ध्रुपद मात्राकण प्रकाशक रागिनी पीलू समान मात्रिक तालांक मुद्रित (१३) तेरह ताली (४२) बयालिस मात्रिका वरुणताल उठान पहिली से ॥

इस तालका सम तीसरी तालपर माना जाता है ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
(२६) दरश परश बिन पिय जिय बरसन भइँ तरसत हिय
८ ९ १० ११ १२ १३
परम दुखित करत मदन विरह विपत ॥ अन्तरा उठान पहिली
१ २ ३ ४ ५ ६ ७
से ॥ नन्दको ललन निरदइ सखि सवत के सँग विहरत नित
८ ९ १० ११ १२ १३
करत अनँद भवन गवन की जनि सुरत ॥ १ ॥ इति ॥

वरुणताल ॥

ध्रुपद रागिनी परज मात्राकण प्रकाशक समान मात्रिक तालांक मुद्रित (१३) तेरह ताली (४२) बयालिस मात्रिका वरुणताल उठान पहिली से ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
(२७) पगन परत पिय तोरे बरण बरण विनति विरच शी-
८ ९ १० ११ १२ १३
शहू निवत हाहाकर तुम सन दोउ कर जोरे ॥ अन्तरा उठान
१ २ ३ ४ ५ ६
पहिली से ॥ मआन ले मोरी बतियां आं नँदके ललन करु नतियां
७ ८ ९ १० ११ १२ १३
आं मोसे तजु न पिरतियां आं तोसे हूंतो कहत निहोरे॥ १ ॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शक्रताल ॥

ध्रुपद रागिनी काफी समान मात्रिक तालांक मुद्रित (१४) चौदहताली (३२) बत्तिस मात्रिका शक्रताल उठान पहिलीसे ॥
इस तालका सम चौदहवीं तालपर मानाजाता है ॥

१ + २ + ३ ४ + ५ + ६ ७ ८
(२८) गिरिवर धरन दलन दल दनुजन सुखद मुनिन मन
९ १० ११ १२ १३ १४ १ + २
आ नँ द सदन घन ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ तारन तरन
+ ३ ४ + ५ + ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३
जग जन विपता हरन भजु यशुदा ललन चाहत जो सुख
१४
मन ॥ १ ॥ इति ॥

शक्रताल ॥

ध्रुपद जोड़े की रागिनी काफी समान मात्रिक तालांक मुद्रित (१४) चौदहताली (३२) बत्तिस मात्रिका शक्रताल उठान पहिली से ॥

१ + २ + ३ + ४ ५ + ६ ७
(२९) दुरवत काहे छल बल कर हम सन जानत तिहारे
८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १
सब रँग ढँग गिरिधर ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ जासों
+ २ + ३ ४ + ५ + ६ ७ ८ ९ १० ११
तुम कियो मेल सो मेरी सगी सहेलि ललन तिहारे खेल विदित
१२ १३ १४
व्रज नगर ॥ १ ॥ इति ॥

हरिताल ॥

ध्रुपद राग मलार धूरिया समान मात्रिक तालांक मुद्रित (१५) पन्द्रह ताली (४६) छियालिस मात्रिका हरिताल उठान पहिली से ॥
इस ताल में १५ तीसरी तालपर सम मानाजाता है ताल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

संख्यानुमान के वास्ते एकके अंक से पद के अक्षरों पर अंक चिह्नित भी इसीहेतु करदिये हैं कि जिसमें सर्व्व साधारण को गणना करने में कठिनाई न होवे॥

१ २ + ३ ४ + ५ + ६ ७
(३०) प्रफुलित निरखि वदन विलसि विपिन उपवन छवि
८ ९ १० + ११ + १२ + १३ १४ १५
सुघर सुघर नव फब हरित हरत मन द्रुम द्रुम प्रति॥ अंतरा उठान
१ २ + ३ ४ + ५ + ६
पहिली से॥ आगमन कियोरी अआली मदन मद महा आन
७ ८ + ९ १० + ११ + १२ + १३ १४
भआंति पावस सुखद ऋतु नँदके ललन पिय बिन जनि सुख
१५
चित॥ १॥ इति॥

हरिताल॥

ध्रुपद जोड़की मात्राकण प्रकाशक रागिनी परज समान मात्रिक तालांक मुद्रित (१५) पन्द्रह ताली (४६) छियालिस मात्रिका हरिताल उठान पहिली से॥

१ २ + ३ ४ + ५ + ६ ७ ८
(३१) चलु चलुरी मधुवनै मिलन मदन मोदन कहोरी भू-
+ ९ १० + ११ + १२ + १३ १४ १५
लन भुलन हित सखि कहु न सुन केहूसों गुपचुप सन॥ अन्त-
१ २ + ३ ४ + ५
रा उठान पहिली से॥ कांख बिच छिपहु वसन थल यकाअन्त
+ ६ ७ ८ + ९ १० + ११ + १२ +
लिहै सजतन कहुँ खोज नँद को ललन उलट न आवे सखि
१३ १४ १५
अपने भवन॥ १॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भ्रमरताल ॥

ध्रुपद मात्राकण प्रकाशक राग मालकौशी बहार समान
मात्रिक तालांक मुद्रित (१६) षोड़शताली (३२)
मात्रिका भ्रमरताल उठान पहिली से ॥
इस ताल का सम पांचवीं ताल पर माना जाता है ॥

१ + २ ३ ४ ५ + ६ ७ + ८ ९ १० ११ १२
(३२) मदन मोहन बिन दरशन स्रवतहि रहत दृगन प्रबल
१३ १४ १५ १६ १ + २ ३
जल कर झरन ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ यशुदा ललन
४ ५ + ६ ७ + ८ ९ १० ११ १२ १३ १४
हित मआतीई घरि पल छिनक कल न प र त मुहिं बिन
१५ १६
सजन ॥ १ ॥ इति ॥

भ्रमरताल ॥

ध्रुपद जोड़े का रागिनी भैरवी मात्राकण प्रकाशक समान
मात्रिक तालांक मुद्रित (१६) षोड़शताली (३२)
बत्तिस मात्रिका भ्रमरताल उठान पहिली से ॥

१ + २ ३ ४ ५ + ६ ७ + ८ ९
(३३) करम की गति कह कहिये ये हमरे ये सनेही सजन
१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १
स व त सन बिलसनरी ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ नँद
+ २ ३ ४ ५ + ६ ७ + ८ ९ १० ११ १२ १३
के ललन को ललन पन अबलउ छुटत न साखि उ म गो जावे
१४ १५ १६
मोरा यौवन ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विजयाखण्डताल॥

ध्रुपद मात्राकण प्रकाशक रागदेश समान मात्रिक तालांक मुद्रित (१७) सत्रह ताली (४२) बयालिस मात्रिका विजयाखण्डताल उठान पहिली से॥

इस ताल के तालानुमान अंकगणना से तृतीय पर यानी तीसरी ताल पर सम माना जाता है॥

१ २ ३ + ४ ५ ६ + ७ + ८ ९
(३४) बिसर गइ सुधि जननि जठरिक प्रण विहय सकल
१० ११ १२ + १३ १४ १५ + १६ १७ +
भजत भगवत नहिं अधम पुनि अघहि सृजत॥ अन्तरा उठान
१ २ ३ + ४ ५ ६ + ७ + ८
पहिली से॥ ललन पन नहिं तजत नहिं परिणाश्रम कि सुधि
९ १० ११ १२ + १३ १४ १५ + १६ १७ +
कछु करत शठ नर पश्चाय तन वृथहिं बाद करत॥ १ ॥ इति॥

विजयताल॥

ध्रुपद जोड़े का मात्राकण प्रकाशक रागिनी सोहिनी कलांगड़ा॥ समान मात्रिक तालांक मुद्रित (१७) सत्रह ताली (४२) बयालिस मात्रिका विजयाखण्ड ताल उठान पहिली से॥

१ २ ३ + ४ ५ ६ + ७ + ८ ९
(३५) हमरि तुम्हरि न बनब मश्राधव तुम तो अपन मन
१० ११ १२ + १३ १४ १५ + १६ १७ +
के मउजिक नई सवत नित प्रति करत मानोना॥ अंतरा उठान
१ २ ३ + ४ ५ ६ + ७ + ८ ९
पहिली से॥ नँद के ललन निठुर निपट तुम अब तो तुहि परख
१० ११ १२ + १३ १४ १५ + १६ १७
लियो भल कहति सत युवति पर परद जानोना॥ १ ॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लक्ष्मीताल

ध्रुपद मात्राकण प्रकाशक राग एमन कल्याण समान मात्रिक तालांक मुद्रित (१८) अठारहताली (३०) त्रिंशति मात्रिका लक्ष्मीताल उठान पहिली से ॥

इस ताल में अठारहवीं ताल पर सम माना जाता है ॥

अब एक आवृत्ति का तालांक चिह्नित उदाहरण ॥ यथा ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५
सुमिरण कर गिरिवर धर सियवर उर धरु अहर निश
१६ १७ १८
अहर निश ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४
(३६) जय व्रज पाल बल निधि खरे श्रीई हरि यदुपति मदन
१५ १६ १७ १८ १ २ ३ ४ ५
लाल नउंद लाल ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥ करुनाआकर जन
६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८
वत्सल गिरिधर यशुमति ललन लाल करु निहाल ॥ १ ॥ इति ॥

लक्ष्मीताल ॥

ध्रुपद जोड़े का राग एमन मात्राकण प्रकाशक समान मात्रिक तालांक मुद्रित (१८) अठारह ताली (३०) त्रिंशति मात्रिका लक्ष्मीताल उठान पहिली से ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५
(३७) घरि पलरे—जनि बिसरे—मन महँ विहरे—सदा—तुहि
१६ १७ १८ १ २ ३ ४ ५ ६ ७
सदा—तुहि ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥ सुख करता—दुख हरता-
८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८
नँद के—ललना—हो—गा तुहि हो—गा तुहि ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लक्ष्मीताल ॥

ध्रुपद मात्राकण प्रकाशक रागिनी भूपाली समान मात्रिक तालांक मुद्रित (१८) अठारह ताली (३०) त्रिंशति मात्रिका लक्ष्मीताल उठान पहिली से ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५
(३८) पनघट तट गेरो मेरो घट नटखट नटवर नमा—ना—
१६ १७ १८ १ २ ३ ४ ५ ६ ७
नमा—ना—॥ अंतरा उठान पहिली से ॥ नँद को ललन बड़ो बेचलन
८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८
पनियां मैं कैसे जाऊँ नदा—ना—न दा—ना—॥ १ ॥ इति ॥

हंमताल ॥

ध्रुपद मात्राभरण संयुति राग बसंत समान मात्रिक तालांक मुद्रित (१९) एकोनविंशातिताली (३०) त्रिंशति मात्रिका हंमताल उठान पहिली से ॥

इस ताल में उन्नीसवीं ताल पर सम माना जाता है ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५
(३९) बलम बलि बलि गइ परत पग निपट निठुर मानत
१६ १७ १८ १९ १ २ ३ ४ ५ ६
नहिं मानत नहिं ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥ ललन पन तुम्हरो
७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९
तो छुटत नहिं लाजहू जियामें आवत नाहिं आवत नहिं ॥ १ ॥ इति ॥

हंसताल ॥

ध्रुपद जोड़े का रागिनी कलांगड़ा समान मात्रिक तालांक मुद्रित (१९) एकोनविंशतिताली (३०) त्रिंशति मात्रिका हंसताल उठान पहिली से ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५
(४०) तुम तो बड़ निरदयी देवत पिय दरशनहूँ न अस न

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

१६ १७ १८ १६ १ २ ३ ४ ५
चहि अस न चहि ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥ नँद ललन पिय
६ ७ ८ ६ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १६
तोरी शरन हम करिये करम अरज यहि गरज यहि ॥ १ ॥ इति ॥

कपालताल ॥

ध्रुपद मात्राभरण संयुति राग हिण्डोल समान मात्रिक तालांक मुद्रित (२०) विंशतिताली (३४) चौंतिस मात्रिका कपालताल उठान पहिली से ॥
इस ताल का सम बीसवीं ताल पर माना जाता है ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ६ १० ११ १२ १३
(४१) श्रवण सुनत सखि मुरलि मधुरि धुनि सुधि न रहत
१४ १५ १६ १७ १८ १६ २० १
कछु असन कर वसन कर ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥ नँद के
२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ६ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १६
ललन सन इतनि अरज कर वंशी न बजाये इत गवनकर गवन
२०
कर ॥ १ ॥ इति ॥

कपालताल ॥

ध्रुपद जोड़े का रागिनी परज समान मात्रिक तालांक मुद्रित (२०) विंशतिताली (३४) चौंतिस मात्रिका कपालताल उठान पहिली से ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ६ १० ११ १२ १३
(४२) चलुरी चलुरी सखि मदन मोहन प्रभु रहस रचिस
१४ १५ १६ १७ १८ १६ २० १
ब्रज लखिय टुक चखिय सुख ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥ जीवन
२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ६ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
कर सुफल यशुदा ललन मिलुये निधि मिलै न पुनि सदन
१७ १८ १६ २०
सुख दलन दुख ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ब्रह्मताल ॥

ध्रुपद राग हिण्डोल समान मात्रिक तालांक मुद्रित (१०)
दशताली (२८) अट्ठाइस मात्रिका ब्रह्मताल
उठान सम से ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
(४३) नाम तुम्हरो रटत मदन मनोहर पुरन हो मनकाम ॥
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
अन्तरा उठान सम से ॥ देवन धन वेदन मुनि मन जीवन भक्तन
९ १० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
सुख धाम ॥ १ ॥ जै जै जग कारण भव निस्तारण नन्द ललन
१०
श्याम ॥ २ ॥

इति श्रीपण्डितललनपियाविरचितललनशिरोमणि-
कापदावलीसांगीतकलातालाध्यायी समाप्ता ॥

दो० प्रचलित तालनके कछुक लिखियत बोल पुनीत ॥
शम्भु ललन मत हनुमतहि अन्यहु मत की रीत १

(१) ठेका इकताला ॥ सम से ॥
धीधीना तृक तूना कत्ता घें तृकधीना ॥

(२) ठेका दुताला रूपक ॥ पहिली से ॥
धें तृकधीना तातीना ॥

(३) द्वितीय ठेका दुताला रूपक ॥ सम से ॥
धिरनक धिरनक ता तिरनक ॥

(४) ठेका दुताला ताल फाक्ता ॥ पहिली से ॥
धिद्धिन्ना तिन्ना ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(५) ठेका त्रैताल पंजाबी ॥ सम से ॥
धाधिन्धाधाधिन् तातातिन् धाधाधिन् धा ॥
(६) ठेका दूसरा त्रैताल पंजाबी ॥ सम से ॥
धा धिंग धाधा धिंग ताता तिंग धाधा धिंग धा ॥
(७) ठेका निरत त्रैताल ॥ पहिली से ॥
ताधिन्धिन्ना ताधिन्धिन्ना ताधिन् धिन्ना ता तिन्तिन् ना ॥
(८) ठेका त्रैताल देहलीवार ॥ पहिली से ॥
धा धिन् तृकधिन् धा धिन् धा धा धिन तृधिन् ता तिन् ता ॥
(९) ठेका त्रैताल लखनवी ॥ पहिली से ॥
धें तृकधीना नाधी धीना धें तृकधीना तें तृकतीना ॥
(१०) ठेका त्रैताल फर्रुखाबादी सितारखानी ॥ पहिली से ॥
धिन्धा धा धिन्धा धा धिन्धा धा तिन्ता ता ॥
(११) ठेका धीमा तिताला ॥ पहिली से ॥
धा घे घे धा घे धा घे घे ताके ॥
(१२) ठेका दूसरा धीमा तिताला ॥ सम से ॥
धी धीना धी धीना ती तीना धी धीना ॥
(१३) ठेका आड़ा तिताला ॥ पहिली से ॥
धा धिन् धिन् धा धिन धिन धी धी ताके ॥
(१४) ठेका दूसरा धीमा तिताला ॥ पहिली से ॥
धीधीना धीधीना धीधीना तीतीना ॥
(१५) ठेका जत्त तिताला ॥ पहिली से ॥
ताधिन् धिनक धिन् ताधिन् धिना ॥
(१६) ठेका त्रैताल खेमटा ॥
धा धीना धा तीना ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(१७) ठेका मुखा संयुति त्रैताल ठेका ॥ सम से ॥

अथ बोल मुल्ड़े के ॥

तत्ता किटतूना किणना तिरकिट तक तिरकिट तक ॥

तोल ठेका ॥

धीं त्रिक धिन्ना नाधी धीना तीं त्रिक तिन्ना नाधी धीना ॥

ठेका द्वितीय त्रैताली झपताल ॥ सम से ॥

धिन्धा धिन् धिन्धा तिन्ता तिन् तिन्ता ॥

(१८) ठेका त्रिताली ताल त्योंरा ॥ पहिली से ॥

धेंतृक धीनाधी धीना धेंतृक धीना ती तीना ॥

त्रितीय ठेका त्रैताली झपताला ॥ खाली से ॥

तिट धात धा धात ॥

(१९) ठेका त्रै०ता०झपताल ॥ पहिली से ॥

धिद्धिन्ना धिन्ना धिद्धिन्ना तिन्ना ॥

ठेका त्रैताली शूलताल ॥ सम से ॥

ताधिरनक धिद्धिरनक गद्दी धिरनक ॥

(२०) ठेका त्रैताली ताल झूमड़ा ॥ पहिली से ॥

धेंतृक धीना धीधीना धेंतृक धीना तीतीना ॥

(२१) द्वितीय ठेका ताल झूमड़ा ॥ पहिली से ॥

धिन् धिन् धग तिरकिट तक धिन्धा कत धिन् धिन् धग तिर किटतक तिंताकत ॥

(२२) ठेका त्रैताली ताल धम्मार ॥ सम से ॥

काधिन धिन धा का तिन तिनता ॥

(२३) ठेका द्वितीय त्रैताली तालधम्मार खाली की तृतीयासे॥

धिकिट धिद्धा ता धेट धेट धा ता टेत ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(२४) ठेका धम्मार तालके मुखड़े के बोल ॥

धिक्किट धान धाता गिदगन धा दिग धिन्ता क्रुधान तक धा किट कत गिदगन धा ॥

(२५) ठेका चारिताल ध्रुपद ॥ समसे ॥

धाधा धिन्ता गिदागिन धा धिन्ता किटकत गिदगिन ॥

(२६) ठेका आड़ा चौताला ॥ पहिली से ॥

कत्तीना धीना धीधीना धेंतृक धीना तीना ॥

(२७) द्वितीय ठेका आड़ा चौताला लखनवी ॥ पहिलीसे ॥

धीधीना धीधीना धीतृक धीना तूनाकत्ता ॥

(२८) तृतीय ठेका आड़ा चौताला ॥ पहिली से ॥

तिटकट गिनगन धा धिननिक धिद्धिननिकधिद्धि धधिननिक ॥

(२९) ठेका सवारी चारिताल ॥ समसे ॥

धेंतृक धिन्ना कत्ता धिन्धिन्ना धिद्धिन्ना तेंतृक तिन्ना तिन्ना तिन्ना कत्ता धिन्धिन्ना धिद्धिन्ना ॥

(३०) द्वितीय ठेका सवारी चारिताल ॥ पहिली से ॥

धेंतृक धिन्धिन्ना धिन्धिन्ना धेंतृक तिन्ना तिन्ना तिन्ना कत्ता धिन्धिन्ना धिन्धिन्ना ॥

(३१) ठेका तृतीय सवारी चारिताल ॥ पहिली से ॥

धींतृक धिद्धिन्ना धीधीना धीधीना तृकतूना कत्ती धीधीना धीधीना ॥

(३२) ठेका ताल लक्ष्मी ॥ पहिली से ॥

धिन्धिन्ना किटतक गिदगनधा धित्ता गिदगनधा धाकिट तक धुमकिट तक गिदगनधा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अपूर्व्व अद्भुत पदार्थ ॥

(३३) ठेका बहुतालिक बोल सम समानरूपी प्रारंभ यकताला समसे ॥

धीतृक धिन्ना कद्धिद्धिधीं नागे त्रिणन्नागे तूना त्रिकिट कत्तीना तिरकिट तिरकिट तक ॥

अथ परनविवरण ॥

(१) परन चौताला ध्रुपद उठान समसे ॥

किणान किटकत तगातिट घिणान किटतक तगातिट किणान कत घिणान कत धाकिट तक धुमकिट तक धा धिंगन धाकिट तक ताकिट थुकिट तक गिदगन धाकिट तकिट तकाकिट तक धुमकिट कत गिदगन धा ॥ तक धुमकिट ताकिट तका तिटकत गिदगन धा ॥ तक धुमकिट तकिट तकातिट कत गिदगन धा ॥ इति ॥

(२) परन चौताला ध्रुपद समसे ॥

गिदागिन धा गिदागिन धा दिग।धिन्ता गिदगिन धित्ता घिघदित तधिन्न धाकिट तक धिकिट कत घिघनत तकिट तकाकिट घिघ धिकिट तकता धानधा ॥ घिघ धिकिट तकता धानधा घिघ धिकिट तकता धानधा ॥ इति ॥

(३) परन चारिताल ध्रुपद समकी खाली से ॥

तकधित्तगिन्न धाकिट तक धुमकिट तक धुमकिट तकिट तकाकिट तकथूं तक।धिन्धाधी धाधिन्धाकिट तकिट तकाकिट किणना किट धुमकिट कत गिदागिन धाकिट तक धुमकिट तक थुंगा तका थुंगा थुंतिट्टे धाकिट तक।धित्ता गिदगन धाकिट तकिट तकाकिट गिदगन नगातिट गिद नग नगातिट कत्ता कत्तिर किट तग तग किटकत गिदगन धा कृधद्धिकिट धगातिट।घिघ कृधानधा ॥इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(४) परन चारिताल ध्रुपद सम से ॥

किणान किटतक तगतिट घिणान किटतक तगतिट किटतक तगतिट किटतक तगतिट किटतक किणान किटतक तगतिट घिणान किटतक तगतिट किटतक तगतिट किटतक तगतिट किटतक थुं तगधित्त गधित् किट थुं किट थुं किट थुं किटतक तगतिट किटतक तगतिट किटकत गिदगनधा ॥ इति ॥

(५) परन ध्रुपद चारिताल समसे ॥

कत्तक धेत्तगधेत्धाकिट तकिटतका धित्ता गिदगन गिदगन धाकिट किट किणनं धित्ता धुमकिट तक थुंगा तात्थुन्थुन् किटकत गिदगन धगिग धगिग धगादिन नाना नाना ताकिट तकाकिट किणनक धिकिणानधा ॥ तकिट तकाकिट किणनक धिकिणानधा ॥ तकिट तकाकिट किणनक धिकिणानधा ॥ इति ॥

(६) परन चौताला ध्रुपद समसे ॥

तगाधित्तगिन्न धाकिट तक धुमाकिट तक धुमाकिट तकिट तकाकिट तकथूं तगधिन्धा धिन्धाकिट तकिट तकाकिट किणनं किट ताकिट तकाकिट किणान तकिट तकाकिट तकथुं किट तकथुं किट तकिट तकाकिट तकथुं तगाधिन्धा धीधा धिन्धाकिट किणना किट धुमकिट कत गिदगन धाकिट तक धुमाकिट तक थुंगा तका थुंगा थुंतिट्टे धाकिट तक धित्ता गिदगन धाकिट ताकिट तका किट गिदगन नगातिट गिदगन नगातिट तकिट तकाकिट कत-गिदगन धगातिट कत गिदगन धा ॥ इति ॥

(७) परन ध्रुपद चौताला तिराकी प्रथमाकी खाली से ॥

किणान कत गिदगन कुधान कुधान धा घिणान कत गिदगन कुधान कुधान धा धादिंगन धाकिट धुमाकिट धिरकिट धिध-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

किट धाधिन् धाकिट तकिट तकाकिट किणना कत तगातिट किणान कत घिणान कत धा धिरकिट धा धिरकिट धा किणना किट धा तक धुमकिट तक धा तक धुमाकिट तक धा॥ इति॥

(८) परन चौताला ध्रुपद समसे॥

ताधा धाधिन् धिन् धिन्ता किणान किणना किटतक् घिणान धा तगधित् नानानाना धिरकिट किणान धा धित्ता गिदगिन नग-टित थुंगा तक्का गिदगिन कृधान धा धुमाकिट धिधिकिट धिधिकिट धुमाकिट तघिन्न धाकिट तकिट तकाकिट थुंतिट्टे धाता धिरकिट धाधा तधा गिदगिन किणान धात धाधा गिदगन किणान धा॥ इति॥

(९) परन चौताला ध्रुपद समसे॥

तगाधित्धगाटित नगाटित धृकिट धा धृकिट धा दिग धिन्ता धुमाकिट किट कृधान धा कृधान धा कृधान धा धा धिन्ता किटकत किणन्न धा तक धिरकिट ता धिन्धिन्ता किणान धा धुम धिरकिट गिदगन धा धुम धिरकिट गिदगन धा धुम धिरकिट गिदगन धा॥ इति॥

(१०) परन चौताला ध्रुपद समसे॥

ताधिन् धिरकिट गिदगन नगाटित तकिट धा तकिट धा दिग धिन्ता किणान घिणान धुमकिट तक्कृधान धा कत्तक धित्ता तगधित्ता थुंगा थुक्का थुंतिट्टे धिरकिट धित्ता तकथूं तघिन्न धुमाकिट तकधा कृधान धाकिट तक धुमाकिट धा धाकिट तक धुमाकिट धा धाकिट तक धुमाकिट धाधा॥ इति॥

(११) परन चौताला ध्रुपद इक्काकी खालीसे॥

कत्तिर धिड्धि धाकिट गिदागिन नगाटित किट थूं तगातिट धगातिट तक कृधान धाकिट तक धुमाकिट तक धादिंगन धित्ता

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गिदगन धा थुंगा थुक्का कृधान धा किणनक किणन्न धाधा कि-
णनक क्रिणन्न धा ॥ इति ॥

(१२) परन चौताला ध्रुपद समसे ॥

किणान किट तघिन्न धा घिणान तक ताघिन्न धा धिधकिट
धिद्धिध धिधकिट किटकत गिदगन नगटित तक्टि कत धिरकिट
धुमकिट कत धिधकिट धगटित धाकिट तक धुमकिट तक कृधान
धा तक धुमक्टि कत गिदगिन धा तक धुमक्टि कत गिदगन
धा तक धुमकिट गिदगन धा ॥ इति ॥

(१३) परन चौताला ध्रुपद समसे ॥

कत किणन्न धा किट कत गिदगन किणानधा धादिंगन किणनं
किणना क्टि घिणना किट घिणन्न धातधा धाधिन् धाधा घिग घिग
घिग घानानाना घानानाना गिदगन धा धिरकिट धा कृधान कत
गिदगन नगतिट धगतिट धाकिट तक धुमाक्टि तक धिधकिट धा-
किट तकिट तकाकिट तक धुमक्टि तकथूं कृधानधा कृधानधा कृधा-
नधा ॥

(१४) परन चौताला ध्रुपद समसे ॥

तगतिट धगतिट नगतिट धिरकिट धुमकिट धिधकिट धाकिट
तकटि तकाकिट कृधाकिट कृधाकिट किणानधा ॥ इति ॥

(१५) परन चौताला ध्रुपद समसे समतक ॥

कृधाद्धिकिट धगतिट कत गिदगन घेतृक ध्रिकिट धिन्तणन्न
गिदागिन धा दिग धित्ता किणानधा किणानधा ॥ इति ॥

(१६) परन चौताला ध्रपद समसे समतक ॥

धिन्धिान्धिटतिट धगतिट तगतिट घेतिक घिणान धिन्धिन्धा
कृधानधा धिन्धिन्धा कृधान धाधा ॥ इति ॥

इति श्रीतालानुठेकावलिपरनमालिका सम्पूर्णा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अपूर्व्व अद्भुत पदार्थ ॥

(३३) ठेका बहुतालिक बोल सम समानरूपी प्रारंभ यकताला समसे ॥

धीतृक घिन्ना कद्धिद्धिधीं नागे त्रिणन्नागे तूना त्रिकिट कत्तीना तिरकिट तिरकिट तक ॥

अथ परनविवरण ॥

(१) परन चौताला ध्रुपद उठान समसे ॥

किणान किटकत तगातिट घिणान किटतक तगातिट किणान कत घिणान कत धाकिट तक धुमकिट तक धा धिंगन धाकिट तक ताकिट थुकिट तक गिदगन धाकिट तकिट तकाकिट तक धुमकिट कत गिदगन धा ॥ तक धुमकिट तकिट तका तिटकत गिदगन धा ॥ तक धुमकिट तकिट तकातिट कत गिदगन धा ॥ इति ॥

(२) परन चौताला ध्रुपद समसे ॥

गिदगिन धा गिदगिन धा दिग्धिन्ता गिदगिन धित्ता घिघदित तधिन्न धाकिट तक धिकिट कत घिघनत तकिट तकाकिट घिघ धिकिट तकता धानधा ॥ घिघ धिकिट तकता धानधा घिघ धिकिट तकता धानधा ॥ इति ॥

(३) परन चारिताल ध्रुपद समकी खाली से ॥

तकधित्तगिन्न धाकिट तक धुमकिट तक धुमकिट तकिट तकाकिट तकथूं तकाधिन्धाधी धाधिन्धाकिट तकिट तकाकिट किणनाकिट धुमकिट कत गिदागिन धाकिट तक धुमकिट तक थुंगा तका थुंगा थुंतिट्टे धाकिट तक धित्ता गिदगन धाकिट तकिट तकाकिट गिदगन नगातिट गिद नग नगातिट कत्ता कत्तिर किट तग तग किटकत गिदगन धा कृधद्धिकिट धगातिट घिघ कृधानधा ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(४) परन चारिताल ध्रुपद सम से ॥

किणान किटतक तगातिट घिणान किटतक तगातिट किटतक तगाटिट किटतक तगटिट किटतक किणान किटतक तगटिट घिणान किटतक तगाटिट किटतक तगटिट किटतक तगटिट किटतक थुं तगधित्त गधित् किट थुं किट थुं किट थुं किटतक तगाटिट किटतक तगाटिट किटकत गिदगनधा ॥ इति ॥

(५) परन ध्रुपद चारिताल समसे ॥

कत्तक धेत्तगधेत्धाकिट तकिटतका धित्ता गिदगन गिदगन धाकिट किट किणनं धित्ता धुमकिट तक थुंगा तात्थुन्थुन् किट कत गिद्गन धगिग धगिग धगादिन नाना नाना तकिट तकाकिट किणनक धिकिणानधा ॥ तकिट तकाकिट किणनक धिकिणानधा ॥ तकिट तकाकिट किणनक धिकिणानधा ॥ इति ॥

(६) परन चौताला ध्रुपद समसे ॥

तगाधित्तगिन्न धाकिट तक धुमाकिट तक धुमाकिट तकिट तकाकिट तकथूं तगधिन्धा धिन्धाकिट तकिट तकाकिट किणनं किट ताकिट तकाकिट किणान तकिट तकाकिट तकथुं किट तकथुं किट तकिट तकाकिट तकथुं तगाधिन्धा धीधा धिन्धाकिट किणना किट धुमकिट कत गिदगन धाकिट तक धुमकिट तक थुंगा तका थुंगा थुंतिट्टे धाकिट तक धित्ता गिदगन धाकिट तकिट तका किट गिदगन नगतिट गिदगन नगतिट तकिट तकाकिट कतगिदगन धगातिट कत गिदगन धा ॥ इति ॥

(७) परन ध्रुपद चौताला तियाकी प्रथमाकी खाली से ॥

किणान कत गिदगन कुधान कुधान धा घिणान कतगिदगन कुधान कुधान धा धादिंगन धाकिट धुमाकिट धिरकिट धिध-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

किट धाधिन् धाकिट तकिट तकाकिट किणना कत तगातिट किणान कत घिणान कत धा धिरकिट धा धिरकिट धा किणना किट धा तक धुमकिट तक धा तक धुमाकिट तक धा ॥ इति ॥

(८) परन चौताला ध्रुपद समसे ॥

ताधा धाधिन् धिन् धिन्ता किणान किणना किटतक् घिणान धा तगधित् नानानाना धिरकिट किणान धा धित्ता गिदगिन नगटित थुंगा तक्का गिदगिन क्रुधान धा धुमाकिट धिधिकिट धिधिकिट धुमाकिट तघिन्न धाकिट तकिट तकाकिट थुंतिट्टे धाता धिरकिट धाधा तधा गिदगिन किणान धात धाधा गिदगन किणान धा ॥ इति ॥

(९) परन चौताला ध्रुपद समसे ॥

तगाधितधगटित नगटित धृकिट धा धृकिट धा दिग धिन्ता धुमाकिट किट क्रुधान धा क्रुधान धा क्रुधान धा धा धिन्ता किटकत किणन्न धा तक धिरकिट ता धिन्धिन्ता किणान धा धुम धिरकिट गिदगन धा धुम धिरकिट गिदगन धा धुम धिरकिट गिदगन धा ॥ इति ॥

(१०) परन चौताला ध्रुपद समसे ॥

ताधिन् धिरकिट गिदगन नगटित तकिट धा तकिट धा दिग धिन्ता किणान घिणान धुमाकिट तक्क्रुधान धा कत्तक धित्ता तगधित्ता थुंगा थुक्का थुंतिट्टे धिरकिट धित्ता तकथूं तघिन्न धुमकिट तकधा क्रुधान धाकिट तक धुमाकिट धा धाकिट तक धुमाकिट धा धाकिट तक धुमाकिट धाधा ॥ इति ॥

(११) परन चौताला ध्रुपद इकाकी खालीसे ॥

कत्तिर धिद्धि धकिट गिदागिन नगटित किट थूं तगातिट धगातिट तक क्रुधान धाकिट तक धुमकिट तक धादिंगन धित्ता

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गिदगन धा थुंगा थुका कृधान धा किणनक किणन्न धाधा कि-
णनक किणन्न धा ॥ इति ॥

(१२) परन चौताला ध्रुपद समसे ॥

किणान किट तघिन्न धा घिणान तक तघिन्न धा धिधकिट धिद्धिध धिधकिट किटकत गिदगन नगटित तकिट कत धिरकिट धुमकिट कत धिधकिट धगटित धाकिट तक धुमकिट तक कृधान धा तक धुमकिट कत गिदगिन धा तक धुमकिट कत गिदगन धा तक धुमकिट गिदगन धा ॥ इति ॥

(१३) परन चौताला ध्रुपद समसे ॥

कत किणन्न धा किट कत गिदगन किणानधा धादिंगन किणनं किणना किट घिणना किट घिणन्न धातधा धाधिन् धाधा घिग घिग घिग घानानाना घानानाना गिदगन धा धिरकिट धा कृधान कत गिदगन नगतिट धगतिट धाकिट तक धुमकिट तक धिधकिट धा-किट तकिट तकाकिट तक धुमकिट तकथूं कृधानधा कृधानधा कृधा-नधा ॥

(१४) परन चौताला ध्रुपद समसे ॥

तगतिट धगतिट नगतिट धिरकिट धुमकिट धिधकिट धाकिट तकटि तकाकिट कृधाकिट कृधाकिट किणानधा ॥ इति ॥

(१५) परन चौताला ध्रुपद समसे समतक ॥

कृधाद्धिकिट धगतिट कत गिदगन घेतृक धिकिट धिन्तणन्न गिदगिन धा दिग धित्ता किणानधा किणानधा ॥ इति ॥

(१६) परन चौताला ध्रुपद समसे समतक ॥

धिन्धिन्धिटतिट धगतिट तगतिट घेतिक घिणान धिन्धिन्धा कृधानधा धिन्धिन्धा कृधान धाधा ॥ इति ॥

इति श्रीतालानुठेकावलिपरनमालिका सम्पूर्णा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ सरगमसन्थाप्रारम्भः ॥

सरगम रागिनी रामकली त्रैताल उठान पहिली की खाली से ॥

(१) नीसा गारे गामा गामा पा मापा धापा धानी धानी सानी धा नीधापा धापा मागारे गारेसा ॥ अन्तरा सम से ॥ गामा पा धानी सारे सानी सारे गामा गारे सानी धापा मागा रेसा सारेगामा रेगामापा गामापाधा मापाधानी पाधानीसा सानी धापा नीधापामा धापामागारे पामा गारेसा ॥ १ ॥ इति ॥

सरगम रागभैरव चारिताल ध्रुपद उठान समसे ॥

(२) सारे रे गामा पधानीसा सप्तस्वर मों मनमें आवे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ आरोही अमारोही सुन लेउ सब कोई नीधा पामा गारेसा दुगन सरगम की बिचारी गुनिनु सों सीको कै सारे सा सारे गा रेसा सारे गामा गारे सा सारे गामा पामागारे सा सारे गामा पाधापामा गारे सा सारे गामा पाधानी धापामा गारे सा ध्रुपद मध्य सरगम दिखाई ॥ १ ॥ इति ॥

सरगम रागिनी भैरवी त्रैताल तीसरी की खाली से ॥

(३) रेसा नीनी धाधा पापा गामा धान्नीसा धानीसा गासा मागास्सानी धापा मागा गाम्मागा रेरे सा गारे गाग्गारे रे रे नीनीनी धाधाधा पापापा गाम्मा गाम्मा गाम्मा गाम्मा पामा गारे सारे नीसा ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ गाम्मा गाम्मा धानी सास्सा नीधापा माधा नीसा रेसानी सानीधा नीधापा धापामा पामागा मागारे गारे सा नीसा गामा पामा गामा धानी सा नीसागामा पामागामा गागा सासा नीनी धाधा पापा गामा धान्नीसा ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सरगम रागिनी अलहिया त्रैताल उठान सम से ॥

(४) सासा गागा मामा पापा धाधा गागा पापा धानी सा सानी धापा धाग्गाम्मागारेसा ॥ अन्तरा उठान तीसरी ताल से ॥ नीनीधा नीनीधापा मापा धानीसा गगरेस्सानी सारे गामा गारे पामा गारे सानी धापा धागाम्मगारे सा ॥ १ ॥ अन्तरा द्वितीय उठान तीसरी की खाली से ॥ गग मधा गाम्मा गारे सा नीनी सारेगा सअारे गामा गारे गामा पामा गारे गमपा गमपधा मअापा धानी धापा मापा धानी सानी धापा धानी सा सासा नीनी धाधारे सानी धापा मागारे मागारे नीसा पधाम्मगा पापा धानी सा सानी धापा धा गाम्मा गारे सा ॥ २ ॥ इति ॥

सरगम राग मालकौश त्रैताल उठान तीसरीकी खालीकी खालीसे ॥

(५) सा नीनी सा धान्नी सा सागा गम धान्नी धान्नी सा नीधा नीधा मागास्सा नीनी सा धान्नी सा मागा ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ नीनीधा नीनीधा गाम्म धानीसा गासा मागास्सानी धा धानीसा नीधानीधा मागास्सा नीनीसा धान्नी सामागा ॥ १ ॥ इति ॥

सरगम राग हिण्डोल त्रैताल उठान पहिली से ॥

(६) गग मध सा सानी धाम्मा गास्सास्सा गग मध सा सानी धामागा नीधा मागा मागास्सा नीसामागा माधानीधा मागा माधानीसा गासानीमा नीधा गाम्मा गा सास्सा ॥ अन्तरा उठान तीसरीसे ॥ गामाधा नीधामागा माधानीसा नीसा गासा नीमा धमगास्सा धाम्मा गमधानीसा मांगास्सा गाम्मा गास्सा तकिट तकिट तकतक धुमकिट तक धिणन्य किटतक धगातिट धिणनक तकिट तकाधिट किणनक धिन्तणान तकधा ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सरगम राग हमीर त्रैताल उठान पहिली की खाली से ॥

(७) गामा धा नीनी धाधा धापा मापा धाधा पापा मागारे गामा नीधा पा रे रे पागारे सा ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ गामाधा गामाधा नीधा नीसारे गागा सारे गामा गारे सानी धानी सानी धापा धागाम्मधा नीनी धाधा धापा मापा धाधा पापा मागारे गामा नीधापा रे रे पागारे सा ॥ १ ॥ इति ॥

सरगम राग एमन त्रैताल उठान पहिली की अनसरल से ॥

(८) सारेगा रेगामा पामा गारे सा नीधा सारे सा नीनी धाधा पापा मामा गागा रे रे सास्सारे गारे सान्नी धार्रे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ गागा पापा धानी नीसा सारे गमा गगरे सान्नी धापा सान्नी धपा धपा गारे गासा सास्सारे गारे सान्नीधार्रे ॥ १ ॥ इति ॥

सरगम रागिनी भैरवी त्रैताल उठान खालीकी अनसरलखालीसे॥

(९) धापा धामापा गामा नीधा पा धप धमापा गमनी धारे गामा पारेसा गारे सानी सगोम्म धानीसा गगरेसानी धापामा गम नीधा नीधा पमगारेसा ॥ अन्तरा उठान पहिलीकी खाली से ॥ गामाधा गामाधा नीसा गगरे सानीसा गामा पागोम्मागरे सा गरेसा नीधा पामा गामा नीधा नीधा पामागारे सा॥ १ ॥ इति ॥

सरगम रागिनी धानी त्रैताल उठान तीसरी से ॥

(१०) गामानीपासानी पामागानीसागा गामा पामापा नीनी मापा नीनी मापा नीसारेसा मागा सानीसानी पामा गासा नीनी पामा गासा ॥ अन्तरा उठान समकी अनसरल खाली से ॥ पाप्पा गा गामा पानी पानीसा रेसा रेनी सासा पाधा मापा गा-रेसा नीनी पगाम्म रेसा रेनी सासा रेसानीधा नीपा मागा मागा नीसा ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सरगम रागिनी खम्माच त्रैताल उठान सम से ॥

(११) गगस गम पगम नीधाम्म पधाम्म गा धान्नी सा सानी धापामागारे सा ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ गामा धानी सास्सानी धामा पधम गाम्मा नीधाम्म धानी सा गगरे सा धानी सानी धापा मगाम्म सा ॥ १ ॥ इति ॥

सरगम रागिनी खम्माच त्रैताल उठान सम से ॥

(१२) सासा गागा मामा पापा धाधा गम पधान्नी सा सानी धाम्मधा गाम्म गारेसा धानीनी धानीनी धापा मापा पधान्नी सा ॥ अन्तरा उठान पहिली की खाली से ॥ धा धा रेरे नीनी गगरे सानीसारे गाम्मगारे पामा गारेसानी धापा धा गाम्मगारे सा ॥ १ ॥ इति ॥

सरगम रागिनी सोहिनी त्रैताल उठान सम से ॥

(१३) गाम गरे सानी सारे सानी धा माधानीसा गामा गा माधा नीधा मागा मागारे सा नीसा ॥ अन्तरा उठान खाली की खाली से ॥ धाधा मागा माधा गमाधानी माधानी सारे सानीसा धानीसगाम्मगारे सानीधा नीनीधा मागा मागारेसा किणान कि-णनक तक धुमकिट तक तकिट तकिट तक धित्ता धा ॥ १ ॥ इति ॥

सरगम राग गौड़सारंग त्रैताल उठान पहिलीकी खाली से ॥

(१४) नीसागारे मगारे सानी सा गारे मगा मापाधापा मागारे गागारे सा नीधामापा नीसागारे गाम्म धापा मागारे गा-गारे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ गामापा सा रेसा मागारेसा नीसा गामा धापा मागारे सानीधामापा धगाम्मा पासा नीरे सानी धापा मागारे गागारे ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तराना राग गौड़ सारंग त्रैताल उठान खाली से ॥

(१५) दिर दिर दीम तदरे दानी तोम तानाना दिर दिर तदेरना देरन देरना दीम तादीयन रेता ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ ओदाना दीम तआदीयन रे दीम तदियनरे तदीम दीम ताना दिरना तदाआरे तदियन रेतादानी ॥ १ ॥ इति ॥

सरगम राग बिहागरा ॥

(१६) सागा मापा मांमागा मागा सानीनी सानी धा मापा सानी सा मागा सानी मां आं पाधा मापा सानीनी सानीपा मापा नीपा मापा गासा गानी ॥ अन्तरा उठान पहिली की अनसरल खाली से ॥ मां मागा पानी सा सानी धा मापा सा गासा सागा मापा मागारेसा गागा मामा पापा नीनी सा पामां गारे सागा मापा धाम्मागारे सानी मांपधाम्मगर सा गानी ॥ १ ॥ इति ॥

सरगम राग एमन कल्याण शूलताल उठान सम से ॥

(१७) नीधा पामां गारे गामा गागारे सानी धारे सारे गामां धापारे गामां नीधारे गारे धानीरे माधापा मां गारेसा ॥ अन्तरा उठान अगली से (यानी दूसरी तालसे) ॥ मां मागा मां धापा सारे सानीधा गगरेसा गामा पाधानीरे सा गारे पामां गामागारे धानी गगरे सानी माधा गामां गारेसा ॥ १ ॥ इति ॥

सरगम राग बिहाग त्रैताल उठान पहिली से ॥

(१८) गामा पापा सान्नी धप मगारे सा गास्सान्नी पान्नीसा गरेसा पामा पगाम्मपा नीगा पमगरेसा ॥ अन्तरा उठान पहिली की खाली से ॥ गामा पसा नीसा गरे सासा नीनी धापा नीनी पाधा पामा गारे पामा गारे सा ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सरगम रागिनी मियांकीमलार त्रैताल उठान पहिलीकी खाली से॥

(१९) मापा धान्नी धारे सारे नीसा धापा मापा धान्नीधारे सारे गरे पामापा धाधापा मापा धारे सानी पाधाम्मगरे सा॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से॥ मापा धाधा पा मापा धानीधारे सारे गारे मापा धारे सानी पामापा रे मापा रेसा रेसा गाम्मा गागरे सानीसा धापा मापा धगाम्मधारेसा॥ १॥ इति॥

सरगम श्रीराग चारिताल उठान प्रथमा (तथा इक्का) की खाली से॥

(२०) सारे मांपा नीसा नीधा नीधा पापा मामा धाधा मांमां गागा रेरे गगरे गरेसा सानीनी सारेरे गागारे रे सा सानीनी सा॥ अन्तरा उठान सम से॥ मांमां पापा नीनी सा रेरे सानीनी सारेसारे सा गारे गारे सानी मांपानी सारे गारेसा॥ १॥ इति॥

सरगम राग अड़ाना कान्हरा त्रैताल उठान खाली से॥

(२१) मापारे मापागा मापासा रेसानीधा धापा मगारेसा नीसारे मापारे मापासान्नी नीसारे सधापमा गारेसा॥ अन्तरा उठान सम से॥ मापा नीसा नीसा रेरे गा गाम्मा पाधाप्पामा गारे सामापानीसा नीसा रेरे गा नीसारे मापारे मापा सान्नी नीसारे साधापा मगारेसा॥ १॥ इति॥

- इति श्रीललनशिरोमणिका (व) नादसांगीतकलापंडित ललनपियाविरचिततालमालपदावलीमात्रागणितठेका परनादिसरगमसुधासिन्धुसम्पूर्णं शुभमस्तु
हरिः ॐ तत्सत् शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ नवधा ९ प्रकार की भक्ति ॥

श्लोक।

१ श्रवणं २ कीर्तनं विष्णोः ३ स्मरणं ४ पादसेवनम् ॥
५ अर्चनं ६ वन्दनं ७ दास्यं ८ सख्यम ९ आत्मनिवेदनम् १

अथ कलियुगी दानपात्र ब्राह्मण ॥

श्लोक।

सेवाशुश्रूषया मैत्री साक्षिदा वित्तदायका ॥
भयदा भगदाता च दानपात्रं कलौयुगे १

दो० तंत्री नाद कवित्त रस, सरस राग रस रंग।
अनबूड़े बूड़े तरे, जे बूड़े सब अंग ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ ललनसागर प्रारम्भः ॥

ध्रुपद राग आनन्द भैरव ॥

उठान समसे ॥

(१) सोहनो सितार सुर बहार खोद सुरशिंगार सहनई सरंगी सीठी मीठी साज साजनमें ॥ अन्तरा उठान समसे॥बाजती बिशाल बीन बरन बरनबानी बर बाँसुरी बहारदार बेन बैन बाजनमें॥ १॥ (अभोग)मन्द मन्द माधुरी मृदंग मिलती मिलाउ मुहचंग मंजुमंजु मोहै मनमोलनमें ॥२॥ (भोग) फरश फुलवरीक फरासीसि फुलालैनि फवैं ललनफागफवित फस्ल फव फवीलि फागनमें॥ ३॥इति॥

ध्रुपद राग भैरव ॥

उठान प्रथमाकी खाली से ॥

(२) धावत आवत ठुमुक चाल मन्द मन्द अति रसाल निरतत प्रिय प्यारो लाल नेहित गलबैयां सैयां ॥ अन्तरा उठान सम से ॥ वृन्दावन सुखद सघन त्रिविधानंदि चलत पवन राजत जहँ गोपि ग्वाल शीतल द्रुम छैयां ॥ १ ॥ (अभोग) बाजत करताल ताल ढप मृदंग चंग नाल गावत ग्वाल बाल ख्याल हिय निहाल अति सुहैयां ॥ २ ॥ (भोग) ललन ललनी प्रभानूप लाजत रतिरमणरूप सुर नर मुनि देव भूप लखि छवि बलि जैयां सैयां ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग सोहाग अड़ाना ॥

उठान सम से ॥

(३) पद्धति प्रवीनदा सुचातुरी नवीनदा सुवाणीहु रंगीनदा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीशारदा भवानी तैं ॥ अन्तरा उठान सम से ॥ कामना कराल-दायि भावना विशालदायि मंशा फल भालदायि भनी ब्रह्मरानी तैं ॥ १ ॥ बुद्धिवर शक्तिदायि यशुजन जक्तदायि भुक्तिदायि युक्ति-दायि मुक्तिदा निशानी तैं ॥ २ ॥ जानी श्रुतिमानी सुरज्ञानी मुनि मानी ध्यानी वाकवानी ललन सदैव सुखदानी तैं ॥ ३ ॥ इति ॥

इक ताला राग रायसा कान्हरा ॥

उठान सम से ॥

(४) मोर मनुवा मोहिलीन्हो मोहनि मुरति वारे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ नैन मैन जदुवाऐन चंचल चपल तारे चारु चारु चल चितौन छौन प्रमुदितारे ॥ १ ॥ मृदुल मंजु मृदु मुसक्यानि हाव भाव द्युति प्रसारे मुखमयंक रविशाशिछवि कोटि मदनवारे॥ २ ॥ कुंजरगति गमनचाल मद मराल गति निवारे नँदके ललनपर तन मन तिहुँपुर छवि वारिडारे ॥ ३ ॥ इति ॥

रात उन बिन निंदिया मुहिं न आईरे। इस धुनि पर ॥

ठुमरी रागिनी काफी समान मात्रिका ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

इसकी एक आवृत्ति में आस्ताई और दूसरी आवृत्ति में अन्तरा बँधा है और इसकी तालकी जबाँपर अंक भी देदिये हैं ॥

(५) देखी चंचल [१] चपल चितचोर [२] श्यामबरन। मदनमाती [३] बदन रँग ढँग रसमातो [४] जोबन ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ नैनन सैनन [१] टुनवां सदन हँसन बसन [२] मुहनियां मन मृदुल बोलन [३] भरत सुमन शपथ [४] नँदललन ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी काफी ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(६) माधुरी मुरतिया मुहिंका नीकी लागे । अनुरागे जासों जिय सुख सृजावे तन मन धनसों भावे ॥ अन्तरा उठान तीसरी की अनसरल से ॥ माधुरी माधुरी हँसन बोलन चितवन चपला चकावे । नँदको ललन साँवरे बरनपर जियरा बलिजावे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(७) नागरि नैन न मानत हैं नित प्रेम पगे नट नागरनटके॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ जहँ जानत हैं हरि निपट निठुर पर चित न धरत सिखवन बश हटके ॥ १ ॥ मैं मरीजात बिनु बिथा शोच ये निरँग लाड़िले रहत निसटके ॥ २ ॥ नहिं जानपरत कहा ह्वैहै दशा लोचन कुलकान लाज पतिपटके ॥ ३ ॥ नँदललन प्रिया वृषभानुसुता दृग दम्पति दरशन कारन अ-टके ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी झँझौटी ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(८) नागरि नयनन नेह निभाउरी नटखट नट नागर नटवर सों ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ भली बात जनि जान सखीरी पाछे से मलिहौ कर करसों ॥ १ ॥ बहुतिन नेह कियो कह पायो सिसकत पड़ीं विकल बेदरसों ॥ २ ॥ देखु सखी नहिं जानि परत तुहि उनको साथी भवँर निठुर सों ॥ ३ ॥ लै सुबास फूल-नरस भागत फिर नहीं निरखत नेक नजरसों ॥ ४ ॥ तैं किमि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ललन बनी भ्रम भूली पछिताइ मैं कर प्रीति लँगरसों ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ठुमरी जोड़ेकी रागिनी झँझौटी ॥

उठान खाली से ॥

(९) नागर नवेली अलबेली अलबेली भांति पियको जगावत बजाय पट सांकरी ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ इत परी ननँद द्योरनियां जिठनियां उत सोवे दिवराकी लाज रही ताकरी ॥ १ ॥ छिन पग नूपुरको शब्द दरशाय लेत वेग सो उबासी देत कोमल सी हांकरी ॥ २ ॥ चलत न एकौ घात बीती जात सारी रात अतिअकुलात रहिजात झांकझांकरी ॥ ३ ॥ प्रबल विरह नींद लाज औ मनोज पिया मोहींदई निबल सकल इनमां करी ॥ ४ ॥ श्यामके मिलन आस ललन पिया उदास जिया परवश प्रिया हांकरी न नाकरी ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी झँझौटी ॥

उठान खालीकी अनसरल से ॥

(१०) पिया वियोगवा भयो मोरी सजनी मुहिंका नींद न आवत रजनी ॥ अंतरा उठान खालीकी खाली से ॥ लैलै वृन्द ब्यार बैरन शर चाप मदन विरहा फौजन चढ़ि आवत मुहिंका लखि बिरहिनि यह दारुण दुखमदनी ॥ १ ॥ कौन यतन पट ओट करूं जो लाखन सोचन सों उबरूं भई निठुर प्रीति वश ललन पिया प्रभू हाथ लाज बचनी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी तराना अंग रागिनी पीलू ॥

उठान खाली से ॥

(११) श्यामरो सलोनी भोरी भोरीसी गोरीसी राधा जोरी रँग रूप सों री बोरी पोरीपोरी है ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ लोचन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रसाल मद मदन भरो विशाल हेरन निहाल करे हाल चितचोरी है ॥ मदनविहारी पिय प्यारी पर वारीवारी ललनपियाको जिया युगल ठगोरी है ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी भिनसारिका ॥
उठान खालीकी अनसरलसे ॥

(१२) आजकी रात बिहातभई ॥ बिन बालम मलती हाथरही॥ अंतरा तीसरीकी खालीसे ॥ भई बैरन निंदिया निपट आज बिरहा की फौज चढ़ि आई गाज तन मदनबिथा मोरेमाथरही॥ १॥ मैं तरफत रही भागकी लाग कहे ललनपिया वाके धन सुहागजो सौतन श्याम के साथरही ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥
उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(१३) जबसों हमसों कीं छल बतियां तबसों परतीतगई ॥ तिहारी तबसों परतीतगई ॥ अंतरा खालीकी अनसरलसे ॥ दई दई भये रसिक निठुर फिर कहांरहे जग सखी प्रीति अंकुर जब ऐसनने अनरीतलई ॥ तबसों परतीतगई ॥ १ ॥ प्रेम प्रीति उरफांस जासु ताकी मैं ललनपिय दास खास नहिं जानूं मैं छल बलरीत नई ॥ तबसों परतीत गई ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी काफी ॥
उठान पहिलीसे ॥

(१४) प्रीति पराये वशकी सखी दई मारी बैरन बँसियाने मन मोहा मोरा ॥ अंतरा समसे ॥ भई जोगन वन वन ढूंढ़त श्याम बिरहाकाम किये बिराम ललनपियारे प्यारे रस बरुकी सखी ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(१५) नैना मानत ना हटके फँसे जाल नागर नटके नट खटके मानत ना हटके ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ रसिया युगल माधुरी छवि के प्रेम पीत अटके ॥ १ ॥ ललनपिया जिय रँगो श्यामरँग लाजशरम पटके ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरीजोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खालीसे ॥

(१६) नैना निपटनिलज तुम्हारेनहिं प्रीति पीरकाहूकी करें ॥ अंतरा खालीसे ॥ हमसों अवधि बसत औरन ढिग नये नये ढँग नितरे ॥ १ ॥ हौ छल बल के रूप ललनपिया बिन प्रतीत रस रे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी कहरवा ॥

तालअद्धा धुनि चिलौना ॥

(१७) हर बार हमारी हानि करत तुम्हरो सुतरी ॥ अंतरा ॥ कुंजसमीप नीप वृंदन तट ठाढ़ो नंदकुमार छीनलई चुनरी ॥ १ ॥ वदन उघार निहार नागिन तन जान अकेली कान्ह अचानक अंकभरी ॥ २ ॥ झिझक गई औचक झिझट में थरथराय तन गयो गिरी दधि की गगरी ॥ ३ ॥ झिगरो करत करक गईं चुरियां नरम कलाई गहत मसक गई मोरी बँगरी ॥ ४ ॥ बेंदी हार माल मुतियनकी अनमोली गिर गई नई दुलरीतिलरी ॥ ५ ॥ मदन भरी छतियां उतंग दोउ मसकाईं नँदलाल नशी चुलिया सिगरी ॥ ६ ॥ हटक हड़ी हठ तनक न छांड़ी बहुविधि हा हा करी न मानो हटक हरी ॥ ७ ॥ दास ललनपिया कहत निहोरी देउ भक्ति व्रजराज शरण तुम्हरी पकरी ॥ ८ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

॥ ख्याल राग मालकौश ॥
॥ उठान खाली से ॥

(१८) परवश प्रान कर डारो हम जानी जानी ना प्रीतिबुरी ये आली ॥ अंतरा उठान समसे ॥ जबसों हमसों बिछुरे कृष्ण कान्ह ललनपिया जिया तरफरात येहां येहां हमारो ॥ १ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी भूपाली ॥
उठान खाली की खालीसे ॥

(१९) आज मिलबे को जियरा मेरा चहत पिया प्यारे के काज ॥ अंतरा उठान तीसरी तालसे ॥ तरफ तरफ विकल हीन तन मन गति भईरी आली विरह धीर देतना मनोज मोहिं ललन प्रियहि देउ दरश श्रीपति श्रीव्रजराज महराज ॥ १ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी भूपाली ॥
उठान खालीकी अनसरलसे ॥

(२०) एरी डरत मोरा जीया पीया के लँगरैया बांट बराजोरी करत मोसे ॥ डरत मोरा जिया ॥ अंतरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ या दुखवासे तो पग धरत न सिजियापै आली ललन पिया की बान नीकी न लगै मोहिं निठुर नटवा नंदप्रिया डरत मोरा जीया ॥ १ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी सोहनी ॥

(२१) तमक अति दिखावेरी जोबन मातो नँद को कान्ह बराजोरी मग चलत करत अचरा पकर बैयां गहत ॥ अंतरा ॥ यशुदा सौंरी वृथानिकाज सखियन सनमुखनिलाज गरवा लीन्ह मोरी लाज ललन श्याम बरज हारी मिनति करत तहुँ न मानत ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी काफी घनाक्षरी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(२२) छांड़ो छांड़ो कोमल कलाई सैयां बैयां मोरी मुरकी ढीठ बँगुरी गई दैया ॥ अंतराउठान खाली की अनसरल से ॥ रार करत न नटत नटखट नट गाज परैरी इन ढँगन पैंयां पैंयां परतिहारी हारी ललनपिया ऐसो श्यामरो मीतरे निरमुहिया ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खालीसे ॥

(२३) पनियां न जाऊं आलीरी बीच मगरी ठगरी झगरी पकरी बहियां गुइयां ॥ अंतरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ जानत मैं छल बल रँग-ढँग चतुराई वाकी सारीसारी ललनपिया ढीठ ऐसो करै लँगरैयां ॥ जाऊं आलीरी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(२४) बँसिया बजाय जादू कीन्हा श्यामलेसलोने कान्हा ने ॥ अंतरा उठान तीसरी की खालीसे ॥ ना जानूं षटरसनिधि येही शोध सुधा भर दीन्हा ॥ १ ॥ सुरसानी बानी वा जनपति सुन सुध बदन रहीना ॥ २ ॥ मोहि गई माइल मोहनपर ललन पिया रँगभीना ॥ ३ ॥ इति ॥

आस्ताई झपताला रागिनी बरुवा ॥

उठान समसे ॥

(२५) एरी यशुदा तोरे कृष्ण कन्हैयाने बाट चलत मोहिं अंक भरोरी ॥ अंतरा उठान समसे ॥ लपक झपक अँचरा गहि मसक बैयां गेरी गगरिया गोरस महि फोरी ॥ १ ॥ बराजोरी करत ना

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

डरत निडर ऐसो ललनपिया पैयां मैं पर करजोरी ॥ २ ॥ इति ॥

सावन ॥

रागिनी पीलू ठेका होली ॥

उठान तीसरीसे ॥

(२६)गोरी गोरी भामिनि नयन रसीले अतिसुंदर सुकुमाररे॥ अंतरा उठान तीसरीसे ॥ मंद मंद मुसक्यान मोहिनी मदन बदन छवि काररे ॥ १ ॥ ललनपिया चितवन चितचोरन बशी-करनसी नारि रे ॥ २ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी पीलू ॥

ताल रूपक उठान पहिली से ॥

(२७) गोरे गोरे गात जोबनवाली ॥ अंतरा पहिलीसे ॥ नैन रसीले अधर रँगीले सैल सुधा सुख झाली ॥ १ ॥ ललनपिया लख छवि चपलासी चकित कियो चित आली ॥ २ ॥ इति ॥

ख्याल रागिनी पीलू ॥

उठान खालीकी खालीकी खालीसे ॥

(२८) भोरी भोरी भामिनि रूपनवेली गोरे गात ॥ अंतरा उठान तीसरी की खालीसे ॥ मदन भरी आली अलबेली शशि-वदनी कामिनि ॥ १ ॥ ललनपिया प्यारी छवि न्यारी दरश रही मनो दामिनि ॥ २ ॥ इति ॥

आस्ताई राग सारंग शूलताल ॥

उठान समसे ॥

(२९) करुणामयकान्ह करुणाकररे॥सुजानदीनजानकर॥ अंतरा उठान समसे ॥ भारन भवतारन जगकारन जानत वेद पुरान राधा रुकमिनवर ॥ १ ॥ आन परो अब शरण तिहारी ललनपिया की कानकर विद्या सुखवर ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बहियां मोरी छांड़दे ढीठ लँगर मतवारे छैलवा। इसधुनिपर॥

आस्ताई रागिनी जौनपुरी॥

उठान खालीकी खालीकी खालीसे॥

(३०) येरी आज आईरी अलबेली राधा रुकमिनजी हरि मिलन॥ अंतरा उठान खालीसे॥ धनि धनि यह दिन शुभघरी शुभ छिन धनि धनि भाग सुहाईरी अलबेली राधा रुकमिनजी हरिमिलन॥ १॥ ललनपिया भर प्रेम उछाहन सादर कंठलगाईरी॥ अलबेली राधा रुकमिनजी हरि मिलन॥ २॥ इति॥

आस्ताई रागिनी गौरी॥

उठान खालीकी खालीकी खालीसे॥

(३१) बांकेबिहारी राधा रुकमिन कान्ह॥ अंतरा उठान तीसरी की खालीसे॥ श्रीबलवीर गँभीर साँवरे तुम सन्तनु सुखदानि॥ १॥ ललनपिया आधीन दास पर करुणाकर करकानि॥ २॥ इति॥

बहियां मोरी छांड़दे ढीठ लँगर मतवारो छैलवा। इस धुनिपर॥

आस्ताई रागिनी जौनपुरी॥

उठान खालीकी खालीकी खालीसे॥

(३२) अब मोहिं जानदे कन्हाई मँदिरवा में तोरे बलि बलि जाई॥ भयो भोर जात तुम्हरी दुहाई॥ अंतरा उठान खालीकी अनसरलसे॥ बार होत दधि बेंचन काज मोहिं सास नँनदिया द्योरनियाँ रिसाई मोसे रवि प्रकट जोपै घर न पाई॥ मोहिं जानदे कन्हाई॥ १॥ भइ जोति मलीन उडुगनपति बाट चलन लागे बटोही मान ललनपिया मोरी मिनति चित्त लाई यदुराई॥ मोहिं जानदे कन्हाई॥ २॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी बिलासखानी॥

ताल झुमड़ा उठान खालीसे॥

(३३) अचरा मोरा छाँड़दे कर जनि ऐसी लँगराइरे॥ अंतरा उठान तीसरीसे॥ औचक आन अनोखोई अटकत जरजाय-ऐसी लरकाई रे॥ १॥ ललनपिया नँदसुत नटखट भयो करत-नईसी चतुराईरे॥ २॥ इति॥

आस्ताई रागिनी टोड़ीधमार॥

उठान तीसरी तालसे॥

(३४) डगर मोरी छोरो छैलवा छल न करोजी हठ छोरो॥ अन्तरा उठान समसे॥ मैं हटकी हटको नहिं मानत का सुभाव परो तोरो॥ १॥ भलो भिगरवा नाहिं तिहारो ललनपिया कर जोरो॥ २॥ इति॥

ठुमरी रागिनी भैरवी॥

उठान खालीकी खालीकी खालीसे॥

(३५) प्यारी प्यारी बतियाँ करके मोह्यो बनमालिया॥ अन्तरा उठान खालीकी खाली से॥ श्रवण कुण्डल भालखौर मोति-यन उरमाल और अधरधरे सुन्दर सोहै बाँसकी मुरालिया॥ १॥ वंशी बजा सुनाके मोरे मदनवा जगा दियोरे काली काली लट नागिनि ने मेरा चित चुरालिया॥ २॥ सांवरी सुरत मोहनी मुरत कमल नयन चयन पुरत ललनपिया मृदुल हँसन तन मन भुर मालिया॥ ३॥ इति॥

ठुमरी रागदेश॥

उठान खालीकी खालीकी खालीसे॥

(३६) री अलबेली मान गहेली मान हठीली नारि॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्तरा उठान तीसरीकी खाली से ॥ लावत करतरे चिबुक सांवरो हाहा वारंवारि ॥ १ ॥ भई निठुर हित हेत काहि लग नाहिं पियओर निहारि ॥ २ ॥ ललनपिया प्यारो पग परशत अब हठ तजु सुकुमारि ॥ ३ ॥ इति ॥

अस्ताई रागपूरिया शूलताल ॥

उठान समसे ॥

(३७) सुन्दर कामिनि रूपअनूपं मदनभरी मोहनी चितवन चित चुरावत अलबेली आली नोखी नोखी छविमन्द मन्दचलत चाल सुघर मुसक्यान मोहेलेत ॥ अन्तरा समकी खालीकी खालीसे ॥ दश षट शृङ्गार भूषण तन सजे चन्द्रवदनी सो नाजुक तन सोहै भनत ललनपिया छबीली छकयेदेत ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी सरपरदा ॥

उठान समसे ॥

(३८) बाट चलत गारी देगयो मोहिं नँदको ढीठ नटवा सजनी कहा करूं ॥ अंतरा उठान तीसरीसे ॥ वारी वारी ननदी यमुन कैसे जाऊं बीच ठाढ़ो निठुर कान्ह ललनपिया रँगीलो रसिया से मैं डरूं ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी सोरठ ॥

उठान खालीकी खालीकी खाली से ॥

(३९) मानते रही व्रज गोकुल धाम बरसाने वृन्दावन नँद गाम ॥ अंतरा उठान तीसरीकी खालीकी खालीसे ॥ अबतो वीर माधव को राज दइ हाथ लाज बचनीरी सजनी वोतो नँदललन बड़ निलजवा घनश्याम ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हिंडोला ॥

दादरा रागिनी खम्माच ॥

(४०) लाड़िलि लाल लड़ैतो लड़ैती रँगभीने दोउ झूलें॥ अंतरा ॥ यमुना पुलिन तरु तर छहँ पावन पुरवा तूले बरन बरन पुहूप पल्लव छबि बेलरियाँ द्रुम फूले ॥ १ ॥ शुक शिखि चातक मराल भ्रमत भँवर भटूले झींगुरैं घनघोर झींगुर दादुरान सम्हूले ॥ २ ॥ हरित भूमि कुसुमित कोमल रज राजे अनमूले घनन मण्डप चमक चपला रजैं दुल्हैनी दूल्हे ॥ ३ ॥ सावन भावनही हुलसावन शुभदिन अनुकूले ललन ललनी छबि बिलोकतसुधि सुर नर भूले ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी राग हमीर ॥

उठान पहिलीसे ॥

(४१) प्रिया प्रेमदा मोही मुहनवाकी मुहिनी मुरतिया मोरे मन चुभगई आज ॥ अंतरा उठान समकी अनसरलसे ॥ जबसों जबसों दृष्टिपरी छबि वाकी बांकी बांकी चितवन मधुरी हँसन पै वारी ललनप्रिय दोऊ शोभाभरे महाराज ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी चिन् झँझौटी ॥

उठान खालीकी खालीसे ॥

(४२) रंगीलो माई ये ऋतुराज वसंत ॥ अंतरा उठान तीसरी की खालीसे ॥ वन बागन उपवनन वाटिका फुलित पुष्प अत्यन्त ॥ १ ॥ गुँजति चहुँ चंचरीकपरिकर रस बस छकुन लुभन्त ॥ २ ॥ उचरत खग बानी मृदु मोहनि हरित भूमि छबिवन्त ॥ ३ ॥ मदन भरे मतंग तहँ विहरत ललनि ललन सुखमन्त॥४॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी सोहनी ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(४३) पेखने को रस परिको तनको दरक वाको ननँदीनीरेन लाज ढीठ ॥ अंतरा उठान खालीकी अनसरलसे॥ आज प्रभात तरके तरके दिनकरके यमुन जात तरको कान्ह आनलियो गरवा ललन पिया कोऊ को न वाहि धरको जरको जरको ॥१॥ इति ॥

दादरा रागिनी झँझौटी ॥

(४४) मुहिंका निंदरिया बैरन भईरे प्यारे सैयां बिन एरी ननँदिया ॥ अंतरा ॥ बिरहा बिथन व्याकुल करडारीरे जियाको धीर ना दईरे ॥ प्यारे सैयां बिन एरी ननँदिया ॥ १ ॥ ललन पिया सुधि श्याम सनेहीने निपटै तज दईरे ॥ प्यारे सैयां बिन एरी ननँदिया ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी पहाड़ी झँझौटी ॥

(४५) कियो जादू टुनवां चितवानरे नैनानरे सैनानरे गुजरिया मद यौवन माती ॥ अंतरा ॥ नई नवेली सुघर नारि सज शिंगार सुँघदार ललनपिय जिय प्रिय छवि समानरे समानरे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग देशकार ॥

उठान खाली की अनसरलसे ॥

(४६) मोहनियां मोहनकी बँसुरिया वशीकरन जादू टोनारेहो॥ वशीकरन जादू टोनारेहो ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ चंग उमंग अनंग उछंगित रंग तरंग मिलोनारे ॥ सुधा क्षुधा वसुधा रस राची राग भाग अनहोनारेहो ॥ राग भाग अन-होनारेहो ॥ १ ॥ ऐन ऐन सुख चैन चकोरी शशिमुख श्याम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सलोनारे ॥ नंदललन प्रियकी बलिजैये प्रेमप्रीति रस बोनारेहो ॥ प्रेमप्रीति रस बोनारेहो ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की राग देशकार ॥

(४७) भइ बैरिन ब्रजकी बँसिया ब्रजबसिया बैर बिरौनारेहो ॥ अन्तरा ॥ मारन मोहन वशीकरन उच्चाटन बाटन बौनारेहो ॥ वंशि वंशसो वध कोउ विधिमों हिय सुख उपज सुहौनारेहो ॥ १ ॥ भे निवंश बँसिया बिनु सजनी फरवन प्रेम बगौनारेहो ॥ नंदललन अपनावन जो चहि तौ यहि यतन करौनारेहो ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भँझौटी। धुनि चिलौना ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(४८) तुम जाओजी जाओ जी श्यामवहां जिनसे रसरीतिकरी नातियां ॥ हम जानलियो तुमको सजना सब हाल अयां है हमां औ शुमा ॥ १ ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ तुम जानत आपुनको अकिला अरु औरन को समझौ सिफला छपै इश्क औ मुश्क कहीं है भला न लजा बिरचौ छलकी बतियां ॥ २ ॥ कुलबाल न चाल गुपाल चलै तेहि मान न पान जहानमिलै तरु कीरतिको नहिं फूलफलै बिनशै यशुवंश व दादुरियां ॥ ३ ॥ न बनै हमरी तुम्हरी रसिया तुमतो निपटै कपटै लसिया गलडार गये हितकी गँसिया अब जरवत हो हमरी छातियां ॥ ४ ॥ मल दैव दयाल दया करदी गति तोरखुली सब बेदरदी धनि मोहन् तोर जवांमरदी न हया न मया तुम्हरी गतियां ॥ ५ ॥ बलिजैये तुम्हारि दिठाइन पै निरलाजपने चतुराइनपै ललनै पनकी लँगरा- इनपै छल छंद तुम्हारेहि दाहिनियां ॥ ६ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दादरा रागिनी पुरबी ॥

(४६) लगनियां मोसे लगाय कहँछाये ॥ बेदरदा को दरद न जिय तरसाये ॥ अंतरा ॥ बारी उमरिया खेल गँवाई अब ज्वानी उमगाये उलहे जोबनवा बिरहा सतावै सैयांकी सुधि नित आये ॥ १ ॥ मदन बदन तक तक शरशालै रहि रहि जिय घबराये नंदललन बिन कैसे जियों सैयां होरहे अपने पराये ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा जोड़ेका ॥

रागिनी पुरबी ॥

(५०) बेदरदा काहेपियजिय तरसाये जोबनवाज्वानीको जात बिहाये ॥ अंतरा ॥ लिख लिख पतिया लाख पठाई निर्दयी घर नहिं आये रस बस फँस सौतन के सैयां मोरी सुध बुध बिसराये ॥ १ ॥ खाय मरूं विष यही जिय चाहे उन बिन कछु न सुहाये नंदललन सौ सुनु सखि हमरा अब जिय पिय पर जाये ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा दूसरी धुनि ॥

रागिनी पुरबी ॥

(५१) बैरी पपिहा डारो मार पपिहा डारो मार कोई मोरा जियरा न जराये ॥ अन्तरा ॥ पिय पिय कर तन मदन जगाये बिरहा दाह दुनाये सूनी सेजरिया न आवे निंदरियारे खान पान न सुहाये ॥ १ ॥ बैर परो कर धोय नीच नहिं मानत मोर मनाये नंदललन बिनु मारी मरूं दूजे चातक आग लगाये ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा जोड़ेका ॥

रागिनी पुरबी ॥

(५२) कागा मीत हमार कागा मीत हमार मोरे पियाकी खबरिया लिआरे ॥ अन्तरा ॥ सोने से चोंच कुँदनसोंरे पँखवा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कगवा दूंरे मढ़ारे मोर सँदेशवा सैयांको सुनाश्रा मुतियन दूं मैं चुँगारे ॥ ये हांरे ॥ १ ॥ लिख पतिया तोरे कंठकलित करूं नंद-ललन ढिग जारे॥ तन मन धन कर वारी विनयवत सँगलै श्रा पिय प्यारे ॥ ये हांरे ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा जोड़का ॥

रागिनी पुरबी ॥

(५३) बैरी मुरिला केरी कूक मुरिला केरी कूक करे डारे करेजवा टूकरे ॥ अन्तर ॥ सुन सुन कोइलियाके बैना न चैना दहै दूनी विरह तन लूकरे ॥ १ ॥ पुरवाको धुरवा आतुर करै घनगरजै उठै हिय हूकरे ॥ नंदललन पिया वेगमिलौ अब कर दयाको सलूकरे ॥ बैरी ॥ २ ॥ इति ॥

छैला गारी ना देरे सुनैंगे सारेलोगवा। इस धुनिपर॥

ठुमरी राग जंगला ॥

उठान तीसरीसे ॥

(५४) विपिनविहारिरे सँवरिया तोरे वारने ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ श्रीव्रजेश व्रजानिधि वनितन धन गोकुलेश गिरि-धारने ॥ सँवरिया तोरे वारने ॥ १ ॥ भक्तवत्स यमलार्जुन तारन कालिव्याल विषहारने ॥ सँवरिया तोरे वारने ॥ २ ॥ नंदललन सुर मुनिजन कारन नर वपुधर अवतारने ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़की ॥

उठान खाली की खालीकी खाली से ॥

(५५) छैला गैला रोकै मैला वासों जिया मोररे॥ अंतरा उठान तीसरीकी खालीसे॥ मैं पनियां नहिं जाऊं जिठनियां वासों करै को

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

झकझोर॥ मैला वासों जिया मोररे॥१॥ ललन हो तो लरकापन कहु अब नागर नंदकिशोर॥ मैला वासों जिया मोररे॥२॥ इति॥

ठुमरी जोड़ेकी॥

(५६) चाराना हमारारे करूं का मोरे रामरे॥ अंतरा॥ बैर परो नटनागर मोरे छेंकत डगर निकामरे॥ करूं का मोरे रामरे॥१॥ नँद नँदनी निजु ललन न हटकत शीश चढ़ायो श्यामरे॥ करूंका मोरे रामरे॥ २॥ इति॥

ठुमरी जोड़ेकी॥

(५७) गोरी चितचोरी मोरी जोरा जोरी होगई॥ अंतरा॥ नाहिंत कीन्ह न लीन्ह प्रेमरस वर बरु गति मति खोगईरे॥ जोरा जोरी होगई॥ १॥ भागकी बात न लागमोर कछु नाहक पनियांको गईरे॥ जोरा जोरी होगई॥२॥ अब नँदललन हाथ मम जीवन जागि करम गति सोगईरे॥ जोराजोरी होगई॥ ३॥ इति॥

ठुमरी रागिनी आलम्बिका मांझ खंबावति॥

उठान खालीकी खालीसे॥

(५८) कान्हा कमरीवारे ने मोहिं मगमें घेरीरे॥ अंतरा॥ उठान खालीकी खालीसे॥ दधिकी भरी रे गागरिया शिरसे उतार के बरजी न मान मोहन महि माहिं गेरीरे॥ १॥ तोरी शपथ सखी बड़ा नटखट है नँदललन बिनु काज आज हरिने लइ लाज मेरीरे॥ २॥ इति॥

मोरारे बैरागिया योगीरे। इस धुनिपर॥

ठुमरी राग जंगला॥

उठान तीसरी तालसे॥

(५९) छायोरे बिदेशवा सैयांरे॥ अंतरा॥ उठान तीसरी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

की खाली से ॥ उन बिनु खान पान नहिं भावे नैनन नींद न सैयांरे ॥ १ ॥ किन सौतन भुरमायो न आयो जरजाये अस निठुरैयांरे ॥ २ ॥ नंदललन पिया बिनु व्याकुल जिया मिलवौ वेग गुसैयांरे ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी ॥

(६०) मोरीरे गगरिया फोरीरे ॥ निडर ऐसो मोहन कृष्ण अनारी ॥ अंतरा ॥ दपट झपट झट लपट चपट चट बैयां झक-झोरीरे ॥ १ ॥ नँदको निपट नटखट नागरनट कीन्हीं बरा-जोरीरे ॥ २ ॥ यशुदाललन को ललनपन को सहै ऐसी जोरा जोरीरे ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी ॥

(६१) चोरीरे कमरिया मोरी कौन ॥ अन्तरा ॥ वेग बता-ओ नहिं गारी दिहौं मैं नेको झूठ कहौन ॥ १ ॥ जो न दिहै घर पकर बुलैहौं गोप गोपिका जौन ॥ २ ॥ नंदबबा यशुदाकी शपथ कहूँ यामें कुशल समझौन ॥ ३ ॥ यक तो ललन दूजे निबल जान मुहिं खिझवत हौ तुम तौन ॥ ४ ॥ इति ॥

विरह ने मुहिं का घेरीरे । इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी भीमपलासी ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(६२) पनियां चलु भरन सबेरीरे ॥ अन्तरा ॥ भानु उगे बटमार लगैगो शंका तासु घनेरीरे ॥ १ ॥ भिभिनसार भौन भागि आवै यहि में कुशल बहुतेरीरे ॥ २ ॥ नन्दललन व्रजवीर बांकुरो मान सिखावन मेरीरे ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़ेकी।

(६३) पतिया लिख लिख पिया हारीरे ॥ अन्तरा ॥ कुटिल कुरूप कुचाल कुबरिया मोहि लियो मीत मुरारीरे ॥ १ ॥ राम करै बिन शाप सवत सुख कामना पुरै हमारीरे ॥ २ ॥ गाजपरै वाके छल बल पर भइ बैरिन दइमारीरे ॥ ३ ॥ जानु को जादू कियो मोहन पर ललनसी मति करडारीरे ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की ॥

(६४) विरची पिय निपट नदानीरे ॥ अन्तरा ॥ नैहर से पिय मोहिं लिआये अब सौतन मनमानीरे ॥ १ ॥ माई बापकी मैं परम लाड़िली सब सुख सार भुलानीरे ॥ २ ॥ सैयां मिलो सोऊ ललन करम गति हमरी उमँग जुवानीरे ॥ ३ ॥ इति ॥

क्या किसी की बेंदिया पनिघट पर मैंने पाईरे। इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी पलासी ॥

उठान खालीकी खालीकी खाली से ॥

(६५) कान्हाकी कमरियारे कामिनियां कौन चुराईरे ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खालीमे ॥ नइरे कमरिया मोरे लला कीरे आजहि मोल मँगाईरे ॥ कमरिया कौन चुराईरे ॥ १ ॥ कोऊ सिहात नहिं मोर ललन लखि कस कीन्हीं रिपुताईरे ॥ कमरिया कौन चुराईरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी पलासी ॥

(६६) लाला की लकुटिया मोरे को लम्पटै लुकाईरे ॥ अंतरा ॥ मुहिं कुचाल जंजाल न भावै यह को नीक हँसाईरे ॥ लकुटिया कौन लुकाईरे ॥ १ ॥ लाय धरौ मम ललन सामने नहिं फिर नाहिं भलाईरे ॥ लकुटिया कौन लुकाईरे ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी पलासी ॥

(६७) बावरे को ब्याही का समभ के बाबुल मोररे ॥ अंतरा ॥ जाति पांति कछु जाकी न जानीरे बैल छैल बरजोर ॥ का समुभ के बाबुल मोररे ॥ १ ॥ आक धतूर गँजेड़ि भँगेड़ीरे गरल अहारी घोर ॥ का समुभ के बाबुल मोररे ॥ २ ॥ कर त्रिशूल खप्पर डमरूधररे अंग भस्म सरबोर ॥ का समुभ के बाबुल मोररे ॥ ३ ॥ बाघम्बर मृगछाल व्यालवतरे बदत ललन मति भोर ॥ का समभ के बाबुल मोररे ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी पलासी ॥

(६८) श्यामाकी सुरतिया गुइयां मोरे मनमानीरे॥अंतरा ॥ मुहनी मुरत सुहनी सुरतरे चितचोरन छवि सानी ॥ गुइयां मोरे मनमानीरे ॥ १ ॥ माधुरी हँसन जिय के फँसनकी गँसनरे मृदु बतियन रस खानी ॥ गुइयां मोरे मनमानीरे ॥ २ ॥ हेमबरन दामिनि सी फबन तनरे नंदललन पटरानी ॥ गुइयां मोरे मन मानीरे ॥ ३ ॥ इति ॥

तोरी चितवन जर जायरे बटोहिया नुइयां भरे मोरे महुवा बिथुर गये । इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी पीलू ॥

उठान खाली से ॥

(६९) तोरी चितवन जदू जाईरे सँवरिया मुहनी बशीकरन टुनवनको सदन ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ षटरस को प्रसँग अमिनिधि की तरँग अमित अनँग छबि सिंधु सुघरिया ॥ मुहनी वशीकरन टुनवनको सदन ॥ १ ॥ नंदको ललन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

व्रजजनन जीवन धन तन मन वारी तोरी गिरिवरधरिया ॥ मुहनी वशीकरन टुनवनको सदन ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी पीलू ॥

(७०) हम सों सगाई कर सौतन मिताई पिय जर बरजाय तोरी ऐसी पिरतिया ॥ अंतरा ॥ जाओ जी वाही के धाम हमसे बोलो न श्याम सुखद तिहारी प्यारी प्रीतम सवतिया ॥ १ ॥ अब तो रसम यही तोरी कछु खोट नहीं कपटकी प्रीति रीति जगत बिसरिया ॥ २ ॥ नँद के ललन धन तुम्हरो चाल चलन तोरो हित बिपति को सदन सँवरिया ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी पलासी ॥

उठान खालीकी खालीकी खाली से ॥

(७१) बांसुरी ललाकी मोरे कौने बिसराई रे ॥ अंतरा उठान खालीकी खालीकी खाली से ॥ जौन गमाई ताको नाम बतादो बनितनु नन्द दुहाई रे ॥ सो कौने बिसराईरे ॥ १ ॥ चोर चपार लवार लंपटी को अस चुगल चवाईरे ॥ सो कौने बिसराईरे ॥ २ ॥ हमरे ललनसोंरी उनख धरे हैं कोरी नगर से देहौं निसराईरे ॥ सो कौने बिसराईरे ॥ ३ ॥ इति ॥

कागारे जारे जारे पियासों सँदेशा मोरा कहियो जाय। इस धुनिपर ॥

ठुमरी राग नट विभास ॥

उठान खालीकी खालीकी खाली से ॥

(७२) जियाका अँदेशा मोरा कैसे जाय बिरहा रे मारे डारे ॥ अंतरा उठान पहिलीकी अनसरलसे ॥ मैन बेधत कल न परत निंदिया न आवे मुहिं सगरी निशारे ॥ अँदेशा मोरा कैसेजाय ॥ १ ॥ नंदललन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पिया दरश परशमाती कबधौं मिलिहौ मुहिं प्यारे ॥ अँदेशा मोरा कैसे जाय ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी राग नट विभास ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

इस ठुमरी की तालोंकी ज़र्ब (संकेत) भी अंकों से चिह्नित कर दी हैं ॥

(७३) आ[1]जारे राजा [2]मोरे [3]सवतिया [4]सो नेहा छुड़ा[1]उ [2]अरज [3]गरज मोरी [4]यहीं बिन[1]ती तोसों कर[2]म कर [3]बेदर[4]दा ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ मान म[1]ना ह[2]मरा जो[3]बन जोहे दर[4]श पर[1]श तुम्[2]हरा रे मो रे प्या[3]रे [4]नँद के [1]ललन पिय जि[2]य न [3]तर-[4]साउ ॥ १ ॥ इति ॥

गोकुल गाँव को छोहरारे बरसाने की नार। इस धुनिपर ॥

ख्याल रागिनी मुलतानी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

भीमा तिताला ॥

(७४) लोगवा जानै न मोहिं नेहा करूँगी मैं तोसे नंदललन पीया इतनी बिनती मोरी कपट न रखिये मोसे ॥ १ ॥ इति ॥

ख्याल जोड़का रागिनी मुलतानी ॥

भीमा तिताला ॥

(७५) कगवारे उड़ जारे पिय को सँदेशवा जा सुना मोग रे ॥ अन्तरा ॥ मारी मरतहूँ नंदललन बिन बिरहा बिथा जिया जारे ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ख्याल जोड़ेका रागिनी मुलतानी ॥
भीमा तिताला ॥

(७६) गोविंद नाम को अधारा रे भज मन नंदकुमारारे ॥ अन्तरा ॥ नहिं पछितैहै ललन चेत चित जग जीवन दिन चाररे ॥ १ ॥ इति ॥

ख्याल जोड़ेका रागिनी मुलतानी ॥
भीमा तिताला ॥

(७७) जुगिया भा मन मोर पिय वियोग दुख घोर ॥ अन्तरा ॥ असन बसन कछु नीक न लागत बिन नँदललन किशोर ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(७८) काले कजराले घुँघराले भमराले बाल मानो जाल नागिनों के डाले जहिराले हैं ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ कीधौं रैन काली अँधियारी घटा काली काली आयेरी घुमड़ घेर बादल से काले हैं ॥ १ ॥ चंद्रमुख पै सुहात छवि बरनी न जात प्यारी लै मुकुर लखि रूप जो सम्हाले हैं ॥ २ ॥ खंजन मिरग मीन कंज दल होत हीन ऐसे दृग रंग रस छवि सुसताले हैं ॥ ३ ॥ हेरन सुधाको मूल स्वर्ग सुख अनुकूल लाड़िली लड़ैती जूके ढंगही निराले हैं ॥ ४ ॥ रसिक सनेही शील मधु मनमथ भरे ललन प्रिया के नैन भक्ति प्रतिपाले हैं ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ ठुमरी रागिनी सिन्धु खम्माच ॥
उठान तीसरी तालसे ॥

(७९) पिया काहेको रार मचाई मुरकगई न मोरी पकरो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कलाई ॥ काहेको रार मचाई ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ तुम तो रहत औरन रसमाते मोसन कौन मिताई ॥ १ ॥ अपनी बार हित करत विविधविधि निज गरजी अधिकाई ॥ २ ॥ मोरी न अरज गरज तुमसन कछु नंदललन की दुहाई ॥ ३ ॥ इति ॥

बैरागी रामारे बोलत काहे नहियांरे। इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान खालीकी अनसरलसे ॥

(८०) बेदरदी बलमारे किनु सौतन बिलमायेरी ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ हौ मलीन मन विकल बिथा तन वै न आये बीती सखि बरसन अँखियां ललच बिनु दरशन सागर नीर बहायेरी ॥ किनु सौतन बिलमायेरी ॥ १ ॥ को आगे दुख कहूं कहा फल भागहीन अपनो सिगरो बल दीखत नाहिं सहाय नाथ कोउ ललन पिया जो मिलायेरी ॥ किनु सौतन बिलमायेरी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(८१) उचट गई गुइयाँ निंदिया बैरन मोरी ॥ अंतरा उठान खालीकी अनसरल से ॥ आन लगाई सुधि सैयांकी बिरहा वेग बढ़ोरी ॥ निंदिया बैरन मोरी ॥ १ ॥ बिथा वियोग प्रबल दाहत तन उर अंतर प्रचरोरी ॥ निंदिया बैरन मोरी ॥ २ ॥ ललनपिया बिन दरश विकल जिया अब प्रभु वेगि मिलोरी ॥ निंदिया बैरन मोरी ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी मलार धूरिया ॥

उठान खाली से ॥

(८२) बरसन बिनु बीती बहु बरसन आली अरज कहो नटवर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सन जातप्रान सुधिलेहु रवरसन ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ जब सन बिछुरी कृष्णकुँवर सन भइ अभाव भोजन बावरि सन जेवर सन अप्रीति अंबरसन दुख वियोग भरे बहु झावरसन ॥ १ ॥ निशि न नींद नित दृगझर बरसन बिनु सुख बरसन राधाबरसन जोहत जोहत मगते बरसन हीनभई गति मति तरवरसन ॥ २ ॥ प्रगट रह्यो हरि मीत भवँरसन निठुर न दूजो कृष्ण जबरसन बहुविधि बरजो मनना बरसन रँगो श्यामरँग भूल खबरसन ॥ ३ ॥ अब कब बहुरै वह घरि बरसन भरूं कूपजल घट दांवरसन लीप भवन सुन्दर गोबरसन सेजसजूं पियकाज सबरसन ॥ ४ ॥ कौन रीति कर भाग उबरसन लेप महावर सन पांवर सन शीतल ब्यार ढुराऊं चवँर सन ललनपिया जो मिलब यदुवर सन ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ ठुमरी जोड़े की रागिनी झँझौटी ॥

(८३) यह भ्रकुटी बंक कीधौं कमान वा श्याम बरनसी नागिनियां ॥ अंतरा ॥ घनश्याम चन्द्रमुख बीच धनुष छवि झलकरही कह दामिनियां ॥ १ ॥ धहुँ जान सुमन रस लेन काज बैठी मधुकर की कामिनियां ॥ २ ॥ कहे ललनपिया जिया लखि अनंद मूरत प्रभुकी बड़भागिनियां ॥ ३ ॥ इति ॥

अथ टप्पा पछाहीं बोलचालका रागिनी झँझौटी ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(८४) न जो थाड़ा मुखड़ा म्हारे मन भांदा ॥ अंतरा उठान तीसरी की खाली से ॥ नैनोंदी चितवँण चित चोरन आशकदामन फस जांदा ॥ १ ॥ गौरबरन लखि श्याम चुनरिया ललनपिया मुख पांदा ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ टप्पा रागिनी झँझौटी ॥
उठान खाली की खाली से ॥

(८५) जाजारे भँवरा निज गरजी बेपीर ॥ अन्तरा उठान खाली की खाली से ॥ रस बस मिलु मतलबि पुनि त्यागत आखिर मीत अहीर ॥ १ ॥ तैंतो निठुर जगप्रकट दशाते नेह न राखत तीर॥ ललनपिया हितकर दुख बकसत मधुकर जादूगीर ॥२॥ इति॥

अथ ठुमरी जोड़े की रागिनी झँझौटी ॥

(८६) श्रीगोकुलचंद अनंद कंद दुख द्वंद फंद मेरो दूर करो॥ अंतरा ॥ प्रभु आन शरण पकरी तुम्हरी आरत की अरज मंजूर करो ॥ १ ॥ लख दीनद्याल गोपाल तुम्हें सब लायकहौ पति पूर करो ॥ २ ॥ तुम हितकारी द्विज दीनन के यहि आश मेरी भरपूर करो ॥ ३ ॥ अब तो निवाज व्रजराज भक्त वर ललनपिया मशहूर करो ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की ॥

(८७) दीन प्रतिपाल औ कृपाल द्विज दासन को राखत सुफल प्रण करुणानिधानी से ॥ अंतरा ॥ शीलनिधिनामी सरनामी यश जगमाहिं दानी सनमानी बहुभरो बुधवानी से ॥ १ ॥ गुण महँ आगर सुसागर अनंत सुख माहिमा पुनीत विधि प्रकट प्रमानी से ॥ २ ॥ ललनपिया अनाथ को सनाथ व्रजनाथ भक्ति वर दे अनन्य मन वच कानी से ॥ ३ ॥ इति ॥

अथ ध्रुपद रागिनी भैरवी ॥
उठान सम से ॥

(८८) सोहत मयंकमुखी शोभानिधि प्रबल तेज ऐसी अरुणारी छविदारी अँखियान की ॥ अंतरा उठान समसे ॥ दरसत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रँग बरसत रस हावभाव प्रेम प्रीति हेरन हिय हरत करत आनँद दृगवानकी॥ १ ॥ कोमल मृदु बैन चैन धीरज उर देत ऐन प्यारी छवि प्यारी की मंद मुसक्यान की॥ २ ॥ मनमथकी उमँग अंग अंग माहिं उमँग रही ललनपिया जीवै युग जगजीवन जानकी॥ ३ ॥ इति॥

ठुमरी रागिनी काफी॥
उठान तीसरी से॥

(८६) मुहिंका नाहीं भावे तोरी ऐसी चतुराई रे डगर चलत मोसों करत ढिठाई रे॥ अंतरा उठान तीसरी से॥ निपट निठुर नाहीं मानत अनोखो छैला ललनपिया निडर चोली मसकाई रे॥ १ ॥ इति॥

ठुमरी रागिनी खम्माच॥
उठान तीसरी की खाली से॥

(६०) मग चलत करत लँगराईरे श्यामरो कन्हैया ऐसो ढीठ अनोखो छैला चंचल चपल चुलिया मोरी मसकाइरे॥ आली॥ अंतरा उठान खाली से॥ औचक हठीलो मोरी बहियां गहि मरोरडारी ललनपियारे ऐसो निडर मुरारी वो तो मानत न एको करो कोटों चतुराइ रे॥ १ ॥ इति॥

ठुमरी रागिनी खम्माच॥
उठान तीसरी ताल से॥

(६१) औचक उचक गरवा मोहिं लगायोरे श्यामरो कँधैया ऐसो ढीठ निलज छैला॥ अंतरा उठान खाली से॥ अतिही बेमारग मारग मोरी रोके ठाढ़ो ललनपिया हठीलो नेक न दुरायोरे॥ १ ॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खाली की अनसरलसे ॥

(६२) मोहन मोसन आज सखीरी मारग में औचक अटकोरी ॥ अंतरा ॥ उठान खाली की अनसरल से ॥ जातरही मैं नीरभरन को अचरा पकर बैयां झकझोरी ॥ १ ॥ मटकी झटक पटक मोरी आली आन अनोखोहि अंक भरोरी ॥ २ ॥ ललनपिया नंदसुत छलबलिया मानत ना बहुभांति निहोरी ॥३॥ इति॥

अथ ठुमरी रागिनी अमानी ॥

उठान तीसरी तालसे ॥

(६३) मोरारे बदरवा बैरी रे पियाबिन बरसत बूंदन बार बार रे बदरवा बैरी रे ॥ अंतरा॥ उठान खालीकी अनसरलसे ॥ गरजे लरजे हियरवा बिजुली तड़कै धड़कै छतियां मोरी ललनपिया बिन नीक न लागे पपिहा पिया रहो पुकाररे बदरवा बैरी रे॥ १ ॥ इति ॥

अथ ठुमरी रागिनी बरुवा ॥

उठान खालीकी खालीकी खाली से ॥

(६४) जारे बलमारे नहीं करूंगी तोसे बात॥ अंतरा ॥उठान खालीकी खालीकी खाली से ॥ रतियां सौतन के सँग जागे ह्यां आये परभात ॥ नहीं करूंगी तोसे बात ॥ १ ॥ यक तो तुम तरसावत मुहिंका दूजे दमन दिन रात ॥ नहीं करूंगी तोसे बात ॥ २ ॥ ललनपिया निरमोही मीतसों प्रीतिकरी पछिताात ॥ नहीं करूंगी तोसे बात ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की ॥

(६५) निंदिया परे नाहीं रे प्यारे बलमा बिन मोहिका ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अंतरा ॥ मैं बिरहिन बिरहा की मारी मदनबिथा तन माहींरे ॥ १ ॥ ललनपिया भये निठुर सांवरे देख परत नहिं छाहींरे ॥ निंदिया परे नाहींरे ॥ २ ॥ इति ॥

अथ दादरा रागिनी बरुवा ॥

(६६) सिजिया कैसे आऊंरे सिजिया कैसे आऊंरे हो प्यारे बलमा मैं ॥ अन्तरा ॥ सास मोरीजागे दिवर मोराजागे जासन जीरालजाऊंरे ॥ १ ॥ ललनपिया मोरी मानले बतियां बिनती करके मनाऊंरे ॥ २ ॥ इति ॥

अथ दादरा रागिनी बैसवाड़ा ॥

(६७) वारी उमर की हो लगनियां गुइयां मारेडारे रे ॥ अन्तरा ॥ मोरी रे बलम बिन सूनी रे सेजरिया बैरी विरह मदन जियरा जारेडारे रे ॥ १ ॥ अँखियां न लागे मोरी रे ललनपिया के बिना जोबन की रे उमंग सैयां बिगारे डारे रे ॥ २ ॥ इति ॥

अथ दादरा जोड़ेका बैसवाड़ा ॥

(६८) तोरी सैयां टुनवांवारी नजरियां मुइकारे मारडारोरे ॥ अन्तरा ॥ जादूसी चितवनियां तिरछी सी बरछी सी मोरारे करि-जवा जीरा निकारडारो रे ॥ १ ॥ माधुरी मुरतिया नँदललन सांवरी सुरतिया तोरी पै कोटिकलन रविशशि वारडारोरे ॥ २ ॥ इति ॥

अथ दादरा जोड़ेका बैसवाड़ा ॥

(६९) सांवरी सुरतियावारे मुरारी सों नेह लगायहारी रे ॥ अन्तरा ॥ कठिन कठोर दूजो देखो न रसिक ऐसो पैयांपर करजोर मनायहारी रे ॥ १ ॥ उलटोरी मान करत हमसों ललन निठुर के बश भईरे जिया गँवाय हारी रे ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ दादरा जोड़ेका बैसवाड़ा ॥

(१००) श्यामसनेही मुरली वरे कँधैया सों जीरा लगायहारी रे ॥ अन्तरा ॥ उनके न मन रँग चढ़ति कछुक साखि हौं सब रँगन रँगीरँगायहारीरे ॥ १ ॥ हरिकि बान नहिं छुटत री सजनी बानक विविध विधि बनायहारी रे ॥ २ ॥ वापै चाल न चलत एकहु सखी मैं बहु छलन छली छलायहारीरे ॥ ३ ॥ अब कोइ यतन तुमहिं करेरी गुइयां ललन मोरी न मानेरी मनायहारी रे ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ दादरा जोड़ेका राग बैसवाड़ा ॥

(१०१) नाहक मारै नैना बानरे नाहक मारै नैनाबान ॥ अन्तरा ॥ प्रीति तोरी तरवार धारसी घायल जिया नकवानरे ॥ नाहक मारै नैनाबानरे ॥ १ ॥ बेगुन जान बिसारु न बालम नेक ललन करकानरे ॥ नाहक मारै नैनाबान ॥ २ ॥ इति ॥

अथ दादरा जोड़ेका ॥

(१०२) न मारै नैनाबान तोरे कहीं न मारै नैनाबान ॥ अन्तरा ॥ अपनी नजर बचाये रखियो सैयां कोमलाजिया मोरा जानरे ॥ १ ॥ हूं सुकुमारि तिहारि शपथ सैयां तोरेही रसबस मान रे ॥ २ ॥ माइल रहत प्रेम परिपूरन तोहित के सनमानरे ॥ ३ ॥ मनवचक्रम तोरे हाथ बिकानी ललन रसिक सुखसानरे॥४॥ इति॥

अथ ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान खालीकी अनसरल से ॥

(१०३) प्रीतितुरँग चढ़ो जियरा स्वनेहचै जीन जड़ी मणियां रे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ लगन लगाम लिये करसों चले सुमति चाल चित चौकनियां रे ॥ १ ॥ विहरत मन मौज तरंगनसों छांड़त हँसि उमँगन फुलझँड़ियांरे ॥ २ ॥ रसराहन शाहन शाह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बनो मंजिल हरिदरशन हरघड़ियारे ॥ ३ ॥ प्रभु आनमिलौ अब ललनपिया तुम बिन मँझधार नाउ अड़ियारे ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी बरुवा ॥

उठान खाली की खाली से ॥

(१०४) तिहारी गोरी जानलई करतूत ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खाली से ॥ हौं जानतरही लाग मोहनकी तू निकसी अतिछूत ॥ १ ॥ होरीके दिनन होरी खेलन हँसनकेरे तू कटबैठी ऊत ॥ २ ॥ मोरी तोरी मिखमिलु ललन पिया सोरी साँवरो सुघर सपूत ॥ ३ ॥ इति ॥

अथ ठुमरी राग बिहाग ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(१०५) बलम बलिगइ मोरी सिजिया आउ विरह दुखदहि अब जनि तरसाउ ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ बातन बातन रात बिहानी अब तो गरवालगाउ ॥ १ ॥ ललनपिया तोरी बलिहारी मोहन मोरा जिया जनि तरसाउ ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की ॥

(१०६) लगन मोरे सैयां सों न सौत लगाउ ॥ अन्तरा ॥ दधिके मिस कपास जानि भख मुख फिर पाछे पछिताउ ॥ १ ॥ तू न मोहिं जानत नवनागरि जासन दीन चिताउ ॥ ललन श्याम हितें फूलि फिरौ जो सो न भूल उभराउ ॥ २ ॥ इति ॥

अथ इकताला रागिनी भैरवी ॥

उठान समसे ॥

(१०७) ठुमक ठुमक चलत चाल चंचल चपलासी ॥ झमक झमक झपक झपक झुक झुक सुखरासी ॥ अन्तरा समसे ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

झिझक झिझक दृगन निरख निरखन रँगरासी ॥ मृदुल हँसन सरस बोलन लेत हँसउवासी ॥ १ ॥ श्याम गात अतिसुहात झलक चन्द्रमासी ॥ नस नस रस कोमलताई मदन छवि प्रकासी ॥ २ ॥ नवल नार करो शिंगार जोबन द्युतिखासी ॥ ललनपिया निरख निरख परम मन हुलासी ॥ ३ ॥ इति ॥

अथ दादरा रागिनी भैरवी ॥

(१०८) कौन भरोसे लगाये मोसों नैना ॥ अंतरा ॥ तुम नहिं जानत रसिक रसिकता चितवन चारु मृदुल रस बैना ॥ १ ॥ छल बल करत न लजत नेक जिय रोष दिखावो भरे तन मैना ॥ २ ॥ तुमसिबतियां हम सब सिखराखी छल कि प्रीति घड़ि एक निभैना ॥ ३ ॥ जाउजी जाउजी मुख अनत दिखाओ यह रंग ललनपिया पै न्चढ़ैना ॥ ४ ॥ इति ॥

दादरा जोड़े का ॥

रागिनी भैरवी ॥

(१०९) जाउजी जाउजी तुमसे प्रीति करोना ॥ अंतरा ॥ तुम छलबलिया निठुर श्यामरे कबहुँ एकके होके रहोना ॥ १ ॥ नेह निभाय काहि सुख दीन्हो कौन सनाथ कियो सो कहोना ॥ २ ॥ बहुतक कथा सुनी हम तुम्हरी जो तुमसन कछु बराणिसकोना ॥ ३ ॥ ललनपिया तुहि जानत भल विधि तैं जस नटखट श्याम सलोना ॥ ४ ॥ इति ॥

दादरा जोड़े का ॥

रागिनी भैरवी ॥

(११०) न पिया हमसों करोना निठुरैया ॥ परत त्येहरे मैं हुँ प्यारे पैयां ॥ अंतरा ॥ इन बातन नहिं नफा नेक पिय मुहिं तर-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

साओ सौवत सुख सैयां ॥ १ ॥ हमरो सबर परैगो दोउ पर निबल कि ओर सदैव गुसैयां ॥ २ ॥ हम तो प्राण देत नित तुमपर तुम का हम बैरिन रही सैयां ॥ ३ मैं विषखाय मरोंगी एक दिन प्राण लेहैं तुम्हगी लँगरैयां ॥ ४ ॥ ललनपिया हमरी सों मोहन अब तज निडर लँगर लरकैयां ॥ ५ ॥ इति ॥

दादरा जोड़े का ॥

रागिनी भैरवी ॥

(१११) हमसे नाकरो करोना ऐसी प्रीति ॥ अंतरा ॥ तुम्हरी तो कुछ बानि औरही नितप्रति नइ नइ रीति ॥ नाकरो करोना ऐसी प्रीति ॥ १ ॥ हमका छल बल नेक न भावत ना तुम्हरी परतीति ॥ नाकरो करोना ऐसी प्रीति ॥ २ ॥ ललनपिया तुम निठुर श्यामरे तुम से सकत को जीति ॥ नाकरो करोना ऐसी प्रीति ॥ ३ ॥ इति ॥

अथ त्योरा रागिनी भैरवी ॥

उठान दूसरी तालसे ॥

(११२) मोरी कोमल कलाई सैयां ना छुओ ॥ गइ मुरक गइ मुरक दैया मोरी कोमल कलाई सैयां ना छुओ ॥ अंतरा उठान समसे ॥ ऐसो निठुर न तरस आवे निपट निलज बे पीर भयो ॥ १ ॥ ललनपिय पग परत तोरे छांड़ा डगर नहिं लाज हियो ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी बरुवा ॥

(११३) मोरी गली आजा बँसुरियावारे ॥ अंतरा ॥ वन वन विपिन कुँजन द्रुम लतिकन डोलत साँझ सकारे ॥ बँसुरिया

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वारे ॥ १ ॥ नन्दललन प्रन पुरन जनन मन दे मुहिं दरश दुलारे ॥ बँसुरियावारे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी राग सिन्दूरा ॥

उठान खालीकी तीसरीसे ॥

(११४) रार करत नित नई नईरे मोसों मैं तो तोरी नगरिया में ना रैहौं मैया ढीठ कँधैया भयोरी तुम्हरोरी मोरे बैर परोरी अब कैसे निभैगी मैं तो तोरी नगरिया में ना रैहौं मैया ॥ अंतरा खाली की खाली से ॥ नीर भरोरी मोरो भाजनवां तोरो निहोरो मानता नहींरे कौन यतनकरउबरूं वासों मोरा प्रान दुखित कीन्ह नंदको ललनवां बड़ो निरदैया दैया दैया मैं तो तोरी नगरिया में ना रैहौं दैया ॥ १ ॥ इति ॥ ठुमरी रागिनी धानी ॥

उठान तीसरी से ॥

(११५) चलो हटो जाओ छांड़ो मोरी मगरी मोसे लँगर न लँगरवा ढीठ जानेदे पनियां भरन को मुहिंका कालिंदी छैल ॥ अंतरा ॥ उठान समकी अनसरलसे ॥ तैंतो लजत न नेक ललन बराजोरी तोरे बांटपरी रे कान्ह मदमातो डोलै भमै नंदबबा सों जाके कहूंगी मानत ना हमारी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी सरपरदा ॥

उठान समकी खाली से ॥

(११६) सजन तोरी छलबतियों सों गई मैं हार सजन तोरी जान लियो तू कपटी मीतहै मुरार ॥ छल बतियों सों गई मैं हार ॥ अंतरा उठान समकी खाली की खाली से ॥ अबना मिलूंगी तोरी सौं नंदललन तासों चलो जाओ वाही कुबरी को करो प्यार ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी अड़ाना ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(११७) मैयारी मैया मोरी ना मानै ढीठ कन्हैया निर्दैया ॥ अंतरा उठान समकी अनसरलसे ॥ बैर परोरी तोरोरी मुहनवाके मारे मैं हवी गोरसवा नवनीतवा पय बचन्न पावेरी धाय धसे गृह व्रज के ललन गण लै सहैया ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग देश ॥
उठान तीसरीकी खाली से ॥

(११८) गरजत घन बरसत झूम झूम ॥ लैलै परिकर कर नभहुजून ॥ सखि छाई घटाचहुँ घूमघूम ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ विकट रैन अधरात अँधेरी लखितन कांपत रूमरूम ॥ इत बैरन सननना सनक सनक पुर्वा प्रवाह कर रही धूम ॥ १ ॥ कैसे कटै सजनी पिया बिन यम यामिनियां भईं मोहिंसूम ॥ पिक पापी न मानत बैर पस्यो कोकिल कूकति हिया हूमहूम ॥ २ ॥ कौंधा लहक लहक लहकारत दामिनि द्युति भरि झूमझूम ॥ उत दादुर झींगुर झनक बैन सुनि होत मोर हिय टूमटूम ॥ ३ ॥ चातृक चहक सों दहक उठन हिया शिखि सोहरत मनु बनेउ डूम ॥ दिन ज्यों त्यों तो कटि जात सखी निशि परत गदर खग नूम तूम ॥ ४ ॥ नींद हिरानि प्रान आकुल करे डारे विरह तन तूम तूम ॥ नँदललन सों यह दुख कहुरी जाइ बलिजाऊं तोर पग चूमचूम ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी सरपरदा ॥
उठान समकी खाली की खाली से ॥

(११९) सखीरी देखो नाहीं माने छैल कान्ह करत बरा- जोरी मग बिच मुहिं अकेली जान ॥ मोरी ना मानै छैल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कान्ह ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ यशुदा ललन बड़ो ढीठ निडर ऐसो मांगत लँगर मोसे जोबन दान मोरी नाहीं मानै छैल कान्ह ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की ॥

(१२०) निडर रँगडारी सारी मोर चुनरिया बिगारी न्यारी रँग बोर ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ अँग सों अँगोरी माल मुतियन लड़ तोरी नँदललन कीन्हीं ऐसी झकझोर रँगडारी सारी सारी मोर ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग विभास ॥

उठान तीसरी से ॥

(१२१) नाहीं माने नाहीं माने मोरी कान्ह जियरा जराये जारे मोरारे ॥ अंतरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ नंदललन भयो सवत रस मातो मुखहू बोलै न गुमानि ॥ जियरा जराये जारे मोरारे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी टोड़ी ॥

उठान खालीकी खाली की खाली से ॥

(१२२) पिया तोपै वारूं तन मन धन ऐसी सुघर बतियां कीन्हीं निपट मोसे ॥ अंतरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ ऐसो रँग ढँग रस बरसत हिया हरषत ललनपिया मैं वारी राजी तुम सन जिया ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग सहाना ॥

उठान तीसरी से ॥

(१२३) उतरन को मोरे ला नइ नैया एरे खिवैया येतो जीर्ण नवैया ॥ अंतरा उठान तीसरीसे ॥ गहिरी गहिरी नादिया

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नीर अथाहन धार धुंकार बहे अति दैया बेंड़ा पुरान चले पुरवैया ॥ १ ॥ मन मानी दूं उतराई मैं तुहिका राजी करूं दै बकसीस रुपैया देखु बिचार लेत न कसमैया ॥ २ ॥ ललन श्याम अब हो सहाय मम तुम बिन कोउ न पार लगैया है निषाद अतिही निरदैया ॥ ३ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी अड़ाना ताल रूपक ॥

उठान दूसरी से ॥

(१२४) सुन एरे समरिया कान्हरे मुतियनकी माल नरे नरे पहिरै गरे कहुँ कोउ की दीठ परे नरे ॥ अंतरा उठान दूसरी से ॥ दिन रैन बिधना से मनावत रहत कुशल तिहारि मैं चिरजिओ ललन बरीस कोटि हनात रोमहु जनिगिरे तुहि निरखि जियत जहान अपनो जन्म सुफल करेओरे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग सहाना ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(१२५) दैयारे दैया नैया झांझिरी नदिया गहिरी गँभीर बहतरे ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ कैसेक उतरूंगी पार खिवैया निरदैया न दे नवैया ललन श्याम तुम बिन को पार लगैया ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग सहाना ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(१२६) हम से तुम से बनाउ बनैना निभैना घरी एकहू पल पिया बनिआवै तोरी बात एकौ कैहना ॥ अंतरा उठान खाली की अनसरल से ॥ तुम तो सवत के माते पिया गृह गृह भ्रम ताकत डोलो तिया ऐसी प्रीति पर छार दुलार खिया मुख देखे के

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मित्र ललनपिया तुम्हरी छल बतियन पेख लिया सुख चैन कबहूं कुछ तुमसे मिलैना ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग देश ॥

उठान खाली की खाली की खाली से ॥

झूला ॥

(१२७) झुलवन तिहारी पै वारी राधा रुकमिन जी प्यारी तोरे बलिहारी रे हां ॥ अंतरा उठान खालीकी अनसरलसे ॥ रंग रँगीली चटकीली चुनरी तापै जरद जरकसी सुन्हारी गुटवा किनारी मणिन माणिकन हीरन चुनियन नग जटित जड़ाऊ मन हरन हजारी रे हां ॥ १ ॥ ललित सहेली ललितापै लवन्यतासो तुम्हरी कृपाकीहै कटाक्ष कलारी सब सखिन सयानी में बिराजो पटरानी जन ललन प्रिया तिहारी शरन सदारी रे हां ॥ २॥ इति ॥

राग एमन कल्याण ॥

ताल सवारी फरोदस्त । उठान समसे ॥

(१२८) शाद हो शादी हो आबादी मुबारिकबादी ॥ शाहज़ादा वो हो नौशां हों नौशीं शाहज़ादी ॥ अंतरा उठान समसे ॥ आज सोने कि है घड़ियां हो मुबारिक जोड़ी बना बनी से मुहब्बत हो दिलीएत्क़ादी ॥ १ ॥ मुक़द्दर मजिलिसे सोहबत है परीज़ादों से सदा आती है दरे गोश मुबारिकबादी ॥ २ ॥ जिये जागे श्रीनँदललन श्रीलाड़िला बन्ना बन्नी वृषभानुजी सोहाग की हो आबादी ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खालीकी खालीसे ॥

(१२९) निडर ऐसो मोहन काहे को भयोरे ॥ निलज बड़

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छैला करत मन मैला ॥ अंतरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ आन कान नहीं करत काहूकी रे सकुच जनि धारे रचत ढँग न्यारे लँगरपन तेरो चहुँ व्रज छयोरे ॥ १ ॥ बान बुरी ये कान्ह तिहारीरे तजत ढिठपन ना धरत भय मनना ललनपन तेरो ना तनक गयोरे ॥ २ ॥ इति ॥

हिंडोला ॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(१३०) तिहारे सँग तौ मैं ना झूलोंगी व्रजराज ॥ हँसो न मोसे सन्मुख सखिन समाज ॥ अंतरा उठान तीसरी से ॥ तोरी न सरा मोहन कछु मानहुँ तुम हरिनिपट निलाज गेरो चहत झुलाय झुलनसो जानगईरे तेरो काज ॥ १ ॥ बात न धरत चढ़ावत निजुरँग छलन न आवत बाज तुम स्याने हौं स्यानी मैं तुमसों थलहि न चलहि जहाज ॥ २ ॥ जो मन तोर बसत मो मुख सो यह नई बात न आज जाउजी जाउजी पग परत तिहारे नंदललन महराज ॥ ३ ॥ इति ॥

झूला ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी झँझौटी ॥

(१३१) झूलन पर मोरा जिया अति घबराय ॥ झूलन पिया धीरे धीरे मोहिं झुलाउ ॥ अन्तरा ॥ है ललिता बड़िढीठ नागरी हरि ढिग दियो बैठाय मैं बरजो हरि एक न मानत उनका तू दे समुझाय ॥ १ ॥ दौर पकर दावरि गहु गहु री झूलनलेरी थमाय तुम्हरी शपथ पिया नँदके ललनप्रिया मोरा जिया निकसोई जाय ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी राग मलार ॥

उठान पहिली तालसे ॥

(१३२) लारे भर बार बदरवा मीत मोरे पियाको खबरकर आरे बरसा ॥ अन्तरा पहिली की खाली से ॥ बीर ब्यार पुरवा बिहरारे परिकर सो तू उमड़ घुमड़ घिरआरे चहुँदिशि सो छाजारे तब सजन मोर सवतको घर छांड़ै चपला चमकारे ललनपिया प्राणप्यारे मुरली मोरमुकुटवारे को गरज आगमन अपनो सुनारे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग मालकौश ॥

उठान तीसरी तालसे ॥

(१३३) शुभघरी लग्न मुहूरत सायत योग नक्षत्र ग्रह व तार शुभग मुहिंका झुलवन देडार मोर मँदिरवारि आली ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ लारी ललिता विशाखा बुलालारी पँचरँगि रेशम डोरि पटा कञ्चन के मखमलि तकिया फ़लालैनी फ़रश तापर बिराजैं गावैं नंदललन के गुणानुवाद सावन के राग सोहागभरी घड़ियां आज अनँदवाली ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खाली की खाली की खाली से ॥

(१३४) बतियां हँसिकीन्हीं कैसी कैसी मोसे निपट निलज लँगर अनोखो छैल वेग बताउ काहे ठठोलीकीन्हीं कौननाते निबल निरखि गिरिधरसों ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ ना तो तुम्हरी सरहज सारी ब्याहे न घर हमरे हांरी गारीदेत बिन बिचारी ललनपिया नोखो रसिया निरखै हर्षै परसै करसों ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मल्हार ॥

ठुमरी रागिनी देश ॥

उठान समसे ॥

(१३५) गरज गरज बरसत बदरारे ॥ लरज लरज लरजत डरपत हमरा हियरारे ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ दमकि दमकि चमकि चमकि चपला चमकावै तरसावै आवै पिय न सजनी मोर मुकुटवारो प्यारो रसिया रे ॥ १ ॥ पपिहा पिय रटत हूक उठत कछु न भावे सुधि आवे मुहिं पियाकि बीर उमँगत तन मदन नंद-ललन श्याम विनारे ॥ २ ॥ इति ॥

ध्रुपद इकताला रागिनी खम्माच ॥

उठान समसे ॥

(१३६) दमकि दमकि चमकि चमकि जावे डरावे चपला द्युति निरखि सजनी चौंक चौंक कँप कँप उर धरक धरक जावे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ पपिहा पियरटत मोर कूकत कोयल चकोर दादुरझींगुर बहोरि भीनी तानगावे ॥ १ ॥ गरज गरज घन घुमंड बूंदन बरसावे मंद मंद पवन ल्यावे विरहनल सतावे ॥ २ ॥ लखि लखि छवि वर्षाकी तन मदन उमँगितावे प्रबलशर चलावे मोहिं पियकी सुधिआवे ॥ ३ ॥ नँदललन बिनु न चैन तर्फत दिन कटतरैन निपट निठुर कपटी अयन दर्श ना दिखावे ॥ ४ ॥ इति ॥

मलार ॥

सादरा रागिनी परज शूलताल ॥

उठान समसे ॥

(१३७) बरसै बदरा जियतरसै बिरहाके डरसे उन बिन कल न परत मुहिंका आली ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ दामिनि द्युति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दमकत जियडरपत भरकत अति नंदललन जियअधार बिनु दुखार मदन व्यथासों मतवाली ॥ १ ॥ इति ॥

सादरा रागिनी भैरवी ।

उठान समसे ॥

(१३८) नीर लिये गँभीर घन घुमड़ आये गरज गरज बरसत सखि बूँदन वारिडार ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ सुनगुहार डारडार कोकिलाचकोर चारमोर शोरकी हुँकार जियहमारबेकरार नंदललन प्राण अधार बिन न मोहिं सुखविहार ॥ १ ॥ इति ॥

हिंडोला ॥

ध्रुपद इकताला रागिनी खम्माच ॥

उठान समसे ॥

(१३९) हरषि हरषि झुलत दोउ रसिक रँगहिंडोलना ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ वर्ण वर्ण सजिशिंगार छजत छवि अमोलना पुलकित अंग युगल निरखि मृदुल हँस ठठोलना ॥ १ ॥ दरशत घन गगन आय परम पवन डोलना बरसत जल रिमक झिमक करत पिक किलोलना ॥ २ ॥ चमकत चपला चलाक कड़क तड़क बोलना परस परस प्रबल तमको गगन घन सो खोलना ॥ ३ ॥ दमपति नैनप्यारी सैन रँगरस घनिघोलना ललनपिया परसपर सो मुख की छबिको तोलना ॥ ४ ॥ इति ॥

मलार राग हमीरा ॥

उठान खाली से ॥

(१४०) गरज गरज बरसावे बेदरदी बदरा पिया बिन मोहिं तरसावे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ चपला चमकावे डरावे चौंक चौंक परत नींद न आवे ॥ १ ॥ पपिहा पिय ध्यावे सुधि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आवे ललनप्रिया श्याम विना मुहिंका न भावे॥ २ ॥ इति ॥

मलार रागिनी पहाड़ी ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(१४१) घेर घेर परिकरसों बिन डरसों झरिझरसों थिरसों बरसों॥ अंतरा उठान खाली से॥ घुमड़ घटा घेरि आईं काली अँधियारी छाईं लखि न परत कर करसों नंदललन पिया बिन तरसों॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान पहिली से ॥

(१४२) नैनबान मरत सजनी कैसी लचक चलत चाल मद यौवन माती गोरी गुमान धारत सजनी कैसी ॥ अंतरा उठान समकी खाली से॥ चन्द्रमुखी मृगनैनी मृदुबैनी शोभा दरसत बरसत फब रँगीली रसीली छबीली आली ललनपिय प्यारी प्यारी सारी शीश साजे नई नोखी मुसक्यान मधुर मधुर सुघरवान सुप्रान हारत सजनी कैसी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़की ॥

उठान पहिलीकी अनसरलसे ॥

(१४३) नवल नारि सखि एक मैं देखिआई नैन रसीले वाकी चितवन बाँकी बाँकी सैन सलोनी वारी वारी मोरे जिया भाई॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरलसे॥ नान्हों नान्हों कजरा नजरा नैनन माहिं आँजे पान मुख रचाये ऐसी शोभा कहि न जात मन्द हँसन मृदुल बोलन ललनपिय सदन प्रमुदताई॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥

उठान पहिलीसे ॥

(१४४) नैन बानि बाँकी नैनबानि काई बाँकी रसीली बाँकी रँगीली बाँकी छबीली माई ॥ अन्तरा उठान समकी खालीसे ॥ अलि अलिनु माहिं खड़ी सुन्दरी सोहाग भरी ऐसी अलबेली बाल ललनपिय परम प्रीति बाढ़त लखि वाकी सुघरताई ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥

उठान समसे ॥

(१४५) नैन नीर लागी रहत झरिपै झरि छिनपै छिन पलपै पल सखि निशि दिन ॥ अन्तरा उठान पहिलीसे ॥ पिय विदेश छाये सौतन भुरमाये निपटतरसायेदिन बहु बिताये आये न निंदिया आये बिरहिन बिरोग भरे नन्दललन श्याम सनेही बिन ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खालीकी खालीकी खालीसे ॥

(१४६) नजर लागी काहू रसियाकी तुहिका सांच बताओ किन कारन मलिनु मन ॥ अन्तरा उठान पहिलीसे ॥ दई दया सब सुखनिधि तोरे घर तू किनु कारन दुबरात जात तन ॥ १ ॥ नन्दललन धौं हित रँगराचो मोसे कहत सजनी सकुचि कछु जानि ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(१४७) दृगन द्युति दरशत पियाकी प्रीति ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ नेहनहाय रहे सब रँग सों ढँग ढँग सों परतीति ॥ १ ॥ लखन अदाँ रस अदा करतहै मदन सदन नवनीति ॥ २ ॥ दरश

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देति छिन छिन छवि अँखियन पिय परसनकी रीति ॥ ३ ॥ ललनपिया वारी तन मन धन सब श्याम सलोनो मीति ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ ठुमरी रागकेदार ताल झूमड़ा ॥

उठान समसे ॥

(१४८) नन्दके फरजन्दके मुख चन्दके माइल हमीं॥ गोविन्द के अरविन्दके दृग फन्दके घाइल हमीं॥ अन्तरा उठान समसे॥ अनन्दकन्द विमन्द श्रीजगबन्दु के काइल हमीं ॥ गोकुलेश मुकुन्द से हरवक्तही साइल हमीं ॥ १ ॥ सप्तस्वर वंशी बिलन्द अमन्द के हाइल हमीं ॥ नँदललन के सेवकों में सबसेही जाहिल हमीं ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी राग देश ॥

उठान समकी खालीकी खालीसे ॥

(१४६) सुमति गति मोरी कीजै नाथ ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ मैं अजापि पापीश पुरात्रिन अधम कुकर्म्मि अगाथ ॥ १ ॥ शरणागत मम लाज रखो प्रभु करहु अनाथ सनाथ ॥ २ ॥ नन्दललन जन जान उबारहु नवत जोरि करमाथ ॥ ३ ॥ इति ॥

छैला गारी ना देरे सुनैंगे सारे लोगवा। इस धुनि पर॥

ठुमरी रागिनी जंगला ॥

उठान खालीकी खालीसे ॥

(१५०) तोरी प्यारी बतियों ने लुभाया जिया मोरारे ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ मोहनी मुरतिया श्यामली सुरतियारे चन्द्रवदन गोरा गोरारे॥ हां लुभाया जिया मोरारे ॥ १ ॥ नन्दललन प्रियकी बलि जइयेरे चरण चाकरा तोरारे॥ लुभाया जिया मोरारे ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(१५१) तोरी सुघर मालिनियां बननवार लाई ग्वैयां ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ शुभ घड़ी लगन बँधाउ दरवजवा यह दिन कहँ पैयां ॥ १ ॥ भाग सुहाग निशाहै प्रथमहिं प्रिया परस सैयां ॥ २ ॥ नेहकी धूम नगर नौबतसी चहुँ दिशि दरशैयां ॥ ३ ॥ ललनपिया युगजीवो युगल हितू तन मन बलि जैयां ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी परज ॥

उठान पहिली ताल से ॥

(१५२) ये सखि मद पिलादे पियको आज हमरी सौं प्याला भरि भरि कर आज रैन चैन ऐन जागे मम भाग ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ बहु दिनान पाछे ग्वैयां आये मोरे भौन सैयां निंदिया विरह दुख विहैंयां नन्दललन कि बलिजैयां सुफल कीन्ह शुभ सोहाग ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खालीकी अनसरलसे ॥

(१५३) रातकी बात पियाकी सखी मोरे जिय में कसक रहीरे ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ आप तो सवत सेज सुख मानो हमसों बैर प्रीति में ठानो छलबल घतियां निडर निठुर नइ बानि निधरक गहीरे ॥ १ ॥ देखी कुटिलाई ठगियाकी अब न रही प्रतीति कछु वाकी ललनपिया ऐसनकी प्रीतिकी रीति की रमक लहीरे ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी मलार ॥

उठान खालीकी अनसरलसे ॥

॥ (१५४) कौन बार मिघवा बरसनकी यह घरि पियाके मिलन परसनकी लैलै गगनगन सुघन बैरी मारत तक बरछी बूंदिनकी ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरलसे ॥ एक तो रैनि अँधेरी दूजे सानाना पवन पुरवा सनकी सुनि गरज लरज जिय जाय सखी देखी चमकन चपला बैरिनकी ॥ १ ॥ दइमारन पर गाज परत ना मुहिं तरफावत तरसावत मन ललनपिया अब सहो न जात दुख में दुखिया बिरहन पिया बिनकी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी मलार ॥

उठान खालीकी अनसरलसे ॥

(१५५) लागि रही लौ पिय दरशन की घन बरसन परसन बरसनकी सगुन होत अँगिया बँद खुल खुल कँगन करक दृग फरकि फरकि लखि गति सखि कर चुरियां दरकनकी ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ मगन मन मनावत नितप्रति सुख काग सँदेश देत पियको पपिहा सुन बैन चैन आवत कहे ललनपिया प्यारे पियको लिखु प्रेम प्रीति पतिया सुधि मनकी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी मलार ॥

उठान खाली तालसे ॥

(१५६) घन गगन गन अगम अब कीन्हो लै सभा घनपति नकीब पपिहा नगार घन गरज गरज चहुँदिशि सँदेश पियकेमिलन को कहि सखिन सन खबर कर दीन्हो ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ भई आश लिख प्रेमपाती पियतजि विदेश घर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गमन कीजै अति उर अनन्द मुखचन्द ललनपिय वारी वारी बदरन ये यशु लीन्हो ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी मलार ॥

झपताल उठान समसे ॥

(१५७) उमड़ घुमड़ घन गरज गगन आईं छाईं घटा घन घोर लहलहाईं ॥ अंतरा उठान समसे ॥ सियरी सियरी सरस पुरवा पवन ल्याईं बूंदन सुझरिल्याईं दादुर पपीहा मोर गावत मलार धाईं ॥ १ ॥ चपला चमक चारु चहूँदिशि दरशाईं लखि छबि हुलसाईं ललनपिया प्यारी बिहरत गलबाईं ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी राग मलार ॥

उठान खालीकी अनसरलसे ॥

(१५८) कारे बदरा कहां सिधारे चहुँदिशि खोजत नित नभसारे सौतन मन घरावनहारे ॥ अंतरा उठान खालीकी खाली से ॥ लै घनश्याम यूथ जोबनभरे अरज गरज बूंदन बरषारे तौ सँदेश पावे पिया हमरा चमकि चमकि चपला चमकारे ॥१॥ पपिहा मीत प्रीति उपजारे पियप्यारे को बेगि बुलारे लिखु वियोग सुधि सजन पाती अब तजु परदेश सौत घरआरे ॥ २ ॥ मैं बिरहन दुखिया पिय बिनकी प्रबल बान मनमथ तन मारे उमँगि उमँगि रहिजात तरस जिय तरफरात दुख सहो न जारे ॥ ३ ॥ बहु दिन भये गये तजि हमको अब तो मेहर करो रसियारे ललनपिया मनमोहन स्वामी दरश परश मुहिं देउ दुलारे ॥ ४ ॥ इति ॥

दादरा ॥

रागिनी अमनी ॥

(१५९) श्याम सनेहीसों लागी पिरतियां ॥ अंतरा ॥ घरि पल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छिन चित चैन न सजनी जब सन निरखी साँवरी सुरतियाँ ॥ दोहा ॥ मोहनि मूरति मनवशी विहरत हिय दिनरैन । जिमु मयंक महँ श्यामता सोहत अति सुखदैन ॥ मोहनसों मैं कीं नेह नतियां ॥ १ ॥ वशीकरण बरषत जादू टुनवा नंदललन की अमृतरस बतियां ॥ दोहा ॥ वंशीवारे ललनने वैसी बैन सुनाय । विनय मोल लइ मोल लइ चरनन्ह चेरि बनाय ॥ मुहा लीन्हो माधुरी सुरतियां ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी काफी ॥

उठान खालीकी अनसरलसे ॥

(१६०) ना अंजना अंजना अंजना दृग वैसहि मारेडारे ॥ तिहारे दृग वैसहि मारेडारे ॥ अंतरा उठान तीसरी की खालीसे ॥ बिन कजरा गजबी कजरारे वशीकरन मोहनी सी धारे मृगखंजन कंजन प्रभारे ॥ दृग वैसहि मारेडारे ॥ १ ॥ सैन कटाक्ष बान बरछी चितवन चपलासी हेरन तिरछी अमि गरल भरे दोउ विधि प्रचारे ॥ दृग वैसहि मारेडारे ॥२॥ जोबन मधिरस रंग छवि छाजे शील स्वभाव लाज बहुराजे ललनपिया तोरे वारी वारी हांरे ॥ दृग वैसहि मारेडारे ॥ ३ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी काफी ताल झूमड़ा ॥

उठान खाली से ॥

(१६१) अटपटी पनघट बाट कैसे जाऊं पनिया काजरी ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ यक तो पग पग की कुशल दूजे साजे अभरन साजरी तीजे नंदको ढोटा ढीठ चंचलसों बचब कब लाजरी ॥ कैसे जाऊं पनियां काजरी ॥ १ ॥ हूं नवल नइ आइ यह ठहँ जुचि न रीति रिवाजरी ॥ नँदललन पियकी आनि बानि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

न जानूं सखिन समाजरी ॥ कैसे जाऊं पनिया काजरी॥२॥इति॥

ठुमरी रागिनी काफी ॥

उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(१६२) अजी मोरा जी न जराओजी तुम्हरी मरजी जोहोसो करोजी मोरा जी न जराओ जी ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ चहे ललिता कुबरी के धाम चहे करो विशाखा गृह अराम मैं तो बाज रही अस हितसोंजी ॥ मोरा जी न जराओजी ॥ १ ॥ छल बल कपट सही निठुराई जानिलई सब तोरि ढिठाई नंदललन क्यों तरसाओजी ॥ मोरा जी न जराओजी ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा सरज ॥

(१६३) पिय कँगनवा मोरारे सोनरवा को बुला गढ़वादे ॥ अंतरा ॥ पहुँच कड़न छन बाजूबंदवा जुशन नवरतन मोल मँगादेरे ललनपियारे मोर मनको मान मानादे मान मानादे मान मानादे मान मनादे ॥ १ ॥ इति ॥

तराना राग छाया ॥

उठान खाली से ॥

(१६४) ना द्रिरि द्रिरि तान्न तूंम तना नाना नाना दिर दिरना आँ आँ दिर दिरना आँ आँ आँ ओदानी द्रीम् तद्रिम् नाद्रीम तदीम् तदीम् तदा तदरे दानी तदरे दानीरे दियानारे तना तनानारे तनानानानारे तदियनरे तान्न ताना ॥ अंतरा ॥ ये अली अली यलोम यलोम अला अला तनान्न तान्न नादेर तोम्ब धृकिटि तक धान्नि धा धृकटि तक धान्नि धा तधा तधा तधा तदारे दानी ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तराना राग कान्हरा ॥
उठान खाली से ॥

(१६५) दारा दीम् दार दीम् दारा दीम् दारा दारा दारा दीम् दरा दरा ॥ अंतरा ॥ उदन तान्न ताना तदियन रे ता दान्नी दारा दान्नी दीम् ताना नाना दिर दिर नातक घड़ान घिड़नक तक धुमकिट धित्ता धा धित्ता धा धित्ता धा ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग मालकौश ॥
उठान तीसरी ताल से ॥

(१६६) जी मिलन को तरसन लागो धीर धरु सखि करूं कोटि यतन तोरे काज आज तरसन लागो ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥ फूलन सिजिया साज आज कर शिंगार नई भांतिमें पधार कुंज ढूंढ़लाऊं ब्रजराज ॥ महाराज ललनपिया प्रीति दोउन उपजाऊं अनुरागरसरी आज़ ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी मलार राग हमीर ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(१६७) घिर आये बारि वारे दुरन लागे दिनके सूर्य्य निशि के शशि तारे सारे सारे बारिवारे ॥ अंतरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ श्याम श्वेत रतनारे पियर अति निडर निलज अँधियारे ॥ पिय बिन मोहिं जरावत बैरिनि घटा देख मन मोर घटारे ॥ आये बारिवारे ॥ १ ॥ मद जोबन ज्वानी को जोम इनहिन को दरश सतकारे ॥ बार बार बूंदन भर लावत बरज न मानत ये दइमारे ॥ आये बारिवारे ॥ २ ॥ गरज गरज बिन गरज गुमानी विरह मरज बढ़ारे ॥ तरज करत घन हरज मोर तन पियरी परी हरि दरश विनारे ॥ आये बारिवारे ॥ ३ ॥ गाज परे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बदरन दल बल पर बलि बलि जातरी सांझ सकारे ॥ हठी गँवा-
रन दरद न बिरहिनहूं दुखिया बिन ललनपियारे ॥ आये बारि
वारे ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी मलार राग हमीर ॥

उठान तीसरी की खाली की खाली से ॥

(१६८) बीर बदरवा बारिया बारिबरन लागे बर बिन बिह-
रत गगन ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥ कुटिल बानी कर बैरी
बिरहन के गाजमारे गरजै बरषै लाज मारे जगवीगूढ़ ललनपिया
श्याम सनेही रहित मोर भवन ॥ बदरवा बारिया ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(१६९) मोरे सजन सनेही सांचे सतगुरु कैसी बानरे चहि
तन रहूं मलीन सुघर उनकी नित प्रीति समानरे ॥ अंतरा उठान
खाली से ॥ ना सँयोग परनारिन संगति कुटिलनसों हित आ-
नरे ॥ परनिंदा भावत नहिं उनका व्याहता वधू प्रमानरे ॥ १ ॥
द्रोहरहित यसरहित लजीले संतोषी गुणवानरे ॥ सुंदर सलह
सिखावन सजनी चतुर बड़े बुधिमानरे ॥ २ ॥ दइ कृपा से सकल
पदारथ पट भूषण स्थानरे ॥ हम से कंत प्राप्त सबही कहँ करे
कृष्ण भगवानरे ॥ ३ ॥ कछु इच्छा नहिं मोहिं ललनपिया सुख
सो बैस बितानरे ॥ गुजर गई गुजरान झोपड़ी क्या मैदान म-
कानरे ॥ ४ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी खम्माच ॥

मलार ॥

(१७०) आयो घनराज साज दल अकाश आपै चलु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देखिये बहार गगन कैसी छटा छटापै ॥ अंतरा ॥ भूषित पट सित ललाम संदल सहाबि श्याम बादरन बरात सोत नभगन तट तटापै ॥ १ ॥ बुंदियन बौछार केवड़ा गुलाब जल सुगंधि छिरकत तरकरत हृदय उमँगत अटपटापै ॥ २ ॥ गरजन नगर तोरही सितार जलतरंग पंछी उचरत अनेक बैन रटा रटापै ॥ ३ ॥ दामिनी तड़ाक तुपक आतशबाजी प्रकाश उडुगन फुलझड़िया महिताबी शशि जटापै ॥ ४ ॥ दीपक जुगुनू मशाल कौंधा चौंधा बहोरि धनुष बाण बहु बिचित्र राजत घन घटापै ॥ ५ ॥ नाना पैदर सवार वाहन तीतुर तुरंग हंस गज वृषभ मेघमाला नभ चटापै ॥ ६ ॥ फहरत बहुविधि निशान नभमण्डल नव छत्र मध्य पवनकी पताक षटचारि दिशन ठटापै ॥ ७ ॥ दुलह घनपति दुलार वरषाऋतु दुलहनी पपिहरा नकीब बुलत ललनपिया अलापै ॥ ८ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी मलार ॥

उठान खाली से ॥

(१७१) उमड़ घुमड़ घन बरसे लरज लरज जिय पिय बिन तरसे दहत विरह मनमथ तन झरसे ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ चलत पवन बैरिन पुरवाई दामिनि दमकि डरावत माई निशि अँधियारि कारि दुखदायी शाशी उडुगन प्रकाश नहिं दरसे ॥ १ ॥ चातक मोर मलार झिंगुरवन शुक पियूष कोकिल दादुरवन इन के बैन वियोगी सुनि सुनि निंदरि नींद दृग इन्दीवरसे ॥ २ ॥ ऋतु मतंग बरषा बिनु माली उमँगि जात यौवन हरियाली मोर सँदेश कौन कहे आली नंद ललनपिया श्यामसुँदरसे ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़े की रागिनी मलार॥
उठान खाली की अनसरल से॥

(१७२) वृन्द वारि बरषें बादरियां तृप्त बाग वनभूमि मँझ-रिया भरे तड़ाग सरिता सागरियां॥ अंतरा उठान खाली से॥ उपवन सुमन वाटिकानुकूले गुँजरत चंचरीक सभटूले मृदुवच बहु पक्षी समतूले रट विचित्र राजत तरुडारियां॥ १॥ शोभित विधिवत ऋतु उमंग सों जोम बहार सुभग सबरँगसों बिलसैं सखि सुख निजुपति सँगसों रूप मतंग फली फुलवरियां॥ २॥ मम तन तरु अँग द्रुम नस बेली आली नूतन पल्लव रोम रोम हरियाली छवि पोहपनसी नव बिनु वनमाली को सींचै यौवन क्यारियां॥ ३॥ हूं अभाग वर बिन बरषाऋतु उन सौतन हित चाउ चढ़ो चित दई न करै निरमोहियनसों हित नंद ललनपिया बिन कस सरियां॥ ४॥ इति॥

आस्ताई रागिनी धूरिया मलार झपताल॥
उठान पहिली की खाली से॥

(१७३) समलिया ने मोहिंका जगायो सोवति सों आनँद की निंदरियां उचट गईं तुरतसों॥ अंतरा उठान समसे॥ बैरनरी बँसिया सुनाय रस बस कियो नँद के ललन बिनु दरश न सुख छिन बिरहा दहे न थिर जिया कोउ युगतसों॥ १॥ इति॥

ठुमरी रागिनी धूरिया मलार॥
उठान खाली से॥

(१७४) सघन सादा रँग नया रँग राचें छिन बूँदरियन पल बौछारन घरि घोरन धारन पल जांचे॥ अंतरा उठान खाली से॥ दैयारी दैया दामिनियां बैरनि दमकि दमकि तन आँचे॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोयल कूकसुनावत पिया बिन हूक उठत हिय लगत तमाचे ॥ १॥
पपिहा पल पल पिया पुकारे विरहा तन मन जारे नलाचे ॥
कामने काम तमाम कियो सखि एक बिथा हो तौ कहि बांचे ॥ २॥
यौवन उमँगि उमँगि मुरझाई हमरे श्याम सौतन पर याचे ॥
अवकासहीकी बात करम गति सगे सनेही ह्वै गये काचे ॥ ३ ॥
अब कि बार लखि परत कठिन गृह हो हरि होउ सहाय
अजांचे ॥ ललनपिया आरत जनको अब बेगि हरहु दुख श्री
प्रभु सांचे ॥ ४ ॥ इति ॥

दादरा राग सारंग ॥

(१७५) गमरे कैसे धरों पग भिर्या ग्विर्यां मोरी दरद करे
करिहैयां ॥ अंतरा ॥ पियकी नगरिया दूर बखरिया नहिं वाहन
यहिंठैयां ॥ १ ॥ शीश घुमकत दृग दुखत देह तन कंपत गात
गुसैयां ॥ २ ॥ हे गुपाल दुख हरहु मिलहु अब ललनपिया पँरु
पैयां ॥ ३ ॥ इति ॥

चतुरंग रागिनी चिन ॥

उठान समकी खाली से ॥

(१७६) चतुरँग चित चतुरता धारि गावे गुणीजन सन-
मुख अलापे तापे तान सुध बान्नी स्वर अक्षर व्यंजन शब्द अरथ
युगत सों ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ दीर्घ लघु सुमूर्च्छनानि
मात्रन विधि श्रुतियनु गति अरोही अमरोही उलटि पलटि
स्वर सप्तकन दिखावे सा सा सा गाम्म गानी धापा मा गारे सा
गगरे सान्नी धा द्रीम् तनाना द्रि द्रिनाद्रि दानी तोम् तग्घृग्ग
घिड़नक तक धुमकृत धरकिट तक धिरकिट तक धा बरण बरण
रँगलावे ॥ १ ॥ अलबेलो अलबेलो बिधान कर बखान सबिध

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ज्ञान गुरुन चरन परश प्रीति दृढ़ावै ललनपिया तब यशु पावे ज्ञान आवे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी गौंड ॥

उठान समकी खाली से ॥

(१७७) न भेजो मैया लगन हेत शिशुपाल बरूं मैं मन बच क्रम सों गोपाल ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ हाहा करत कर जोर बिनैवत जानि उर हमरो शाल ॥ १ ॥ तुहिंका प्रिय लागत दमु- सुत मुहिं लागत काल कराल ॥ २ ॥ बिसर गई मैया मति तोरी चलत अटपटी चाल ॥ ३ ॥ मम पति श्याम सनेही सांचे ललन पिया प्रतिपाल ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी गौड़ा ॥

(१७८) न मैं बाँधूं मैया असुर काज कँगना लगो कोउ तुम मोरे सँगना ॥ अंतरा ॥ शीश न गुहूं भाल बेंदी जानि दृग आँजूं न अँजना ॥ १ ॥ मेहँदी पाणि न उबटन अँगना जावक हूं पगना ॥ २ ॥ हा हा करत हटु दुरसम मुखसन करिये मुहिं तँगना ॥ ३ ॥ भलो बुरो सब कहो ललन किनु पति यदुपति समना ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खालीकी खालीकी खाली से ॥

(१७९) अरी मैं तो मानगई तोरी सिखवन कैसी कीन्हीं तैंने छल बतियानकी प्रीति मोसनुरी ॥ अंतरा समकी अनसरल से ॥ प्रभूसों मिलन सोउ बिछुरन कियो तैंने बिरहनि बिरहाको दुखदियो दैयादैयारे दैया कैसे मिलब अब श्याम सनेही ललन पिया प्रियसनरी ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रागिनी भैरवी ॥

उठान तीसरी से ॥

(१८०) ऊधो मधुवनवा छाये जो श्याम वाही कुबरी सौतिनियां के धाम ॥ अंतरा उठान तीसरीकी खाली से ॥ कबतक तरसावेगो हमका उन बिन जिय न अराम ॥ मधुवन छाये श्याम ॥ १ ॥ क्षुधा पियास विरह निद्रातन बिरहिन कीन्ह बिराम ॥ मधुवन छाये श्याम ॥ २ ॥ अब न मिलब हरि दरश ललनपिया तौ जीवन निसकाम ॥ मधुवन छाये जो श्याम ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खालीकी खालीकी खाली से ॥

(१८१) लगन मोरी लागी हांजी हो महराज दरशदे मुहिं का विलँब न कीजिये ॥ अंतरा उठान समसे ॥ श्रीव्रजराज शाह श्यामलिया मुरलीवारे कमरीवारे इतनि अराजि मोरी सुनि लीजिये ॥ १ ॥ ललनपिया तुम बिनु व्याकुल बहु अब तो मेहरकी नजर कर जन अपना समुझ टुक रीझिये ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खालीकी खालीकी खाली से ॥

(१८२) दरश मोहिं दीजिये कीजिये कृपा कृपाकर कृपानिधि जन अपनो समझके रीझियेजी रीझिये ॥ अंतरा उठान तीसरीकी खाली से ॥ कितक बातकी करामात तुमलग सब लायक सब योग ललनपिय चरण शरण प्रभु लीजिये सुयशु दीजिये १ ॥

अथ ठुमरी घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥

उठान पहिली से ॥

(१८३) राधा रानी रुकमिनजी कृष्ण भगवान् प्राणपति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जनकी सुरति जनि बिसराओ ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ हूं अधीन तुम बल जग जीवत जीवन प्राण अधाररे मेरो तुम पिया मोरे तुम प्रिया पितु मात भ्रात सहायक तुमबिन कौन मेरो नाथ ललनपिया सँगाती जान तुहिहित उपजाओ ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान तीसरी तालसे ॥

(१८४) प्रभु मोरा उरका किवारा खोलो ॥ अंतरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ नेम धरम नहिं जान्यौं मैं अबलौं असत कर्म्म भ्रमि डोलो ॥ १ ॥ सब बिधि हीन मोह ममता वश कामी क्रोधि अतोलो ॥ २ ॥ ललनपिया दुख बहुत सहो अब सुखनिधि तोहिं टटोलो ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी भैरवी ॥

(१८५) मोहिं इतना ना गुमान रहो पिय की तरफ निधरक जिय हो इतना ना गुमान रहो ॥ अंतरा ॥ नैहर से ला पिहर बसाई सवत सों नेह गहो ॥ इतना ना गुमान रहो ॥ १ ॥ अब केहिकी हो रहु मैं ललनपिया तुम बिन प्राण दहो ॥ इतना ना गुमान रहो ॥ २ ॥

ठुमरी जोड़े की ॥

(१८६) प्रीति की धूमपरी जगत मम ॥ अंतरा ॥ नोखोइ नेह न मैं कियो हरिसों सवति नयन अनीधरी ॥ जगत मम ॥ १ ॥ जरमरी निरखि मोर हित बैरिन लखु अनरीति अरी ॥ जगत मम ॥ २ ॥ बिन गुन मिलत न मीत ललनपिया राधा कृष्ण हरी ॥ जगत मम ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी भैरवी ॥

(१८७) खोले केश खड़ी अटापै॥ अंतरा॥ मानत ना राधे सखि मोरी तू भई ढीठ बड़ी ॥ अटापै॥ १ ॥ कोउकी दीठ न हो सुकुमारिन मुहिं डर घड़ीघड़ी ॥ अटापै ॥ २ ॥ ललनपिया जिय प्राणपियारी लाड़िलि लाड़लड़ी ॥ अटापै ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ताल त्योरा ॥

(१८८) महराजरे बदनाम भइ मैं ॥ अंतरा उठान समसे ॥ तोर कारनवा श्याम सनेही लहि सहि लाज गइरे नंद ललन मिल यह फल पायो है कछु बाम दई ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की ॥

(१८९) नेहा निपट बेपीर ये मोरी गुइयां॥ अंतरा ॥ प्रथम लगावत लगन उमंग सो आतुर धरत न धीर ॥ ये मोरी गुइयां ॥ १ ॥ चार दिना को कर उजियारो पुनि अंधियार गंभीर ॥ ये मोरी गुइयां ॥ २ ॥ हित निरमोही के फन्द परै जनि नंद ललन सों बीर ॥ ये मोरी गुइयां ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी काफी खम्माच ॥

उठान समसे ॥

(१९०) तुम्हारी सैयां मुख देखे की प्रीत ॥ अंतरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ नैनन ओट भये जबहीं तुम भूल जात सब रीत ॥ १ ॥ कठिन कठोर न देखत कोऊ तुम सो मतलबी मीत ॥ २ ॥ कोउ को साही बधाई कोऊ को कोउ के गावत गीत ॥ ३ ॥ ललनपिया इन बतियन सों गई तोरी मीत प्रतीत ॥ ४ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी खम्माच॥

उठान पहिली तालसे॥

(१६१) हमरो सँदिशवा सजनी सैयां सों जाय कहियो निंदिया ना आवे उन बिन रजनी सारी तरफ जात उमगो जोबनवा धूम धारे मानत नाहीं॥ अंतरा उठान समसे॥ बेग बुलाय लैयो साँवरे को पग परियो कर जुरियो चिबुक गहि कहियो इतनी बिनती मोरी ललनपिया सो तुम बिन व्याकुल प्राण कबतक तरसाये रहियो मधुबन कुबजा के गृह छाये रहियो॥ १॥ इति॥

ठुमरी रागिनी सरपरदा॥

उठान खालीसे॥

(१६२) काहे को नैना पिया मोसों लगाये॥ दिन रतियां रहत जियरा मोरा तरसाये॥ अंतरा उठान पहिली से॥ नन्द ललन तोहिं लाज न आवत सौतिनियां सों जाके नेहा निभाये॥ १॥ घरी पल छिन मुहिं कल न परतहै बिरहा दइमारो जियरा दुखाये॥ २॥ इति॥

ठुमरी राग देश मलार ताल त्योरा॥

उठान पहिली से॥

(१६३) छिन छिन बदरवा घुमरात जलयुत मदुभरे मँडरात॥ अंतरा उठान समसे॥ रैन अँधेरी घेरी घोरन गरज घन घहरात॥ बैरन बिजुली विपुल विमलन बल विलोक डरात॥१॥ चलत पुरवा प्रबल ब्यारी हेरत होश हिरात॥ विकट अति अधरात बरषत वारि बहु बगरात॥ २॥ अगमता बरसातकी बर साथ बिन रमरात॥ ललनपिया जिया मदन मोहन दरश बिन घबरात॥ ३॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी राग देश ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(१६४) बदरिया वारि भरे ठाढ़ी कटरिया बूंदन दी मारी ॥ अंतरा उठान समकी खालीसे ॥ प्रबल बिरहदी दुखियारी मदन शर घायल करडारी ॥ १ ॥ पिया परदेश अँदेशाहै सँदेशा बरषा का जारी ॥ २ ॥ न बहुरे श्याम निरमोही ललनपिया लिया उन बिन आरी ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी मलार राग बिहाग ॥

उठान तीसरी की खाली की खाली से ॥

(१६५) बरषा के बरसो बदरा मीत ॥ अंतरा उठान तीसरी से ॥ लैलै प्रबल मतंग यूथ घन श्वेत श्यामरे पीत ॥ १ ॥ सुनि धुनि गरज घुमड़ बरसनकी पिया बढ़ावै प्रीत ॥ २ ॥ पपिहा प्राणपती उचरन करु क्यों न कराउ प्रतीत ॥ ३ ॥ बहु दिन सौत बिरह तरसायो निंदिया मदन समीत ॥ ४ ॥ मैं बिरहिन दुखिया बिन पियकी बहुत सही अनरीत ॥ ५ ॥ अब कर ललनपिया कोउ रँग ढँग श्याम मिलन की रीत ॥ ६ ॥ इति ॥

ठुमरी मलार राग बिहाग ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(१६६) बदर अब बरषो अमीनिधि नीर ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ दृग पिक विकल प्यास पिय दरशन जिमु बिनु स्वाति अधीर ॥ १ ॥ है मन मीन हीन बिनु हित निधि शिथिल न सुधिहु शरीर ॥ २ ॥ भये सकल रिपु मोर घटा घन बक पिक कोकिल कीर ॥ ३ ॥ नतु बलाक बरषै बूंदन झरि न यह उचरैं बेपीर ॥ ४ ॥ लखि सखि भाग सोहाग कि गति मम उड़गई प्रमुद समीर ॥ ५ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ललनपिया आधीन दीनजन बेगि हरो हरि पीर ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ ध्रुपद रागिनी धनाश्री ॥

चारताल उठान समसे ॥

(१९७) नंदजूको लाल वही गोपनको ग्वाल वही गौवन घिरवाल वही कंसकाल वही एरी ॥ अंतरा उठान समसे ॥ योगिनको ख्याल वही नीतिकी सुचाल वही व्रज सुहाग बाल वही देवभ्वाल वही एरी ॥ १ ॥ रस श्रृंगार माल वही दीनन प्रतिपाल वही दुष्टन जंजाल वही आदिज्वाल वही एरी ॥ २ ॥ विध वेदबाल वही विष्णु चन्द्रभाल वही वो ललन जनपाल जक्क रखवाल वही एरी ॥ ३ ॥ इति ॥ ठुमरी राग द्विवसी पूरिया ॥

उठान पहिली तालसे ॥

(१९८) अँग परशत मगमें जात निपट निलज निडर कान्ह आलीरी वाके पेख ढंग तन मन सुधि बिसरि जात कही न जात अटपटी अटपटी सी चाल ॥ अंतरा उठान समसे ॥ चलरी चलरी सखी लीजै बुलाइ संग सखियन समाज आज काज कीजै जाविधिसो पकर नंदललन लाय कसर काढ़ छुरिये लाल ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खालीकी खाली से ॥

(१९९) झूठी झूठी बतियों में हमरा माधो जीराजरे तुमसे प्रीति दई न करे क्यहुकी उपजै महराजरे ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ सुखहित नेह करत सब कोउ कै कछु लाभहि काजरे ॥ तुमसे नैन लगाय चैन बिसरायो श्रीव्रजराजरे ॥ १ ॥ धूमभई जगमें हितकी करि छोड़दई बिनु काजरे ॥ अब प्रकटैगी यह चरचा चरचेंगे लोग समाजरे ॥ २ ॥ लै मन मुख न दिखावत मोहन यह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ढँग तुम्हैं न छाजरे॥ तन मरिबो भल जान कान्ह मन मरिबो भल न अकाजरे॥ ३॥ लाज न आवत है तुमको निरमोही निपट निलाजरे॥ ललन न तुम कछु जाहि सिखावै तुम रसिकन सरताजरे॥ ४॥ इति॥

अथ ध्रुपद राग केदारा॥

उठान समसे॥

(२००) उन्नती उमंग उर आनँद प्रकाश नित चाउ चौगुनों हिये हिये नवीन सरसतु है॥ अन्तरा उठान समसे॥ प्रेम प्रीति पागो अनुरागो हरहेत हितू भक्तमन रंजनीय घट घट परसतु है॥ दृगन में दया दीर्घ दाता उदार चित्त दीनन पै कंचन प्रवाहन बरसतु है॥ मोर पक्षवारो मोर पक्षवारो मोरपक्ष ललन सुरूप मोरे हिया दरसतु है॥ १॥ इति॥

ठुमरी राग केदारा॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(२०१) सँवरिया मुहिंका वसंत त्रासबरनलागो घरिपल छिन कल न परत तुमबिन विकल रहतरे जियरा॥ अंतरा उठान पहिली से॥ निगोड़ी निंदरिया निन्दरी मनोज बैरी बान बिरहा विपुल दहतप्राननँदकेललनमेहरबानमिलुसुजानलेखबरिया॥१॥ इति॥

ठुमरी रागिनी पीलू॥

उठान खालीकी खालीकी खाली से॥

(२०२) नगरिया तोरी केतू दूर॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे॥ चलत चलत मोरे पैर पिराने हुइगइ चकनाचूर॥ १॥ शीश घुमत करिहैंयां दुखनलागी देह कँपन लागी भूर॥ २॥ नंदललनपिय कबधौं मिलिहौ हो जिय सुख भरपूर॥ ३॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धुपद राग एमन ॥

प्रबन्ध चारिताल उठान चौथी तालकी खाली से ॥

(२०३) रसिकपन तेरो मैं सबविधि हेरो सो तेरो हित केरो चेरोभयो मनमेरो ॥ अंतरा शूलताल उठान समसे ॥ निधि मुदरस केरो सनेह पाति घनेरो प्रेम प्रेरो निरखि मोहियो जियरा मेरो रंग रूपको लुभेरो ॥ १ ॥ (अभोग) झपताल उठान समसे ॥ सुजानता बसेरो हाव भाव बरतेरो ढँग सुढँग बहुतेरो लखि लोभोरी जिय जचेरो ॥ २ ॥ (भोग) त्रैताल उठान समसे ॥ तैं कर चित चेरो हाय मोसन मन फेरो तब तो ललनको मँझधार बेड़ो तो बिन करै को निबेरो ॥ ३ ॥ इति ॥

आस्ताई राग एमन कल्यान ॥

त्रैताल उठान खालीकी खाली से ॥

(२०४) न्यारी गती सबसों करनी की करनिय कमनीय कलान भरी ॥ अंतरा उठान तीसरीकी खाली से ॥ करनी नृप इन्द्र कुबेरकरै करनी दिगपाल दिवानगरी ॥ १ ॥ करनी अज ईश की देखि ललन करनी वश श्रीभगवान हरी ॥ २ ॥ करनी जो करै सो कोऊ न करै करनीही प्रधान प्रमाण खरी ॥ ३ ॥ इति ॥

एक चतुर नार कर कर शृँगार । इस तर्जपर ॥

ठुमरी रागिनी मलार जैजैवन्ती खंबावती ॥

उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(२०५) घन गरज सुनत जिय लरज जावे उर धरकजावै तन थरथरावे ॥ अंतरा उठान पहिली की खाली से ॥ झूम झूम घिर आवत घटा कारी कारी अँधियारी निशि दूजे चपलारी चमकावै डरावै नींद न आवे मोहिं सगरी रैन जब ललन श्याम सनेही

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

की सुधिआवे जिया तरफ तरफ निकसोही जावे ॥ १ ॥ इति ॥

मलार ॥

ठुमरी राग दरबारी कान्हड़ा ॥

उठान तीसरी की अनसरलसे ॥

(२०६) तनक थमजा थमजा थमजारे बदरवा गरज गरज न शोर करु पियासों खुलवावन देरे किंवरवा ॥ अंतरा उठान खाली की अनसरल से ॥ चपला द्युति मत प्रकाश कोऊ निरखलेगो घरवारो लुगवा मुहिं ललनपियरवासों मिलनदे इतनि मिन्ति मोरी ले मान छिनक कहिं अनत तू रमजा रमजा रमजारे निठुरवा ॥ १ ॥ इति ॥ ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(२०७) न कहो न सुनो नहिं बोलो बताओ बिन लागहि रूठगये पिय काहेको ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ औरनकी रिस मोपै निवारो वृथा कलेश करौ बिन चाहेको ॥ न कहो न सुनो० ॥ १ ॥ अंतरा उठान तीसरी की खाली से ॥ नित रारि धमारपै गाजपरै यह बानि तिहारी मुरारी निबाहेको ॥ न कहो न सुनो० ॥ २ ॥ अनुचित यह नँदललन तुहिका जिय दहत मोर हक नाहेको ॥ न कहो न सुनो० ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी राग सोहाग ॥

उठान समसे ठेका होरीका ॥

(२०८) सबहीको समझत नारि प्रपंची तू अपने बलमकी नाँईं ॥ अंतरा उठान समकी खाली से ॥ बाटपैरगोरी तोरी कुटिलतापै गोरी जरजाय ऐसी मितराई मोरे बलमसोंरी नैनलगावत ललनै जानत मुहिंकाईं ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ख्याल रागिनी भूपाली ताल झूमड़ा ॥
उठान तीसरी की अनसरलसे ॥

(२०६) मान तजियोरी एरी वृषभानुकिशोरी ॥ अंतरा उठान तीसरी से ॥ सजन मनावत तू नहिं मानत तव जिय कठिन बड़ोरी ॥ १ ॥ हठ कीन्हे कछु हाथ न ऐहै ये भल बानि न तोरी ॥ २ ॥ ललन लाड़िली तुहिं न उचित रिस चलु हँस मिल पियसोंरी ॥ ३ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी खंबावती ॥

(२१०) मोरे तो जिया में ऐसी आवतु है खाय मरूं विष सैंयां विना नाहीं परत कल ॥ अंतरा ॥ रात सजन सपने में दरश दियो आन सतायो बिरहा बिथानल कासे कहूं सजनी वृथा मैं अपने ललनसोंरी चाकहत जियरा मोरा विकल ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी गौड़ खम्माच ॥
उठान समकी खाली की खाली से ॥

(२११) अपनी कहत ना सुनत काहू औरकी रे ॥ देखी नटखट नोखी बानि नँदकिशोरकी रे ॥ अंतरा उठान पहिली की अनसरलसे ॥ दधि की मटुकिया डार तोर दियो मोतियनको हार लखी लँगराई ललन चितचोरकी रे ॥ १ ॥ इति ॥

मलार ॥

ठुमरी राग गौड़ मलार ॥
उठान खाली से ॥

(२१२) बोलन लागे पपीहा पिया पियाको शब्द एरी मेरी आली अब तो कल न परत जिया को पिय बिन धरकत हिय ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ कोकिला की कूक सुनत हूक उठत हिय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिच मोरे री आली बिरहानलकी उषणता सों दुखित प्राण उन बिन घरिपल छिन कठिन भयो जीवन ललन श्याम निर्मोही छली जिय ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी तान त्योरा ॥

उठान पहिली से ॥

(२१३) जहँ तहँ कदर हित गुनि जात कदर न हाय नितही नशात ॥ अंतरा उठान समसे ॥ मानहित सुख त्याग गुणिजन सिखत गुण बहुभांति ॥ अब कदर नहिं कुदर जगभये धनी सूमकी जात ॥ १ ॥ अगले धनिहे गुणिन सुनि धनदेइ जोरें हात ॥ अबके धनी सराहना बहु देइ छूछी दात ॥ २ ॥ गुणवृद्धिहो कस नृपन त्यागे मान दानसो नात ॥ गुण ना हि-रानो ललन जग गुणगहक हीन हिरात ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग भैरव ॥

चारि ताल उठान प्रथमा की खाली से ॥

(२१४) अष्टसिद्धि दाताहौ नवनिद्धि के निधि विद्यावर विद्यापती गणपती पार्व्वती शिवसुत शरेष्ठ सुमिरूरे ॥ अंतरा उठान समसे ॥ विघ्ननाशन बिपतादलन समरथही सकल काजन करन आनँद घनेरे शुभमतीवरनवरेरे ॥ १ ॥ (अभोग) शुण्ड मुण्ड कुंजरसुवदन सदनरूप एकरदन लम्बोदर चारभुजा मनोहर अति रे ॥ २ ॥ (भोग) भक्तवत्सल जनसहायक सुखदायक सदैव ललन शरन तासु गहुरे मन आनन्द लहुरे ॥ ३ ॥ इति ॥

आस्ताई राग भैरव ॥

त्रैताल उठान खालीकी खाली की खाली से ॥

(२१५) विमलामुखी विमलदे बुधिवानी मोहिं ध्यावत कमल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चरण तोरे ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥ कमलासनि कमलनैनी अमृतबैनी जगतजननी ललनपै सहायहो बिनवतहौं तोहिं कर जोरे ॥ १ ॥ इति ॥

ख्याल राग भैरव त्रैताल ॥

उठान पहिली की अनसरल से ॥

(२१६) लालन देखु न मानत तेरो अचकरी करत मग चलत बराजोरी जोराजोरी यशुमतिरी ॥ अंतरा खालीकी अनसरलखालीसे ॥ दधिकी मटुकिया छीनलई मोहन यह अनुचित तैं पेख ॥ १ ॥ (अभोग) इक गुणहोय तो तोहिं गिनाऊँ कीन्ह कुचाल अलेख ॥ २ ॥ (भोग) अंकभरी वही हीरमाल मोरी ललन के ढँगनुपरेख ॥ ३ ॥ इति ॥

ख्याल राग भैरव ॥

उठान खालीकी तीसरी से ॥

(२१७) अचरा ना गहो ना गहो मोहन ॥ अंतरा खाली की खाली से ॥ सास ननँद मोरे संग सखी बहु कहु मोहिं तोहिं लेयँ जोहन ॥ १ ॥ (अभोग) दुरकर बात करौ अभिरौ मति यह कुचाल नहिं सोहन ॥ आन मिलौंगी आनि घड़ी तुहिं ललन प्रीतिकर धोहन ॥ २ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी टोड़ी ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(२१८) गगरिया दैदे हरि मोरी ॥ अंतरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ मोरी गगरिया सुबरनकी है जानती हैं सब गोरी ॥ १ ॥ ललन जो तुम कछु रार करोगे लीहौं वसन मैं छोरी ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ख्याल रागिनी आसावरी ॥
आस्ताई दो आवृत्ति ॥
उठान खालीकी खाली से॥

(२१९) चुनरिया मोरी दैदेरे ढीठ ढोटा सांवरे ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ मोरी चुनरिया लाख एकाकी रतनजटित सोरी ॥ इतक न वसुधा तोर भवनहूं उलट जो मोहिं दोरी ॥ दैदे रे नँदके ढीठ ढोटा सांवरे ॥ १ ॥ ललन तोहिं जतराय कहतहूं तैं न मान जोरी ॥ बसन छोड़िकर नग्न पठावहुँ करौं गति तोरी ॥ दैदेरे नँदके ढीठ ढोटारे ॥ २ ॥ इति ॥

कैसे कैसे आऊं तोरे पास । इस धुनिपर ॥
ठुमरी रागिनी काफी ॥
उठान खालीकी खाली से ॥
इस ठुमरी में तालांक भी मुद्रित हैं ॥

१ २ ३
(२२०) मानैना मानैना मानैना करत बराजोरी लँगरैयां
४ १ २ ३ ४
मोसे मुहनवा ढीठरे बाट चलत कर दीन्हों कठिन पनघट में कैसे
१ २ ३ ४
जाऊं नीर भरन हेत सकुच नेति मनुवा लेत भय समेत ये सखी ॥
१ २ ३
अंतरा उठान खालीकी खालीसे ॥ बीर मोर मत भइ हरान अब कैसे
४ १ २ ३
बसौंगी व्रज बैर बांधो नँद ललन बड़ बेचलन छलन कलन बासूंगी
४ १ २ ३ ४
बरसाने जाय जिय दुराय पति बचाय एरी मेरी तेरी प्रीति होत
१ २ ३ ४
बीछुरन मीत आनैना ध्यानैना आनैना ध्यानैना सखी ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी राग हुसेसेनी कान्हरा ॥

तालांक मुद्रित उठान खालीसे ॥

१ २ ३ ४ १ २
(२२१) मोहत मन मृदुलबान्नी हँसन मधुरी माधवी मृदुवर
२ ४ १ २ ३
मृदुवर घटा छटा छबि छाइ मन भाईं॥ अंतरा उठान पहिली की
१ २ ३ ४ १ २ ३
अनसरलसे॥ कूक कोकिल मयूर मानो बरसत सुमन झर मुखते
४ १ २ ३ ४ १ २ ३
सुधा बिन्दुधौं प्रवाह नँद ललन ब्रज धन गुसाईं धनि नि-
काईं॥ १ ॥ इति॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खालीकी अनसरलसे ॥

(२२२) नागरियारे प्रीति बुरीरे मत परिये वाके फेररी॥ अंतरा उठान खाली से॥ दुख सुख सों गुजरे जीवन जस ताविधि करिये तेररी॥ १॥ मैं परची तैं परत्र देख हित कह फल हेररी॥ २॥ श्रवण गहो जो चहु सुख सखि अब रसिकन रंग अँधेररी॥ ३॥ नंदललनसों जच सत सिखहों हरि हितु कोटिनु केररी॥ ४॥ इति॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खाली से ॥

(२२३) निन्दरी मोहिं निंदरियाने पिय बिन घरि पल छिन रहत नहिं नेहिन॥ अंतरा समकी खालीकी खाली से॥ बैर परो विरह बैरी मनमथ कासे कहूं दुख अपनोरि आली ललन पियारे प्यारे मोरे छाये विदिशवा मोह सवतिया सन॥ १॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी सोहनी ॥

उठान खाली की खाली की खाली से ॥

(२२४) मधुकर मँडरान लागे सुमन बरन भइ अब तो आलि मकरन्द भालसी बासि छवि प्रकशो रस ॥ अंतरा उठान समकी खाली से ॥ नवल धवल कुच कमल अमल गति विमल प्रबल रँग राचेरी नँदललन के भाग जाग अनुरागयुत विभाग हरष ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी गारा ॥

उठान तीसरी की खाली की खाली से ॥

(२२५) वोतो नाहीं माने ढीठ कन्हैया कहिना मोर सखि बराजोरी करके अचरा पकर गरवा लई बलैयां नटखट ॥ अंतरा उठान तीसरी की अनसरल से ॥ अपनेरी अपने कान करिबो नइ नवेली नारि पनघट चल पनघट चल पनघटे वो यमुन जैबो जुगति अविलोक सखि नँदको ललन लव रतपाति लाज छोर त्रपटत चट ॥ १ ॥ इति ॥

द्वार कब ऐयोरे बांके यार । इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी काफी खम्माच ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(२२६) न्यार मत ह्वैयोरे मीत हमार यहि बिनति तोसन मोरी लाखों बार ॥ मत ह्वैयो मोसे मीत हमार ॥ अंतरा खाली की अनसरल से ॥ हाहा करत कर जोरत पग परत नँदललन तोरे शरन आये शरन जन मन जीवन धन मुरारि ॥ मत ह्वैयो मोसे मीत हमार ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दादरा रागिनी परज ॥

(२२७) तपन बुझाय जा प्यारे तपन बुझाय जा बेदरदा जियरा तरफै मोरारे ॥ अंतरा ॥ बिरहा माती न निंदिया आवत सिजिया सूनी सुहावै ना मुहिं अँधेरी यामिनियां नागिनि डसे मदन बैरी दहाय जा तन मदन बैरी दहाय जा ॥ बेदरदा जियरा तरफै मोरा रे ॥ १ ॥ तो बिन श्रीनँदललन लाड़िले धीर न लावत है मन मोर दासकी आसपुरौ अब बेग दया कर दरश दिखायजा॥ मुहिं दरश दिखाय जा ॥ बेदरदा जियरा तरफै मोरारे ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा जोड़े का रागिनी परज ॥

(२२८) मसकरी सुहायना मुहिंका मसकरी सुहायना चलि- जारे अनारी अभिर डगरना ॥ अंतरा ॥ सँगकी सखि सयानी सबी सुनतै नहिं जानत बात न थोर लगैयां बुझैयां पिया सों करै पति जायगी मोरी बचायना ॥ चलिजारे अनारी अभिर डगरना॥ १ ॥ तैं अपनो रँग मातोहि डोलत देखत ऊंच न नीच बहोर गयो ललनैपन तोर नहीं निबलोपनरहै सकुचायना ॥ चलि जारे अभिर डगरना ॥ २ ॥ इति ॥

आवो आवो सेजरिया हमारी। इस धुनिपर ॥

दादरा रागिनी मांझ विलावति ॥

(२२६) तुम सों लागी सुरतिया हमारी ॥ अंतरा ॥ दीन- दयाल दयानिधि स्वामी मिलि आन बेगि बनवारी ॥ १ ॥ जनम भयो तुव आश निहारत कबधौं पुरिहौ लगन मुरारी ॥ २ ॥ नंद- ललन व्रजजन धन जीवन करिये कृपाल कृपा प्रणधारी ॥३॥ इति॥

दादरा जोड़ेका ॥

(२३०) मनुवा मोर जन नागरनटका ॥ अंतरा ॥ वुहि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सूरत सों नेह सनातन मनमुहनी मूरत मन अँटका ॥ १ ॥ वुहि छवि वुहि नव कब मदमातो श्यामसुंदर जीवन मम घटका ॥ २ ॥ जे नँदललन चरण शरणागत तिन्हैं न यमु त्रासनु कछु खटका ३ इ० ॥

ठुमरी रागिनी काफी खम्माच की मांझ ॥

उठान तीसरीकी खालीकी खालीसे ॥

(२३१) पिया मैं तोरे मैं तोरे रे वारीजैहौं बिनती करत पैयां परत बलि बलि जैहौं । मैं तोरे मैं तोरे रे वारीजैहौं ॥ अंतरा ॥ उठान तीसरी की खालीकी खालीसे ॥ मान लीन कहुँ मोर कहनुवा गयउ न सौतन के जो भवनवा नन्दललन तौ अपने भाग सरैहौं ॥ १ ॥ इति ॥

तिहारी सैयां नैनन समारही । इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी खंबावति ॥

उठान खालीसे ॥

(२३२) तिहारी प्यारी नैनन सैनन का कही ॥ जुलमवा जदुवा टुनवा मुहनिया वशीकरनवा ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥ बांकी बांकी तिरछी तिरछी विषधर बरछी चितौन चंचल चपल चुर चलांक हेरनिपाटही ॥ १ ॥ कमल दलन के माधि अरुणता हजो में मद पूतरी सुश्यामता महामनोज छबि लही ॥ २ ॥ सुधा निवास रसनुसिंधु रसिकनु मनमोहन दृग मृग खंजन मधुप मीन दामिनि सकरही ॥ ३ ॥ चतुर फलप्रदा अनन्त नोखी चोखी शोभा प्रधान नन्दललन जिवन प्राणधार हितगही ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी छाया ॥

उठान खालीसे ॥

(२३३) आने ना दूंगी पिया मैं आज रैन रहे काके धाम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

में ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ बिसरत नाहीं तोरी बतियां कर घतियां सौतन के मँदिरवा जात पिय तरफ तरफ बीतीं रतियां मोरी प्रात भयो जब आये श्याम मैं आने ना दूंगी ॥ १ ॥ ललन श्याम अब क्यों सकुचाओ ना मनमें पिय नेक लजाओ आओ उरलाओ सुखपाओ भइ सो भइ अब करहु अराम मैं जाने ना दूंगी ॥२॥ इति ॥

आज रँगीले रसिया देखे मैंने । इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी गारा खंबावति ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(२३४) आज समलियाने लाज लीन्हीं वृन्दावन कुंजन डगर चलत मुहिंका गारी दीन्हीं ॥ समलिया ने लाज लीन्हीं ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ जल भरन जात यमुना तट बीच मिलो मुहिं श्रीनागरनट लपट झपट कर मटुकी पटक चट नँदललन मोसे रारकीन्हीं ॥ समलियाने लाज लीन्हीं ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की ॥

(२३५) नाथ सुनो बिनती दास केरी मैं त्राहि त्राहि कर जोर कहतहौं दीनबन्धु दीनानाथ शरणागत तेरी ॥ सुनो बिनती दासकेरी ॥ अंतरा ॥ अंधसभा बिच दुष्ट दुशासन पति सन्मुख मेरो चीर गहोरी हे यदुनाथ बेगि सुधि लीजै कहत द्रौपदी लाज जात मेरी ॥ सुनो बिनती दास केरी ॥ १ ॥ दीन वचन सुनि श्रीयदुराई चीररूप ह्वै प्रकटे आई दश सहस्र गज भुजबल थाक्यो गिरि गँभीर अम्बरलागि ढेरी ॥ सुनो बिनती दास केरी ॥ २ ॥ धनि धनि श्रीनँदललन सुखदजन कृपासिंधु धारन गोबर्द्धन जयति जगतपति वत्सलभक्तन कर सनाथ दानी दीनचेरी ॥ सुनो बिनती दास केरी ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आस्ताई रागिनी आसावरी ॥

तालरूपक उठान खालीकी खालीसे ॥

(२३६) बखरियाको नहिं मोल तिहारी एते दामनकी चूनर हमारी॥ अंतरा समकी खाली से ॥ सीधेहीं देउ मत रारबढ़ावो इन बातन कछु नारी ॥ बिगर जायगी मोहन माधौ हम सखि बहुत यहांरी ॥ १ ॥ ललन विचार लेउ जिय अपने बढ़्यो न रार वृथारी ॥ वह न मुफत को माल है मोहन जो हम देइँ गँ-वारी ॥ २ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी जौनपुरी टोड़ी ॥

ताल भूमड़ा उठान खालीसे ॥

(२३७) हम का काह परी जो हम पगपरसैं बिनती करैं तिहारी ॥ अंतरा खाली से ॥ जाति न पांति न रीति प्रीति कछु करबे नात न री अरी ॥ उनकी तुम वो तुम्हरी जानै मोरी बला स-नरी ॥ जो हम पग परसैं नकी बिनती करैं तिहारी ॥ १ ॥ हौं जो बरज थकी प्रथमहिं तुहि तब ना चेत करी अरी ॥ लालि बन गई ललन के कारन अब का सोचतरी ॥ जो हम पग परसैं बिनती करैं तिहारी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खाली की खाली से ॥

(२३८) बलम बिन रूप नागरिया उजार ॥ अंतरा उठान तीसरी की खालीसे ॥ एकहु गृह न बसत गृहिजन कोउ सून किये घरबार ॥ लेपन लेश इतर अलकन पर परत न कंघी बार ॥ १ ॥ गुँधत न जूरन छुवत धाग तन माँग न सिंदुर सुधार ॥ भाल न मृग-मद टीक ठीकगति दियो हगअंजन टार ॥ २ ॥ नाक न नथ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नकबेसर कोऊ मुख न पान अधिकार ॥ दशनन त्रिय मंजन अधरन शुचि चिबुक न बिंदु बिहार ॥ ३ ॥ श्रवन तजे अँग अँग सब भूषन कंचुकि कुचन बिसार ॥ हा बिन श्याम ललनपिय मोरी बात न पूँछत शिंगार ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी भैरवी ॥

(२३६) निवत गृहि जहँ जहँ गयेरी हमार ॥ अंतरा ॥ कजर सिंदुर के सनमुख मंजनि बुलवा बिसतियां सो चार ॥ इतर मँगाउ इतरवालेसों भूषण बरण सोनार ॥ १ ॥ पानको व्यंजन बीर पसरिया सो पान तमोलिया सो सार ॥ रतन जौहरी पौहनि पावत लिये पट धुबियाकी नार ॥ २ ॥ ज्योंहि ज्येंहि जो ग्रह राशि जितक दिन तिनको भार निवार ॥ निजु गृह सुतनु बसहु अब अपने सूनौ नगर हमार ॥ ३ ॥ चाउ बोहारि सो मैल गृहन को सचकरु झार बोहार ॥ नंद ललनपिय आनामिलै मोहिं लादे सकल शिंगार ॥ ४ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग शङ्करा ॥

चारि ताल उठान समसे ॥

(२४०) भरन जो गई आज जल यमुना पनघट के निकट आन अचानक हरि कर पकर भरीलई अंक ॥ अंतरा उठान समसे ॥ लपक झपक लिपट चिपट नटखट नटनागर नट अटि-पटि नटखटईको कर पटक मटुकि दइ निशंक ॥ १ ॥ (अभोग) बराजोरी बिच मुकतन की माल मोरी जोराजोरी कर तोरी बिथुर गिरगइ लरी लरी सगरी मनरी यहि सखी शंक ॥ २ ॥ (भोग) सास ननँदिया है जबर ललनपियको अति उर डर निरखि कुगति कर वन गृह वसन देदीहे कलंक ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी ललित ॥

उठान पहिली की खाली से ॥

(२४१) ननँदी कोऊ छैल खड़ो तुहिं दै दृग सैन बुलावतरी ॥ अंतरा उठान समकी खाली की खाली से ॥ श्याम सुगात हाथ मुरली लिये शिरपर मुकुट सुहावतरी ॥ कोऊ छैल खड़ो तुहिं दै दृग सैन बुलावतरी ॥ १ ॥ द्वारखड़ो पट तट दरवाजे सांकरगहि खटकावतरी ॥ कोऊ द्वार खड़ो तुहिं दै दृग सैन बुलावतरी ॥ २ ॥ हूं टेरत नहिं आवत गृह मधि बातन बात बरावतरी ॥ कोऊ छैल खड़ो तुहिं दै दृग सैन बुलावतरी ॥ ३ ॥ मैं पूछौं कह नाम तिहारो यशुमतिललन बतावरी ॥ कोऊ छैल खड़ो तुहिं दै दृग सैन बुलावतरी ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी ललित ॥

उठान तीसरी की अनसरलसे ॥

(२४२) टेरत तुहिं सजनी अरी कोऊ छैल छबीलो ॥ अंतरा तीसरी की अनसरलसे ॥ द्वारठढ़ो तोरे तट दरवाजे काछि कटि कछनी ॥ अरी कोऊ छैल छबीलो टेरत तुहिं सजनी ॥ १ ॥ शीशपगरिया करमें मुरलिया सुहनी सुरति मुहनी ॥ अरी कोऊ छैल छबीलो टेरत तुहिं सजनी ॥ २ ॥ तैं कहु तौ मैं बोल लिआऊं कहु जो होइ कहनी ॥ अरी कोऊ छैल छबीलो टेरत तुहिं सजनी ॥ ३ ॥ मैं बहु पूंछ काज कह तेरो कहत न कछु अपनी ॥ अरी कोऊ छैल छबीलो टेरत तुहिं सजनी ॥ ४ ॥ नाम बतावत ललन आपनो नँदपतनी जननी ॥ अरी कोऊ छैल छबीलो टेरत तुहिं सजनी ॥ ५ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़े की रागिनी ललित ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(२४३) ये कान्हा तुहिं द्वार खड़ी टेरत एक जनी ॥ अंतरा तीसरी की अनसरल से ॥ गोरी सी भोरी चोरी सों आई तोरी प्रीतिसनी ॥ १ ॥ छोरीसी थोरी बैस भेषभल मृग दृग शशिवदनी ॥ २ ॥ हौं जो कह्यो भवन भामिनी लाजत मृदु वचनी ॥ ३ ॥ नाम न बोलत ललन चतुर अति मुहनी मुरति बनी ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी परज ॥

उठान पहिली से ॥

(२४४) जगमगा रही दम्पति की छबि माधुरी महा सुहालईरी ॥ सखियां सलोनी सँग साँवरी गोरी गोरी चमकत चपलासी तन जोबन बिच ॥ अंतरा उठान समकी अनसरल से ॥ मधुसीपीसी आँखियां अजब रँग रँगीली रसीली छबीली सुहीली डलीली लजीली प्रतीली सुनीली सुधा समान लाड़िली की शोभा लाड़िली ललनपिया छकृत हेरन बिच ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग सिंदूरा ॥

उठान खालीकी खाली से ॥

(२४५) श्यामरा निरदयी सखीरी मैं तो वाकी नगरिया में ना जैहौं दैया छीन मटुकिया पटकदई मोरी सारी बदन उघारी मोरी लाजगईरे मैं तौ वाकी नगरिया में ना जैहौं दैया ॥ अंतरा उठान तीसरी की खाली से ॥ अतिही ढीठ मोसे कीन्हीं बराजोरी जोराजोरीरे मोरी बैयाँ पकर अँगलइ बरजो न मानत ललनपिय नोखो यशुदाको कान्ह मग घेरलइ लखि वाके रँग ढँग गति मति बिसर गई रे ॥ मैंतो वाकी नगरिया में ना जैहौं दैया ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पियबिन आगलगी मोरे तनमें डारगयो कोउ टोनारे। इस धुनिपर॥

ठुमरी रागिनी सोरठ॥

उठान पहिली की खाली से॥

(२४६) दैजा दैजा इतर गन्धीवाले छैल मोरा सिजिया सजन आनेवाला॥ रेहो मोरा मोरा सिजिया सजन आनेवाला॥ अंतरा उठान समकी खाली से॥ वसन बसाउरे सुघर सुगंधन अँगन चँदन सिजिया सज फुलवन शुचि शिंगार सज बैठी सुन्दर कब आवे ललन वंशीवाला॥ रेहो मोरा सिजिया सजन आनेवाला-रे॥ १॥ इति॥ ठुमरी रागिनी बरवा धुनि सावन॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(२४७) कुरिया रे मुहिंका बुनलादे पँचरँग चीर॥ अंतरा तीसरी की खाली से॥ सारी सुघर रँग लड़ छरि औदी बुटिओ दाजाल गम्भीररे॥ १॥ जरकसी आँगिया पियकी पगरियासी चूँदर चदर गहीररे॥ २॥ लुगरा बनैये अनमोल रँगीला मोरा जस दिउरनियां के तीररे॥ ३॥ ललनपिया को जिय राजी रखिये तू छैलादूंगी बकशीश मैं हीररे॥ ४॥ इति॥

जियरा लगाये लिये जाय। इस धुनिपर॥

ठुमरी रागिनी बरवा॥

(२४८) बेदरदी मोरा रे मैंका छुड़ाये लिये जात॥ अंतरा तीसरी की खाली से॥ माई बाप कुल सखियां सहेलीरे सब बिस-राये लियेजात॥ १॥ सासु ससुर मिलि घोरा बरतिया गौना कराये लिये जात॥ २॥ अब भयो कठिन पिहर परसन पिय ससुरे लिवाये लियेजात॥ ३॥ बिनवत ललनप्रिया मिल सबका अपनाये लियेजात॥ ४॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी बरवा॥

उठान खाली की अनसरल से॥

(२४६) सुनरवा सों मोरा लादे कंगन यहि बेर॥ अंतरा उठान तीसरी की खाली से॥ न दे अवधही बदे जो वो तुमसों तो सुनवा लैयोफेर॥ १॥ बाजआई ऐसी गढ़ाई सों सैयां देखो ये कैसो अँधेर॥ २॥ अगम गढ़ाई चुकालई मोसों फिर काहे एती अबेर॥ ३॥ ललन श्याम न मैं मानूँगी एकहु वा दारी-जरवा की फेर॥ ४॥ इति॥

ठुमरी रागिनी पीलू॥

उठान तीसरी की खालीसे॥

(२५०) तमुलिया सों सैयां बीरी बनवाये लैयो रे॥ चुनवा तँबोल अनमोल बंगलवारे दुनवा बँधाये लैयो रे॥ अंतरा उठान तीसरीकी खाली से॥ तमखुआ न कथवा न लौंग सुपरिया रे पस-रिया से सोभी बिसाये लैयो रे॥ १॥ हटवा जो जैयो सैयां बटुवा लैऐयो रे बारे पटवा सों डुरिया पुहाये लैयो रे॥ २॥ ललनपिया मन माने अँगिया बँद सुघरसे मोल मँगाये लैयो रे॥ ३॥ इति॥

ठुमरी रागिनी जंगला॥

उठान खाली की खाली से॥

(२५१) बिसा ला गुइयां बिंदिया बिसतिया सों॥ अंतरा उठान तीसरी की खाली से॥ इँगुरा सिंदुर केसर गेरी अबिरा गु-लाल पसरिया सों॥ १॥ सुरमा सो अँजना कजरा महावर कंघी मुकुर मिसिया सों॥ २॥ कांचकी चुरियां सुन्दरि सखि लादे नँद-ललन अभिलाषोंसों॥ ३॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अथ ध्रुपद रागिनी प्रभाती॥
इकताला उठान समसे॥

(२५२) कहँ बिलसन सुखकी रजनि तन मन सुधि गोये। अटपट महि धरति चरन। लटपट शिर पाग धरन॥ अधोभाग भृकुटि बदन। नासा बलबोये॥ १॥ अँगड़त अंग छिन छिन जमुहावत अलसावत पुन॥ बिलसन छबि अनुपम दृग। अँसुवन मुखधोये॥ २॥ शुष्कित रद पुट प्रपुंज। ललित कलित मँजन मंजु॥ अँजन अंजु सिंदुर रंजु। कलकपोल मोये॥ ३॥ स्रवत कण प्रसेव अंग। मुखमलीन रूपरंग॥ निंदित निंदिया प्रसंग। अरुण नैन कोये॥ ४॥ बिन गुण हृद लसत जाल। मंजुल मुक्कन कि माल॥ बदन विपुल चन्द्रबाल। मदन मनु सँजोये॥ ५॥ इति॥

ठुमरी राग बिहाग ठेका होली का॥
उठान तीसरी की खाली से॥

(२५३) बरषा बरसो बदरा मीत॥ अंतरा उठान तीसरी से॥ लै लै प्रबल मतंग यूथ घन श्वेत श्यामरे पीत॥ १॥ सुनि धुनि गरज घुमड़ बरसन सों पिया बढ़ावे प्रीत॥ २॥ पपिहा प्राणपती उच्चरण कर क्यों न कराउ प्रतीत॥ ३॥ बहु दिन सौत विरह तरसायो निंदिया मदन समीत॥ ४॥ मैं बिरहिन दुखिया बिन पिय की बहुत सही अनरीत॥ ५॥ नंद ललनपिय रँग ढँग बिन व्याकुल जिया धीर धरे न कोउ रीत॥ ६॥ इति॥

ठुमरी राग बिहाग ठेका होली का॥
उठान तीसरी की खाली से॥

(२५४) बदर अब बरसो अमीनिधि नीर॥ अंतरा उठान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तीसरी से॥ दृग पिक विकल प्यास पिय दरशन जिमि बिन स्वाति अधीर॥१॥ है मन मीन हीन बिन निधिपति शिथिल न सुधिहु शरीर॥ २॥ भये सकल रिपु मोर घटाघन बक पिक कोकिल कीर॥ नतु बलाक बरसै बूंदन झरि नये उचरैं बेपीर॥३॥ लखि सखि भाग सुहाग की गति मम उड़गई सुमुद समीर॥ ललनपिया अधीन दीनजन बेगि हरो हरि पीर॥ ४॥ इति॥

ठुमरी राग हिंडोल॥

उठान पहिली से सरगम पर॥

(२५५) मन मनसा मानी जौन मोरीरे॥ सुन बिधना साईं सुखदा मिलै मुहिंका ये आशा निशिदिन मांगूं तोसे बरहूं बारी हां अपनी जानियो मैंकारे दास॥ अन्तरा उठान समसे॥ हमतो निपटही विकल रहत उन बिन नींदा रैन न आवे धाम सूनी सेजिया डसेजा मैनदाहे निर्द्दयी निठुर उन नन्द-ललन बिन यौवन उन्नति गमनति निष्फल अधिक सतावत बिरहागिनि प्राण तकजा॥ १॥ इति॥

ठुमरी राग हिंडोल॥

उठान तीसरी की अनसरल से॥

(२५६) सुघर सुघर रंग रसभरीरे बन ठन बनिआई अल-बेली आली अनूपम साज साज सुख समाज गोद मोद लीन्हे मानो नवल नारि जो वाकी आगुरीरे॥ अन्तरा उठान समकी खालीकी खाली से॥ गोरे गोरे गात गबीली गँभीर गुनवान गुरिया गजब गजगामिनि गयन्द मन्द हँसन माधुरी महान अमृत झरि बरसीली झरीली सुमन मृदुल बोलन नन्दललन जीवनप्रान सिन्धु चातुरीरे॥ १॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मैं तो तुम्हरे मिलनको आई रे। इस धुनिपर॥

ठुमरी रागिनी खम्माच॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(२५७) उन बिन घरि पल छिन परे न चैन मुहिं तलफत बीतै सगरी रैन॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से॥ ऐसो निपट निठुर निर्द्दयी कान्ह नहिं दरशदेत मोहिं कबहूं आन अरी हारी ललनपियासों कर मिनती ऐन॥ १॥ इति॥

ठुमरी तालांक मुद्रित राग खम्माच॥

उठान खालीकी अनसरलकी खाली से॥

३ ४ १ २ ३ ४
(२५८) प्रीति करीरे पछताई तोसे कान्ह निठुर न तोरी
१ २ ३ ४ १ २
जानत ही ऐसी बानि हमरो मनको मनमें रह्यो इरमान॥ अन्तरा
३ ४ १ २ ३ ४
उठान तीसरी से॥ चारि दिनहु न नेम निबाहनकी जानी गति
१ २ ३ ४ १ २ ३ ४
मानी न मोर मन तुमहिं पै जा लुभान प्रान नन्द ललन तुम
१ २
सबन सों की पहिंचान॥ १॥ इति॥

ठुमरी रागिनी खम्माच॥

शूल ताल उठान समसे॥

(२५९) सुन्दर कामिनि रूप अनूपम मदन भरी मोहनि चितवन चित चोरावत अलबेली आली नोखी अन्दाज मन्द मन्द चलत चाल मधुरि मुसक्यान मोहे लेत जिय॥ अन्तरा उठान समसे॥ दश षट शृँगार भूषण तन सजे चन्द्रबदनि मातंगी प्रभा ललनपन सुहात गात चंचल चपल चतुर चटकीलीसी प्रिय १ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्रुपद राग बहार ॥
चारिताल उठान समसे ॥

(२६०) मोहन मदनमोहन लाल मोहनी मूरति अतिविशाल लोचन सोचन शमन हेरन हरन हियश जदुआ जाल ॥ अंतरा उठान समसे ॥ शुभ सुडौल दोउ कपोल चिबुक चटक चीकन लोल दाड़िम दशन माधुरी हँसन अधर मुरली धुनि रसाल ॥ १ ॥ (अभोग) नागिनि अलकें इतर झलकें दामिनि दलकें छविकी छलकें माथेपर मुकुट हीर हलकें कलँगी ललित ललकें लाल ॥ २ ॥ (भोग) धनि धनि धनि देवकि ललन प्रभाको सदन व्रजजन धन सुर नर मुनीयन को जीवन जन मन रंजन कृपाल ॥ ३ ॥ इति ॥

सादरा राग लच्छासाक शूल ॥
उठान समसे ॥

(२६१) शुभ मुहूरत शुभ लग्नघरी धन धन भाग अरु सुहाग जागे मोरे आली आज श्यामआये मन्दिरक मोरेरी ॥ अंतरा उठान समसे ॥ आवो हिल मिलरी गोरी मंगलगावे सादर नँदको ललनपिय सन्मान पावे मनकी मनशा मनावे हित चितसन हित चितसन मिनती करे निहोर कर जोरेरी ॥ १ ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥
उठान पहिली तालसे ॥

(२६२) बनमलिया चटके मटके अटके अनारी मोसे मारग चलत मग मोरी रोके ऐसोरी अनोखो नित नई निपटई निरदई हमसेई उरझई चमकई बार बार बरजोरी ज्यों त्यों वोरी जोराजोरी बाराजोरी करगहे बैयां झटके सखीरी कँधाई दुखदाई लंगराई करेरी ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ निरख अकेली नीरे निपट निडर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आन ठठोली करत कान्ह ललनपिया ढीठ नँदको ढोटा न मानत ऊधम धरेरी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

ताल तिउरा उठान समसे ॥

(२६३) प्राणपति पियके मँदिर सखि भागश्वति बनती परसती ॥ अंतरा उठान समसे ॥ बाबुलके भुवन कर सकत नहिं कछु श्रृँगार विहार जोबन उमँगो जाय बिन श्याम सनेही ललनपिया जिय निकल निशिदिन तरसती ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खालीकी खालीसे ॥

(२६४) घुमड़ घिर आये बदरा कारे कारे ॥ अंतरा समकी खालीकी खाली से ॥ चलत पुरवैया सनानानाना दैया बिन पिया ननदुइया न भावे बरषारे ॥ १ ॥ पपीहा रटलावे पिया पिया सुनावे न आवे तरसावे ललन पिया मोर ॥ २ ॥ इति ॥

मलार ॥

ठुमरी जोड़ेकी राग खम्माच ॥

उठान समकी खालीकी खालीसे ॥

(२६५) पिया पिया मचाई पपीहा पापीरे ॥ अंतरा ॥ जलावे मोरा जिया दुरावे कोइलिया न माने बैरी घन गरजे घरी घरीरे ॥ १ ॥ ललनपिया प्यारे उमँगो जोबन जारे मोहन बिन मोरी सिजिया सूनी परीरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान ताल पहिली से ॥

(२६६) अब तोरी मोहनि मोहनि मुरति मदनमोहन देख

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

व्याकुल भयोरी तन मन ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ कल न परत पल छिन नंदके ललन प्यारे बिन मन हरलियो बांकी बांकी मधुरी हँसन ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग देश ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(२६७) छल बल भल सीखे लड़ैती ललन बलिहारि तिहारी मुरारि मुहन लियो खूब निठुरपन केरो परन ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ प्रिय वियोग माती तरसत तुम इत उत रजनी करत गवन ॥ यह कौन रीतिकी प्रीति तोरि जोरत तोरत तुहिं लगत पलन ॥ १ ॥ निज गरजीपन गिरउँ धरे मनु मोल लिय निठुराइ छलन ॥ ब्रजछैल रसिकपन पाहीं कहे कहुँ साई बधाई हो और भवन ॥ २ ॥ नहिं जात ललनपन तोर तनक न लजानि गिलानि सो तात बदन ॥ तुम्हरो हित कठिन कठोर दया सब योग चहो सोइ लगहु करन ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी राग देश ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(२६८) ठनगन भल सीखे मुरारी मुइन ॥ नहिं भेद खुलत सखि का उनके मन दै बोलत नहिं हमसों सजन ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ जब देखो तब भौं कमान दृग तान बान रहे चाढ़ीहि बरन ॥ अब आनि बानि यह नोखी ठानि जब तब रूठ बैठत कोपभवन ॥ १ ॥ कँपत रहत तन मन हमार छिन छिन की कुशल मनावत मन ॥ अब बीर बताउरी काह करूं बिन प्रीतम प्रीति के जियब कठिन ॥ २ ॥ खान पान निंदिया हेरानि बिरहा दुखदाहत ताप मदन ॥ ओठन प्राणबसै सजनी कबधौं अनुकुलिहैं नन्दललन ॥ ३ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी सोहनी॥
उठान खालीकी अनसरलसे॥

(२६९) एरी यशोदा तेरो कुँवर कन्हाई डगर चलत मोसे करत दिठाई॥ अंतरा उठान खाली से॥ हौं वासों नेकौ नहिं बोली दौर लँगर घूंघट पट खोली मटक मटक गर लपट चपट चट तारकसी चुलिया मसकाई॥ १॥ मैं जलभरन जातरी माई बीचमिलो मुँहिं श्रीयदुराई डपट झपट झट मटकी पटक नट दोउ करकी बँगुरी मुरकाई॥ २॥ ना बसिहौं अब नगर तिहारे बसिहौं जाय आन पुरमारे नंदललन परो बैर हमारे रारि पसारन सार बिसाई॥ ३॥ इति॥

उन बिन घन गरजत बार बार। इस धुनि पर॥
ठुमरी रागिनी देश मलार॥
उठान तीसरी की खाली से॥

(२७०) बदरन नभ दल बहु भीर भार चहुँ छाये श्वेत रतनार कार तन पियर सियर नाना प्रकार॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरलसे॥ दीरघैन घटाघिरीकारी चहुँदिशि दामिनि दमकत न्यारी छाय रहो अति अंधकार॥ १॥ गरज घोर इन मोर शोर कूकत कोइल दादुर बहोरि पपिहा पिय पिय उत रह्यो पुकार॥ २॥ छिन वृन्द बूंद बौछार धार पल पवन गवन गति धुंधकार लखि छवि उलहत मन बारबार॥ ३॥ हमरे श्याम अजहूं न आये दई ललनपिया निरमोही निरदई बीती जात बरषाबहार॥ ४॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी देश मलार॥

(२७१) बिरहन बैरी बरषा बहार षटऋतु को कर दीन्हो प्रचार॥ बरषा वसन्त ग्रीषम हिमन्त सुख शिशिर शरद नानाप्रकार॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अंतरा उठान खाली से ॥ शीतल मंद सुगंध सियरि गति घोर गमन छिन तीव्र तप्त ईशान पवन ऋतु बाइव पुनि उत्तर दक्षिण पूरब पच्छिम बिहरत ब्यारी दश दिशन द्वार ॥ १ ॥ बरसत थिरत नीर सम बांधत दुरत उगत दिन निशानाथ खन उडुगन द्युति दामिनि दमकत तन ऊभत बिजना करत ब्यार पट धारति सखि रचि रचि अपार ॥ २ ॥ शुक पिक मोर मराल कोकिला कोइल कीर कपोत भ्रमर बक दादुर झींगुरवा चकोर बहु बरन बरन बोलत बानी चढ़ तरुवरान हरि डार डार ॥ ३ ॥ अस ऋतुराज रही राजी बिन यादव जी जीवनके जीवन बिन उन जीवन जन्म ख्वार अब भाग सुहाग जगे जबहीं जब ललनपियै मिलु नँदकुमार॥४॥इति॥

ठुमरी राग देशमलार ॥

उठान समकी खालीकी खालीसे ॥

(२७२) भयेरी पिय आवन के आसार गगन घन उमड़ घुगड़ गरजे बगार पिय को सँदेश दियो बरसवार पिय आवन के आसार ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ बिजुली विजय वियोगिनकी दई पुकार बिरहिन सबहिन मन मगन नारि पिय आवन के आसार ॥ १ ॥ पिय आवन यह घन घोर घोर सुखदाई दामिनिकी क्या करूं बड़ाई पिक धनि धनि पर तनमन वारूं ललन पिया मिलु हो विहार पिय आवन के आसार ॥ २ ॥ इति ॥

बतादे सखी कौन गली गये श्याम । इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी सिन्धु खम्माच ॥

उठान तीसरी की खालीसे ॥

(२७३) नज़रिया लागरही नेहकीरे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ हँसन मृदुल मुसक्यन चितवन चपलासी चलन जेहिकीरे॥ १॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लजन सजन सकुचन परचन बर ढुरन मुरन देहकीरे ॥ २ ॥ करन धरन उर सिसकि नासिका बरन बरन तेहिकीरे ॥ ३ ॥ भ्रू मस्तक बल परन दृगनहित बरसन जिमि मेहकीरे ॥४॥ चिरजीवो प्रिय ललनि ललनपिय हरण गति सँदेहकीरे ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी ॥

(२७४) बदरिया मारे कटरिया बूंद ॥ अन्तरा ॥ चलत पवन बैरिनि पुरवैया हनत विशिख तन खूंद ॥ १ ॥ उत पापी पपीहा पिय पियकरे इत दादुरवन दूंद ॥ २ ॥ नन्द ललन पिय बिन बिरहा रुज मारे मदन तन रूंद ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी मलार ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(२७५) कूकें कोइलिया कारी कुटिल कठोर कुकदर कुकामिनि कटुक कहन कृत कारी कारी ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरलसे ॥ कन्त कोऊ कामिनिकी कामना करत केलि कलकारी कर्म्मनकी करतूति कहा कहूं काया कलह कटारी कारी ॥ १ ॥ कुंजर कामदेवकी करनी कृशकीन्हीं कुदशारी कसकत कोमलांग कलकारिनि ललनापिय न करारी कारी ॥ २ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी परज ॥

इकताला उठान समसे ॥

(२७६) कैसे जाऊं परसन पिय सों मिलन शशि प्रकाश सखि उलहत तनु थिर थिरहो ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ चन्द्र मद दुत्तावली होनदेनदे उतावली अली यह गलीके लोग बैरी मोरे तिरतिरहो ॥ १ ॥ सजतहौं शृँगार जबलौं आवत तस धाय तबलौं ललनपिया दरश हेत वारत मन फिर फिर हो ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

घन घटा घेर रही कारी कारी। इस धुनिपर॥

ठुमरी रागिनी खम्माच मलार॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(२७७) घिरि आये बदर दइमारे कारे॥ पी छायो विदेश हमरारे हां रे नहिं कटत रैन गिन तारे तारे॥ अंतरा खाली से॥ बूंदनवार झरिलावत गरज गरज जियरा डरपावत कांपत तन धरकत छतियां बतियां उनकी सुधि आरे आरे॥ १॥ झकझोरत पापिन पुरवैया दामिनि दमकि दैया ललनपिया अब मदनमोहन बिन सुख समूह बहु न्यारे न्यारे॥ २॥ इति॥

बिन पिया गुजर गइ सारी रैन। इस धुनिपर॥

ठुमरी राग देश॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(२७८) उन बिन जियको नाहिं नेक चैन दिन रैन मैन कल देत हैन बिरहा व्याकुल करडारी ऐन॥ अंतरा उठान तीसरी की खाली से॥ माधौ मधुसूदन मारगये मन लैगये बशकर मधुर बैन भई नैनन नींद हराम सखि नित तरफरात दर्शन को नैन॥ १॥ तन धीन मलीन भयो मनुवां आशा मिलबे कीही न रही जब मीत भये कुबरी के कृष्ण अब ललनपिया दुख कहे बनैन॥ २॥ इति॥

दो० जय राधा राधारमण भजु तजु सकल विषाद॥
पग पुनीत रज धारि उर बरणहुँ यशु प्रहलाद॥ १॥
गणपदादि सुरबृन्द वर बाणी बन्द सप्रेम॥
शुद्धि बुद्धिदायिनि सदा कीजै जनहित क्षेम॥ २॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी झँझौटी॥
उठान तीसरीकी खालीसे॥

(२७६) लागी सभा नृप केरि भवन बिच॥ मंत्री मुदित वृन्द वर राजैं बाजैं दुंदुभि भेरि॥ भवन बिच॥ १॥ चहुँ ठोरे द्वारे रखवारे चतुर खवासी चेरि॥ महल बिच॥ २॥ निजु निजु कला कुशल कौतुकनिधि दानव दूत घनेरि॥ भवन बिच॥ ३॥ नृप यशु भनैं सकल विमुखी हरि ललन ये हरि गति हेरि॥ भवन बिच॥ ४॥ इति॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी॥
उठान खालीकी अनसरलसे॥

(२८०) हिरनाकुश कुरूप कुल कंटक सहिजा दूत लिये सँग आयो॥ अंतरा उठान खालीकी अनसरलसे॥ बैठ सभा पदार्थ शिवपूजन किंकरके कर सकल मँगायो॥ १॥ पूजत सानँद शंभु मुदित मन प्रहलादै पुनि बोल पठायो॥ २॥ पूंछिसि कह गुरु तोहिं पढ़ायो लिख पाटी हरिनाम दिखायो॥ ३॥ खल रिसकोष ललन पै रोसे पुनि लैकै खड्ग बधन हित धायो॥ ४॥ इति॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी देशकारी॥
उठान तीसरी की खाली से॥
प्रह्लाद उवाच॥

(२८१) मैया मतहो कछु मन उदास मोरे कर्म्म लिखा विधनाने त्रास मुहिं बिष पिलाउ अब है हुलास॥ अंतरा उठान तीसरीकी खालीसे॥ लै पितु पर्व्वत के गयो पास मुहिं छोर दियो कर मरन आस तहँ आय रखो प्रभु अनायास॥ १॥ है है जो राम रचि राखि मातु यह तन तो यकदिनहो निपात यह सोच पोच

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जिय जनि निवासु ॥ २ ॥ को काहि दुखावत बिनु सँयोग अपने अपने कर्म्मन को भोग यह तन साथहि सुख दुख बिलास ॥ ३ ॥ नाहिं जननि जनक को तनक दोष तैं धरु न किंच जिय अपने रोष नँदललन हाथ जीवन विनास ॥ ४ ॥ इति ॥

सावन ॥

त्रैताल उठान समकी खाली से ॥

(२८२) सैयां बिन सूनी रे सेजरिया डरावे भई निशि नींद हरामरे हो ॥ अंतरा उठान समकी खाली से ॥ तरफ तरफ सारी रतियां गुजारत उन बिनु जिय न अरामरेहो ॥ जाय कहो कोई सँदेशवा निठुर से तो बिनु विकल तोरी वामरेहो ॥ १ ॥ मैनदहे बिरहा जियजारै नीकलगत नहिं धामरेहो ॥ निशिदिन नंदललन पियकी सुधि आवत मुहिं वसुयामरेहो ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी राग गौड़मलार ॥

तालांक मुद्रित उठान खाली से ॥

(२८३) [४] माई सुघर बनीरी [१] बनरे की [२] बहुरिया श्याम [३] सरो-रुह से नैन [४] नजरा बिच कजरा [१] सोहत रँगीलो [२] नइ सी आन न-इसी [३] बान नइसी रमन ॥ अंतरा उठान समकी अनसरल से ॥ चारु चिबुक बिच [३] नीलबिन्दु [४] मञ्जु मदनमातो रति [१] युति बिलासो बर [२] बिसन कीन्हे [३] असन कीन्हे [४] शशिमुखकी शोभा कही न [१] जात तन मन धन [२] वारी ललनपिया श्याम सनेही प्रान ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान खाली से ॥

(२८४) आली वनमाली की निराली छवि की उजाली ग्वाली लखि व्रजवाली भई मतवालीसी ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ प्रेमकी प्रणाली में बिहाली भ्रमजाली मन सुरत गवाली गुणवाली बे गुणालीसी ॥ १ ॥ हूं तो अनपुरवाली है अदेख हरिआली लखतहि लाली हाली नसब निहालीसी ॥ २ ॥ ग्वाली परचाली चलु भंजन खुशाली चाहे पाली जो ललन फिर रहे न सम्हालीसी ॥ ३ ॥ इति ॥

का भयो ननँदी अनोखे पियाको होरी खेलत मोपै नईरे नईरे।

इस धुनिपर ॥

ठुमरी तालांक मुद्रित रागिनी खम्माच ॥

उठान खालीकी अनसरल से ॥

१ २ ३ ४ १ २ ३
(२८५) लालन लइ दधि चोर तोर मैया मोर पति कैसे
४ १ २ ३ ४ १ २
रहैगी बलमा निरदैया दैया मँदिर मुहिं बसन न दिहै दुख कासे
३ ४
कहूं जाय ॥ अंतरा उठान खाली की खाली की खाली से ॥
१ २ ३ ४ १ २ ३ ४ १
पीत पट गिर परोरी वाको मोरी बखरियामें लाई चिन्हारी सोइतुहिं
२ ३ ४ १ २ ३ ४
जतावन देख नन्दललन को ढँग नोखो न मोहिं सुहाय ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग मालकौश ॥

त्रैताल उठान खाली से ॥

(२८६) कवन रंग रसपागी अलबेली अमित भई क्रशित

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गात चन्दमुखि ॥ अंतरा उठान तीसरीसे ॥ काको प्रेम अनुरागो जागो प्रिय काको रूप शर लागो हीय नन्दललन मितयोरीका गोरी हँसन बोलन सगरी रुचि त्यागी सखि ॥ १ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी गौरी ॥

(२८७) काकरूं काकरूं काकरूंरे जिय चाहे मिलन पिय काकरूंरे ॥ अंतरा ॥ नैहर में निर्मोही छोड़गयो बिरहाअनल सों मैं नित जरूंरे ॥ जिय चाहे मिलन पिय काकरूंरे ॥ १ ॥ मदन बदन बेधन व्याकुल मनमाने न सब कछु धीर धरूंरे ॥ जियचाहे मिलन पिय काकरूंरे ॥ २ ॥ उमँगो जोबन नइ नइरे जवानी मोरी योंहीगई योंहीगई योंही उचरूंरे ॥ जियचाहे मिलन पिय काकरूंरे ॥ ३ ॥ द्योसको सुख गई निशिकी नींद मनआवै गरल लै खाय मरूंरे ॥ जिय चाहे मिलन पिय काकरूंरे ॥ ४ ॥ कौन यतनसों मिलब नन्दको ललन बीर बताउ तोरे पग परूंरे ॥ जिय चाहे मिलन पिय काकरूंरे ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी राग हमीर ॥

उठान खाली से ॥

(२८८) चलत चाल मतवाली आली लचक लचक रस रँग मनमथ भरी ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ अतिसुहात नव गात ललनपिया मुख मयंक मांग मुतियन लरी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग कान्हड़ा नायकी ॥

उठान खाली से ॥

(२८९) माई लकुट कमरिया कांधेबांधे पट पीताम्बर कटि सों छवि शोभामान अगाधे ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ भव भय भारण तार यदुपति प्रेम प्रीति बसनाधे ॥ भक्तहिहितप्रकटे यशुदा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गृह जन्म युगन पतिआधे ॥ १ ॥ जब जब जेहि जनु बिपति परी अरु जब तोहिं दास अराधे ॥ तब तब आन बँधाई धीर तुम हरण सकल जनव्याधे ॥ २ ॥ गिरिवरधर नायक जन वत्सल कर्म्म धर्म्म हित साधे ॥ ललनपिया भजिये मन माधव कृष्णचन्द्र रुकमिन राधे ॥ ३ ॥ इति ॥

ख्याल जोड़े का रागिनी कान्हड़ा सहाना
उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(२६०) जारे जारे पिया प्यारे जिनके गृहरस बस कीन्हेरे ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ अब आये मुख निठुर दिखावन रैन विहारन सौतन के हित ललनपिया ऐसे छल बल पर गाजपरे दुख दीन्हे रे ॥ १ ॥ इति ॥

दादरा राग काफी ॥

(२६१) सखीरी मोरे नैना लोभी लागे ॥ अन्तरा ॥ सांवरे सनेही पर लुभाने तन मन सों अनुरागे ॥ मानत न बरजो कोउ विधिसे जोइ आगे सोइ तागे ॥ १ ॥ प्रिय प्रभु छवि शुभ सुजनिया हमरे लोचन भयेरी धागे ॥ भिदे रहत नित हितवश प्रेम सुधा रस सों पागे ॥ २ ॥ मन तो चलत यक पगभर दृग रुचि चलै दुपद आगे ॥ यक हो तेहि सीखदीजै कहूं काहि सखि अभागे ॥ ३ ॥ भइ चहुँ बदनाम सजनी अब कस बनै भागेत्यागे ॥ नंदललन शरण लई मैं भाग मम सुहागजागे ॥ ४ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी प्रभाती ॥
इकताला उठान समसे ॥

(२६२) जाउजी श्याम वाके धाम जेहि सों प्रेमपारो ॥ अंतरा समसे ॥ हमरे कह धाम काम हमसि तुम का बहुत वाम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तुमसे कपटि को प्रणाम राम है हमारो ॥ १ ॥ कारण मुहिं परत जानि वासों कछु रारिठानि तबहिं मोरे भवन आनि कान्ह चरण धारो ॥ २ ॥ तुम तो दुनिया के चंद सौतन दाता अनंद धारी छल छंद चरण बंदियत तिहारो ॥ ३ ॥ चलु बस अब रहन दीजै अपनो हित सकर लीजै वहि सों मन भायो कीजै समुझत जेहि प्यारो ॥ ४ ॥ नन्दललन तुहिं सुजान औरन समुझत नदान तुम सो छल बल में कान्ह भूल उठत सारो ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

तीसरी की अनसरल से ॥

(२६३) प्रीति लगा दैगयोरे दगा नहिं मानी वो दगाबाजरे ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ उमँग जुबनवा ज्वानी उमरिया बदन मदन छवि छाजरे ॥ १ ॥ इत वियोग संयोग भोग उत करत सवतिया राजरे ॥ २ ॥ नंदललनपिय बिन मो गुरिया बूड़त लाज जहाजरे ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी ताल मुद्रांकित रागिनी सोहनी ॥

उठान खाली की खाली से ॥

(२६४) [१]तोरी मोरी [२]बात सो [३]मोरी [४]तोरी [१]निरखली [२]तोरी मोरे [३]जियकी [४]जियमें ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥ [१]नन्दललन[२]जनि [३]ललन [४]पन करिय [१]जियाले [२]जियाकी दर [३]मत [४]निपात ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(२६५) जिय तरसे पियको तरस कछु सजनी हिय न आने मोर ॥ अंतरा उठान पहिली की खाली से ॥ धरक धरक जिय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जात मोर अँसुवन झरि अँखियन झरत घोर मोर मनै की मन मैं मोर नन्दललनापिय जिय कठोर॥ १॥ इति॥

होरी हो ब्रजराजदुलारे। इस धुनि पर॥

होली रागिनी ललित॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(२९६) बहुत मैया ललन को लाड़ लड़ाना॥ अंतरा उठान तीसरी से॥ ढीठ भयो ब्रजराज सांवरो अधिक तू शीश चढ़ाना॥ धूमधरे मानत नहिं मोहन अब नहिं कछुक नदाना॥ १॥ रोक खड़ो भयो मग पनघटकी चल तुहिं देहुँ दिखाना॥ जाय सकत ना वा डरसों कोउहो कैसे जल भरलाना॥ २॥ लै दांवरि सांटी रिसवत कीन्हों मात पयाना॥ धाय धरो दुरि सखन श्याम को सहि सब देखु बिधाना॥ ३॥ गहि पकरो जकरो भुज यशुमति दै सांटी घरआना॥ भक्ति बँधे प्रभु अंतरयामी लीला चरित निधाना॥ ४॥ नंदहि लखि गुहरावन लागे मोहन परम सुजाना॥ देखु बबा मुहिं मात खिजावत बेगि ललन उर आना॥ ५॥ इति॥

होली जोड़े की॥

(२९७) लखु माई मोहनको लरिकापन॥ अंतरा॥ दूध पियाय दियो बछरा को कहो चलु गाय दुहावन॥ मैं गई सांच समुझि वाके सँग मुहिं सो खड़ा उलट रिसावन॥ १॥ बावरी बनै मुहिं सिखवन पुनि कुल छिन मोहिं बनावन॥ हौं लजाय खिसिआय ललनसों दृग तरि शीश लचावन॥ २॥ इति॥

दादश रागिनी खम्माच॥

(२९८) जारे जारे पपीहारे पियको शब्द सुना न रे मुहिं एरे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नृदैया तू मान्जा मोर कहनवा मान्जा मोर कहनवा मान्जा मोर कहनवारे ॥ जारे जारे पपीहारे पियको शब्द सुना न रे ॥ अंतरा ॥ मानत मिनति सीख न मोरी रे जाने न पीर पराई ये गोरी बिराह बिथाह दुनावे खिजावे सखी पिय प्यारे ललनकी आवे सदा सुधि नींद न आवे विना उनरे॥ १ ॥ इति ॥

इस ठुमरी में टेर शब्द का निर्वाह किया है यानी २० दफा टेर उच्चारण होता है ॥

ठुमरी टेरविंशती रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(२६६) बँसिया न सुनाओ मोहिं टेर टेर ॥ पग परत जोर कर कहत टेर ॥ अंतरा ॥ निपट ये नीच निलाज निगोड़ी जनम की बैरिनि सौतन मोरी शर बेधिगई जिय जाकी टेर ॥ १ ॥ छोटे मुख बढ़वचन प्रचारे मद जनावे तुम्हरे हितकारे तुम धनकी बँसि बनकी टुटेर ॥ २ ॥ तुम याके रस बस अनुरागे हमरो नित हित चित सों त्यागे रुचि रसिक चतुर चित बस चटेर ॥ ३ ॥ यक की द्विदारु जगजानों प्रबल को निबल नितही डर माने किये विष बानि न अँग अँग चटेर ॥ ४ ॥ बिरहा मदन नींद निशि नाशी खान पान पट भूषण त्रासी तुम्हरे वियोग तन भयो ठटेर ॥ ५ ॥ लोक लाज कुल कानि काइली निठुरायन तुम्हरी खिजायली एतन दुख बिधिवत गन छटेर ॥ ६ ॥ अँग अँग आकुल रोमरोम मन धीर न लावत कोटि यतन सन इन विपतन कियो तन छिटेर ॥ ७ ॥ बहु दुख सहे न कहे एक अब जीवन हानि जनात ना अजब यह बात सांच बरनत छटेर ॥ ८ ॥ अरज पुटेर पटेरि कधारी भाग फुटेर गम पिटेर भारी तिहि पै न कृपाकी कलाफटेर ॥ ६ ॥ उमँग

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अंटेर लुटेर बिथन कर मौज लटेर भई तुम बिन हरि अब ललनपिय की टुक सुनो टेर ॥ १० ॥ इति ॥

चोया चन्दन अरु अबिर गुलाल मोरे मल मल जावे वो तन में। इस धुनिपर॥

होरी रागिनी भैरवी ॥

तीन ताल में ॥

(३००) देखु मुरारी को अनारीपनवारी मोरे तक तक मारो अबिर दृगन मैं॥ कान्ह मोरे तकि मारो अबिर दृगन मैं॥ अंतरा॥ सूझ ना परत छैल पगु ना परत गैल कैसे कर जाउँगी भवन मैं॥ १॥ मंजु दृग अकुलानी पीर न कछू सिरानी का करूं बीरयतन मैं॥ २॥ काननु करन लाउँ इन कबहूं न आउँ पायो फल इन बेहरन मैं॥ ललन कुचाल को हवाल हौं लखोरी बाल नाहिं भल चाल चलन मैं॥ ३॥ इति॥

सादरा राग कान्हरा॥

शूल ताल उठान समसे॥

(३०१) छाइरा तेरे री तन मनमथ मद अब थिरहो बैठ गृह अपने बीर सुंदरी रे॥ अन्तरा उठान समसे॥ कोउ रसिया की दृष्टि तोपै परै जनि मोरा जियरा डरपाये नंदललन रसरूप लुटेरो जानत सब व्रज नगरीरे॥ १॥ इति॥

ध्रुपद परज॥

(३०२) पूरण मन कामना करी करतार भरतार मेटो मेटो सकल ताप संताप॥ अन्तरा॥ सुभाग संयोग भोग भामिनी विलास योग सोग रोग ओघ बाहे धन्य धन्य यह घरी॥ १॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भाग ते सुहाग जागे प्रीतम प्रिय प्रेमपागे ललन ललनी युगल जोरी युग युग जियो सुन्दरी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी राग सहाना कान्हरा ठेका होली का ॥

उठान समकी खाली से ॥

(३०३) पूरी करै प्रभु तोर कामना प्रिय प्रीतम मिल बिलसौ भावना ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ राजकुमारी राजदुलारी हो नृप कुमार हो तोर साजना ॥ १ ॥ नंदललन तुहिं करि हैं सुभागी गोद खिलैहो ललित लालना ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी राग सहाना ॥

उठान तीसरी से ॥

(३०४) इतनि मिनति मोरी मान ले सैयां ॥ अन्तरा उठान समकी खाली से ॥ नेक तजौ न तुम अपनो ललनपन नँदको ललन तोरी बलि बलि जैयां परत पैयां जनि करु लँगरैयां ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान खाली से ॥

(३०५) दृगन सुदृष्ट बलिष्ट धरो ये कलिष्ट कलेश हरो श्रीराधिके ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ तवेष्ट सरेष्ट वरेष्ट गह्यो पुनि केहि सुमिरों तुमका अराधिके ॥ १ ॥ तुम बिन को जनको जननि देवि राजीव विलोचनि दृगनिऽया-धिके ॥ २ ॥ मत रखु विरक्त निजु भक्त मुक्तिदायिनि सुनु ललन वचन समाधिके ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली से ॥

(३०६) मलिया करको कँगनवा गूँधलादे कुमुदनको काम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कलियन को कर सुभग सोहन गूँधन अति सुढार सो ॥ अन्तरा उठान समकी खाली से ॥ बेला चमेली केतकी जुही मोतिया गुलाब दोना मरुवा मालती वसंत मोगरा सुकेवरा कदंब कुसुम गुलदावदी कनैल कुन्ती कचनार गुढर चम्पा चांदनी पदम हरशृँ-गारन भूषन अनमुल बनाला पहिरा प्रसूनन दूं निछावर तोर मन की ललनपिया प्रभु काज सजूं शृँगार करन विहारसो॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी अनसरल से ॥

(३०७) धुबिया के छैलवा अँगिया मोरी धोला चुनर सारी चदरिया डुपटा हो ॥ अन्तरा ॥ बार बार कई बार कही एती बार बरायो न बार तुहिंका अबकी बार बहु बार को कारण कहुरे द्वारऽस्थिर हो आवत अतिगँवार न बार डर इतबार गयो घरबार से परवार से दरबार से निरवार नहिं कोउ बार देगो तुहिंका कोमो वारसी सुकुवार हिन रैवार मिलिहै इन ढंगन दुशवार जिनिला-वारसी लखु छिन में लादी छीन वसन धराय लूंगी मैं ललनपिय मोरा जान न जाय जनुकाहो ॥ १ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी खम्माच ॥

लच्छासाकी ॥

(३०८) पिया नदानरे नदानरे मेरो सारो जुबना बीतो जातरे नदानरे नदान ॥ अन्तरा ॥ ससुर सासु बाबुल बीर कछु न कीन्हों ध्यानरे बारे बलम सँग व्याहदई मोरी उमर उमँग जवानरे नदानरे नदान ॥ १ ॥ सेजिया सुख बिलसन समय विधि जात वृथा बितानरे ललनपिय मन मालिन माधौं बिनभई नकवा-नरे नदानरे नदान ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चलत पवन गईसो अँगना बैरनमोरी लगगईआंखरे ॥ इसधुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खाली से ॥

(३०९) कर धर श्रवन कहत तोसन इन ढँगन न मोर निभाउरे ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ सतको शीत ज्वरन जरावत असत औषधी प्याउरे ॥ पुनि प्रफुलित कस होय रोग हित की नित प्रतहि घटाउरे ॥ १ ॥ हैं अनन्य उपाय निबहन यदु थिर चितकर तनु चाउरे ॥ वृथा न कुदर प्रीतिकी करिये रीती रीत न ताउरे ॥ २ ॥ जिन समता सकल न ब्यवहरिये रसिकनको न ये भाउरे ॥ ललनपिया परबीन कपट की प्रीति न दुरत दुराउरे ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी धानी ॥

उठान तीसरी से ॥

(३१०) मोरा मन लैगयोरी मुरलिवारा ॥ बांसकी बँसुरिया बजाके सुनाके नइ नईसि तान कान्ह का कहूँ सखीरी आज वो तोरे करके गान ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ सांवरी सुरतिया जादूकी मुरतिया मानो अमृत चुआत दृग चितवत चितचोर लेति कटिकी कसन पटकी गसन नंदके ललन की फवन पर तन मन लुभान बेप्रमान बेप्रमान ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(३११) कजरवा तू नादेरी तोरे वैसेही नैन सलोने ॥ अंतरा तीसरी से ॥ खारस प्रीति रीति प्रमुदित छवि नित नये ढँग अनहोने ॥ १ ॥ मधकर वंश मीन जल दरदुर झाखत खंजन कोने ॥ २ ॥ निष्फल अमिय गरल मद जगके किये सब रसन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अलोने ॥ ३ ॥ शस्त्रराज पै धार धरिये तौ अब न जानु कह होने ॥४॥ रसिक वृन्द चाकर चितवन के दृग कह जादू टोने ॥५॥ ललन लाड़िली प्रभु वश तेरेहि लोचन बिपति बिगोने ॥ ६ ॥इति॥

ठुमरी धुनि रागसिंदूरा ताल धम्मार ॥

उठान तीसरी से ॥

(३१२) नैना रसमाते भये तोरे रस मदमातेसेरी ॥ अंतरा उठान समसे॥प्रीति पगे रुचि रीति निबाहे जोबन उमँग भरेरी॥ १॥ है उन्नति छवि रोप अँगै अँग धनि धनि थिर तू रहेरी ॥ २ ॥ औरन रोक सकै रुचि रतिकी तूसी तुही जग मेरी ॥ ३ ॥ स्याबस ललनाप्रिया राधे रानी तो सम काहि का हेरी ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी ॥

(३१३)तुमने नाम निशान जगतमें हितको रखो न आंकरे॥ अंतरा उठान खाली से॥ कपटनु प्रीति रीति रीती कर नेहचैकी हन नाकरे ॥ उर गृह गृही चाउ निठुरई शरन सई छलन पिना-करे॥१॥ मन मनसा मनोर्थ आशा चित धरत न हितनु छटांकरे॥ ललनपिया कसकरी श्यामरे नेह जात दै टांकरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

(३१४)तन जहान उर गृह गृही इन्द्री मन नृप जीवन नेहरे॥ शक्तिरूप चैतन्य विहारन सम चित मृष्टित येहरे ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ सो अर्पन मन करत तोर हित वारत सम्पति देहरे॥ तो भावें किंचित निरदई ना निठुर निमोही तेहरे ॥ १ ॥ नय निबहत मै मान सुजीवन हो आनँद घन मेहरे ॥ बरसो कृपा कटाक्षन धारन ललनपिया उर गेहरे ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

(३१५) भगत बगुलई दिखा श्याम मोरा मनु ठगा ठगारे ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ सरल स्वभाव मौनव्रत धारे जग दिखाउ साधूपनकारे ॥ हित नद थिरतट रीत मछरी मारत मन लगा लगारे ॥ १ ॥ छलहित भेष छिपत छिन दिनहीं अंत कुयश निन्दा बेदरही ॥ कपटी कुटिल कठोर ललनपिया दी हरि दगा दगारे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी खम्माच ॥

(३१६) कानकरी रसरीति प्रीति सौतनसों कर हित प्याररे॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ जानगई छलबल ढँग वाके जिनके मीत मुराररे ॥ बन सहेल करहेल मेल हर लैगई सजन हमाररे ॥ १ ॥ अन अब बोलन लियो निगोड़िन ये हितको सखि साररे ॥ नेकी नशी बदी बरपाई सब गुणगये खुआररे ॥ २॥ है न नीचको नेम न नेहचै ओछेकी प्रीति नकाररे ॥ ललनपिया परची सब रंग निज गरजी सब संसाररे ॥ ३ ॥ इति ॥

मोरी निंदिया गँवाय डालीरे । इस धुनिपर ॥

ठुमरी खम्माच ॥

उठान समकी खाली से ॥

(३१७) मोरी चुलिया नशाय डारीरे ऐसोरी अनारी दिउरा मोरी चुलिया नशाय डारीरे ॥ अन्तरा तीसरी की खाली से ॥ अबहीं दरजिया सीं पहिराईरे रंग रंगरिजवा सुधारी रे ॥ चुलिया नशाय डारी रे ॥ १ ॥ सास बकैगी ननँद लख लरैगीरे ललन पिया देगो गारीरे ॥ चुलिया नशायडारी रे ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥

(३१८) मोरी सिजिया बिगोय डारी रे ननँदिया निचली नार हेरी ॥ अन्तरा ॥ दुअरवासों आई पग ना पखारे रे पलकाकी चादर बिगारी रे ॥ सिजिया नशाय डारी रे ॥ १ ॥ ललनपिया लख गारी बकै गोरे बीरनको तोरे डर भारी रे ॥ सिजिया बि-गोय डारी रे ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(३१९) पूरीकरै प्रभु तोर कामना प्रिय प्रीतम मिल बिलसौ मामना ॥ अन्तरा ॥ राजकुमारी राजदुलहीहो नृपकुमार हो तोर साजना ॥ १ ॥ नन्दललन तुहिं करि है सुभागी गोद खिलैहौ ललित लालना ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी बरुवा ॥

(३२०) आओजी आओजी शोचिये समूझके विचारिये जी ॥ कौन चुरालेगयो मोरी गागरको ऐसा ढीठ लबारियेजी ॥ अन्तरा ॥ ध्यानदे ध्यानदे सुरतपै उसकी औ मूरतको उसकी सिहारियेजी ॥ चालपै ढालपै बोलहू चालपै ख्यालसे जी में निहारियेजी ॥१॥ नौकर चाकर जितने हैं औ सतसंगी शुमारिये जी ॥ दैवचहै खुल जायगी वेगही चोरकी चोरी लबारियेजी ॥२॥ रोषकरौ न धरौ न हिये कछु यह छिन शोच बिसारियेजी ॥ नंद-ललन जो दायाकरी दृग आगेहि आवत सारियेजी ॥ ३ ॥ इति॥

ध्रुपद रागिनी आसावरी ॥

उठान प्रथमा की खाली से ॥

(३२१) काहेकी ज्योति प्रकाश रही यह पुष्प की वाटिका माहिं कहाहै ॥ अन्तरा उठान प्रथमा की खाली से ॥ वेष बनाय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दिवाकर तो नहिं आन कमलनिहि भैं रहा है॥ भानु न हो सो तौ मूर्त्ति प्रफुल्लिती पौनके झोंकधौं दीप डिगाहै॥ स्वर्णलता ललन संकोचन ते मुरझरही अतिही अथरा है॥ १॥ इति॥

दादरा रागिनी भैरवी॥

(३२२) ना कहो ना कहो ना कहो जी प्यारी रूखा वचन मोसे ना कहो जी॥ अन्तरा॥ जानी मैं जानी मैं जानी प्रीतिहू पिछानी पिछानी तेरी जीवना धारी मेरी क्या चहोजी॥ प्यारी रूख वचन मोसे ना कहौजी॥ १॥ वारी मैं वारी मैं वारी मैं तेरा तूभी हमारी नन्दललन की दायासे खुशी रहोजी॥ प्यारी रूख वचन मोसे ना कहोजी॥ २॥ इति॥

दादरा राग मालकौश॥

(३२३) हाय देव हाय दैव कैसो कीन्हों बिगार॥ अन्तरा॥ मेरे प्राणको अधार बलवीर श्रीमुरारि मोसों दीन निराधार वासों कर दीन्ह न्यार॥ १॥ नन्दललन सुनु गुहार कोटिन कानन हमार मोर प्राणको उद्धार तुम्हरे हाथ कृपागार॥ २॥ इति॥

ठुमरी रागिनी खम्माच॥
उठान तीसरी से॥

(३२४) सैयां मोरी नजरिया तुमतो आओना॥ अन्तरा उठान समकी खाली से॥ सौतनके तुम राजदुलारे हक नाहक मुहिं तरसाओना॥ १॥ नन्दललन जो तव पद रति मातो रे सो जन काहि अपनाओना॥ २॥ इति॥

आस्ताई आसावरी त्रैताली॥
उठान खाली की तीसरी से॥

(३२५) जागो जग स्वामी तुम जागे जग जागे॥ अन्तरा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उठान तीसरी की खाली की खाली से ॥ जीवनके जीवन धनि माधव ब्रजजन भाग सुहागे ॥ १ ॥ विलसन चहत ज्योति नभ दिनकर शशि उडुगन द्युति त्यागे ॥ २ ॥ जात यमुन मंजन मानुज मग चलन बटोहिया लागे ॥ ३ ॥ भो प्रभात विभात अरुणताहु प्राचीदिश के आगे ॥ ४ ॥ लिये गागरि गोरसकी नागरि भ्रमहि निकुंजन लागे ॥ ५ ॥ लैगो गण ग्वाला वन धावत गावत गुरजरी रागे ॥ ६ ॥ कुमुद अमुद मुद अम्बुज अलिगण विहरत चखत परागे ॥ ७ ॥ कियो संयोग चकवा चकईहू खग मृदुधुनि अनुरागे ॥ ८ ॥ सुर नर मुनि योगीजन जंगम तोर ध्यान रसपागे ॥ ९ ॥ नन्दललन चिरजिऔ लाड़िले जननि दरश वरभागे ॥ १० ॥ इति ॥

दादरा रागिनी पीलू बरुवा ॥

(३२६) ओ बेदरदा दरश दिखलादे तोरे दरशन दी माती अकुलाती ये दुखड़ा मिटादे ॥ अन्तरा ॥ सांवरिया नन्दललन सलोने मनकी आश पुरादे ॥ बेदरदा दरश दिखलादे ॥ १ ॥ इति ॥

ख्याल राग एमन कल्यान तालरूपक ॥

उठान पहिली से ॥

(३२७) हीया मंशा के बादल छाये ॥ अन्तरा उठान ममसे ॥ काम कलान की कुंजन मग मग महानद मोह बहाये ॥ क्रोधकी धारन लोभ लहरिया बूड़त मद मति लाये ॥ १ ॥ तृष्णा तड़ित प्रकाशत अर्थन आसकी फांस फँसाये ॥ असत कुकर्म्मा धर्म्म अनीतिक पौन प्रबल बेहराये ॥ २ ॥ तिमिरा विद्या धिरित पुरित उर ज्ञान भानु न दिखाये ॥ करिये कृपा नँदललन शरनजन चरन टहल मनभाये ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी राग एमनकल्यान ॥

उठान तीसरी की खाली की खाली से ॥

(३२८) खबरिया मुहिंका लादेरे पपीहाए पिताम्मकेरी विधिवत तुहिं सनमानूंगी असन दैकै बसन दैकै भूषण दैकै रतन दै ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ मोरी सुरत की पतियां को सँदेश सांचो सांचो विधान विरच प्रिय प्रिय धुनि धरि सिधार सांवरे सनेही ललन दरश को पकार चहत मनशा यहि मनादे मोर मनशा यहि मनादेरे ॥ १ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी भूपाली ॥

उठान तीसरी ताल से ॥

(३२९) कंचुकी मैं बिउँत नाप राखीरे दरजिया तोरे करनवा रे ॥ अन्तरा तीसरी से ॥ बलम मँगाई न सिमाई दूजे कर सो मैं ननँदिया मोरी पूछले साखीरे ॥ १ ॥ अबकी रँगाई अरगजी अँगिया मैं तो सुघर सिमाई करला अभिलाखीरे ॥ २ ॥ अपने सजनको दिखाऊँ सुघरई तोरी ललनपिया सो कर बदन राखीरे ॥ ३ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी भूपाली ॥

उठान तीसरी की खाली की खाली से ॥

(३३०) नंदकी करत कान कान्हा न जाना मोहिं कंसे रजाकी बेरी मैं सुजाना तू लँगराना ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ जनम रहीरे मोरी अनुजा दासी तोरी जननि यशुदा कुल केर पासी सोई ललन श्याम तोरी सहत ढिठाई अब मेहरकर मँदिर जाना अठलाना ॥ १ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी भूपाली ॥

उठान तीसरी से ॥

(३३१) बावरो रह्योरी कान्ह बापरो मैं आज मात न्हान जात

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यमुनकी मगमें निलज हँसन बोलन बसन गहन निधरक कछु बकन लागो ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ भयो इतक बड़तो कहा कि सहूर गयो नमुदा ललन लरकापन न छुड़तसांवरा निदावरो निदावरोरी सांवरो ॥ १ ॥ इति ॥

तराना रागिनी भूपाली त्रैताल ॥

उठान तीसरी की खाली की खाली से ॥

(३३२) द्रीम तोम तनाना ताना ता देरना देर्ना दीम दीम तोम तोम तनाना तानाना ताना ॥ अन्तरा उठान पहिली की खाली की खाली से ॥ दिया तनाना नाना तनन तनन तना तदी आना नादिर्दिर दानी तुं दिर्दिर दानी तदरे दानी तदानी धिर्किट तकधा धीना तका तधा क्रान्धा क्रान्धा क्रान्धा धा तनाना ताना ता देर्ना ॥ १ ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ ढुरन मुरन स्वर की देख ललन ललित कृत परेख दुरति बिलम तीब्र कर दिखावैं गावैं लैसे तराना न तोम तानाना ताना ता देर्ना ॥ २ ॥ इति ॥

आस्ताई राग मालकौश प्रबन्ध ताल झूमड़ा ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(३३३) अरे मन धीर धर रे सुमिरुरे हरे श्रीहरे ॥ अन्तरा उठान तीन ताल की खाली की अनसरल से ॥ काम क्रोध मद भरे जरे तृष्णा न तीर धावे ऐसो जासु नाम लेत जगतरे ॥ १ ॥ जनकी मनकि सबरे करे श्रीगिरिधररे ललन श्याम सनेही कि शरन गहुरे जो अघटरे ॥ २ ॥ इति ॥

हिंडोलना मैं कांई झूलो राज । इस धुनिपर ॥

दादरा रागिनी अमनी ॥

(३३४) मोरी कनक मुँदरिया सैयां खोयडारीरे हां ढूंढ़हारी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सारी सेजरिया सैयां खोयडारीरे ॥ अन्तरा ॥ सासू से छिपाई नहिं ससुरा दिखाई मैं तो जिठवा के आगे न कभू निकारी रे हां ॥ १ ॥ छोरा सों दुराई न छोरनियां बताई गुइयां अपनी जिठनियां सों रखी मैं न्यारीरे हां ॥ २ ॥ ननँदि न निरखी ननदुइया न निहारी सखि ललनपिया की बुधिकी बलिहारीरे हां ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी से ॥

(३३५) कर को कँगनवां खुल खुल जावे अँगिया को बन्द सरक जावे चूरी करक जावे बाईं भुज दृग जंघा फरफरावेरे ॥ कँगनवा खुल खुलजावे ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ कटि किंकिनि नूपुर बिगतत छिन छिन पियकी सुधि मोहिं आवे शुभ सगुन होत कछु जान परत कोइ ललन श्याम आगमन पाती धौं कोउ सँदेश आके सुनावेरे ॥ कँगनवा खुलखुलजावे॥ १ ॥इति॥

ननँदि मोरे रामरे ननँदि मोरे रामरे । इस धुनिपर ॥

दादरा रागिनी बरुवा ॥

(३३६) मोहन की मैं छल बतियों पै वारी वारी ॥ अन्तरा ॥ भेष बनाये चंद्रावलि के बलम को गौना कराये लिये जारी ॥ १ ॥ ललिता ललित ललन कृत निरखी कैसो निडर मुरारीरे ॥ २॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माचमलार ॥

उठान खाली से ॥

(३३७) पिय लागी मैं तुम्हरे पांयन करजोरी मिनती कर हाहा करी मैं बलि बलिगइ बलिहारी वारीवारी तोरे मुरारी ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ तुम न तजत कुबिजा को हेत जग हांसी करत नहिं लाज तोहिं मैं तो ललन श्याम सब विधि कहि हारी वारी॥ १ ॥इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी परज ॥

उठान तीसरी की खालीसे ॥

(३३८) छल बल प्रपंच सागरिया श्याम मोसे नित उठि करत ढिठाई लँगराई मेरे बैर परोरी कर धोय गुरिया ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से॥ बीर येरी वो नाहीं मानत मोरी ढीठ अपनी कहत न सुनत औरहू की कलु ललन श्याम सों मैं तो हारी वारी वारी यदुराई दुखदाई अतिही बनमलिया ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली से ॥

(३३९) काहेको बढ़ाई मोसे कुटिल कन्हाई रार कैसोरे अनारी दीन्हीं मोरे गलबहियां डार ॥ अंतरा उठान तीसरी से ॥ हटके हटीलो हठि औरहु करत ढीठ मानत न मोरी सीख ललन पिया मैं तोरे छल बल औ ढँग ढँग सों गइ हार ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली से ॥

(३४०) बन ठन आई आली देखो नइ नइ नार ॥ नैनवा नजरा कजरा दिये किये शृँगार ॥ अंतरा उठान समकी खाली से ॥ गोल कपोल मुख चंद्र चारु भ्रुकुटि कुटिल चपल नैन दोउ ललनपिया नवेली अलबेली चतुर सुघर सुकुमारि ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खाली की खाली से ॥

(३४१) न जैहों न जैहों आली यमुन भरन नीर ठाढ़ोरी कन्हैया होरी खेलत कुंजन तीर ॥ अन्तरा उठान पहिली की खाली की खाली से ॥ अबहीं बात गई पनियां के काज मोरी गागर गेरी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लँगर गर्वा लगायो मुखमलो अबीर अति शरीर बलको बीर ललनपिय मेरो बोरो रँग में चटक सुघर चीर ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥
उठान सम की खालीसे ॥

(३४२) जोराजोरी मोरी चूनर पै दीन्हों रँग डाल नैनसों तक मारी पिचकारी नन्दलाल ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी अनसरलसे ॥ लँगर लँगराय लियो लिपटाय आय अबिर मेलि मुख गुलाल ललनपिय ऐसो निडर गोपाल ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी दूसरी तर्ज ॥
उठान खालीकी खाली से ॥

(३४३) रात पिय वश भई सखीरी जोराजोरी मोरी बहियां गहिलइ नहिं मानी वेगही मोरे डार दीन्हीं गलबहियां सैयां ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ औचकहि ढिग धाय सेजिया पै मोरी आय लीन्हों मोहिं लिपटाय हँसि हँसि मुसक्याय ललनपिया न मानी परी मैं बहुत पैयां ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी मुलतानी ॥
उठान खाली से ॥

(३४४) सैयां बहियां मोरी छांड़ दे रे बतियां मोरी मान काहे को करत कुटिल मोसे तू रार नाहक बारबार ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ सेजिया न मैं तो पग धरिहों कोटि कर बराजोरी करत डारत काहे गलबहियां सैयां मोरी छांड़० ॥ १ ॥ अपनी गरज अब मिनती करत मोरी नितहि करत रहे मोसे निठुरैयां चतुरैयां ढीठ छांड़० ॥ २ ॥ सौतन के घर जाओ मुहिंका नित तरसाओ ललन पिया न मानूंरी तोरी मिनती सैयां बहियां मोरी छांड़० ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्रुपद राग भैरव॥

उठान प्रथमा की खाली से॥

(३४५) जागिये गुपाल लाल भोरभयो प्यारे रे जग जन जागे सकल गृह कृत अनुरागे॥ अन्तरा उठान समसे॥ अंबर अरुणाई छाई प्राचीदिशि छविसुहाई तमचुर विस्तरित बैन काग बोलन लागे॥ १॥ चकवा चकई सँयोग भा चकोर कर वियोग उडुगन शशिकलाहीन द्युति विभागे॥ २॥ (अभोग) भानु भा प्रकाशमान कुमोदिनी कुम्हिलान ग्वालिन गोरस गोहरान यमुनयात्रियुति विरागे॥ ३॥ (भोग) बटोही बाट बेहरचले पंकरूप्रपुंज प्रफुले ललन जीवन जन तव दरश रसपागे॥ ४॥ इति॥

ठुमरी रागिनी भैरवी॥

उठान समसे॥

(३४६) कृष्ण काहि घरन घरन डोलत फिरत गोरस चोरस तुहिं न जुरतनलत॥ अन्तरा खाली से॥ तोर मँदिर नवनीत छांछ दधि दूधकी का कमताई कान्ह ललनपन की नहिं छुटत बानि जानि सकुचत॥ १॥ इति॥

ठुमरी रागिनी खम्माच नई धुनि॥

उठान खाली से॥

(३४७) चन्द्रवदन गोरे गात छबीली नारी छवि न्यारी न्यारी चितवन जादूवारी॥ अन्तरा समसे॥ नइ नइ नार रूपकार अँग अँगे शुभसजे शिंगार लखबहार ललनपिया वारा वारी॥ १॥ इति॥

ठुमरी रागिनी काफी॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(३४८) छलबल कर छतियां मसकदई ऐसो ढीठ लँगर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मतवारो छैल ॥ अन्तरा खाली की अनसरल खाली से ॥ बैयां गही नहिं मानी कही मोरी करकी चुरियां करक गई ॥ १ ॥ नंद ललन मनमोहन छलिया गरवा लगाय बलैंलई ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(३४९) मारखावोगे सुनोजी इस पै बाजआवोगे न ऐसे तुम निडर श्याम ठढ़े ठाढ़े रहो नोखे छैला निपट अनारी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥तुम्हरी दुहाई लूंगी मुरली छिनाई अभी मानोगी नै मानो तभी भये ढीठ भारी ॥ १ ॥ अब कौन आवैगो सहाय करबे को तोरा ललनपिया कहोरी हां हां जी मुरारी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(३५०) काहे गहेरी गुमान येतो बार बार अलबेली आली रूप नवेली ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ पीतम मनावत न मानत मनाये मान बैठी भ्रुकुटी को तान मदनकमेली ॥ १ ॥ ललनपिया पियारी और भलोरी पाय भूली मत भोरी जाय मातिलेली॥२॥इति॥

ठुमरी जोड़े की ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(३५१) बराजोरी जोरा जोरी मोसे करत रार ऐसो ढीठ अनोखो छैला नंदको कन्हैया ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ औचक सौं ढिग आय अंचल गहत धाय चंचल ले लिपटाय ढीठ अधिकैया ॥ १ ॥ ललनपिया सो आली नटखट बनमाली दीन्हीं बिन काज गाली बड़ो निरदैया ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़की ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

॥ (३५२) मनमोहन अनारी अँगिया हमारी फारी ऐसो चंचल चपल भारी छैला छलधारी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ वंशीवट यमुना निकट पनघट तट अटको नागरनट दीन्हीं बहु गारी ॥ १ ॥ ललनपिया मुरारी लोकहूकी लाजटारी मदनविहारी वारी बड़ो झिगरारी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

॥ (३५३) चलो जाओजी जाओजी मोसे करो न रारि नहिं मानत हटक मोरी कहीं करोर ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ तोरी लँगराई चतुराई सब मैंने जानी तोसे मैं अधिक स्यानी नंदकिशोर ॥ १ ॥ काल के कन्हाई करो कुटिलाई मोरे आगे तनक न लाज लागे अचरा छोर ॥ २ ॥ ललनपिया सों प्रीति पुरवो मुरारी नीति भक्तीवर बहु रीति कहत निहोर ॥ ३ ॥ इति ॥

हिंडोला ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खाली से दूसरी धुनि ॥

(३५४) जोराजोरी ना मैंना जाऊंगी काहे को बढ़ाई मोसे मोहनरार ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ झूले जिया झिझकत तासों मैं करत हट तुम सों नागरनट मानत न अरज बरज मुरार ॥ १ ॥ छांड़ो मग जाओ चल रचो न मोसन छल ललन न मैं निबल तुम न कोऊ के इजारदार ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली की खालीसे दूसरी धुनि ॥

(३५५) मुरारी मोरी बैयां मरोर डारीरे ऐसोरी कान्हैया निपट निरदैया ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ झिंझट में हरवा गरवा लैरे कटक झटकायो न डर चितलायो ललन नंद करो बेड़ा अनारी रे ॥ १ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी खम्माच ॥

(३५६) बेदरदा बनवारी झपट झट बैयां गहतहै ॥ अन्तरा ॥ जानि डिरात सकुचात न तनकहु ढीठ निडर छलधारी ॥ झपट झट बैयां गहतहै ॥ १ ॥ हां हां करत त्यों त्यों औरहु लरत मोसे दै दै अटपटी गारी ॥ झपट झट बैयां गहतहै ॥ २ ॥ ललनपिया अब जानदे मोहन तुम जीते मैं हारी ॥ झपट झट बैयां गहतहै ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

तालरूपक उठान दूसरी से

(३५७) नटखट निपट नटवर अली छल बलकी बतियां कर छली बँसिया बजाय रसभीनी छली ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ पकर कर व्रज कुंज मग बिच अङ्कभर कर कुचिकरी मृदु हँसि हरो हिया नंद ललनपिय सों न एक अली चली ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी खम्माच ॥

तालरूपक उठान दूसरी से ॥

(३५८) लागी लागी पिरतिया न पार परी ॥ अन्तरा उठान दूसरी से ॥ खाई मोरी धुआई तब मिताई जाई अन्त ढिठाई चतुराई हरी सखि करन लागे छल बल निरखु नँद ललनपिय नई सौत करी ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

॥ ठुमरी देश मलार ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(३५६) पिय पाय लाय उर लीना सोइ सौत तू भई मलीना ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ मोर निरख मुख जर मरि बैरिनि छिनहूं देख सकीना ॥ बरसन रही मोर बरसन जब तब जिय कसक भईना ॥ १ ॥ परसंताप करत नाहककही वह दिन ना वह घरीना ॥ अब उन बूंदन भेंट न जानहु भये भाग तोरे हीना ॥ २ ॥ बहु दिन तरफ बितय वन बिरहिन कबहुँ मैं सेज सजीना ॥ दइ दइ कर मिलो नन्द ललनपिया कह मम नाथ दईना ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़की राग देश मलार ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(३६०) मोरे जागे भाग नवीना सौतन सों पाय पिय लीना ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ आजकी घड़ी सुहाग भाग भरी भयो सुफल जग जीना ॥ धनि दइ दया अमित सुख सुहिं कर मोरे तरुफलरीना ॥ १ ॥ सज सखि रंगमहल सुखसिजिया कबसन केलि करीना ॥ ललनपिया प्रिय पाय श्यामसों नित आँनद रँगभीना ॥ २ ॥ इति ॥ ठुमरी जोड़ेकी रागिनी देशमलार ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(३६१) भाग अपना अपना सबका री अब क्यों जरि मरत वृथारी ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ नित प्रति लरत रहत रही क्यों पिय सों भरि गुमान युवनारी ॥ प्रथम सोचल्ई यह बतिया अब कह सोच विचारी ॥ १ ॥ उचित रहो परसन हितसों पिया जासन सुख हरवारी ॥ नन्द ललन प्रिय प्रेम वत्स प्रिया जस सँग तस हितकारी ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोरी बहियां न मरोरो गिरिधारी श्याम । इस धुनि पर ॥

ठुमरी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरीकी अनसरलसे ॥

(३६२) मैंका निपट निडर गरवा लीन्हेंरे ढीठ बराजोरी करत मोरी न माने आली नँद निपट नटखट मग बिच ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी अनसरल खाली से ॥ जोराजोरी मोरी बहियां औचक गहि लीन्हीं मसक डारी बँगरी गईं करकीं चुरियां कँगनवां करकोरी आली ललनपिया ऐसो निडर मोसे झिगड़ो कीन्हेंरे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच अमनी ॥

उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(३६३) न मानी सैयां गहिलीन्हीं नरम कलाईरे बराजोरी बरजोरी बरजोरी बराजोरी जोराजोरी दई मोरी कर मुरकाई ॥ सैयां गहिलीन्हीं नरमकलाईरे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ करकगईं चुरियां मोरी सारी करको सुघर करको कंगनारी बगरि गईरे न्यारी न्यारी अधिकाई सैयां गहिलीन्हीं नरम कलाईरे ॥ १ ॥ कसकतहै करमोरारी सजनी तलफत बीतगई सारीरजनी ललनपिया श्यामरो बड़ो अनियाई सैयां गहि लीन्हीं नरम कलाईरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी अमनी खम्माच ॥

उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(३६४) न जाओ सैयां सिजिया पराई सो पराई रे ॥ अन्तरा उठान समकी खाली की खाली से ॥ ना सुख चैन न दृग भरि निंदिया तिरिया पराई सो पराईरे ॥ १ ॥ अपनो मानसे मान ललन शोभा पराई सो पराईरे ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

॥ ध्रुपद राग पावस ॥
॥ उठान समसे ॥

(३६५) आयो अषाढ़ आगम शोचको दिखाई परत पिय बिन जिया धीर धरतना अधीर ऐन ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ कासे कहूं जाय देय हितू जो मिलाय मोर उन बिन दिन रैन सखी नेकहू न परत चैन ॥ १ ॥ (अभोग) गरज सुनावे घन बरसावे बार छिन बलम विदेश बैस यौवन सतावै मैन ॥ २ ॥ (भोग) पीपी पपीहरा रटत छाती सुन मोर फटत नँदके ललन दरश काज निशि दिन मग तकत नैन ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ ध्रुपद राग देश मलार ॥
॥ ताल सवारी पचकौल उठान सम से ॥

(३६६) सावन उमँगावन मन बरसन को आवत घन ऐसी ऋतु माहिं पिउ विदेश ना सिधारिये ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ घर घर व्रजनार सजि शृँगार पिय प्यारन सँग झूलती हिंडोलन हँसि गावती मरारिये ॥ १ ॥ (अभोग) सर्वही विदेशी भये भवनन विराजमान तुम कह जिय ठानि कौन सौतन सुख निहारिये ॥ २ ॥ (भोग) नन्दललन जीवन कान्ह तुमबिन कस रहब प्रान तुम सुजान नहिं नदान सोच जिय विचारिये ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ ध्रुपद राग पावस ॥
॥ ताल सवारी फरोदस्त उठान समसे ॥

(३६७) भावे न भादौंमास पिया नाहीं मोरे पास उनबिन जियरा उदास दिवस रैन रहतहै ॥ अंतरा उठान समसे ॥ कैसे करपाऊं श्यामसुन्दर अँग लाऊं तपत बिरहा की मिटाऊं अब जिया यह चहत है ॥ १ ॥ (अभोग) रूपकी नवेली हूं अकेली

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सहेली सुनु सुमनन की सेज मुहिं अँगार सम दहत है ॥ २ ॥ (भोग) दुःख को पहाड़ बिन मुरार करै पार कौन ललनप्रियै अ-नाथ अब सनाथे सुख लहत है ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग हमीर ॥

सवारी चारिताल उठान समसे ॥

(३६८) आसरा आसौज को अधिक मनमाहीं लाग गिन गिन दिन काटूं बाट ताकूं मनभावन की ॥ अन्तरा उठान सम से ॥ बीती बरसात सोई एकहू न रात साथ पीतम के विना बात पूंछै कौन मनकी ॥ १ ॥ (अभोग) जाने कहां छाये किन सौ-तन लुभाये न पाती तक आती दिखाती सजन की ॥ २ ॥ (भोग) करूं को उपाय सखी कासे कहूं जाय जो ललनपिया प्यारे की सुनावे सुधि आवन की ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी गौरी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(३६९) रँगलादे रे रँगरेजवा सब सखियनसों चुनरिया मोरी रँगीली ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ अबकी रँगाई दूंगी दूनी मैं समुझ तुहिं जो मोरे पिया के मनकी ला उढ़ादे ॥ १ ॥ नन्द-ललन पिया रसिया राजी रह्यो जो जनु बकशीश न का दे ॥ २ ॥

दादरा रागिनी गौरी ॥

(३७०) निद्रा नींदा ननँदिया बैरिन भई आवतु नाहीं म-नाये मिजाजिन विरह दुसह दुहाइ दुना दइ ॥ अन्तरा ॥ नेकु नहीं अलसावतु नैना न आननहूं जमुहावत ऐना बरन बरन यतन करूं न नन्दललन मिले दई रे दइ ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी राग वसन्त ॥

उठान खाली से ॥

(३७१) ये द्रुम द्रुम लता लता पता पता बेली बेली नबेली अलबेली छवि की छटा छटा घटा घटा शुभाइ सुहाइ रँगे रँगसों ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ श्वेत श्वेत पियरो पियरो केते केते रँग अनेक सुमन सुरंग फूलरहे अलि मतंग गूँजत रसलेत प्रेम ऋतु वसन्तछाई ललनपिया अनंद लहत नितप्रति नये नये ढंगसों॥१॥

ठुमरी राग मालकौश ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(३७२) आई वसन्त बहार भवँरा गूँजत डार डार कर गुञ्जारेरे॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ नव पल्लव लतान द्रुम बेलनियां भांति भांति उमंग रही मद यौवन रस रँगसों ढांग ढंगसोंरी आली ॥ ललनपिया शोभा देखि वारी वारी बिधि विचार ऋतु शृंगार॥ १ ॥

ठुमरी रागिनी देश मलार ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(३७३) क्यों निठुरबनी पियसोंरी कहि कहि कठोर वचनोंरी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ अब पछितात पीछली बतियन पहिलेहु क्यों न निहोरी ॥ जो कछु कियो तासु फल आगे अब कह सोचति गोरी ॥ १ ॥ कुशल चहौ पग परिय अजहुँ मन गरज जो सौ सौ होरी ॥ नन्द ललनपिय मिलउ तोहिं पुनि मनमाहीं मौज करोरी ॥ २ ॥ इति ॥

सादरा रागिनी सोहनी ॥

शूलताल उठान समसे ॥

(३७४) ये बालमा तुमसोंरी मोरी अरज गरज लागी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लगनिया सुनेहा भरी उमँगसों ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ दरशन हित विकल रहत घड़ी पल छिन कल न परत नन्द के ललन तोरे बिन बैरी बिरहा सतावे मदन सब रँगसों ॥ १ ॥ इति ॥

मोरी बहियां न मरोरो गिरिधारी श्याम । इस धुनि पर ॥

ठुमरी रागिनी काफी ॥

उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(३७५) मैंका बराजोरी गरवा लगायो श्याम ॥ अन्तरा उठान समकी खाली की खाली से ॥ सुनतरही नँदसुत ढिठपालिया (यहां से दून प्रारम्भ) सो अचरज लखि आज सहश मोरा तन मन जिय घबरायोरे राम ॥ १ ॥ अब नाहिं भवन द्वार पग धरिहौं ग़ज़बी गुरिया यशुदा को ललन मुहिं निरखि अकेली लँगरायो निकाम ॥ २ ॥ इति ॥

प्यारी अबतो गले लगायले । इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की अनसरल ॥

(३७६) आज हमरे सुफल सुहागरी सुहागरी भागरी जागरी मोरे पिय मिले अँगसों लागरी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ धनि धनि यह घरि लग्न मुहूरत सुफल योग तिथि वाररी धानि धनि तन धनि जीवन अपनो ललनपिया सुख पागरी ॥ १ ॥ इति ॥

मैं तो तुम्हरे मिलन को आईरे । इस धुनि पर ॥

ठुमरी रागिनी अमनी ॥

उठान तीसरी से ॥

(३७७) पिया तोरी निठुराई मुहिंका न भाईरे बात करत अट-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पटि चटपटि मोसे दपट झपट मोरी बैयां मुरकाई तोरी निठुराई मुहिंका न भाईरे॥ अंतरा उठान खाली से॥ लँगर ढीठ मतवारो कन्हैया ये दैया दैया निरदैया अँचरा गहि गरवा लियो लिपटाई॥ तोरी निठुराई मुहिंका न भाईरे॥ १॥ जनि लजात सनमुख सखियन के धाय परत जिय चहत करत सोई ललनपिया मैं जानी जानी चतुराई॥ तोरी निठुराई मुहिंका न भाईरे॥ २॥ इति॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी॥

उठान तीसरी से॥

(३७८) भ्रमत भ्रमत आज बावरी भई कैसी करूं बनमाली बिन खाली भवनरी॥ अन्तरा उठान तीसरी से॥ को यतन अब मिलब ललनपिया सांवरे सुंदर मुरली मुकुटवारे दइ॥ १॥ इति॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(३७९) दरशन के काज रहे अटक नैन दिखला जा सूरत सांवलिया॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से॥ दिन रैन चैन नहिं परत मोहिं जिया तरफत है भई बावरिया॥ १॥ नहिं खान पान कछु करत प्रान तन सूख मेरो भयो लाकरिया॥ २॥ वसु यामके काम बिराम किये बिरहा दुख बाढ़ो सागरिया॥ ३॥ कह बात अनाथ सनाथ करौ लै हाथ सुनादेउ बांसुरिया॥ ४॥ इति॥

ठुमरी राग सुहाग॥

उठान समकी खालीकी खालीसे॥

(३८०) अधर बांसुरी बाजी बाजी गुइयां उचट गइ निंदियारी गुइयां तनक भनक परी कान॥ अन्तरा उठान समकी खाली से॥ वेगि बताओ को गली अली अली जाऊं मदन जागो कल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

न देत मारत बान ॥ १ ॥ नई तान सों प्रान हर वश कियो ललनपिया बिरहा बैरी कीन्हो नकवान ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी तिलंग खम्माच ॥

उठान पहिली से ॥

(३८१) नैन भरि आये पिया देख हरष लिये प्रेम उमँगि आयो जिय अधीर अनँद कीन्हों कल न परी बेगि धाई उरलाई पकर कंज करसों सखि ॥ अंतरा उठान तीसरी की खालीसे ॥ आज भाग जागे अँग सों अँग लागे भागे सकल शोच ललनपिय धनिधनि शोभा निशि भर लखतरही मन मुकुरसो सखि ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खालीकी अनसरल से ॥

(३८२) ना कदर मोरी कीरे सनद पिया नया नया रंग सदा रँग सों हेत मैं कियो ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ तजत मोहिं नित बसत घर ललनपिया सो मोरी अबना निभैगी सखियो ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खालीकी खाली से ॥

(३८३) लगाई मोसे बांकुरी प्रीति बावरी बनाई बिसराई सुधि तन मनकी सखी ॥ अन्तरा उठान समकी अनसरल खाली से ॥ सजनवांकी अलबेली अलबेली रीति नये नये ढँग ललनपिय नोखेई करत काकरूँ काकरूँ वासों जीत जनि परखी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी भैरवी ॥

उठान पहिली से ॥

(३८४) सनद मोरी आज लगन भई पिय सों मिली रतियां

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छतियां लागी गुइयां॥ अन्तरा उठान समकी खालीसे ॥ भागसों सुहाग जागे पिया मोरे प्रेम पागे अनुरागे ललनापिय श्याम सनेही राज ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी भैरवी ॥

उठान पहिलीकी खाली से ॥

(३८५) रँगीले रसमाते गाते मुरली तान बजातेरे सुनाते॥ अंतरा उठान समकी खालीसे॥ आली आज उनकी दया दीर्घ देख मोहनी मूरत सोहनी सूरत ललनपियारे जिय भुरमाते ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी भैरवी ॥

उठान समसे ॥

(३८६) कवन विधि जाऊं डगर बिच ठाढ़ो भवन की बारी बिहारी बराजोरी करें ॥ अंतरा उठान समसे ॥ शीश मट्ठुकिया जल भरी बिराजे दूजे अकेली नवेली गात मोरी ललनपिय आज लाज दइरे दई धरें ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी आस्ताई॥

उठान तीसरी की अनसरल खाली से ॥

(३८७) छांड़ अँचरा मेरा मेरा एजी एजी माई वाले ढीठ ढोटा मान॥ अंतरा उठान खालीकी खालीसे ॥ लाज लगत ना लगत जो मग बीच ललनपिया निरखत सखियां मोहिं जा जारे जानूं सब छलबल तेरा तेरा घनेरा एजी एजी माईवाले ढीठ ढोटा मान ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खाली से ॥

(३८८) डगर मोरी छांड़ो छांड़ो छैलवारे मोरी मानोजी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मानोजी मानोजी नटवारे॥ अंतरा॥ उठान पहिली की अनसरलसे॥ गलिन गलिनको जांचत डोलत बानि कह तिहारी ललनपिय नटखटवा बैयां ना गहो मोरी ना गहो ना गहो ऐसे फैलवारे॥ १ ॥ इति॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी भैरवी॥
उठान खाली से॥

(३८६) ललित छवि बांकी बांकी सैयां की लगे ललित छवि बांकी जगमगात ज्योति जोबनवांकी शशिमुख की॥ अन्तरा उठान तीसरी की अनसरल खाली से॥ उमँग रह्यो उमँगसों मदन तन प्यारे ललनपिय की प्यारी बतियां नीकी लगैं जीको ठगैं भई उन्हाकीरे॥ १ ॥ इति॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी भैरवी॥
उठान तीसरी से॥

(३९०) निडर ऐसो का करों कान्हा सखीरी पनघट की बाट बिच बराजोरी कीन्हीं॥ अन्तरा उठान तीसरी तालसे॥ बार बार बरजो बिहारी ललनपिय मैं वासों हारी उलट दीन्ही गारी अँग लीन्हीं॥ १ ॥ इति॥

ठुमरी रागिनी भैरवी॥
उठान पहिली तालकी खाली से॥

(३९१) अजब दृग आंजो अँजनवा निरखि नैना मारी कटारी मोरे जियासों सखी॥ अन्तरा उठान खाली से॥ भौं कमान दृग बान तान चितवन तन मन वच क्रमकर वश कीन्हों नन्द ललनपिया मोह्यो जिय मोरा प्रिया सो सखी॥ १ ॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खाली की खाली की खाली से ॥

(३६२) निरखि ललिता सखि लाड़ली सँग लीन्हे यमुन पुलन कुलन कदम्ब पुंज विहरैं गहे गलबैयां ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ प्रीति रीति निधि दोउ पुनीत बहु बहु रीति रूप राजैं ॥ मन्द हँसन बरसन प्रसून मनु हरत बेगि जिय श्रीनंद ललनपिय की बलिजैयां ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(३६३) दरवजवा मोरा झांको आनि भोरहीते गोरस माखन चोरन कारन कान्हा ॥ अन्तरा उठान पहिलीसे ॥ बीर पेखि मोहिं जागत भौन यमुना सिधायो नहिं हाथ आयोंहौं डपटि झपटि बहु यतन करके हारी नँदको ललन नहिं नेक डराना ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खाली से ॥

(३६४) इतनी बिनति मोरी मान पियप्यारे सौतन मँदिरवा न जा यार समलियारे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ जिया जारत वियोग शर मारत बिरहा मदन दुख बदन बिदारत नन्दललन कहे दुखिय दुखावनकी परी तोरी बानि पिया प्यारे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खालीकी अनसरलसे ॥

(३६५) सब रँगन रँगलाई सब रँगसों पै मैं रँग लाई तोरा रँग करके चतुराई ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ मैं अकेलि वा सँग परिकर बहु लाज कपट छलबल सकुचन भय तात मात भ्रात पती

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कुल सहेली लोककानि नवल गात नव स्वरूप छवि अनूप झिझक प्रान इन ठगन ठग लाई ललनपिया श्यामसुन्दर तोरीदुहाई॥ १ ॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खालीकी खालीकी खाली से ॥

(३६६) जो हम तुम राजी मिलत रहें का करब काहूकी अचकरी औ गई ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ हमरे मनकी हमहिं जानत तोरे जियाकी जानत दई ॥ रखिये कृपा ललनपिय पर प्रभु करत रहत तुमसों अरज नइ नई ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥

उठान पहिली की खाली की खाली से ॥

(३६७) मोहन कहँ जागे लागे किन सौतिनियां के गरवा जाय रजनी आज ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ अतिअलसात जमुहात छिन छिन डगमगात पग धरत धरणि बिच ललनपिय महराज ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(३६८) वारी मैं मोरी ननँदिया वारी वारी कैसे के जाऊं घटवा भरन पनियां मैं गोरी जानत नहिं बाट घाट दूजे सुनत मग रोकत लँगरवारे ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ बीर बेहर चलु मोरे सँग तू आज मेहर इतनि करु एसान मोपर नँद के ललन सन डरत जियरारे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(३६९) अवकासहिकी बात करम गति ॥ अन्तरा उठान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तीसरी की खाली से ॥ कबहुँ हते पिया मोई हत मोपर अब सौतन सों नात ॥ करमगति ॥ दोहा ॥ मनवृति चंचल तुरँग सम थिर न रहत क्षण एक ॥ जैसे लहर समुद्रकी आवति जाति अनेक ॥ १ ॥ कबहुँ न रहत सुख सदा एकसम विधिगति कहिय न जात ॥ करम गति ॥ दोहा ॥ सदा न काहूके रहत धन यौवन छविगात ॥ ललती फिरती छहँ ललन इत आवत उतजात ॥ २ ॥ हा हित तैं नँदललन मिलै पुनि क्यों सुख कीन्ह निपात ॥ करमगति ॥ दोहा ॥ विधि न उचित तोहिं यहरही कर पियसों संयोग ॥ पुनि बिछुरायो नँदललन दै हिय सोग वियोग ॥ ३ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(४००) तरफ तरफ तुम बिन सगरी मैं गँवाई रैनियाँरे गँवाई रैनियां रे ॥ अन्तरा ॥ दरश कारण व्याकुल नैन मिलजा पीतम प्यारे ॥ १ ॥ नंदललन चरण शरण रखिय मुहिं सदारे ॥ २॥इति॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(४०१) रखों कैसे प्राण तड़प तड़प उन बिन जिय जारे ॥ अन्तरा ॥ अँखियां पिय दर्शनकी प्यासी देत न दरश दुलारे ॥१॥ ललनपिया आरत करुणानिधि क्यों जन सुरत बिसारे ॥२॥इति॥

पद रागिनी भैरवी ॥

तालरूपक उठान समकी खाली से ॥

(४०२) अरे नाथ तूजो दरश न दिखावेगा ॥ मुझको भी तू फिर तो जीता न पावेगा ॥ १ ॥ अंतरा ॥ मरताहूं तुझपर न भाता है कुछभी ॥ तेरे बिन मेरी को तपतको बुझावेगा ॥ २ ॥ तुहै था तुही और होगा तुही फिर॥ तौ पायक किसे फिरके जा अपनावैगा॥३॥ जाहिर जोहै बात उसको कहूं क्या ॥ अपना वो जो वक्त पर काम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आवैगा ॥ ४ ॥ ओ नंदके ललन प्रानप्यारे हमारे ॥ भला कबतलक तुझको ऐसा सतावैगा ॥ ५ ॥ इति ॥

गज़ल रागिनी भैरवी ॥

(४०३) ऐसा न हो ज़ालिम वो मेरा यार बरग़लावे ॥ ख़तरा रक़ीबों से कहीं उसका न दिल हटादे ॥ १ ॥ ज़ुदा जब से हुआ जाना ज़ुदाई में तड़पता हूं ॥ क़ासिद तू उसकी खबरज़राला मुझे सुनादे ॥ २ ॥ मौज़ूं है तबीयत नहीं भाता न सग़ल कुछ ॥ क़िस्मत में लिखा क्याजानूं क्यों ख़ुदा सज़ा दे ॥ ३ ॥ जाना वो मेरी जानपर खेलाहै खुलके खूब ॥ अच्छा येहि समझाहै गर बेहतर मुझे मिटादे ॥ ४ ॥ सदमें सहे अबसहो इश्क़ में उस यार के ॥ अब तो करमकर अपना नंदललन दरश दिखादे ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी तालांकमुद्रित ठाह दूनबोलों की राग लच्छाशाक ॥
उठान समसे प्रारम्भ ठाहसे ॥

(४०४)(ठाह)[२]शुभदिन(दून)[३]मुरलीमुकुट[४]वारे आज दरश [१]दीन्ह (ठाह) री मोहें ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ प्रारंभ ठाह से ॥ [३]लाहा लह्यो [४]धनिभाग (दून) [१]सोहाग जबसों [२]लगन लागी [३]आश [४]ललनपिया रे भयो [१]सनाथ (दून) [२]वारी वारी जा [३]घरि पल छिन लगन [४]मुहुरत आनँदद[१]दा सोहें ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की राग लच्छाशाक तालांकमुद्रित ॥
ठाह दून बोलों में प्रारंभ दूनसे उठान खाली से ॥

(४०५) (दूनसे) [४]घरि पल छिन कल (दून) [१]पावाता[२]ना

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(दून) आन तन दृग[३] निदरिया सहेलरियां[४] पिय बिन मुहिं[१] का नाहीं कटत[२] दिन रतियां (ठाह) बीरहाकी[३] ॥ अन्तरा प्रारंभ दून से उठान खाली की खाली से ॥ भांति भांति[१] बिथा गूढ़ गोविन्द[२] बिन विह (ठाह) एता ताना (दून) नंद[४] ललनपिय प्यारे[३] दरश को (ठाह) जिया ललचावाता हां ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग केदारा ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(४०६) कर कंकन केदार को गढ़ लादे मुनरारे मीत-पियरवा के मोरजड़ लारे ॥ अन्तरा उठान पहिली की खाली से ॥ कबसनते तैं निशिकरत झिगरत हा हा करत पैयांपरूं तिहारी ललनपिय हरिसों न ल्योंगी जो बहुरि फागुन चलारे ॥ १ ॥ इति ॥

आस्ताई राग सिन्दूरा ताल तिउरा ॥

उठान समकी खाली से ॥

(४०७) अचानक पियसों भेंटभई ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ सपने में मुहिं आन मिलेरी आनँदके भये ठाट घनेरी मदन जागत दृग खुलत लखि कहुँ न कछु चकगइ ललनपियकी छबिजिय बसगई ॥ १ ॥ इति ॥ ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खाली की खाली से ॥

(४०८) रसबतियां कीन्हीं मोसे रात मोह्यो तन मन। जीरा वश कीन्हों ननँदिया पी आज ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ सांवरे ललनपिय की छबि न कहे सकूं कोटि कलन मनमथ लजात ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हां मुरली धुनि मधुरि कहिं बाजीरे। इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(४०६) छल बतियन में कारे कारे कृष्ण अटि पटि प्रीति तिहारी झूठी नाकरूं नाकरूं जा जारे जा जारे ॥ अन्तरा उठान पहिलीसे ॥ हूँ तो मिलत हित चित सों ललनापिय तुम कठोरता धारे धारे ॥ १ ॥ इति ॥ ठुमरी रागिनी मलारी ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(४१०) मनमोहन मनमोहन प्यारे सखि जात रहि यमुना किनारे सँग सखा सारे नटवर वो वेष धारे बँसिया बजाय जादू सा डारे ॥ अंतरा उठान पहिली की खाली से ॥ नँदको ललन जब सों निरखो नैनन हमारे कलसों कल न परे क्यहुकल आकुल रहत जियशरे उन सों रट मिलबे की धारे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी अमनी झँझौटी ॥

उठान तीसरी से ॥

(४११) छांड़ो जी अंचरवा मोरारे ऐसो ढीठ छैला छलबलिया बराजोरी करत मग चलत हटोलो हठ कर गहे गँवार ॥ अँचरवा मोरारे ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ डगर चलत पनियां भरत ठठोली करत काहू न डरत निपट निडर लँगर आली ललन पिय मैं वाकी बतियां घातियां चतुरैयां सों गइ हार ॥ अँचरवा मोरारे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच दूसरी धुनि ॥

उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(४१२) कान्हा दैदे बँसुरी मैं नेक बजाऊं नइ रँगीली

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दादरा भैरवी ॥

(४१७) श्याम अबतो यह प्रीति निभायबनै जोकरी सोकरी न छुड़ायेबनै ॥ अं० ॥ नाहीं तो लोग हँसैंगे हमें तुम्हें अपनी बनाये बनै ॥ १ ॥ लोकलाज कुलकानि करों न तो नाम करोर धराये बनै ॥ २ ॥ तरफतहूँ तुमबिन तुम्हरी सौं न आयेबनै न बुलाये बनै ॥ ३ ॥ श्याम प्रीति षटरस निधि ऐसी न भुलाये बनै न छुपाये बनै ॥ ४ ॥ रखियो कृपा जनपर प्रभु अपनी व्यथा सुनाये बनै ॥ ५ ॥ बसे रहो नित प्रति उर अंतर ललन श्याम अपनाये बनै ॥ ६ ॥ इति ॥

दादरा ॥

(४१८) प्रीति कन्हाई निभाई भली झूँठी सरकी कसम मेरे खाई भली ॥ अंतरा ॥ भूलगये वा दिन की बतियां पातीमें बिनती पठाई भली ॥ १ ॥ अब तरसावत सौत रिझावत नैनन लाज न आई भली ॥ २ ॥ दोष न तुहि मोरे लाग भागकी भूलके प्रीति लगाई भली ॥ ३ ॥ जानलियो तुमको मोहन बेवफा हौ की बेवफाई भली ॥ ४ ॥ बात बुरी जो जलावत हौ जिया बेख़तासे नानरसाई भली ॥ ५ ॥ रखो दया दृष्टी जन ऊपर ललनपिया से रसाई भली ॥ ६ ॥

दादरा भैरवी ॥

(४१९) दिया दिया न दिया दिल परायेपै अपना क्या ज़ोरो ज़ुलुम ॥ अंतरा ॥ कोई आशक रँग ढँग सुरूपके कोई नव छवि आदते सनम ॥ १ ॥ ललनपिया बावरी जगत भई श्याम के सरवर को हम दम ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागमलार ॥

उठान खालीकी अनसरल से ॥

(४२०) बरषा ऋतु दरसत बिनु बरसे घन तो उमड़ घुमड़ नित बरसे कैसे मिलब सखी नटवर से ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ इत पपीहापिया रटत कुहरसे। उत कोयल कूकैं परिकर से ॥ शुक मराल मुरवा झींगर से। हास विलास सकल विधि दरसे ॥ १ ॥ द्रुम लतान बेली तरवरसे। भई भूमि शोभित जल सरसे ॥ चहुँ दिशि सुमन सुरँग सुंदरसे। सोहत गण गुञ्जार भँवर से ॥ २ ॥ यह सँदेश कहिये सखि हरिसे। बेगिजाउ सौतिनके घरसे ॥ तुम बिन विकल बिरहिनी तरसे। बीतीजाय बहार बिनु परसे ॥ ३ ॥ विनय सुनाय जोर युग करसे। हमरी लगन कहियो वा निठुरसे ॥ अब तो कृपाकर नेक नजरसे। मिलौ ललनपिय सौं सुखसरसे॥४॥

मलार ॥

ठुमरी रागमलार उठान खालीसे ॥

(४२१) आज घिरत घनघोर अबरसे। चहुँदिशि गरज गरज परिकरसे। बरसे झर झरसे बादरसे॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ जाहुमती बाहर पिय घरसे। चमकि रही चपला तम दरसे ॥ पवन चलत जिय डरत अबरसे। लखो न जात नभ मोर नजरसे ॥ १ ॥ पट सांकरि दैलेउ भीतरसे। मुख हमरो ढक पीतांबरसे ॥ सुख सिजिया परसौ उर उरसे। ललनपिया हियरत बहुहरसे ॥ २ ॥ इति ॥

मलार ॥

उठान पहिली अनसरलसे ॥

(४२२) दुखित प्रान बदरसे। नितप्रति गरज बरस नभ दरसे ॥ हमरो तो बिछुरन श्यामसुँदरसे। बरज न देत कोउ इन्दरसे ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्तरा उठान पहिलीसे ॥ बक पपिहा कूकत कादरसे । त्यों बिरहा दुख देत कुदरसे ॥ चहुँ दिशि खगवा शोर गदरसे । सुनिधुनि जिया बिकल दादरसे ॥ १ ॥ बलम बिदेशी सकल आदरसे । निज निज आन मिले सुन्दरसे ॥ हमरी सुरतिलगी दामोदरसे । पूरनहो साखि लखि कोकदरसे ॥ २ ॥ हे दई अबकी जो हरि नादरसे । शोभित सुख सिजिया हो मँदरसे ॥ तौ तुमका पूजौं बहु दरसे । अरपूं चूँदर से चादरसे ॥ ३ ॥ मिल सखि उचरूं सुघर दर दरसे । मैन मलार मस्त अँदरसे ॥ ललन पिया तौ सकल आदरसे । तन धन वारूं प्रान उदरसे ॥ ४ ॥ इति ॥

दादरा भैरवी ॥

(४२३) अपने पिया से पराई हुई श्याम तुमसे भी आखिर जुदाई हुई ॥ अन्तरा ॥ तुमतो एकके नेही न कबहूं लाखोंसे आंख लड़ाई हुई ॥ नाम कियो बदनाम मुफ्त में सारी जहां में हँसाई हुई ॥ २ ॥ गाज परै जा प्रीति निगोड़ी पै जानेको निरदई की बनाई हुई ॥ ३ ॥ दईन करै निर्दई से प्रीति कोई ललन पियाकी आजमाई हुई ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खाली से ॥

(४२४) जग कर्तार सुखार परम परमेश्वर दीनानाथ खरोरे ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ सुख स्वरूप श्रीपति अनूप यश अनन भांति चहुँदिशि प्रचरोरे ॥ १ ॥ महाकृपालु महाकरुणानिधि महाप्रभु परिताप घनोरे ॥ २ ॥ परम पुनीत अजीत नीतिबर सकल रीति भर पूर बनोरे ॥ ३ ॥ सर्वोपरि सब बिधि प्रमाण बेदन पुराण श्रुति शत उचरोरे ॥ ४ ॥ सब लायक सब रूप सबल मुनिजन गुनि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नेति नेति बरनोरे॥ ५॥ हौंजानों जब दीनबन्धु तुहि कुमति मोरी दुख दूर करो रे॥ ६॥ देखोंगो प्रभुताकी प्रबलता समय यही यक जांच परो रे॥ ७॥ नन्दललन अनकुलिये जनपर शरणकी लाज रखो रे॥ ८॥ इति॥

ठुमरी रागिनी खम्माच दूसरी धुनि॥

उठान समकी खाली की खाली से॥

(४२५) सकल सुखनिधि भक्ति हितकारी रे॥ परम प्रभु न्यायी अधिक सुखदायी॥ अन्तरा उठान तीसरी की खालीसे॥ मुनिन मन रंजन सकल दुख भंजन खलन दल गंजन महिमा अपारी रे॥ १॥ अगम बरदायी निगम नित गाई न गति क्यहुँ पाई ऐसी कृति भारी रे॥ २॥ अमित यशु जाके अनतमुनि थाके प्रजाके पति रमाके दुख निवारी रे॥ ३॥ सुफल बरदेही मुनिन जनकेही ललनपियासे ही क्यों न प्रीति पारी रे॥४॥ इति॥

दादरा रागिनी खम्माच॥

(४२६) नमों नमों नारायणों जैजै हरे हरे। प्रभु सर्ब शक्तिमाना सर्ब्बौं गुणौंनिधाना॥ अन्तरा॥ सर्ब्ब ब्यापी आपी सुख सागरे निस्तापी श्रुतिबाक्य बहु अलापी वेदन भजन करे॥ १॥ माया अनंत जो है नहिं भेद कछुलहो है बहु भांति सबकहो है महा दुर्लभो परे॥२॥ अबिगत अनादि स्वामी प्रभु सकल गुण ग्रामी आनन्दी अष्टयामी नामी दया धरे॥ ३॥ प्रभू सकल निर्बिकारे सत्य स्वरूप धारे समदर्शी निरंकारे जगदीश यशु भरे॥ ४॥ करुणानिधान बांके आरत ललनपिया के दुख हरो बेग ताके भर पूर सुखबरे॥ ५॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दादरा जोड़ेका ॥
रागिनी खम्माच ॥

(४२७) जै जै अनंदकारी तुम्हारी सुचालियां। तुम प्रीति सुख सुधाके निधि प्रेमकी क्षुधाकी ॥ अन्तरा ॥ द्विज दीन हितू ऐसे जिमि नीर नेहु पैसे। नहिं न्यारे होत तैसे तेरी गति सुचालियां ॥ १ ॥ महिमा तुम्हारी भारी बिस्तारी सो संसारी। हितकारी हौं सुखारी मुनिजन बिसालियां ॥ २ ॥ ललन पिया अनाथा बर भक्ति देहु अगाथा। सुख सहित हों सनाथा करो मन बहालियां ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥
ताल प्रबन्ध आस्ताई प्रारम्भ ॥
झूमड़े से उठान समकी खालीसे ॥

(४२८) बिलमरहे बलम बिदिसवा मोर बिकल बिन मोहन जिया सोच करोरे ॥ अन्तरा प्रारम्भ तीन ताल की खालीसे ॥ बरत बियोग योग पतियन लिख बांचत उठत मरोर ॥ १ ॥ सवत सुभग सुख भाग जाग उर बिरहन बिपति बटोर ॥ २ ॥ बनत बात बल कोउ बनता नहिं अबकह करहुँ बहोर ॥ ३ ॥ ललन पिया आधीन सकल बिधि बनगये श्याम कठोर ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की प्रबन्ध ॥
ताल प्रारम्भ त्योराकी ॥
सम की खाली से ॥

(४२९) सजनसखि सौतन घर गये मोर लगन लागी उन सों हमरी डोर ॥ अन्तरा प्रारम्भ तीन ताल की खालीसे ॥ जबसों गवन कीन्ह श्रीब्रजचँद जोहत मग दृग जिमि चकोर। सखि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सौतन घरगये मोर॥ १ ॥ विकल रहत घड़ि पल छिन जानि कल उठत विरह मनमथ मरोर ॥ सखि सौतन घर गये मोर॥ २ ॥ नींद न परत नैन बैरिनि निशि ललनपिया बिन नँदकिशोर॥ सखि सौतन घर गये मोर॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की प्रबन्ध ताल ॥

प्रारम्भ रूपक की समकी खालीसे॥

(४३०) सुरत लागी जब सों माधव सों बिसर गये सुख सकल तब सों ॥ अन्तरा प्रारम्भ तीनताल की खाली से ॥ खान पान नहिं लगत नीक तन मनको रह्यो नहिं ठौर ठीक निंदिया न आवे कबसों॥ १ ॥ भुलत न घड़ि पल छिन वह सूरत बसी लाड़िली मनमहँ मूरत छविसों फब सों नबसों॥ २॥ यह अवकास त्रास दुख दूनो ललनपिया उन बिन घर सूनो दरशहों किसढबसों ३

ठुमरी जोड़े की॥

उठान ताल झूमड़ा आस्ताई की समकी खाली से ॥

(४३१) प्रबल दुख दरद जियातरसों॥ मलत उन बिन हूं कर करसों॥ अन्तरा उठान खाली से॥ चकित गति मति बिपति मनरी जबसों अँग उपजो मदनरी बिरह धीर न देत तब सों गये श्याम घरसों॥ १ ॥ लिखूं किस दिशि सवत पतियां को कहे मोरी पियसों बतियां दिवस रतियां धरके छतियां लगन लगी हरिसों॥ २ ॥ लगत नीको सखि न नैहर ललनपिय सों अरज बहु कर ससुर सास ननँद पियके घर कब पिया परसों॥ ३॥ इति॥

ठुमरी राग हमीर ताल झूमड़ा ॥

उठान समकी खाली से॥

(४३२) सुनत कल परी न धुनि मुरली प्रबल बिरहा सो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आतुरली ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ त्याग पिय को धाईं घर सों मिलन सुन्दर श्याम बरसों धरत पग झनकार पायल धुनि सुनि ससुरली ॥ १ ॥ परी टेर पुकार बहु बहु परे जाग परोसि कहुँ कहुँ विवश बैरिनि लाज वश कछु मिस सूझैके मुकुरली ॥ २ ॥ बिसरगइ सुधि बुधि चकित गति परत घर भीतर न पगतत ललन पिय बहु करि कुगति कोई आवत जानि उरली ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी राग हमीर ॥

उठान पहिली ताल से ॥

(४३३) धूम धूम मचाई झूम झूम घूम घूम रहे मदसों छबि सों फबसों नवसों नैना ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ श्याम गात कमल दल मृग मीन खञ्जन सों अरुणारे कजरारे प्यारेप्यारे ललनपिया शोभा अलबेली अजब गजबसों॥ १ ॥इति॥

मोरे नैहर के सोअनासेही बगिया में बोल इसधुनिपर ॥

अथ दादरा रागिनी बरुवा ॥

(४३४) मोरे बारे उमरकी मीत रसिया कहँरे गये ॥ अन्तरा ॥ अब तन उमँगो मदन मनोहर जुबना ढँग नये नये ॥ रसिया कहँरे गये ॥ १ ॥ ललनपिया अब बेगि मिलौ प्रभु क्यों जिय लेत लये लये ॥ रसिया कहँरे गये ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी बरुवा ॥

(४३५) मोरे मारा नैनै निजारा लगा जिया तीररे लगा जिया तीररे लगा जिया तीररे ॥ अन्तरा ॥ जखम कलेजे लगा जिगर पर कोइ दवा न हो अकसीररे ॥ लगा जिया तीररे ॥ १ ॥ छिन पल कल नहिं विकल बिथा सों सखि वेदन अधिक शरीररे ॥ लगा जिया तीररे ॥ २ ॥ जाके लगी जिय सोइ सखि जाने बिथा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

का जाने बेपीररे ॥ लगा जिया तीररे ॥ ३ ॥ श्याम मोहनिया डारिगयो सखि धरत न जियरा धीररे ॥ लगा जिया तीररे ॥ ४ ॥ अब नँदललनपिया बिन दरशन धरत न जियरा धीररे ॥ लगा जिया तीररे ॥ ५ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी परज ॥

(४३६) यौवनवालीका बांका जुबनवापरी ॥ अन्तरा ॥ रस भरी अँखियां मदन भरारी प्यारी अदा छवि जादूभरी ॥ १ ॥ ललन पिया अँग अँग रँग बरसत गोरी गोरी बहियां में चुरियां हरी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी परज ॥

उठान खाली से ॥

(४३७) ये आली आली आज मैं पियाको पकरपायो वाही ललिता नारि सौतनि की सिजिया पर सोवत पायो मैं बारी गारी दै बैयां पकड़ बेगि घर बुलाय लाई ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ आज लाज तजि दीन्हीं निपट मैं तो अपनी दुहाई लै लीन्हीं उन सों तब मानी ललनपिया की तब परतीत चित लाई ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी परज ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(४३८) मोरा पलक मार मन लीन्हा सखीरी सांवरिया मुरलीवारे सुहनवाने मधुरी मधुरी हँसन हँसि के जादूसी चितवन सों जदुआ दीन्हों डार ॥ अन्तरा उठान पहिलीसे ॥ नैन सैन मन बसगइ बिसरत नहिं चितसों यकहु पल छिन को सुहिंका सांवरी सुरत माधुरी सुरत नीरज गात रँगचुआत छविकी छजन फबकी फबन देख मोहीं नँद के ललन बिन जिय दुखार ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी परज॥
उठान खाली की खाली की खाली से॥

(४३९) यक चतुर नार देखो देखो वो आली ठाढ़ी फुलबगिया में बैस बारीबारी॥ अन्तरा उठान खाली से॥ नैन सैन मारत चितवन से हारें मोहनीसी डार नार ललनपिया मोह्यो जिया बतियां करके प्यारी प्यारी॥ १॥ इति॥

ठुमरी रागिनी खम्माच॥
उठान समकी खाली से॥

(४४०) वो तो लचक चलत आवत चाल नई जोबन के मदमें झूम झूम झुकि झुकि बैस बारी छवि न्यारी न्यारी॥ अंतरा उठान खाली से॥ श्यामगात रँग चुआत जोबन की उमँग तन दिखात चतुर नारि देखि ललनपिय प्यारी प्यारी शोभा तन मन बसगई॥ १॥ इति॥

ठुमरी रागिनी खम्बावति॥
उठान समकी खाली की खाली से॥

(४४१) न जानूं सैयां कासों लगाईं नतियां रे॥ अन्तरा उठान खाली से॥ जब सों गये न सँदेश अँदेशा पठई न लिखि पतियां रे॥ १॥ मुहिं सुधि बिसरत नहिं उनकी सखी तड़फत दिन रतियां रे॥ २॥ किन सौतनके रूप लुभाने कीन्हीं जा पिरतियां रे॥ ३॥ ललनपिया ऐसे निठुर श्याम की देखलईं बतियां रे॥ ४॥ इति॥

ठुमरी अन्य धुनि रागिनी खम्माच॥
उठान तीसरी की खाली की खाली से॥

(४४२) सजन बिन तरसत जियरा मोर॥ अन्तरा उठान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खाली से॥ बहुत दिना भये सुधहू न लीन्हीं ऐसे श्याम कठोर॥ १॥ ललनपिया कछु नीको न लागै बिन उन श्यामकिशोर॥ २॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी खम्माच॥
उठान समकी खाली से॥

(४४३) जारे जारे सैयां देख लईरे तोरी बात हमसों करत छल बलकी घात सैयां देख लई तोरी बात॥ अन्तरा उठान खालीसे॥ कह कछु और करत कछु औरहिं सौतिन सों नित नात॥ सैयां०॥ १॥ अब न सनद कोउ यतन तिहारी कपटी से कछु न बिसात॥ सैयां०॥ २॥ ललनपिया सब रँग तोरेवारी तू नया रँग अदरात॥ सैयां०॥ ३॥ इति॥

ठुमरी नई धुनि रागिनी खम्माच॥
उठान समकी खाली से॥

(४४४) उन बिन मोरा जियरा तरफै दिन रात कल न परत मुहिंकारी आली॥ अन्तरा उठान खाली से॥ विरह बैरी मदन रिपु सजनी दोउ दुख पियरा करतरी गात कल न परत मुहिंकारी आली॥ १॥ नँदके ललन रसिक पिया बिन नहिं धरत जिय धियरा अकुलात कल न परत मुहिंकारी आली॥ २॥ इति॥

ठुमरी राग सोरठ॥
उठान खाली की खाली से॥

(४४५) धर मन धीर भजिये नन्दकुमार॥ अन्तरा उठान खाली से॥ दुखभंजन रंजन मनमोहन हरण गोपिका चीर॥ ब्रह्मादिक जाको यशुगावत भाषत वेद गँभीर॥ भजिये नन्दकुमार॥ १॥ जनहित वश बिन दाम दमोदर करुणानिधि बल-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वीर ॥ नन्दललनपद आश गहिये मन जगजन हरता पीर ॥ भजिये नन्दकुमार ॥ २ ॥ इति ॥

॥ ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(४४६) मोरी आन अचानक जान कान्हदई दौड़ झपट दधि मटकी पटक । अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ वो तो सांवरी सुरत धरे माथे पै मुकुट लीन्हों लूट दही मोरी मानी ना हटक ॥ १ ॥ यशुदा से उरहना जाय कहूं नहिं मानत सांच सोतो हमरी तनक ॥ २ ॥ नोखो मात पिताको भयो अधिक दुलारो कासे कहूं मैं ललनपिय जियकी खटक ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ ठुमरी रागिनी अमनी ॥

॥ उठान तीसरी से ॥

(४४७) छांड़ दे लँगरवा बैयां मोरि मुरकि जात नरम कलाई करकी चुड़ियां लँगरवा बैयां मोरि ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ बराजोरी कर अँचरा पकर गरवा गहि लीन्हों अँगिया मसकि ललन ढीठ दधि चोरि लँगरवा बैयां मोरि ॥ १ ॥ इति ॥

॥ ठुमरी जोड़े की रागिनी अमनी ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(४४८) मानले लँगरवा वो देखो ननँदि मोरी आवत करेना झिगरवा ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ मानत नाहीं मैं कहेजात तू न लजत मैं लजात ललनपिया बिनती मान जाने दे मँदिरवा वो देखो ननँदि आवत मोरी मगमें करे ना झिगरवा ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(४४९) रैनि गँवाय आये कहँ मनमोहन कौन सौतिनिया के घर गये सोवन ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ निशि बिताय अब यहां भोरभयो निपट जानके मुहिं तरसावन आये ललनापिया कवन गुन लागे मोसे मुख मोदन ॥ १ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(४५०) ठाढ़ी थी अपनी अटा पै सखी मुहिंका लागी नजरिया कोई छैलकी ॥ अन्तरा ॥ केश सुखाय रही थी मैं अपने सो बिसरगई सुधि घर गैलकी ॥ १ ॥ सोहनी सुरत मन मोहनी मुरत लखि माती हुई दुख विरह शैलकी ॥ २ ॥ अपनो ललनपन कासे कहूँ बरन भाती न बाती कोई फैलकी ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद इकताला राग मलार ॥

उठान समसे ॥

(४५१) डगर चलत ठठोली करत मैं न जाऊं यमुना जल को नागरनटवा निपट निडर चटक मटक मटुकि पटके ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ दपट झपट आवत निकट सखन समुह सँग में विकट अकेली अबला निरख गात लिपट जात चट निखटके ॥ १ ॥ नँदको ललन बड़ बेचलन उँच निच नहिं लखत द्दगन व्रजको बसिबो कैसे के निभन नटखट सन कवन अटके ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी तिलंग ॥

उठान खाली से ॥

(४५२) सखीरी श्याम लँगरावत है बराजोरी दधि मटकी छीनीं छैल लपट चपट गरवा लावत है ॥ अन्तरा उठान समकी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खाली से॥ बरनी जात ढिठई न अनुचित कछुक वाकी ललनपन न तजत ढीठ ढोटा नँदको मानत नाहीं न सकुचावतहै॥ १॥ इति॥

ठुमरी नई धुनि रागिनी खम्माच॥

उठान खाली की खाली की खाली से॥

(४५३) बन ठन के नारि यकआई सखीरी नैनवां रसीले चितवन में मुहिंका मोह्यो॥ अन्तरा उठान समकी खाली से॥ गौरगात अति सुहात मुसिक्यात जात वो तो जोबन मदमाती ललनपिया जिया भाई सखीरी॥ १॥ इति॥

आस्ताई रागिनी पहाड़ी॥

ठेका पस्तो उठान समसे॥

(४५४) यह सांवरे ललाने मेरा जी लुभालिया॥ दिखला अजब नई अदा दिलको फँसालिया॥ दोहा॥ मूरतकी सूरतबनी छवि अनहोनी जास॥ मनमधुकरकेप्यासकी वास सुवास निवास॥ मानों सुधा सुगन्ध तन वासा बिसालिया॥ १॥ जातीथी नीर भरने को मैं आपड़ी किधर॥ छवि देख सुधि रही न बावरी बना लिया॥ दोहा॥ मन मतंग मानै नहीं लाखन करौ उपाय॥ जहँ कहुँ देखत रूप धन दौर तहांही जाय॥ मन मीनरूप जाल में फौरन नथालिया॥ २॥ नैना निपट नुकीले औ चितवन में मोहिनी॥ कीधौं वशीकरन है मेरा चित चुरालिया॥ दोहा॥ हेरन तन मन हरलियो बिसरत ना सखि नेक॥ सैन बान जिय भिदगई कोटिन करदिये छैंक॥ सूरत सलोनी शोभापै तन मन मुहालिया॥ ३॥ वंशी ग़ज़बसुनाई अनोखीसी तानमें॥ जादूसा जी पै करदिया ऐसा वो चालिया॥ दोहा॥ सुनि धुनि बिरहन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बांसुरी राग रंग की खानि ॥ रस बस मन व्याकुल भयो लग्यो मदनको बान ॥ वंशी मदनमुहनकी या मोहन है जालिया ॥ ४ ॥ नँदकेललन वो श्याम सलोने पै बलिगई ॥ तिहुँपुर प्रभा अधशि सुघर तन तमालिया ॥ दोहा ॥ व्रज जन जीवन लाड़िले श्रीयशु-मति धन प्रान ॥ पूर्णब्रह्म अवतार प्रभु कारण सकल जहान ॥ मुझको दया मया की छया में बसालिया ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी चिन ॥

उठान खाली की खाली की खाली से ॥

(४५५) दृग अरविन्द सिन्धु रस रंगके छलबलके झलके गाढ़ेरी ॥ अन्तरा उठान खालीकी खालीकी खाली से ॥ चंचल से चंचल अनियारे कजरारे प्यारे प्यारेरी ॥ १ ॥ नेह निपट लवलीन शील युत अति प्रवीण अति नजरारी ॥ २ ॥ रंग रँगीले रसिक रसीले और छबीले छबि धारेरी ॥ ३ ॥ खंजन से कंजन के गन से मीननसे चंचल न्यारेरी ॥ ४ ॥ शोभायुक्त सनेही सुन्दर अति शरमीले सुखियारेरी ॥ ५ ॥ चितवन चारु चोर चितकेरी जादूधर मुहनी डारेरी ॥ ६ ॥ हेरन हरन अजन बिपतन की सुफल करन सुख जियरा केरी ॥ ७ ॥ हाव भाव बरसत कटाक्ष कर मोहिं ललन पिया प्यारेरी ॥ ८ ॥ इति ॥

ठुमरी राग हमीर ॥

उठान खालीकी खालीकी खाली से ॥

(४५६) मीनसे प्रवीन दोउ खंजन से कंजन से गनसे चपल से ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ हाव भावसे रँग रससे भरे प्रीति रीतिसे छलबलसे ललनपिया नवीन दृग सकलसे ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बारी मैंना जैहोंरे। इस धुनि पर॥
ठुमरी रागिनी तिलंग॥
उठान तीसरी से॥

(४५७) देखी सैयां झूंठी तोरी बात नये रँग ढँग छल सिखतजात॥ सैयां झूंठी तोरी बात॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से॥ रातकही सेजिया मोरी आवन सौतसों जा जोरो नात॥ सैयां झूंठी तोरी बात॥ १॥ अब प्रतीति नहिं नँदललन तोरी कपट को हित न दुरात॥ सैयां झूंठी तोरी बात॥ २॥ इति॥

कँगन मेरो करसों करक गयोरे। इस धुनिपर॥
ठुमरी रागिनी खम्माच॥
उठान समकी खाली की खाली से॥

(४५८) सजन बिन सेजिया न सुख दईरे न आवै निशि निंदिया नैननरी ननँदिया॥ अन्तरा उठान सम की खाली की खाली से॥ उमँग तन जागी यौवन अनुरागी लगन मोरीलागी उन सँग नईरे॥ १॥ लगाईं उन नातियां सौतनसों पिरतियां उमर मुहिं सारी तरफत भईरे॥ २॥ न सँग दई डारे निठुर हितुकारे ललनपिया के फन्द में फँस गईरे॥ ३॥ इति॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच॥
उठान समकी खालीकी खाली से॥

(४५९) ऐसो सैयां निरमोहिया सखी मोरारे ना आवै पास मोरे पैयां परूं करजोरे॥ अन्तरा उठान समकी खाली की खाली से॥ न आवै सेज रतियां लगै न मोरी छतियां तरस रहे उमँग उमँग जियारे॥ मदन तन तोरे मारत शर घोरे॥ १॥ बम्हना लाज न आई मोरी पतिया मिलाई कहजानिके कराई थी सगाई

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यहां रे ॥ नादान पिया सों रे बिपति जिया कोरे ॥ २ ॥ न आई लाज मातको न तातको न भ्रात को बिवह दई नदानको जवान त्रियारे ॥ ललनपिया भोरे कह्यो ढँग नयोरे ॥ ३ ॥ इति ॥

गौना कराद मोरी मा । इस धुनि पर ॥

ठुमरी रागिनी झाड़झँझौटी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(४६०) लागा सो लागा मोरी जान अब तो नेह सांवरे से ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ मन अटको उनहीं के प्रेम रस पागा सो पागा मोरी जान ॥ अबतो नेह सांवरे से ॥ १ ॥ जग प्रपंच विपरीति प्रीतिसों रे भागा सो भागा मोरी जान ॥ अब तो नेह सांवरे से ॥ २ ॥ नन्दललन प्रिय भक्ति सुधारसरे मांगा सो मांगा मोरी जान ॥ अबतो नेह सांवरे से ॥ ३ ॥ इति ॥

पवन चलत गइ सो अँगना बैरन मोरी लग गई आंखरे ।

इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खाली से ॥

(४६१) तुम तो रहे सौतन की सेज मुहिं तरफत बीती रात रे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ ना जानूं निंदिया किन मोही मिली न बहुत हगन दोउ जोही बिरहा मदन नींद निशि तीनों दीन्हों दुख बहु भांति रे ॥ १ ॥ तुम तो ऐसे निठुर मुरारी सौतन सगी समुझकी यारी अब ना बोलूंगी तुमसों जाओ जाओ हां जहँ नित जातरे ॥ २ ॥ जान लिये तुम्हरे रँग ढंग सब नितही नई करत बतियां अब ललनपिया निठुरन की प्रीति सों सब सुख चैन हिरातरे ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥
उठान खालीकी अनसरल से ॥

(४६२) तुम तो प्रीति करी सौतन सों क्यों तरसावत सांवरे ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ हमसों बैर बांध कह पैहौ वृथा धरावत नामरे इन बातन में नफा नहीं क्यों घर घरहो बदनामरे ॥ १ ॥ हरजाई पन तजहु मुरारी सीख हमारी थांभरे ललनपिया पर करहु कृपा प्रभु होय सुफल सब कामरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥
उठान खालीसे ॥

(४६३) हमसे प्रीति लगा सैयां सौतन घर गये गयेरे ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ रैनि जगे हँसि बोले वासों निठुर भये मोरी सुधि बिसराके सगरी रात मुहिं तरफत भई सीखे ढँग नये नयेरे ॥ १ ॥ किया करार मिलन का हमसे प्रीति करी तुम जा सौ-तनसे ललनपिया निर्मोही श्याम कुबरीवश भये भयेरे ॥२॥इति॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥
उठान खालीसे ॥

(४६४) हमसों छल बलकी बतियां घतियां कर कहां रहेरे ॥ अब क्यों आये भोर भये वाकी रस प्रीति गहेरे ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ वहँ जाओ जहँ रैन गुजारी ज्यहि सौतन सँग कीन्ही यारी नन्दललन तुम्हरे यह ढँग नाहिं मोसों जात सहेरे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी दूसरी धुनि रागिनी खम्माचमलार ॥
उठान समकी खालीसे ॥

(४६५) छांड़दे डगर मोसे करत काहे ढिठाई ऐरे लँगरवा न मानी मोरी नेकहूं तू बैयां पकर चोली चूनर सारी नशाई ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्तरा उठान तीसरीकी खालीकी खालीसे ॥ मगमें अकेली जान दधि मोरी लूटखाई अपने नगर में करत निज मनभाई पकर जो पाऊंगी नगरिया में अपनी तौ नन्दललन तोरी देखूंगी मैं लँगराई ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग कान्हरा ॥

उठान खालीसे ॥

(४६६) पाइलिया मोरी बाजैरी नूपुर की झनकार होय ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ कैसेके आऊं पास पियरवा तोरे मोरे ससुर दिवर सासु ननँदि द्योरनियां जागेरी ॥ १ ॥ आजकी निशि दूरहि से मिलिये पुनि आऊंगी सिजिया तोरी मोरी ललनपिया मान लेरी ॥ २ ॥ इति ॥

येहां मुरली धुनि मधुर कहीं बाजीरे । इस धुनि पर ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच सरपरदई ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(४६७) महिंका निपट निडर दीन्हीं गारीरे दौड़ झपट झट-पट नागरनट लिपट चिपट मोरी सारी सारी फारी ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ मानै न ढीठ मेरो हटको कान्ह नित करत रारि मोसे मगमें आनि ऐसो ललनपिया चंचल चपल मुरारी ॥ १ ॥ इति ॥

तरसै बिन बालम मोरा जिया । इस धुनि पर ॥

दादरा रागिनी कहरवा ॥

(४६८) बँसिया कहुँ बाजी कुंजनमें सखि कुंजनमें मधुवनमें ॥ अन्तरा ॥ एरीसखी मुहिं बेगि बताओ मदन जगो बैरी तनमें ॥ १ ॥ बिरहा पीर गँभीर सखीरी लौ लागी हरि दर्शनमें ॥ २ ॥ नंदललन पियकी बलिहारी उन बिन सखि न धीर मन में ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी राग मलारधूरिया ॥
उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(४६९) बरसन को आये बदरारे पीले उमड़ घुमड़ कारे निशिआँधियारे गोरे बिजुली से उजियारे जलभरे गरजत न तोम तनाना दिर दिरना दिर दिरना दानी थरर थोम्व ताना नारे ताना नारे॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ मैं बिरहिन तरफत हूं निशि दिन उमँगत देख बहार मदन तन दुरुर दुरुर दुदुरावै दादुरवा ललनापिया बिन विकल जियारे ॥ १ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग मलार ॥
उठान समसे ॥

(४७०) आयोरी सावन झूले हिंडोले दोऊ गरज गरज घुमड़ घुमड़ बरसत घन घोर ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ चहूं दिशि कोकिला चकोर करत मोर शोर दादुर बोलत कुंजनवन ब्रज की ओर ॥ १ ॥ (अभोग) चमचम चमकत चलाँक चपला चितचोरनि मनुमोहनि सोहनि सुंदर छवि छजत तनु युगलकिशोर ॥ २ ॥ लाड़िली ललन झूलैं लखि छवि सुर सुधि भूलैं जैजै करत मुनि समुहले वारत तृण तोर तोर ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग मलार ॥
उठान समसे ॥

(४७१) निरतत नँदलाल संगलिये गोपीग्वाल ठुमुक धरन धरत चरन रचो रहस बनवारी ॥ अन्तरा शूल ताल उठान समसे॥ बाजत करताल ताल डफ मृदंग सुर सिंगार बीन बांसुरी रबाब ढोलक तम्बूरा तूरा तबला साहनाई सितार झांझ खंजरी नगाड़ो नफीरी सारंगी सिरोद बेन घुंघरू मंजीर झनकारी ॥ १ ॥ (अभोग)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चार ताल उठान समसे ॥ गावत छतीसौ राग रागिनी अनेक जाति भांति सही सुरीले से स्वरन ताल ललित ललित लै पसारी ॥ २ ॥ (भोग) झपताल उठान समसे ॥ भैरवकी त्रिया भैरवी बंगाली बैरारी मधु माधुवी सिंधुवी अतिही प्यारी ॥ त्रय ताल उठान समसे ॥ मालकौश धुनि टोंड़ी गौरी खम्बावति को कव्य गुनकली ॥ चार ताल उठान समसे ॥ राग हिंडोल ललित रामकली देवशाख बिलावलि पट मंजरी ॥ शूलताल उठान समसे ॥ देशीनटनारि ॥ चारताल उठान समसे ॥ कान्हग किदारा ॥ शूल ताल उठान समसे ॥ कामोद दीपक ॥ एकताला उठान समसे ॥ धनाशिरी आशावरी मालश्री अरु बसन्त मारू बहुरि श्रीराग ॥ तीनताल उठान खाली से ॥ मेघराग की तान गूजरी तनक बियोगिनिकार मल्लार देशी ॥ चारिताल उठान समसे ॥ मोहित छवि देखि शेश सुरपति मुनि मन महेश ललनपिया हिय हुलास बार बार वारी ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग भैरव चारिताल ॥

उठान प्रथमा की खाली से ॥

(४७२) ध्रुपद अधिपतीश जगत ईश निधि हमारे सुखद स्वामी जीवनअधारे प्रान प्यारे रे ॥ अन्तरा उठान प्रथमा की खाली से ॥ आदिदेव अलख अरूप भूप सुयशु क्रान्ति भक्तबसल भक्ति निरख नंद गृह अवतारे रे ॥ १ ॥ (अभोग) उठान समसे ॥ राम रूप रावरे श्रीराधावर खगपतीश ब्रजजन रखवारे रे ॥ (भोग) उठान समसे ॥ धन धन यशुदा पुरायन पाये जिन्हु ब्रह्मललन तारन तरन जगोद्धारनहारे रे ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी राग एमन ॥

उठान खाली से ॥

(४७३) आरे पीअरवा मोरे मँदिरवा सूनी सेजरिया नीको न लागै तुमबिनु घरी पल छिन कल न दे बिरहा मदन ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ बदर बूंदाञ्न झर लागो पपीहा बोलाञ्न लागो ललनपिया श्याम सनेही मोरी सूरत काहे बिसारे कठिन ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग देश ॥

उठान पहिली की खाली से ॥

(४७४) उन बिनु तरफ तरफ गुजरगई सगरी रतियां ॥ बतियां मैं कासे कहूं जायरी बिथाकी सूनी सेजरिया निंदरिया बैरनि भई रे ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ प्रबल बिरहा मनोज न देत कल दूजे सवतिया मारे ॥ बोलाञ्न सखि मुहिंका ललनपिया श्याम सों इतना मोरा कौन सँदेशवा जाय सुनावै दईरे दईरे ॥ १ ॥ इति ॥

तराना रागिनी भैरवी ॥

उठान तीसरी से ॥

(४७५) द्रीम द्रीम द्रीम तदीया नारे तदारे दानी तुम दिर दिर दानी तआरे दानी दानी ओदानी दानी तानानानानाना नानानाना ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ उदन नाञ्नताना तदियाञ्नरे तदा आञ्नी दाञ्नी दाआञ्नी तोम तानाना तानानाना तानन ताना नाना तानानाना ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी अमनी ॥

उठान तीसरी से ॥

(४७६) भयोरे सिपहिया कान्हारे कान्हा तोर लपक झपक मोरी मटकी दई पटक लिपट चिपट कर बैयां दइ मारोर बैयां दइ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मरोर ॥ सिपहिया कान्हातोर ॥ अंतरा उठान समकी खाली से ॥ बांकुरो कियोरी मात लाड़िले ललन को अपने मानैना ध्यानैना कान लोकलाज कान्ह कहुतो गोकुल बसहुं नहिं देहुं अबहिं बास छोर सिपहिया कान्हा तोर ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी परज ॥

उठान तीसरी से ॥

(४७७) मोहनी मुरत सोहनी सुरत वारेरी कन्हैयाने मेरो मन हरलीन्हिोंरी आली आज कुंजन माहिं अलबेली अलबेल नवेली छबिसों ॥ अंतरा उठान तीसरी से ॥ जबसों नँदललन बंशी बैन सुनायो तबसों कल न पड़त घरीपलको बिरहा व्याकुल कर डारी विन बनवारी निंदरिया न आवे कोऊ ढबसों ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग लच्छाशाक ॥

उठान समसे ॥

(४७८) बालम तुम हमरी न मानत कोटि यतन कर हारी बरज त्वहिंका ढीठ नदानड़ा मोरी बैयां ना छुओ ॥ अंतरा उठान समसे ॥ सास नँनदिया निरख बक झक लरैंगी गारी देगी ललन पिया मुहिं न भावें मोहन अचकरी मोसे ना ठओ ॥ १ ॥ इति॥

आस्ताई राग बसंत ॥

तालरूपक उठान पहिली से ॥

(४७९) अब कौन यतन सोंरी मिलब दरश उमँगो जुबना मैं रहीहूं तरस ॥ अंतरा उठान पहिली से ॥ सखि बेदरदी भये श्यामसनेही तब ललन पिया जिया कौन हरष ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जावो सखी लै आओ श्यामको मोरे अँगनवां इस धुन पर॥

ठुमरी रागिनी जैजैवन्ती॥

समानमात्रिक उठान तीसरी की अनसरलसे॥

(४८०) जै राधा गिरिराज धरनकी॥ अतरा उठानतीसरी की अनसरलसे॥ सुन्दरश्याम किशोर मनोहर मोरमुकट कलँगी मणियनकी॥ १॥ संशय शमन सुधानिधिमूरति हारत विपदा जियन मरनकी॥ २॥ रुक्मिणि हरन बरन जनकात्मजा जन रुचिकरन सरन असरन॥ ३॥ दीनद्याल बस भक्त दमोदर बलिहारी गइ नन्दललनकी॥ ४॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी जैजैवन्ती समान मात्रिक॥

उठान तीसरी की अनसरल से॥

(४८१) जै सिय पिय राधिका रमनकी॥ अंतरा उठान तीसरी की अनसरलसे॥ षोड़शकला पूर्ण अवतारी मर्य्यादा पुरुषोत्तम तनकी॥ १॥ श्यामलि सोहनि मोहनिमूरति सब सूरत अधिप सूरतनकी॥ २॥ गौतमनारि उधारन तारन यमलार्जुन जन क्लेश कदनकी॥ ३॥ शिवरि सुदामादिकनु अमितगण जनमन रंजन भय भंजनकी॥ ४॥ रिपु लंकेश कंस आराती दमघोषात्मज दलन मलनकी॥ ५॥ अवधललन व्रजचन्द कन्दसुख छन्द फंद दुख द्वंद दमनकी॥ ६॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी जैजैवन्ती समान मात्रिक॥

उठान तीसरी की अनसरलसे॥

(४८२) बलि बलि गई सियराम श्यामकी। सुखदमूर्ति प्रद कोटि कामकी॥ अंतरा उठान तीसरी की अनसरलसे॥ कलिमलकदन तरण तारण जन कृपा काय सुख गुणन ग्रामकी॥ १॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विश्वामुनि मखजनक सहायक भीष्मक प्रणरुचिदा अगमकी॥२॥
श्रीनँदललन कौशिलानंदन जैजगबंदन मुक्तिधामकी ॥ ३ ॥ इति

दादरारागिनी सोहिनी ॥

(४८३) दरशे जा घन गरजे जा घन बरसे जा घनवार॥ अंतरा ॥ हमरा बलम छायो विदेश सवतसों सुखप्यार॥ वाहीकेदेश करूंप्रवेश मुसलधारडार॥१॥ चंचल चपल चितचलांक चपला चिंहार॥ प्रिय पिक पियशब्द जौन तासु कह अधार॥ २ ॥ कूकुमोर दादुरदोर झिंगुवाझनकार ॥ नँदके ललन पियको चितौ सौत घरसे देनिवार ॥ ३ ॥ इति ॥

दादरा जोड़ेका रागिनी सोहिनी ॥

(४८४) दामिनि दमक जोहत जमक गगन गुमकभार॥ अंतरा ॥ लरजत जियमोर ऐन तड़िता सुन तीब्रबैन परै न चैन नींदनैन बिनसखिभरतार ॥ १ ॥ गणबलाक बिरहनतन बर्छि बुंदनमार ॥ शूलत सनन सनक पुरवा झिंगुरन झनकार ॥ २ ॥ बैरिन बरषाद्रवति द्रोह प्यारे सन मम कियो बिछोह नँदललन पिय बिन जिय लगतना हमार ॥ ३ ॥ इति ॥

सोहिलराग रामदासी सारङ्ग ठेका होलीका ॥
उठान पहिली से ॥

(४८५) धनि धनि लाला तोरीमाय सुभागिनि नँदरनियाँ॥ अंतरा उठान समसे॥ धनि धनि श्री नँदराय सुखेश शिरोमणियाँ॥जिन्ह तुमसे कुँवर कृपाल मिले त्रिभुवन धनियाँ॥१॥ धनि धनि जग वह ब्रजभूमि मनोहर पावनियाँ॥ जहँतुमसे पूरण ब्रह्म बालबपु धारनियाँ ॥ २ ॥ धनि धनि ब्रज जीवन जन्म भाग बर ग्वालिनियाँ ॥ जिन्ह दरश परश नितदेत हरत दुख दारुनि-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

याँ ॥ ३ ॥ धनि धनि जपयोग सँयोग ग्वालगण कर्म्मणियाँ ॥ जिन्ह सँग क्रीडत कमलेश सुखद जग तारनियाँ ॥ ४ ॥ धनि धनि भीष्मककी जोय यशोदाकी समधिनियाँ ॥ जिन्ह नन्दललन पति पाये सुताधनि रुक्मिणियाँ ॥ ५ ॥ इति ॥

सोहिल जोड़ेकी रागसारंग रामदासी ठेका होलीका ॥
उठान पहिली से ॥

(४८६) नँदरानीने ढोटा जायो बधावा लाई ढाढ़िनियाँ ॥ अंतरा उठान समकी खाली से ॥ ढाढ़िन गावत गीत मचल रही डोमिनियाँ ॥ दाई झिगड़ मचाय नेगमांगे नाइनियाँ ॥ १ ॥ बनबन ठाढ़ी डोम राग अरु रागिनियाँ ॥ आईं सुरत्रिय अभिराम धारबपु ग्वालिनियाँ ॥ २ ॥ बाजत वेणु मृदंग पखावज हरमु नियाँ ॥ निरतैं हरिगुणगाथ सकल ब्रजभामिनियाँ ॥ ३ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश शेश महि धारनियाँ ॥ इन्द्र इन्दु छबि निरखि जायें बलिहारिनियाँ ॥ ४ ॥ करत निछावर नेति रत्न नँद नँदर-नियाँ ॥ नँदललन सुखद चिरजियो असीसैं त्रिभुवनियाँ॥५॥इति॥

सोहिल जोड़ेका राग रामदासी सारंग ठेकाहोलीका ॥
उठान समसे ॥

(४८७) शुभ घड़ि शुभ दिन आज कुँवर जायो नँदरनियाँ ॥ अन्तरा उठान समकी खालीसे ॥ धनि तिथि आठैं बुध बार नक्षत्तर रोहिनियाँ ॥ शुभ भाद्रपक्ष अँधियार अर्ध गत यामिनियाँ ॥ १ ॥ लागत खन हरषनयोग मुहूर्त सुहावनियाँ ॥ त्रिभुवनपति लियो अवतार सकल जग तारनियाँ ॥ २ ॥ चलु चलुरी बधावा देन बीर पटवारनियाँ ॥ सज अम्बर पीत पटोल सुघरसी भूलनियाँ ॥ ३ ॥ चलु साज सोहिलो बीर सुशील सुनारिनियाँ ॥ लै सुन्दर रतनन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जटित अभूषण कंचनियाँ॥४॥लै केसर अबिर गुलाल सहेलि पसारिनियाँ ॥ यशुदा हित सोंठि पगाउ कंदकी चासनियाँ ॥५॥ चलु सुघर बधाई साज सहेलिन गंधिनियाँ ॥ चोया इतरन सरबोर सींच नँद आँगनियाँ ॥ ६ ॥ सजु सुबरन चांदी बर्ण लसेती बीड़िनियाँ ॥ लैचलिये बधावा देवन बीर तम्बोलिनियाँ ॥ ७ ॥ मणि माणिक रतन अमोलिक हीरन की कनियाँ ॥ चलु साज जौहरिनि बीर बधावा दरशानियाँ ॥ ८ ॥ सुन एरी भटू सुकुमारिन गोटेवारिनियाँ ॥ पट साजु बादला किरन झालरैं लटकनियाँ ॥९॥ चलु साजु जोहिलो बीर मनोहर मालिनियाँ ॥ लै सुमन सेहरा हार माल अनमोलिनियाँ ॥ १० ॥ अरि एरी छैल ब्रज वारिन बीर अहीरिनियाँ ॥ करु मृगमद केसर मेल कीच दधिकाँदनियाँ ॥ ११ ॥ तिल तैल मनोहर घार धारि वर भाजनियाँ ॥ जच्चातन मर्द्दन को लै चलु री तेलिनियाँ ॥ १२ ॥ सुन एरी बीर मति धीर सुघर हलवाइनियाँ ॥ सजु ब्यंजन मधु निमकीन बधावा कारनियाँ ॥ १३ ॥ अरी एरी छैल छमकीलिनि ऋतु फल बारिनियाँ ॥ फल दैकर लहु फल चारि प्रमोद बिहावनियाँ ॥ १४ ॥ चलु साज बधावा देन बीर मुगलाइनियाँ ॥ मेवा दै दत्वमहत्व पदवि लहु पावनियाँ ॥ १५ ॥ सुनु शाक बणिककी नारि साजु तरकारिनियाँ ॥ दै सागु पागु अनुराग भाग मन भावनियाँ ॥ १६ ॥ लै चलु बर भाजन भूरि प्रपूर कुम्हारिनियाँ ॥ घट गागर कूमर दियल मनोरथ पूरनियाँ ॥ १७ ॥ चकई लट्टुडोर चटूई झुझुना फिरकनियाँ ॥ चलुसाज बधावा देवनबीर बिसाँतिनियाँ ॥ १८ ॥ सुनु रजकिन ढोटा जायो यशोमतिमहरनियाँ ॥ चल जच्चाके बसन पखारि धनीहो निरधनियाँ ॥ १९ ॥ रचु पातर पातर पात पातरी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

औ दुनियाँ॥ चलुलैचलुयशुमति भौन सहेलिनिबारिनियाँ॥२०॥ भरिकलश कालिन्दी नीर सगुन सुखदाइनियाँ॥ लै चलु नँद द्वार उतार लाह लहु महिरिनियाँ॥२१॥ गुहि रेशमबाधी झब्बा कमर की करधनियाँ॥ पहिराउ नन्दसुत आँगमाँगुवर पटविनियाँ॥२२॥ तुहि देत सँदेशो सुखद अरी सुनु धनकुनियाँ॥ यशुदासुत जन्मो आज तिहूँपुरको धनियाँ॥२३॥॥ धनि यह घरि लग्न मुहूर्त मनोर्थ पुरावनियाँ॥ हरिदरशो परसौ धाय सकल व्रजभाविनियाँ॥२४॥ भयो पूर्णब्रह्म नँदललन जन्मसुखसारनियाँ॥ बरसैं सुर सुमनन माल त्रिपुर जैजैभनियाँ॥२५॥ इति सोहिल पच्चीसी संपूर्णम्॥

ठुमरी रागसारंगे ठेका होलीका॥

उठान पहिली से॥

(४८८) तट यमुना के ठाढ़ो नँदलाल बजावे रसबाँसुरिया॥ अंतरा उठान समसे॥ बँसिया का जदुवाकीखानिमुहनियाँ की खागरिया॥ घहुँ जंत्र मंत्ररसरूप सुधास्वर आगरिया॥१॥ बसीकरन कि बँसुरी बीर सकलसुख आदरिया॥ नँदललन की धनि बलिहारि जिओजी जुगसाँवरिया॥२॥ इति॥

हमारी तोरी नाहीं बनैगी बनवारी इसपर॥

दादरा रागिनी गौरी॥

(४८९) मैं कान्हा तोरी मैयासे जाय कहोंगी॥ अन्तरा॥ चोर लई मोरी चुलिया चुनरिया यशुदाको अँचरा गहोंगी॥१॥ गगरिमोर यमुनामें बहाई नँदसों मैं जायमँगोंगी॥२॥ दूँ निसराय लँगरई तोरी तब जिय धीर धरोंगी॥३॥ नँद यशुमति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ढिग लैचल मोहन ह्वां तुहि ठीक करोंगी ॥४॥ ललन श्याम बड़ ढीठभयो तैं अब तव पुर न बसोंगी ॥ ५ ॥ इति ॥

दादरा जोड़ेका रागिनी गौरी ॥

(४६०) ओ बंसीवाले बसिया बजाउ बनवारी ॥ अन्तरा ॥ कबसों मैं ठाढ़ी तोसों बिनती करतहूँ एक न सुनतहमारी ॥ १ ॥ बँसुरी बजाई सुनवाई मनभाई लेले गइ तनमनसों मैं वारी ॥ २॥ नँदकीदुहाई माई की शपथ यदुराई कर निठुराई न मुरारी ॥ ३ ॥ नाहीं तो ललन तोरी मुरली करूंगी चोरी फिर पछितैहौ बिहारी॥४॥

दादरा जोड़ेका रागिनी गौरी ॥

(४६१) ये मैयामोरी अब ब्रजमैं न रहोंगी॥ अन्तरा ॥ वो नँदलाला मोरे बैरपरोहै कासों मैं गाय कहोंगी ॥ १ ॥ छीनलई मोरी गोरस गगरिया हानिसो तुमसों भरोंगी॥ २ ॥ राहबाट नित झि-गरमचावत यह दुख कैसे सहोंगी ॥ ३॥ नँदललनै भलसीख सि-खाई अब काहे कुशल लहोंगी ॥ ४ ॥ इति ॥

दादरा धुनि थियेटर रागिनी ज़िलामल्लारीकाफी ॥

(४६२) प्यारी सोजारी बिनियाँ डुलायेजायेंगे ॥ २॥अन्तरा॥ नींदरिया मत निदरु लाड़िली नहिं बिरहाके दुख दुगनायेजायेंगे॥ १ ॥ शैर॥ मदनके बान भी नादान बिधायेंगे तन ॥ बिथा हरआन बे प्रमान बढ़ायेंगे तन॥ बैरीनींदाके बेईमान दुखायें तन॥ जुदाईके जिगरमें ज़ख़्म जमायेंगेतन॥ रहेरहाये जो सुखचैन बिहायेंगे तन॥ सदमें कोटों सदह तरहके आ सतायेंगे तन ॥ तुझसे फिर कैसे ये क़दमें ये सदमें उठाये जायेंगे॥ १ ॥ अन्तरा॥ अस हिरास कस होत दुलारी तोरे दुख सुखनिधि में सिराये जायेंगे ॥ शैर ॥ श्याम सुन्दर भी तेरेहाथ में आ जायेंगे फिर ॥ मौजकी रौजके दिन वे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चहे दिखलायेंगे फिर॥ बृन्द सौतन के जिगर थामके पछितायेंगे फिर॥ दिलभी दुशमन के सबतरेहसे बिलखायेंगे फिर॥ चैन की बंसी बजा हमसभी हुलसायेंगे फिर। नँदललन लाड़िली पै मुख सभी बलजायेंगे फिर॥ हो वो दिन कैसे सुरध्याये बधाये जो गाये जायेंगे॥ २॥ इति॥

दादरा राग सारँग॥

(४६३) काहे नैनों में नीरभरे अधर धरेरी कालमा॥ अंतरा॥ मुखड़ा मलीना पेंचाभ्रकुटिमें मस्तकबल अदेरे॥ अधर धरेरीकालमा॥ १॥ पीसों बिछोही कि कोई पै मोही न जीकी बिथा उचरे॥ अधर धरेरी कालमा॥ २॥ यशुदा ललन रसमाती हूं जानी क्यों मोसे कपट करे॥ अधर धरेरी कालमा॥ ३॥ इति॥

रँगीले सैयां हमसे करो न ऐसी प्रीति इसतर्ज़ में॥

दादरा रागिनी काफी खम्माच॥

(४६४) न माने मोरी तनक हटक यदुरैया॥ अंतरा॥ मैं जल भरनगई यमुनाको चोरिलियो घट दैया॥ १॥ नन्द महर सुत शीश चढ़ायो बरजे न यशुमति मैया॥ २॥ ललन श्याम मनमानो करे वाको कोई न कहैया सुनैया॥ ३॥ इति॥

दादरा जोड़ेका रागिनी काफी खम्माच॥

(४६५) ये लाला तोरी मुरली ने मन हरलीना॥ अन्तरा॥ घरि पल छिन कछु चैन न चितको नित जिय रहत मलीना॥ १॥ खान पान बिसरान नींद निशि कठिन भयो अब जीना॥ २॥ बिरह बियोग सोग दुखमाती सब सुख भोग बिहीना॥ ३॥ नंदललन तोरी गजबकी बँसुरी जादूसा कछु करदीना॥ ४॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दादरा जोड़ेका रागिनी काफी खम्माच ॥

(४६६) हमारे स्वामी गोविंद नाम अधारा ॥ अन्तरा ॥ तन मन मेरा प्रभुपद चेरा वहि रछपाल हमारा ॥ १ ॥ कटि पटपीत कछनियाँ काछे मोरमुकुट रतनारा ॥ २ ॥ गोकुलेश गोपाल गदाधर गिरिगोवर्द्धन धारा ॥ ३ ॥ द्रुपदसुता दुखदलन दमोदर यमलाऽर्ज्जुन निस्तारा ॥ ४ ॥ शबरि सदन अघहरन सुदामा केवट कुल उद्धारा ॥ ५ ॥ नन्दललन धन जीवन जियको श्री ब्रजराज दुलारा ॥ ६ ॥

झोंकादीजो सम्हारकै मोरी सारी न लटकै । इस धुनिपर ॥

दादरा रागिनी झँझौटी ॥

(४६७) ननदैया हमार सैयांको तनु समझाय दीजौ ॥ अन्तरा ॥ जैयो बजरवा बजजवासों हमका सारी सुघर छबिदार छैला मँगवाय दीजौ ॥ १ ॥ हाहा करत तोरे पैयाँ परत रँगरिजवासों अजब बहार रँगीली रँगवाय दीजौ ॥ २ ॥ पटवासे लैकै किनरवा बिसैके लचका लहरियादार गुटवा टकवाय दीजौ ॥ ३ ॥ नन्दललनपिय सौं बालि बलिगइ येही मरजिया हमार मनकी मनाय दीजौ ॥ ४ ॥ इति ॥

दादरा जोड़ेका रागिनी झँझौटी ॥

(४६८) रँगरिजवा यार मोरे सैयांसे सारी मँगायलीजै ॥ अंतरा ॥ सूही चुनरिया चदरिया अँगूरी चुलिया चटकरँगदार ऊदी रँगायलीजै ॥ १ ॥ गुटवा किनारी की अजब बहारी सोने के टका दै चारि सुघरसी सिवाँयलीजै ॥ २ ॥ नन्दललनसौं कसर न राखिये तब जानूं तुहिं हुशियार मोराजी मुहायलीजै ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दादरा जोड़ेका रागिनी झँझौटी ॥

(४६६) बजजवा यार सारी अपनी दुकनियाँ से लायदीजै॥ अन्तरा॥ चटक चुहीली रँगीली रसीली दै रँगरिजवा सुधार सूहा रँग रँगायदीजै॥ १ ॥मनमानी दूँगी सजाई मैं तुहिंका किरन झुंपेदार गुटवा सुन्हैला टकायदीजै॥ २ ॥ नन्दललन तोरा राजी राखे तनमन गइ बलिहार मोरी मनसा मनैकी मनायदीजै॥३॥इति॥

दादरा जोड़ेका रागिनी झँझौटी ॥

(५००) जहँ मीता हमार गोरी वाकी नगरियामें लैचलुरे॥ अंतरा ॥ जिय नहिं माने धीरज नहिंआने अतीबेकरार वाकी नगरियामें लैचलुरे ॥ १ ॥ बिरहा के सोगाने पियके बियोगाने कीन्हा दुखार वाकी नगरियामें लैचलुरे॥ २ ॥ हाहा करत तोरी पैयाँपरतहूँ गइ बलिहार वाकी नगरिया में लैचलुरे॥ ३ ॥ नँद के ललनवासे प्यारे मुहनवासे करादे दीदार वाकी नगरिया में लैचलुरे ॥ ४ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी देश खम्माच ॥

(५०१) हाँ चटक मटक दधिकी मटुक पटकदइ मुरारी रे ॥ अन्तरा॥ डगर बगर करत झिगर लंपट लँगर भारी रे ढिठ अनारी रे॥ १ ॥ लपट झपट चुनर चटक मसकदइ हमारीरे चुलिया न्यारी रे ॥ २ ॥ नँदको ललन बड़कुचलन अनुचित बके गारीरे किया जिया आरी रे ॥ ३ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी देशखम्माच ॥

(५०२) हाँ मदनमुहन मुरलिवारेपर तनमन वारीरे॥ अन्तरा॥ मोहनिमुरत जियमें बसत टरत न छिन टारीरे वो छवि प्यारीरे॥ १॥ नटवर वर भेष बेश सुघरता अपारीरे जिय सुखकारीरे ॥ २ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उर भृगुपद लता सघन दामिनि उजियारीरे सो द्युतिकारीरे॥३॥
ब्रजजन धन नन्दललन मोरमुकुटधारीरेपैबलिहारीरे ॥४॥इति॥

दादरा रागिनी देशखम्माच ॥

(५०३) हाँ बम्बम्बम्बैजनाथ शंकर बम्भोलारे ॥ अंतरा ॥
नीलकंठ विष अहारी मदन कदन चोलारे त्रै दृग खोलारे॥ १ ॥
कालकूट घूंट अशन धतुर विजय गोलारे अफिम घोलारे ॥ २ ॥
बास विकट बिकराल हिमआलय ओलारे गति अतोलारे॥ ३ ॥
अंगित अँग अद्भुत छवि चिता भस्म कोलारे अतिसुडोलारे॥४॥
कर त्रिशूल शृङ्गि डमरु काँध गरल झोलारे नहिं मँझोलारे ॥ ५॥
जटाजूट मुकुट गंगतरँगको जुटोलारे कल किलोलारे ॥ ६ ॥
बाघम्बर तन विशाल व्यालगण जमोलारे छवि अमोलारे ॥७॥
हर हर हर करत टरत जाल जगमखोलारे अघ कुडोलारे॥ ८ ॥
बैल छैल यशु कमैल ललन तोहिं टटोलारे दयानिधि तो-
लारे ॥ ९ ॥ इति ॥

का भयो ननँदी अनोखे पियाको। इस धुनिपर ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी काफी ॥

ठाह दून में आस्ताई आरम्भ ठाहसे ॥

उठान खाली की खाली से ॥

(५०४) साँवरा सलोना वंशीवाले कन्हैया ने (दून) मोरा मन वश कर लीन्हा सोहनी सुरत मोहनीमुरत जिय मोहा ॥ अन्तरा दुरतसे ॥ उठान खालीकी खाली से ॥ सुघर सुघर बाँकी बाँकी चंचल चपल चितवन चपला चकावे चित चुरावे जदुवा टुनवा वशीकरन मोहनियां मन मुहावे भावे नँदकेललनकी छवि पर तन मन बलि बलि जावे कमरीवारे कान्हाने न जानों कह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सखि करदीन्हा सोहनीसुरत मोहनी मुरत जिय मोहा ॥१॥इति॥

ठुमरी रागिनी बहार ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(५०५) यहां कान्हा न बँसिया बजायाकरे न बजायाकरे न सुनायाकरे॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरलसे॥मारीमरतमैंतो पिय वियोगकी जियरा न मोर जलायाकरे॥ १ ॥ नितप्रति मदन सतावत मुहिंका बिरहिन जिय न दुखायाकरे॥ २ ॥ नन्दललन तोरी बानि न नीकी क्यों दुखियहि तरसायाकरे॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी राग देशकार ॥

उठान तीसरी से ठेका होली का ॥

(५०६) जायबसे मधुवन बेनीमाधो अब जानैं कहहोनारेहो॥ अन्तरा उठान तीसरी से॥है बैरिनबाड़ि खोंटि कुबरिया जानत जादू टोनारे वाके वशकहुँ परगये मोहन तो अँसुवन मुख धोनारेहो॥१॥ दह का।रिखकी कोठकुरूपा त्यहिहितकर पति खोनारे हरि न ललन पनकर कछु बैठैं हो जग कुयशु ठिमोनारे हो ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(५०७) कान्ह गगरिया छुइयो न मोरी नहिं बिगाड़ भल होनारे हो॥ अन्तरा उठान खाली से॥ जनहु न हौं नृपकंसकिंकरी उनसँग बैर भलोनारे ॥ कुशलचहो चलजाउ सीधगृह नहिं फिर हाथ मलोनारेहो ॥ १ ॥ वह प्रधान मधुवन ब्रजकेरो जासु अदल अनहोनारे॥लखिपावैं कहुँ तोर ललनपन हो मालुम नँद छोनारे हो ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी राग सारँग सूरदासी ॥

उठान पहिली ताल से

(५०८) नेक नज़रनारि मोरा हरतप्रान बाँकी बाँकी चितवन बाँकी नैन सैनसों ॥ अन्तरा उठान समकी खालीसे ॥ नई छबीली सी रँगीली छबि दरशत रस बरसत अतिबहार ललनपिय तन मन धन देत वार ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी गौरी ॥

उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(५०९) बड़ोरी व्रजबाला श्याम छली छैल मोरी नरम कलाई मसकी पतलीरे व्रजबाला लाल छली ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ लै गरवा करि ररि कड़ी नहिं मानो श्याम सखि हटकहड़ी न बलीसों चली कुच मोर मलीरे॥व्रजबाला लाल छली ॥ १ ॥ राह बाट पनघट की गैल मगरोकत नित नव करत फैल नँदललन की बानि न नीकि अली ॥ व्रजबालालाल छली ॥ २ ॥ इति ॥ ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खाली से

(५१०) नैन भरिआये पियदेख हरष लिये प्रेम उमँगि आयो जिय अधीर अनँद कीन्हों कल न परी बेगि उठधाई उरलाइ पकर कंजकरसों सखि॥ अन्तरा उठान समकी खाली से ॥ आज भाग जागे अँगसों अँग सँगलागे भागे सकल शोच ललनपिय धनि धनि शोभा निशिभर लखत रहि नज़रसों सखि ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥

उठान खाली से ॥

(५११) कसक कसक रहिजात करिजवा बिनपिय सजनी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुघरश्याम के ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ मन नहिं चहत करन मुखमंजन बिन अंजन लोचन निकामके ॥ १ ॥ तेल फुलेल शिंगार बार नहिं फेरत कंघी हाथ थामके ॥ २ ॥ भाल सिंदूर न धरत धूर नहिं चावत पानहुँ एक दामके ॥ ३ ॥ वसन बदन अभरन अनहित भये बिसरगये सुख सकल यामके ॥ ४ ॥ परत न नैन नींद सिजियापर हरि बिन जीवन कौन कामके ॥ ५ ॥ चलन चहतपिरान बिन दरशन जिये बहुदिन कर राम रामके ॥ ६ ॥ ललन पिया जन दुखित कृपानिधि कब बहुरैंगे दिन अरामके ॥ ७ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥
उठान समकी खाली की खाली से ॥

(५१२) आली ऐसी बतियाँ करत हमसों मुरारि डगर बगर ठठोली करतरी गँवार ॥ अन्तरा उठान समकी खालीकी खाली से ॥ अतिबरजो गरज न मानो ललनपिया लँगर मटकी दीन्हीं मोरी धरन डार ॥ १ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी देशखम्माच ॥

(५१३) छांड़ोजी डगर निडर निठुर लँगर मोरी मानतरको कंगन करकोरे कोमल कलाई न गहो न गहो जी कुँवर कान्ह ॥ अन्तरा ॥ ज्यों ज्यों मिनती करत त्यों त्यों लँगरत अति ऐसोरी कुटिल निपट निलज मोहनवा नदान नँदको ललन मानत न मोरी करत मुहिं नकवान का परी तोरीबान ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी तालाङ्कमुद्रित एकावृत्ति में आस्ताई रागिनी खम्माच ॥
उठान पहिली की अनसरल से ॥

(५१४) आली मैंतो ना जैहौं ना जैहौं कैसेऊ गोकुल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गोपिनके साथ गोरस बेंचन काज ॥ अन्तरा एकावृत्ति में ॥ अंतरा उठान पहिलीकी अनसरल से ॥ येतो हैं मीत मोहन जायेंगी वाको मिलन मोरा सैयाँ सुनैगो जायगी तौ तो मोरी लाज ॥ १ ॥ मैं तो दधि बेंचकर आऊँगी पलट घर ललनपिया सासू होगीरे नाहीं तो नराज ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी तालाङ्कमुद्रित एकावृत्तिमें आस्ताई रागिनी खम्माच ॥
उठान खाली की अनसरल से ॥

(५१५) सैयां तोरी बतियाँ घतियाँ सों मैं गइ हार अबना बोलोंगी तोसों होंगी जो असल नार ॥ अन्तरा उठान समकी अनसरल खाली से ॥ नित सौतके मँदिर जागत यामिनि जाय मुहिंका तरसावत कारत वाहीको दुलार अबना बोलोंगी तोसे होंगी जो असल नार ॥ १ ॥ मैं तो विष खायके मरूँगी अब जिया जान ललनपिया मैं हारी हाहा कर बार बार अब ना बोलोंगी तोसे होंगी जो असल नार ॥ २ ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी परज ॥
उठान खाली से ॥

(५१६) माई ला माई ला मोरी बांसुरी गऊ चरावन जात मधुवन लकुट कमरी दाऊके हाथरी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कछु मधुपान करन कारन देजल गडुआ अरु दांवरी॥१॥ ब्रजजन ललन लखत मग मोरी धेनु बछा लिये साथरी॥ २॥ इति॥

ख्याल समानमात्रिक राग एमन कल्यान॥

उठान खालीकी अनसरल खाली से॥

(५१७) श्यामसुन्दर मन बसो राधा रुक्मिनजी प्रानाधार सर्वदा मोरे॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल खालीसे॥ मोर मुकुटवारो उजियारो जग त्रिपुर जननु जाके हित मन फँसो॥ जपहु तपहु योग भोग नन्दललन हित अर्पण इन्द्रि सुखद सो॥१॥इति॥

गिरगयो कहीं काँगना ढूँढ़ फिरी आँगना। इस धुनिपर॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी चिनझँझौटी॥

उठान तीसरीकी खाली से॥

(५१८) लागी पियाके अँग ना जबसों ले आये गवना॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे॥ उन तो प्रीति करी सौतन सँग दुखदेय मुहिं जुबना॥ १॥सुन मेरी ननँदी कहु दिवरा सों करि आवे मोरे भवना॥२॥ नन्दललन पिय बिनु को अदरै सुख सपना अपना॥३॥ इति॥

छाँड़ो लँगरवा मुरकि मोरी बाहींरे मानत नाहीं बड़ो ढीठ कन्हाईरे। इस धुनिपर॥

ठुमरी रागिनी काफी झँझौटी॥

उठान तीसरीकी अनसरल से॥

(५१९) बाटचलत छेड़ो बनिता पराईरे॥दीजतनाहीं कन्हाई ऐसी लरकाईरे॥ अन्तरा उठान खाली से॥ निपट निडर नटखट झिंझटकर बुरीबान नादानरे॥ नित आवत जात खिजावतहौ कह तुमहीं अनोखे भये ब्रजमें गुसाईंरे॥ चलत छेड़ो बनिता पराई

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रे ॥ १ ॥ तुमतो चतुर बड़े रसिक श्याम बिन काज धरावत नाउँरे ॥ दृगनिलाज निलाज निलाजरे ॥ देखीं लगन श्याम तोरी ढिठाईं लँगराईं रे ॥ चलत छेंड़ो बनिता पराईं रे ॥ २॥ इति ॥

कँगन मोरा करसे करक गयोरे । इस धुनिपर ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(५२०) लगोरी नेह अँखियां किशोरी मोरीसों ॥ सुनोरी मोरी सखियाँ बिपति दिन रतियाँ ॥ अन्तरा उठान समकी खाली की खालीसे ॥ दरश बिन भोरी भईसी थोरी थोरी मोहन छिनकोरी न मिलोरी गोरीसों ॥ १ ॥ प्रबल दुख सोंरी न सुधि तनकोरी सकल सुख थोरी गयोरी भोरीसों ॥ २ ॥ निठुर नँदकोरी ऐसोरी उपजोरी करत चितचोरी दृग ठगोरी सों ॥ ३ ॥ ललनप्रिय श्रोरी सोंरी कहत निहोरी सुरत न तजोरी मोहन मोरीसों ॥ ४ ॥ इति ॥

चलत पवन गइ सो अँगना बैरन मोरी लगगई आंखरे ।

इस धुनि पर ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान खालीकी अनसरल से ॥

(५२१) अब तो रीति प्रीति कासों मनमोहन करी करीरे ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ आये चारदिना पाछे घरका चित सुरत धरीरे ॥ अति निलाज तुम्हरे छल बलपर गाजहु नाहिं परीरे ॥ १ ॥ वहि सौतन सुखजाय आदरो जौन मीति तुम्हरीरे ॥ ललन श्याम इन रँगन ढँगन नहिं निभिहै एकघरीरे ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी बहार ॥
उठान खाली से ॥

(५२२) झमक झमक झरलाईरे बदरियां ॥ दमक दमक दमकत दामिनि घनि घनघुमण्ड नभछाईं छटा ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ पिय पिय पपिहा पुकारे मनमारे पियबिनु सूनीसेज डरलागत मुहिंका ललनपिय श्याम सनेही की हेरत मग ठाढ़ी अटा ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग बिहाग अष्टमात्रिक ॥
उठान तीसरीकी खाली से ठेका होलीका ॥

(५२३) आजकल कासन हित प्रबली कौन मितई नइ नारि छली ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालसे ॥ मोसि बाल न मिलब गुपाल कोउ यौवन रसकी कली ॥ १ ॥ प्रीति करहु चहिं तुम लाखन सों आनँद हद न झली ॥ २ ॥ मुहिंका दुख दैकर कह पैहौ हौं वैसेहि निबली ॥ ३ ॥ मन फाटे नहिं मिलत ललनपिया तजु न रीति अगली ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥
उठान समकी खाली से ॥

(५२४) अलबेली चलत चपल चंचल चाल लचक लचक चटक मटकसी कराल ॥ अन्तरा उठान समकी खाली से ॥ झिझक झिझक झुक झुक अटपट अति लटपटसी अठलाय ॥ रूम रूम झूम झूम घूम घूम गजगति मनु मराल ॥ १ ॥ मधुरमधुर हँस हँस सुन्दर बन ठन छबि फबिछाय ॥ रँगीली रसीली छबीली ढँगीली निराली निरालीसि विशाल ॥ २ ॥ उमँगि उमँग मोदमतंग द्युति अनंग अति सुहाय ॥ सिसक सिसक गिन गिन चरन धरन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धरत सम्हाल ॥ ३ ॥ मधुभरी मतवाली सब ढँग ढँग भरि रस रँग अँग दरशाय ॥ मनवारी अति प्यारी प्यारी न्यारी न्यारी सुकवारी विशाल ॥ ४ ॥ बरन बरन भृकुटि मरोर नासिका सकोर अधर दशनाय ॥ कटि धरकर चिबुक कपोल ललनपिय जिय निहाल ॥ ५ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी बरुवा ॥

(५२५) लागी लगन मोरी श्यामसों सुरतियां ॥ अन्तरा ॥ यहि जप योग भोग व्रत साधन हरि सुमिरन दृढ़ प्रन दिन रतियां ॥ १ ॥ पर चरचा फरचा कर राखी धर खरचा हिय हरिगुन गतियां ॥ २ ॥ मौज रौज नित मौज करत चित प्रभु गुण गाय बहाय बिपतियां ॥ ३ ॥ ललनपिय जिय दरश लालसा कब प्रभु मिलब करब द्वै बतियां ॥ ४ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(५२६) हमसों करौ न कान्ह ऐसी छल बतियाँ ॥ बसतजाय औरन ढिग रतियाँ ॥ अन्तरा ॥ हमरे निकट आवत सकुचावत नित नइ बनवत मीत सवतियाँ ॥ १ ॥ भूलगये वह दिनकी बतियाँ पर पग हमसों जो कीन्हि पिरातियाँ ॥ २ ॥ जानत हूं तुम्हरे रँग ढँग सब लाज न आवे दिखावो सुरतियाँ ॥ ३ ॥ नन्दललन पिया मोहिं न भावति तुम्हरी यह विपरीतकी घतियाँ ॥ ४ ॥ इति ॥

मोरे भोरआये सैयाँ। इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान तीसरी से ॥

(५२७) एजी एजी छैला छांड़ दे लरकैयाँ ॥ डगर बगर गरवाडार मरोरी बैयां छैलारे छांड़ दे लरकैयाँ ॥ अन्तरा उठान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खाली से ॥ निपट निठुर जनि जिय सकुचैयां अनोखी करत हमसों लँगरैयाँ छैलारे छाँड़दे लरकैयाँ ॥ १ ॥ व्रज वनितनु सन रुचि निठुरैयां सीखीं कहँ अटपटिये चतुरैयां छैला छाँड़दे लरकैयाँ ॥ २ ॥ नव उपहास न नीक नंदललन तुम व्रज पूज्य गुसैयां सैयां छैलारे छाँड़ दे लरकैयाँ ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी भैरवी ॥

उठान तीसरी से ॥

(५२८) जारे सैयाँ गहु न मोरी बैयाँ मुरकी नरमकलैयाँ बलि बलि जैयाँ ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ तुम निरदइ न दरद जिय लावत बिनति करत तोरी परतहूं प्यारे पैयाँ सैयाँ गहु न मोरी बैयाँ ॥ १ ॥ नंदललन अबतो लरकान तैं तजत जो निपटै न लरकैयां लँगरैयाँ सैयाँ गहु न मोरी बैयाँ ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक राग सहानाकान्हरा ॥

उठान खाली से ॥

(५२९) करु न कान्ह ऐसी लँगरैयाँ निठुरैयाँ सैयाँ लरकैयाँ ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ छांड़ छांड़ बैयाँ मुरकैयाँ नरमकलैयाँ सौबलखैयाँ ॥ १ ॥ पर पैयाँ बलि बलि जैयाँ हाहा करजोरत शीश नवैयाँ ॥ २ ॥ नंदललन अपनी कर छांड़ो व्रज आवन को सुख फल पैयाँ ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की राग सहानाकान्हरा ॥

उठान खालीकी अनसरल खाली से ॥

(५३०) श्याम सुघर छविपर बलि जैयाँ नैनकमल चितवन मन भैयाँ कजराकी रेख देख हरषैयाँ ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ मोरचंद्रगात शोभा सुहात रँगरस चुआत अँग अँग सुघरैयाँ ॥ मोर-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मुकट मकराकृत कुंडल पीताम्बर तन अधिक सुहैयाँ ॥ १ ॥ अधर मनोहर मुरलि बजावत मधुरि मधुरि सुंदर सुरसैयाँ ॥ भृगुपद चिह्न भिन्न शोभा उर ललनपिया लखि जिय हुलसैयाँ ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़की समानमात्रिक राग सहानाकान्हरा ॥

उठान खाली से ॥

(५३१) ललित मनोहर गात पीताम्बर अति सुहात मस्तक मलयागिरि क्रीट मुकुट शिर चन्द्रकलाकर ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ अरुन बरन मदरस टपकत दृग कजरारे द्युति लखन सुधाकर ॥ १ ॥ मृदुल हँसन छविधाम दशन मृदु बैन बिराजत धनुष भुजापर ॥ २ ॥ श्रवण कुंडल रवि कलन करोरन मानहुँ गन प्रकटे उदयाकर ॥ ३ ॥ बरन बरन छवि कहि न जात कछु अवध ललन पिय सुखद सियाबर ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक राग सहानाकान्हरा ॥

उठान खाली से ॥

(५३२) राजत छवि शशि मुख सुन्दरसी मोरमुकुट दामिनि द्युतिदरसी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ चिबुक चारु कोमल कपोल मृदु गात अमित शोभा सुख सरसी ॥ १ ॥ अरुन अधर सुंदर धुनि मुरली बजत राग रँगरस सुर बरसी ॥ २ ॥ कटि पट पीत झलक जोबनकी लखि नँदललनपिया हिय हरसी॥३॥इति॥

ठुमरी राग सहानाकान्हरा ॥

उठान तीसरी से ॥

(५३३) हरि अनरीति करी सखिसोंरी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ सनमुख ननँदि आन बराजोरी बैयाँ पकर खड़ोरी ॥ लै गरवा मुख चूम साँवरो परवश आज ठगोरी ॥ १ ॥ निपट ढीठ ढोटा नँद

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नटखट निडर न नेक लजोरी ॥ मैं मरगई लाज की मारी समुझि मौन भइ भोरी ॥ २ ॥ देखौ कौन दशा अब करिहैं ससुर सास पति मोरी ॥ ललन कहाय बचैगो वोतो मोरी दुरगति होरी ॥ ३ ॥ इति ॥

ढीठ कन्हाई मोरी बैयाँ छांड़दे । इस धुनिपर ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की अनसरल खाली से ॥

(५३४) अँचरा छाँड़ मुहिं घरवा जानदे कैसोरे अनारी है बिहारी कह मानी मन बाट रोंकत मोसे ठठोली ठानके ॥ अन्तरा उठान तीसरी की अनसरल खाली से ॥ जानै न जनाई देत कंसकी दुहाई फिरे जिनको राज चहुँदिश जहान के ॥ १ ॥ ललनपियासों जान पाछे रारिहोगी आन मोरी सिख ध्यान साँची साँची मानके ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी राग मलार ॥

उठान समसे ॥

(५३५) बरसगईं बरसगईं घन गगन आली आज कह कहुँ जिय पियबिन रहो न जात तरसरहीं तरसरहीं भाग लाग अपने सुहाग ॥ अन्तरा उठान समकी खाली से ॥ हूँतो विकल उतकल प्रेम प्रीति रसिक करत ललनपिया सौतभाग पग पराग सुखसों पाग ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान पहिली की अनसरल खाली से ॥

(५३६) राजीरे राजीरे मोरे आउ मोहन मँदिर महाराज अंक भर सोवें हम तुम सिजियापै दोउ करसों करडार ॥ अन्तरा उठान तीसरी की अनसरल खाली से ॥ तुमहूँ रँगीले मैं रँगीली रँग

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बरसाओ नीके ढँग दरसाओ ललन प्रिया मुरारी वारी जो करो प्यार ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खालीकी खाली से ॥

(५३७) आओजी आओजी मोरे आज मोहन ॥ अन्तरा खाली से ॥ बाँकी रँगीलीसी छबीली छबि सज प्यारे ललनपिया के जिया बिराज मोहन ॥ १ ॥ इति ॥

ध्रुपद इकताला रागिनी परज ॥

उठान समसे ॥

(५३८) कैसे जाऊँ कैसे जाऊं पनियाँ भरन भोरहीते साम्हरो कन्हैया मुहिं मारगमें टोंकै मगरोंकै ढीठ निडर लँगरात लँगरवा झिगरवा करत बैयाँगहत न माने हटक हठीलो हठिकर करतढिठाई गरवा लगावे मुसिक्यावे जिय ना लजावे मनभावे सोई करत डरत सखि न तनक ॥ अन्तरा उठान समकी खालीसे ॥ पाइलकी सुन झनकार बेगिहीं आवतधाय चंचल चपलचित मुरार बड़लवार घुँघुटा उघार बारबार ललनपनको धारधार चुनर फारदइ हमार नँद को अनोखो छैला यशुदाको प्यारो वासों वश न चलत कछु विवश भई बिथा मैं कासों कहूं रहोरी जियरा कसक ॥ १ ॥ इति ॥

अब मोसे रारि क्यों मचाई । इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की तीसरी मात्रा से ॥

(५३९) बराजोरी जानके कन्हाई मारग में बैयाँ गही गरवा लगायो करके ढिठाई ॥ अन्तरा उठान समकी अनसरल से ॥ झिंझट गम्भीर करके क्षीर ढरकाय दीन्हों गागरिया धरन मोरी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पटकाई ॥ १ ॥ नंदललन प्रियकी लँगराइन देखु मानत न मोरी साँवरिया बड़ोही नटखट माई ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की तीसरी मात्रासे ॥

(५४०) जोराजोरी रारिकर कन्हाई पनियाँ भरत मोरी गगरी गिराई रसरी बहाई ॥ अन्तरा उठान तीसरी की अनसरल खाली से ॥ कहुरे नन्दललन अब मैं कैसे मंदिरवा जाऊँ सास ननँदिया मोपै रिसाई ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥

उठान पहिली से ॥

(५४१) बैयाँ मोरी छांड़दे अनारी करको कँगन मुरकी कलाई जारे निठुर मुरारी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ ऐसोरी बेमारग मारग मोरीरोंके ठाढ़ो ललनपिया चपल बनवारी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(५४२) मैंने तोरी जानी चतुराई नँदकी दुहाई चल चलरे कन्हाई कीजै न ढिठाई ॥ अन्तरा उठान समकी खाली से ॥ यशुदाललन रे मुहिंका जानेदे भरन जल तुहीं न नोखो रसिक व्रज में प्रबल यदुराई ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी बरुवा ॥

उठान समसे ॥

(५४३)नीरा भरत मोहन मटकीलो चटकीलो ने अँचरा पकररे बरजोरी मुहिंका गरवा भरलीन्हों सखि ॥ अन्तरा उठान तीसरी की अनसरलसे ॥ निपट निडर सकुच लावत न जियामेंहू

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तनक भावत करत सोई नागर निलज ऐसो नँदके ललनने ब्रज में अस उतपात कीन्हों सखि ॥ १ ॥ इति ॥

॥ आस्ताई रागिनी बरुवा ॥

झपताल उठान समसे ॥

(५४४) माथेकी इँडुलि मोरि भगो दधि मटुकि चोरि नन्द महर को कन्हाई कुँवर ऐसो ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ बाट बिच खड़ी मैं जिया शंकित मलत कर कैसे कै बचैगी मोरी पति पिय जबर ऐसो ॥ १ ॥ यशुमति ललन करनी बरनी न जाय कछुक नन्दहु न डाटत भयो हरि निडर ऐसो ॥ २ ॥ इति ॥

दादश रागिनी बरुवा ॥

(५४५) लगन मोरी तोसे लगीरे गोपाल ॥ मेहरकर मिल जारे दीनदयाल ॥ अन्तरा ॥ ब्रज मधुवन गोकुल वृन्दावन खोज फिरी रे नँदलाल ॥ १ ॥ बैठरही मनमार मौन गहि चलत न एकहु चाल ॥ २ ॥ नन्दललन पिय जनहित पालन मम सुधि जियसों न टाल ॥ ३ ॥ इति ॥

आस्ताई राग भीम ॥

रूपकताल उठान समसे ॥

(५४६) निपट हठि नट कीन्हीं नटखट मोहन मुरलीवारे ॥ पग परि चिरौरी चिकुर गहि करि करन जोरि कहारे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ मुहिं बुलाकर प्रेम पुराकर दधि चुकाकर खारे ॥ पुनि ग्वाल मताकर अस छलाकर झमकादियो झगड़ारे ॥ १ ॥ श्याम दाम न दीन्ह दधि के हीन कीन्ह घटारे। झट सटका कुंजन जा दुरो कछु नंदललन ढँग न्यारे ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ओदानी दीम तदानी तुम दिरदानी तारेदानी तदिर दिर देरना देरना तदेरना। इस तराने की धुनि पर॥

ध्रुपद इकताला रागिनी बरुवा॥

उठान समसे॥

(५४७) डगर चलत ठठोली करत पनियाँ भरत लँगरत अति निपट निडर लँगर ढीठ छलिया अति गोरी॥ अन्तरा उठान सम की खालीसे॥ दौड़ झपट निकट आन लिपट चिपट बेप्रमान ललनपिया कुँवरकान्ह कीन्हीं बरजोरी॥ १॥ इति॥

ठुमरी राग बिहाग॥

उठान तीसरी की खाली से ठेका होलीका॥

(५४८) छबीले छैला छेड़ो न मुहिंका भलारे निडर भये तुम ऐसे काहे ललारे॥ अन्तरा उठान तीसरीसे॥ पनियाँ भरतहूं मैं पनघटवापर तोरा ह्याँ काज कहारे॥ १॥ चल हटजारे न झिगर पसारे हूँ अकेलि अबलारे॥ २॥ वैसेही बैरधरे सब ब्रजजन तापर तुम ढिगठारे॥ ३॥ ललन श्याम तुहिं निरखि निकट मम धरि हैं दोष मुहिंसारे॥ ४॥ इति॥

दादरा रागिनी खम्माच मलार॥

(५४९) दइमारे बदरवा गरजरहेरे वारि बरसरहेरे जियातरस रहेरे हाँ॥ अन्तरा॥ पियबिन नींदा न आवत बैरिनि दमक दमक डरपावत दामिनि पपिहाकी टेर सुन जियदहेरे हाँ॥ १॥ सुन शिखि बक बच चातक हंसा कोकिल कूक हूक उपदंशा दादुर दुरावत न माने कहेरे हाँ॥ २॥ पुरवा सनक सतावत जीरा बिरह मदन उपजावत पीरा ललनपिया बिन न सुखलहेरे हाँ॥ ३॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दादरा भैरवी ॥

(५५०) बाट चलत मोरी बैयाँरे गहीरे मैंतो नाहीं जैहौं पनियाँ जिठनियाँ भरन ॥ अन्तरा ॥ घूँघट उघारे पट टारे जोरा-जोरी मोरी छतियाँ छुवत नयो नयोरी जुबन ॥ १ ॥ ललनपिया निडर माने मुरारी मोसे नैनवां लड़ावे लगावे लगन ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा भैरवी ॥

(५५१) एरी ननँदिया उठादे जरा तू हमरी गगरिया भरी नीरसौं ॥ अन्तरा ॥ अपने बबुलकी मैं परम लड़ैती कबहूँ न पनियाँ भरा बीरसौं मैंतो कबहूं न पनियाँ भरा बीरसौं ॥ १ ॥ अब चहि पियमोसे कोदौं दराले पालापड़ा मेरा बेपीरसौं ॥ २ ॥ जो कुछ नँद-ललनपिया केरी मरजी दुखसुख सैहौंसो शरीरसौं ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी अमनी ॥

उठान तीसरी से ॥

(५५२) बोलेरे पपीहरा पापीरे पियपिय रटत रैनिदिन ॥ अन्तरा उठान पहिली की खालीसे ॥ गरजत घन लरजतजिय पिय बिन नींद न आवे नंदललन पिय जीवन प्रान धन की मग हेरत घड़ी घड़ी पल छिन छिन ॥ १ ॥ इति ॥

द्वार कब ऐहोरे बांकेयार । इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी गौड़ ॥

उठान समकी खाली की खालीसे ॥

(५५३) रारि मत मोसेकर गँवार तुहिं बरजूँहूँ मोहन बार बार ॥ मत मोसे कर गँवार ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ छलबलिया कर कर लँगराई ललनपिया ऐसो निठुर कन्हाई दइ लिपट चिपट दधि मटकी डार ॥ मत मोसे कर गँवार ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़े की रागिनी गौड़ ॥
उठान समकी खालीकी खालीसे ॥

(५५४) मगमें गलबैयाँ देतडार ऐसो चंचल चपल छैला नँद कुमार॥ गलबैयाँ देतडार॥ अन्तरा उठान खालीसे॥ निडर कान्ह नहिंकरत कानि वोतो ज्यों ज्यों हटको त्यों त्यों, अटकै आनि मैं तो ललनपिया वासों गईहूँहार॥ गलबैयां देतडार॥ १॥ इति॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी गौड़ ॥
उठान तीसरी की खालीसे ॥

(५५५) मोरी मटुकि पटकिदइ नँदकुमार॥ मोसे करत लँगर नित नई रार॥ अन्तरा उठान खाली से॥ नन्दललन अतिही अन्याई बैर परो कह कहौंरी माई गरवा भरत मुहिं मग मँझार॥ १॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी गौड़ ॥
उठान समकी खालीकी खाली से॥

(५५६) लँगर लँगरै नित गोकुल बीच॥ कसपरी कान्हकी बान नीच॥ लँगरै नित गोकुल बीच॥ अन्तरा उठान खाली से॥ नंदललन दधि माखन घाती तैसेहि वाके संग सँगाती मारत काँकरि खींनखींच॥ तन मारत काँकरि खींच खींच॥ लँगरै नित गोकुल बीच॥ १॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी गौड़ ॥
उठान तीसरी की खाली से॥

(५५७) नहिं ढीठ कोउ हरिके समान मुहिं छेंड़त डगर बिच जान जान॥ अन्तरा उठान खाली से॥ हूंतो प्रपंच रंच नहिं जानत वह मुहिं नारि प्रपंचि प्रमानत नन्दललन सों भई नकवान॥ १॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़े की रागिनी गौड़ ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(५५८) बलि बलि गइ सखि नागरनटके गटकै दधि लै घट बन सटकै ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ बे मारग मारगमें अटकै गहिपट अंचल चटकै मटकै जग कुलकानि लाज पटके ॥ १ ॥ यमुना पुलिन निकट पनघटके नन्दललन ढिग आन निखटके हँसत पलट पट घूँघटके ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी गौड़ ॥
उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(५५६) निलज अति भयो सखि नँदको कान्ह कठिन अब व्रजकोहु बसब प्रमान ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ यमुनजात लँगरात श्याम पनघट कि बाट छेंड़त निकाम व्रजवामकेर नक-बानप्रान ॥ अस भयो सखि नँदको कान्ह ॥ १ ॥ यशुमति ललन निडर अति गोरी सनमुख सखियन कर बराजोरी नित नइरार करत नदान ॥ अस भयो सखि नँदको कान्ह ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी बरुवा ॥
उठान खालीकी खालीकी खालीसे ॥

(५६०) हमसों तू क्यों झुरु झुरुजात ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खालीसे ॥ बालापन सों तोरे मैं वारीरे काहे तू दुर दुर जात ॥ १ ॥ रहत न समचित भाव तिहारोरे बढ़ हित थुर थुर जात ॥ २ ॥ हमहिं ललन ललनेश चतुर तैंतो लै मन मुर मुर जात ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग कान्हरा ताल प्रबंध ॥
प्रारंभ चौतालसे उठान समसे ॥

(५६१) भली भली आनि बानि (पुनः आरंभ झपताल सम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

से) दान रीति ठानि कान्ह ॥ अन्तरा शूल ताल उठान समसे ॥ लाभ कहा जामें युवती दुख पावे (आड़ा चौताल समसे) नेक ना लजत दृग तोरेरे ॥ (चौताल समसे) हम इतहि नितहि आवति ॥ (त्योरा ताल सम से) नई न कछु पहिचान तुमसन ॥ (पुटताल समसे) जान बूझही बनत यशुमति ललननान्ह ॥१॥

ध्रुपद रागिनी अलहिया ॥

उठान समसे ॥

(५६२) आजरी हमारो हरि गोरस नवनीत छीन लीन्ह हीन मटकी कीन्ह अवनि कछु बगेरोरी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ बरजरी न मानै सिख काहूकी न ध्यानै दृग लाजहू न आनै नित विचरत बखेरोरी ॥ १ ॥ (अभोग) रीती गागर बहोरि झोर मारी मोर ओरि तोर फोर खँड करोर कीन्हे गति हेरोरी ॥ २ ॥ (भोग) कौन कौन गुन गिनाऊँ नन्दललन गति लखाऊँ कहि सुनाऊँ वनब तजत व्रज बसेरोरी ॥ ३ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(५६३) व्रजमें यों कहि टेरैं गुजरी कोई दहिया लो दहिया लोरी ॥ अन्तरा ॥ भोरीभोरी भामिनि तन द्युति दामिनि शीशधरे इँडुली गगरी ॥ १ ॥ इन्दीवर दृगभ्रकुटि कुटिल अति अंग अनंग प्रभाअगरी ॥ २ ॥ गोरि गँभीर शरीर मनोहर साजे शिर पियरी चुनरी ॥ ३ ॥ कुंडल करनफूल कानन में गल विशाल दुलरी तिलरी ॥ ४ ॥ रूप अनुप नँदललन प्रमोहत यक सों एक परी से परी ॥ ५ ॥ इति ॥ ध्रुपद राग केदारा ॥

उठान समसे ॥

(५६४) आयोरी सावन झूलैं हिंडोले दोउ लरज लरज गरज

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गरज बरसत घन घुमंड घोर ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ चहुँ दिशि कोकिल चकोर करत मोरि मोरशोर बोलत दादुर पुंज मंजु कुंजु सघन ब्रजकी ओर ॥ १ ॥ (अभोग) नन्दललन कीर्तिललनि प्रभा सिन्धु आनँद सदन गौर श्याम सुभग बरन मोहनि मूरति किशोर ॥ २ ॥ (भोग) दिपति बिमल चंद्रभान अँग अँग छवि नखतखानि बरषत फुल सुर सुजान डारत तृण तोर तोर ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग कान्हरा बाघेश्वरी चारिताल ॥

उठान समसे ॥

(५६५) बहुत दिनानु पीछे लाल आज भेंटभई धनि धनि यह घड़ी सो धनि लग्न धनि सुहाग भरी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ नौबतद्वारे धराय युवतिनु यूथनु बुलाय बहुविधि उत्साह सहित नानारँगप्रेम युक्ति गाइये बधावे सराहिये सुभागरी ॥ १ ॥ लाड़ लड़ी लालसा औ प्रीतिभरी आश हियकी प्रेमपगी अति उमंग बिरहा बिथाकी अनल कृपाकर गुपाललाल मुरली सुरसुघर सुनाय ललनपियासों प्रीति पूर मदन दुख नशावो हरी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी भैरवी ॥

उठान खालीसे ॥

(५६६) कामिनी काम जगावत है जो बजावत श्याम कहीं बँसुरी ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ को विधिसे जाको गुण लखिये यह केहि गुण रसखानिभरी ॥ १ ॥ हरि हिय प्रिय यहि अधरनु लागी जब देखो तब रहत धरी ॥ २ ॥ वन लकड़ी वनमाहिं बसै सो पुनीत अस कीन्ह हरी ॥ ३ ॥ हा हम वंशिहु सम न भईं कोउ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पँचतत्त्विक तन धिग धिगरी ॥ ४ ॥ धनि वंशी बड़भागिनि जेहि को नन्दललन हितसों अदरी ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक राग भैरवी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(५६७) मुहिंका न सतावो श्याम अनोखे छैलारे ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ दधि बेंचन मैं नित इत आवतरे बरसाने की न वाम ॥ अनोखे छैलारे ॥ १ ॥ कंसरजाकी मैं चेरी कहावतरे जाय कहूं यहि याम ॥ अनोखे छैलारे ॥ २ ॥ नंदललन फिर बिगड़ जायगीरे छेंड़त मोहिं निकाम ॥ अनोखे छैलारे मुहिंका न सतावो श्याम ॥ ३ ॥ इति ॥

बतादे सखी कौन गली गये श्याम। इस धुनि पर ॥

ठुमरी रागिनी काफी खम्माच ॥

उठान समकी खाली की खालीसे ॥

(५६८) सजन बिन तरसत जियरा मोर ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ बहुत दिना भये सुधिहू न लीन्हीं ऐसे श्याम कठोर ॥ १ ॥ ललनपिया कछु नीक न लागै बिन श्रीकृष्णकिशोर ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी खम्माच ॥

उठान समकी खाली की खालीसे ॥

(५६९) जा जारे सैयाँ देखिलईरे तोरी बात करत नित हमसों छलबल घात ॥ जारे सैयाँ देखिलईरे तोरी बात ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ कहु कछु और करत कछु औरै तोरे नये ढँग नये नात ॥ जारे सैयाँ देखिलईरे तोरी बात ॥ १ ॥ दइ निरदई के फंदे परैना कपटी से कछु न बिसात ॥ जारे सैयाँ देखिलईरे तोरी बात ॥ २ ॥ ललनपिया नया नया रँग सब रँग तोरे ढँग मुहिं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

न सुहात ॥ जारे सैयाँ देखिलईरे तोरी बात ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान खाली से ॥

(५७०) उन बिन माँडा जीयरा तरफत दिनरतियाँ कल न परत मुहिं ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ बिरह बैरि रिपु मदन सखीरी करत दोऊ तन पीयरा ॥ तरफत दिनरतियाँ कल न परत मुहिं ॥ १ ॥ ललनपिया श्रीकृष्ण दरश बिन जिय नहिं धारत धीयरा ॥ तरफत दिनरतियाँ कल न परत मुहिं ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी खम्माच ॥

(५७१) देखी देखी कान्हा झूठी तोरी बात नये रँगढँग छल बल सिखत जात दिनरात कान्हा झूँठी तोरी बात ॥ अन्तरा ॥ कहि निशि आवन सौतनसों जोरो जारे नात नँदके ललन तोसे न बोलूँ कपटी हितु न मोहिं सुहात झूँठी तोरी बात ॥ १ ॥ इति ॥

कँगन मोरा करसों करक गयो रे । इस धुनि पर ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(५७२) सजन बिन सिजिया न सुख दईरे ॥ न आवै निशि निंदिया नैननदी ननँदिया ॥ अन्तरा उठान समकी खाली की खालीसे ॥ उमँगत न जागी जोबन अनुरागी लगन मोरी लागी उन सँग नईरे ॥ १ ॥ लगाई उन नतियाँ सौतनसों पिरतियाँ उमर मोरी सारी तरफत भईरे ॥ २ ॥ न सँग कोउ कारे निरदइ संग डारे ललन नँदवारे सों फँसगईरे ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(५७३) ऐसो सैयां निरमुहिया सखी मोरारे न आवै पास मोरे पैयाँ परूँ करजोरे ॥ अन्तरा उठान समकी खाली की खाली से ॥ न आवे सेज रतियाँ लगे न मोरी छतियाँ तरसरहे उमँग उमँग जियारे ॥ मदन तनतोरे मारत शरघोरे ॥ १ ॥ बम्हना लाज न आई मोरी पतिया मिलाई कह जानके कराई थी सगाई यहाँरे ॥ नादान पियासोंरे बिपति जियाकोरे ॥ २ ॥ न आई लाज मातको न तातको न भ्रात को बिवह दई नदानको जवान त्रिया रे ॥ ललनपिय भोरे कह्यो ढँग नयोरे ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(५७४) लागा सो लागा मोरी जान अब तो नेहा साँवरेसों लागा सो लागा मोरी जान ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ मनअटको उनहींके प्रेमरस पागा सो पागा मोरी जान अब तो नेहा साँवरेसों ॥ १ ॥ यह जगके अघ कर्म्म कुटिलसे भागा सो भागा मोरी जान अब तो नेहा साँवरेसों ॥ २ ॥ ललनपिया प्रभुभक्ति सुधारस माँगा सो माँगा मोरी जान अबतो नेहा साँवरेसों ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी मलार ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(५७५) सखि छाये बदर अँधियारे कारे गोरे बिजुली से उजि- यारे गरज गुहारें तानाना तोम तानाना दिर दिरना दिर दिरना दानी थररथोम्ब तानानारे तानानारे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ मैं बिरहिन तरफतहूं निशिदिन उमँगत देख बहार मदन तन ॥ दुरर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दुरुर दुदुरावे दादुरवा नन्दललन बिन बिकल जियारे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी कलांगड़ा ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(५७६) मोरे पियासों बनत न करु कौन यतन कैसे मिटब जिया की सखि करक कसन ॥ अन्तरा उठान तीसरी की तीसरी मात्रा से ॥ बहु समुझाय बुझाय थकी मैं पिय न तजत सौतनको भवन ॥ १ ॥ सास ससुर कुल बंधु पड़ोसी हार गये बक झक पियसन ॥ २ ॥ सुख की सार ससुरार विदित मुहिं उलटि भई दुख दुसह सदन ॥ ३ ॥ रहि नैहर पियहित बल फूली सो शूली भइ प्रीति सजन ॥ ४ ॥ जिय चाहत बाबुल लिख पठऊं लैजायँ मोहिं बुलायवतन ॥ ५ ॥ सखि सुहात नहिं असन वसन कछु कासे कहूं पियको ललनपन ॥ ६ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी मलार ॥

उठान तीसरी ताल से ॥

(५७७) एरी मा बदरा बरसन लागे नन्हीं नन्हीं बुँदियनु परत फुवारलखि अंग अनँग मोरे जागे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ पियरो तन मेरो पड़ो पिया बिन बिरहा चैन देत नहिं पल छिन ललनपिया सौतन रसपागे बदरा बरसनलागे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी मलार ॥

उठान खाली से ॥

(५७८) नान्हीं नान्हीं बुँदियन घन झरलाई बन बन फूले फूल विटप खग कोयल मोर चकोर कोकिला बोलत पपिहा पिय पिय धुनि सुनि चैन पड़त उन बिन नहिं माई ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ चाप चढ़ाय मदन ललकारे काटत निशि गिन गिन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कर तारे बिरह पीर गइ चीर करिजवा नन्दललन पिय बिनु जिय जारे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(५७९) बँसिया किधौं मुहनि मोहन की ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ श्रवण सुनत मुरली की मधुरि धुनि सुधि न रही तन मनकी ॥ १ ॥ जाति रही पनघट पनियाँ को चेत न नीर भरन की ॥ २ ॥ भूल गई घरहू की मारग औघट घाट गवन की ॥ ३ ॥ विरह धीर नहिं देत बीर मुहिं दाहत पीर मदन की ॥ ४ ॥ नन्द ललन पिय बिनु जिय व्याकुल आशा न प्रान बचन की ॥ ५ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक राग बिलावल ॥

उठान खाली से ॥

(५८०) जयजयजय गिरिजा नन्दन श्रीजय जयजय गिरिजा नन्दन ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ एकदन्त अतिदयावन्त गज वदन विनायक सिद्धिसदन ॥ लम्बोदर लोचन लाल ब्याल वर भाल खौर राजत चन्दन ॥ १ ॥ श्रवण मनोहर कुण्डल सो उर उग्र माल मुक्ता मणियन ॥ गणनायक सन्तसहायक सब सुख दायक भायक निजु भक्तन ॥ २ ॥ श्रुति भुज मोदक थाल माल पुस्तक वारिज वर बरन बरन ॥ तन लाल लाल शोभा विशाल विद्यावारिधि मूषकवाहन ॥ ३ ॥ अष्टसिद्धि नव निद्धि सदाहीं चरण चाकरीदें निशिदिन ॥ सुर शेश सुरेश धनेश शिवा शिव धरत ध्यान मुनि चतुरानन ॥ ४ ॥ तुम्हरे यशु पुराण अभिलाषत आदिदेव भाषो वेदन ॥ शुभ सुधि बुधिदाता विद्यानाथा नावत माथा तिहुँ पुरजन ॥ ५ ॥ जयति जयति गिरिराजआत्मजा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कैलासाधिप शम्भु ललन ॥ सेवक सहाय चितलाय दीजिये चहत दास रति कृष्ण चरन ॥ ६ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी कलांगड़ा ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(५८१) नयो तुम्हरोहि सुत भयो माय रसिक मुहिं छेंड़त बाट चलत निधरक ॥ अंतरा उठान तीसरी की खालीसे ॥ गोरस बेंचन इत आई भटक दधि लूटलई दइ मटुकि पटक ॥ कर पकर अचानक दीन्हि झटक झिंझट में कँगन मोरा गयोरी करक ॥ १ ॥ ऐसो निपट निडर मोसे चटक मटक बराजोरी कर दइ नइ सारी मसक ॥ सुन पावे जो पिय मोरा तनक भनक बढ़जाय झिगर फिर बड़न तलक ॥ २ ॥ सँग लिये ग्वाल गोपाल दसक यक यकसे कुचाल कराल ठसक ॥ मैं तो नन्दललन ढँग देख सजकि उड़गइ तनमन रँग रूप रमक ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी भैरवी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(५८२) मुहिंका ना सुनाओ श्याम बँसुरिया रसभरीरे ॥ अंतरा उठान तीसरी की खाली से ॥ यक तो सोच मुहिं बारे बलम कोरे दूजे सतावत काम ॥ १ ॥ बिरह सतावत नींद न आवतरे भोजन भजन न राम ॥ २ ॥ नन्दललन पिय दरश देत नहिं उलटो करत बिराम ॥ ३ ॥ इति ॥

वचन बँधाय आये ये मनमोहन । इस तर्जपर ॥

ठुमरी समान मात्रिक रागिनी खम्माच ॥

। उठान खाली से ॥

(५८३) जाउजी देखीं तुम्हरी छल बतियां औरनसों करिये

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अस घतियां खोल दिहौं अबहीं सारी पतियां ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ कुबिजहि के घर जाओ बिहारी जासन नइनइ कीन्हि पिरतियां ॥ है अस हितहि पलागन मोरी नाहक आन जरावत छतियां ॥ १ ॥ कर जोरत श्रुति गहत कोटि विधि कर पछिताई तुमसन नतियां ॥ नन्दललन बलिहारि तिहारी तोर कपट की न भुलब सुरतियां ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी राग सूहा सुघरई ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(५८४) ननदिया दिअना बालो री साजनवाँ के आवन की बिरियां रे दिअना बालो ॥ अंतरा उठान समसे ॥ ललनपिया काज सजूं सिंगार सुन्दरसी सेजरियां दिअनाबालो ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की राग सूहा सुघरई ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(५८५) आलीरी मनमोह्यो रे बांकी बांकी चितवन पलक मार ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ मदन मुहन मूरत मोहनियां नित नव रँग ढँग सोह्योरे ॥ १ ॥ नंदललन पिय बिन कल पल नहिं जबसों नजर भर जोह्योरे ॥ २ ॥ इति ॥

अथ बसंत ॥

समान मात्रिक ठुमरी राग बसंत ठेका होलीका ॥

उठान पहिली से ॥

(५८६) बेहरत बन बागन नइ बहार । भइ भूमि कुसूमित हरितभार ॥ अंतरा उठान पहिली ताल से ॥ बन बेलि बिटप द्रुम फूल फूल रस केलि करत मनु कूल कूल । कहुं महि दूर्वा मखतूल पूल सोहैं नीर निलय नीरज शुभूल अलि अवलि अलापें

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धुनि अपार ॥ १ ॥ प्रफुलित प्रसून बाग्किानन्त केसर कुसूम क-लँगा सुहंत। केतकि निवारिदौना दिपंत बेला चमेलि कहुं जुहि लसंत गहिगहे गुलाब फूले अनार ॥ २ ॥ रहिं महक मालती मोगरा कहुं कुंति कनेरहु केवरा। गुलमेंहदि दावदी गेंदरा चहुं चंप चांदिनी तरुवरा कल कदँब सुगंधित हरसिंगार ॥ ३ ॥ फूली सरसौं बनराई पीत बौरे अम्बा रम्भा पुनीत। सेमर पलास पिलखा सहीत द्रुम द्रुम खग बोलत मधुरि रीत शिख शुक पिक बक बच मोदकार ॥ ४ ॥ ऋतुराज सुखद शोभा स्वरूप उलहत उमंग द्युतिमदन भूप। तरु द्रुम बदलीं उरदी अनूप कोइ पीत श्याम सित अरुण रूप तहँ नन्दललन बिलसित विहार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ बसंत ॥

॥ ठुमरी राग एमन कल्याण ॥

॥ उठान तीसरी की खाली से ॥

(५८७) द्रुम द्रुम नबेली बेली पात पात। रँग रूप उमँग नव गात गात ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ श्याम सेत रतनार पीत शुभ सुमन प्रफुल्लित बिपुल रीत अमवा बौरे बर जाति जाति ॥ १ ॥ ऋतु बसंत छबिवंत घोर मग मग खग बोलत हंस मोर नँदललन सुयशु कथि बात बात ॥ २ ॥ इति ॥

समान मात्रिक घनाक्षरी बोल दून की ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खाली से ॥

(५८८) सखीरी मुहिंका निरदइ निदिया न आई रे रात बिरहा बिथासों रही बिकल न कल जिय पिय की मग हेरत रैनियां गँवाई नखत गिन गिन ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ सोलहु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सिंगार चारु बत्तिस अभरन सुधार सुमन सिजिया सैया काज सुघरसी सजाई रे सिजिया सजाई उन बिन न सुहाई रे ॥ १ ॥ अवधि बदन आये श्याम निरखु उनके कुटिल काम दाम दाम कुलचिकाम तन सुधि बिसराई रे ॥ सुधि बिसराई नँद ललनकी दुहाई रे ॥ २ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी खम्माच इकताला ॥

उठान सम से ॥

(५८९) निपट निडर डगर बगर मारग मोरी छांड़ ॥ छैल न गलबैयां डार बराजोरी थोरी छांड़ ॥ अन्तरा उठान समकी खाली से ॥ बहुविधि बरजो न माने कान्ह बड़ नदान कौन बानि ठानि नँदके ललन जोरा जोरी जोरी छांड़ ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समान मात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान खाली की अनसरल खाली से ॥

(५९०) लाज तुहिका निडर न आईरे ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल खाली से ॥ बैयां गहत मग चलत लँगर मोरी छुओ न छैल छांड़ो नरम कलाईरे ॥ नरम कलाई मुरजाय न कन्हाई रे ॥ १ ॥ बारबार मोसे ठठोली करत काहे नँदको ललन न तजत लड़काईरे ॥ ऐसी कुटिलाई तुहिका कौने सिखलाई रे ॥ २ ॥ इति

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी ताल से ॥

(५९१) जारे जारे सैयां बैयां मोरी छांड़ इतनी बिनती मोरी मान रसियारे प्यारे ॥ सैयां बैयां मोरी छांड़ ॥ अंतरा उठान तीसरी की खाली से ॥ सासको सुवा आऊं जल गडुवा भरलाऊं रे तब तो रे तीरे आऊं नैकही धीरज ठान हां रे ॥ सैयां बैयां मोरी छांड़ ॥ १ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निरख ननदि लेगी दिवरा सों कहिदेगी रे ललन पिया न माने कौन यह तोरी बानि मतवारे ॥ सैयां बैयां मोरीछांड़ ॥२॥ इति॥

दादरा घनाक्षरी रागिनी खम्माच ॥

(५६२) चलरे चलरे सैयां सोरहे बखरिया अटरिया सिजरिया आऊं मैं साज ॥ अन्तरा ॥ मनमानी मनमानी करूंगी सेवा मनमाना मनमाना तोरा काम नन्दललन चरन चांप राजी रख न करूं नराज ॥ १ ॥ इति

ठुमरी राग बिहाग ॥

उठान तीसरीकी खाली से । ठेका होलीका ॥

(५६३) पहरुआ बोलन लागेरी ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालसे ॥ आधीरात बीति निदिया हित दृग अनुरागेरी ॥ १ ॥ बिरह बिदीर्ण कीन्ह आकुल तन मदन अभागेरी ॥ २ ॥ नन्द ललन पिय अजहुँ न आये क्यहु रस पागेरी ॥ ३ ॥ इति

ध्रुपद इकताला रागिनी खम्माच ॥

उठान तिया की दूसरी ताल से ॥

(५६४) सखि कवन भवन गवन कीन्ह प्यारे उन बिन नहिं देत चैन बैरी बिरहारे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ कौन कारन भयो री आली आये नहिं श्री बिहारी ॥ बीतीजात रैनि सारी मदन बान मारे ॥ १ ॥ (अभोग) कह कोउ जन गाढ़ जान ता लगि कीन्हो पयान ॥ किधौं निदिय रस लुभान सैन सुख सिहारे ॥२॥ (भोग) होत कछुक जिय प्रतीत कह कोउ नइ कीन्ह मीत ॥ ललनपनकी रीति प्रीति उनकी बिदित सारे ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(५६५) नइ बानि यह देखु सखीरी कुबिजा मीत करी बनवारी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ ब्रजसे दधि नवनीत छांड़गये छांछ खान वह भवन बिहारी ॥ १ ॥ तनकहु लोक लाज नहिं कीन्हीं कुलकी कानिहू कान्ह बिसारी ॥ २ ॥ कियो नाम बदनाम श्याम यहि ग्राम ग्राम चरचा चहुं जारी ॥ ३ ॥ सीखि कुचाल गुपाल कपट नहिं तजत ललनपन कृष्ण मुरारी ॥४॥इति॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी अनसरल खाली से ॥

(५६६) निपट निडर ये लँगर हमरा कहामान जानेदे पनियां भरन पनघटवा छैल गैल न मोरी रोको कुवँर कान्ह ॥अंतरा उठान खाली की अनसरल खालीसे ॥ ऐसोरी अनारी भारी बैयां मरोर डारी चुरियां करक दरको कगनवां करको नँदके ललन पिय अचरा छांड़ मसकी चुनरिया नदान ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग केदारा ॥

उठान समकी अगली तीसरी मात्रा से ॥

(५६७) हमारी बैयां ढीठ लँगर न गहो डगर मैयां रारिकरन का चहो ॥ अंतरा उठान खाली की अनसरल खाली से ॥ तुमतो समझत हँसि खेल मसखरी मानत न कोटि कहो ॥ १ ॥ तुम्हरो ललनपन छूटै न नँदललन दधि कपास गति नहो॥२॥

ठुमरी समान मात्रिक रागिनी रेनि की ॥

उठान पहिली तालसे ॥

(५६८) हो प्यारे सैयां नेक नज़र भर निरख इधर तू जो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोरे कारन॥ अंतरा उठान पहिली तालसे॥ तन मन वारूं धन दैडारूं मिलजा जो मोंसे जनम जनम की तेरी चेरी रहुं नंदललन मैं परूं पैयां॥ १॥ इति॥

॥ ठुमरी जोड़े की रागिनी रेनिकी॥

उठान पहिलीताल से॥

(५९९) न माने सैयां सौतन की सिजिया पै जाय जागे यामिनि करे लड़कैयां॥ अंतरा उठान पहिली ताल से॥ पर पग हारी लाखन वारी नन्दललन सौं भयो जिय आरी ऐसो मोहन मुरारी न तजत लँगरैयां॥ १॥ इति॥

ठुमरी समान मात्रिक रा० मलार॥

उठान खाली से॥

(६००) पिय बिन लाज मरूं गुरुजनकी साजनकी आवन की अवधि गइ सुधि न लई निरदइ बिरहनकी॥ अन्तरा उठान खाली से॥ अति अधीर नहिं धरत धीर सखि बिथा मैं कासे कहूंरी अपने मनकी॥ नन्दललन पिय प्यारे मोहन बिन बिरहा सताये दाहे दाह मदन की॥ १॥ इति॥

ध्रुपद इकताला रागिनी खम्माच॥

उठान समसे॥

(६०१) चन्द्र बदन गोरे गात गोरी आई यक चतुर नारि सज सिंगार भोरी॥ अन्तरा उठान समसे॥ मृग दृग कजरारे ऐन रँग रस छबि धारे मैन भौं कमान सैनबान बैस थोरी थोरी॥ १॥ कोमल तन अतिगँभीर सोहत शिर सुभगचीर। गज मराल चाल सुछबि छजत पोरी पोरी॥ २॥ नखशिख शोभा निधान शशिद्युति दामिनि दुरान ललनापिया जियलुभान मृदुलहँसन सोंरी॥ ३॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्रुपद जोड़े का इकताला रागिनी खम्माच ॥
उठान समसे ॥

(६०२) मुख मयंक छबि अनूप आली यौवनवाली ग्वाली गोरे गोरे गात अति सुहात उमरवाली ॥ अंतरा उठान समसे ॥ आई यक चतुर नारि साज सोलहू सिंगार ॥ नैनन की सैन मार मोहिनी सी डाली ॥ १ ॥ मैन अंग मद उमंग अँगिया भलि कुच उतंग । चलत गजकी चाल बाल यौवन मतवाली ॥ २ ॥ मधुरि सुरति अति बिशाल अँग अँग शुभ ढलित ढाल ॥ लखि छबि नँदललन लाल हो हिय खुशियाली ॥ ३ ॥ इति ॥

सादरा रा० परज शूलताल ॥
उठान समसे ॥

(६०३) एरीमेरी सुकुमारि सजु सिंगार आज तरेहदार ऋतु बसंतकी बहार लखन चलिये व्रज मँझार ॥ अंतरा उठान समसे ॥ कंजदृगन आंजु अँजन भाल बेंदि सुभग वरन ॥ अधर दशन मंजु मँजन मुख तँबोल सुगँधदार ॥ १ ॥ नँदके ललन दरशु परशु करियि जीवन सुफल हरषु ॥ बरस बरस केरु दिवस दुर्लभ जग सुख बिहार ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी कौशिकी ॥
उठान समकी अनसरल से ॥

(६०४) आली चलु बनमाली तोरी मग निरखत बिसरत पल न छिन मनसों सुधि रसना रट दृगसों दृगसों नेह सरसत ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ सजु प्रिया शुभ सिंगार सुंदर छैलमैल मनको दूरकर मोद गोद भर मिलिये ललनपन न करु तोरे पग परसत ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी कौशिकी ॥
उठान तीसरी तालसे ॥

(६०५) देखी यक चतुर नारि अति चंचल नवेली सहेली अलबेली सँग लिये श्याम गात रँग चुआत जोबन तन सरसत रस दरसत बरसत छबि ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ नखत वृन्द मध्य चन्द दिपित मानो कलावन्त चाल ढाल गति मराल ललन रँगीली प्रभा निरख उपजत हिय सुख रसनव ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समान मात्रिक राग मलार ॥
उठान खाली से ॥

(६०६) घेर आये बदरा चहुँघासे कंथ सौतघर जाय निवासे चैन है न बैरी विरहासे ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ अँधियारी घटा घुमड़ घिरआई शीतल धुंध चलत पुरवाई ॥ गरज गरज बरसत धानानाना घन व्यंग अनंग तीर तनत्रासे ॥ १ ॥ सुन पियपिय पिक वच हिय हूलत मोर चकोर बैन अति शूलत ॥ नित कूकत हूकत हिय बैरिन बरज न देत कोइ कुइलियासे ॥ २ ॥ विविध सँदेश बिरच पियहारी बीतीजात बरषा सखिसारी ॥ नन्दललन अस निठुर अनारी तजत न रीति प्रीति कुबिजासे ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी समान मात्रिक जोड़ेकी राग मलार ॥
उठान खालीसे ॥

(६०७) उमड़ घुमड़ छाये घन दइमारे कारे कजरारे न्यारे भारे अँधियारे वारे डरपत जिय लखि गगन घटारे ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ वक्र वक्र गति गामिनि ताड़िता। कौंधत कौंधा चौंधा हड़ता ॥ बुन्द बलाहक तिरछि बरछि। तन झोरत सनक समीर अपारे ॥ १ ॥ वैसेहि पियबिन दुखित रहत जिय दूजे बैर पड़ी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोइलिया ॥ तीजे पिय पिय बैन पपीहा आन सुनावत सांझ सकारे ॥ २ ॥ यक दुखहो त्यहि वरण बतावे विरह मदन तनत्रास सतावे ॥ घड़िपल छिन मुहिं नींद न आवे बिन उन नन्दललन पिय प्यारे ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी राग मलार ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(६०८) दइमारे बदरवा करत शोर घानानानानाना गरगर गरगर गरज घोर कारे कारे पीरे पीरे नीरे नीरे चहुँ ओर ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ भभक भयावनि जिय डरपावनि बिजुली चमक चौंधा की जोर ॥ १ ॥ नन्दललन पिय बिन जिय व्याकुल कैसे बचत्र सखि प्रान मोर ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(६०९) होगा वही था वही था वही है वही है वही है वही है वोही ॥ अंतरा ॥ मायाका सारा असारा पसारा पसारा मँझारा में सृष्टि मोही ॥ १ ॥ वही मात दारा दुलारा कुटुंबी पिता मित्र नाती सँगाती मोही ॥ २ ॥ है कोइ न अपना जगत् जान स्वपना कलपना न लेहो किसी का द्रोही ॥ ३ ॥ ललन जो न भूला बिधाते तिहूंकाल आवागवन दुख न ताको जोही ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ संसार परिवार वर्णन ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान समकी अगली तीसरी मात्रासे ॥

(६१०) द्रवहु प्रभु दीन बड़ो परिवारी । न तुमबिन नाथ अनाथ सुखारी ॥ अंतरा उठान खाली की अनसरल खालीसे ॥ आशा नगड़ददी सरदादी तृष्णा तन हितकारी ॥ लंपट नगड़

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ददा सरदादा लोभ लूँगरा भारी ॥ १ ॥ है प्रपंच परददी अनूपा ददी दीनता मारी ॥ परद्रोही परदादा दादा दीर्घ दरिद्र दुखारी ॥ २ ॥ ममता मातु मोह पितु मोरा आलस आग्रजआरी ॥ अर्थ अनुज अलमस्त अनन्तहि बहिन बहिम सुकवारी ॥ ३ ॥ फुफा फुफी अनरीति अनर्था मद महत्त्व मेहरारी ॥ अगम अज्ञता आत्मज वंशा काम कामनाधारी ॥ ४ ॥ दूत सुता जामातृ द्यूत अघ नाती नात हजारी ॥ जग आडंभ दंभ बहु बंधू क्रोध कुटुंब अपारी ॥ ५ छल बल छंद फंद नाना नीचता वंश ननसारी ॥ मान गुमान ममा माईं तिनु भ्रम संतिती तुषारी ॥ ६ ॥ असंतोष सोइ सुन्दर सासू ससुर असत अधिकारी ॥ सार कपट संदेह कुकृत सारी सरइज ससुरारी ॥ ७ ॥ हितू शंक अभिमान सखागण अगणित रिश्तेदारी ॥ नन्दलल्लन असजन दुखि सुखदा तुम बिनु कौन मुरारी ॥ ८ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(६११) कमाया सो पाया ले आया यहां जो बिहाया बहाया न पाया कछू ॥ अंतरा ॥ जाया ने जाया खिलाया पिलाया उढ़ाया न वस्त्र अभाया कछू। सुलाया सदा गुदगुदी सेजपर मल्ल उठाया न मनको उभाया कछू ॥ १ ॥ तू आफिर जगत मोह माया में छाया लड़कपन में शिशुपन कहाया कछू। हो युवा कामकी कामना कामिनी केलि करके कभी ना अघाया कछू ॥ २ ॥ जरा जब के जोही प्रमोही अधमता न समतासे नाता सृजाया कछू ॥ मान महत्त्व को मानी बन्यो नहिं आशा से हेत हटाया कछू ॥ ३ ॥ क्रोध कमंडल हाथ लिये ममता मद में भुरभाया कछू। तृष्णा तुरंग चढ़ डोलै चहूं नहिं अन्त को तन्त चिताया कछू ॥ ४ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लोभको लाल बनो बिहरै शठ कच्च लंपटिन सगाया कळू। लहि नर जन्म अमोल ललन तहुं नाहिं फिर प्रभु अपनाया कळू॥ ५॥

ध्रुपद रागिनी कुकव॥

चारिताल उठान समसे॥

(६१२) आशाके निवासा माहिं तृष्णा तिदवारी बीच मोह पर्यंक अंकु ममता को बिस्तरा॥ अंतरा उठान समसे॥ गादी अभिमानकी तकीया मदमान को उढ़ौना ओढ़ स्यानको विराजै मुद मस्खरा॥ १॥ (अभोग) काम रंग राच कामिनी विषय में पाच नांच नांचतो अमांच सांच जांच नाहिं हीयरा॥ २॥ (भोग) लोभी हरिनाम को गुलाम दाम बामको न चेत परिणाम को ललन ऐस धिक्कनरा॥ ३॥ इति॥

अथ बसन्त॥

आस्ताई राग बसन्त॥

रूपक ताल उठान पहिली से॥

(६१३) ऋतुराज साज बनरा बसन्त बनठन समाज बन बिच्र लसंत॥ अंतरा उठान पहिलीताल से॥ अरसीफुल लट श्रुत विष्णुक्रान्त। भौं वक्र असित नख रहित भ्रान्त। सेमर द्युति नासा करत शान्त। गालन गुलाब छबि हो यकान्त। दाड़िम पुहपाधर द्युति दिपंत॥ १॥ शुभ गुच्छ बदन विलसै महान। छबि चारु चिबुक मोगरा मान। नीरज दृग धज बिन कज प्रमान। झलकैं पलकैं मनु मदन बान। मोतिया मन्द लखि पंक्ति दंत॥ २॥ गल मोरपंखि द्युति दीन्हि धोय। भुज ढाल मृणाल बिशालदोय कर कुसुम अँगुरि कलि चम्प जोय। नख चांदनिदल मल वि- हित सोय। उर थल दोउ रबिमुखि सम सुहंत॥ ३॥ लट गुलाबास

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सम नम्र लंक । फुल लुन्हिय नितंबु अदंड बंक ॥ चिक्कनित कदलि जंघा निशंक । पग पिंडरि केवरा कमल कंक ॥ नख निशानाह कल प्रभावंत ॥ ३ ॥ तन वसन प्रसूनिक गहन भारि । केतकि जुहि बेला बर निवारि ॥ गुलमेहँदि छबो दावदी न्यार । मालती मरूअ दौना बहार ॥ हर हरसिंगार द्युतिअँग अनंग ॥ ४ ॥ कुन्दी कनैर कचनार कली । गेंदा गुढ़ार छबिदार अली ॥ उन्नति सुगंधि अवली प्रबली । दोरत समीर गति चौंर भली ॥ नँद ललन सुयशु कर कर गवंत ॥ ५ ॥ इति ॥

आस्ताई राग बिहाग ॥

रूपक ताल उठान पहिली से ॥

(६१४) बन ठन आवत लखु गोपाल ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ अलक अवलिनु इतर अंगित शिखि मुकुट भल भाल ॥ १ ॥ श्रवण कुंडल कलित भ्रकुटी कुटिल गल बनमाल ॥ २ ॥ वदन बुंद प्रसेव झलकत हीर मनु मणिजाल ॥ ३ ॥ कमलदल अरुणारे लोचनचल चितौन विशाल ॥ ४ ॥ सुमन गुच्छ सुचिकुर अधर तँबोल रचित रसाल ॥ ५ ॥ पीत कटिपट कछनि काछे हंस गजगति चाल ॥ ६ ॥ बेन बैन प्रमत्त बिरचित तान जादूवाल ॥ ७ ॥ कांध कंचन लकुट लोलित पद पादुका नाल ॥ ८ ॥ मोहनिमूरति नँद ललन लखि हरत हिय भ्रमजाल ॥ ९ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥

उठान पहिली से ॥

(६१५) देखो सखी बार बार बरजोरी त्यों त्यों वोरी जोरा जोरी मोरी बैयां गहे ऐसोरी कन्हाई अधिकाई लँगराई करे नाहीं डरे ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ डगर चलत ठठोली करत नेक न

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

डरत टारे न टरत नँदको ललन लम्पट लिपट दधिकी मटुक दइ पटकरे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी भैरवी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(६१६) माने न नँदको कान्ह ऐसोरी निपट नदान ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ राहब्राट मोहिं रोकत टोंकतरे मांगत यौवनदान ॥ १ ॥ नन्दललन भयो निलज निडर अतिरे नीक न वाकी बान ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(६१७) श्याम सलोने की बांकी अदा पै फ़िदा दिलको भावें न कुछ भी अली ॥ अन्तरा ॥ नैनों की सैनों में जादू किया लेलिया दिल सुना माधुरी मुरली ॥ १ ॥ खाना न पीना न सोना रहोना विरहमाती डोलूं गली दरगली ॥ २ ॥ मिला नँदललन गर न मुझको तो मेरी ये जां जायगी उस्पै यक दिन चली ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भँझौटी ॥

उठान खाली की अनसरल खाली से ।

(६१८) रात पियाकी बाट तकत गइ बीत रैनि सिगरी सजनी ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल खाली से ॥ नैनन नींद न नेकहु आई बैरन मुहिंका भइ रजनी ॥ १ ॥ मदन विरह दुख देत सखी पड़िहै जियकी धीरज तजनी ॥ २ ॥ सुधि भुलत न नन्दललन की लगन सुमिरत गहि माला हरि भजनी ॥ ३ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(६१९) दिल ऐसे बेदरदों को हरगिज़ न दे दिल लेकर रहम दिल न होवें ज़रा ॥ अन्तरा ॥ बोसा जो मांगा तो मिलना

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भी छोंड़ा कहूं वस्ल होने का क्या माजरा॥ १॥ ग़ैरों के जा रोउना मेरा रोना शबोदिन उसे है यही तस्करा॥ २॥ ललन से भी मिलना ललनपनहै अपना सिवा ग़म न राहतसे हो दिलहरा॥ ३॥ इति॥

॥ दादरा रागिनी भैरवी ॥

(६२०) लगा कर दिल हमसे सनेही श्याम तुमने खूब निबाही यह प्रीति भली॥ अंतरा॥ हम जानी हौ रसिक रँगीले पर निकले तुम निपट छली॥ १॥ हम तो तुम बिन तड़पत प्यारे तुमने नज़र हमसे बदली॥ २॥ तुमसों प्रीति करी पछितानी भइ बदनाम मैं गली गली॥ ३॥ नन्दललन पिय मेहर करो अब करिये जन मन झलाझली॥ ४॥ इति॥

ठुमरी रागिनी खम्माच॥

उठान समकी खालीकी खाली से॥

(६२१) गिराई गिरिधारी गगरिया मोरी रे ढरकगयो दहिया कैसी करूं मैं दैया॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से॥ दूरहि से मोहें निरख सखीरीरे वो आयो मोरे नाल झटकि झट माल हीरनकी हजारी हार लड़ तोरीरे॥ १॥ मैं डरगई लखि ललनपनो वाकोरे सखीसौं अब जैहौं यशोदा से जा कैहौं दिहौं मैं तज ब्रजको बसब गोरीरे॥ २॥ इति॥

ठमरी रागिनी खम्माच अन्य धुनि॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(६२२) मोसे बोलो ना जाओ जी मनमोहनलाल नहिं दे बैठोंगी गारी तुहिका अपने जले पै॥ अन्तरा उठान खाली से॥ ऐसोरी अनारी भारी औगुन अधिक धारी लोचन से लाज टारी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ढीठ गोपाल ॥ १ ॥ टारेसे टरत नाहीं हटके हटत नाहीं ललनपने की नाहीं तजत चाल ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी अमनी ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(६२३) देखो कैसी आज बँसिया बजाईरे स्वरन सुधा नया रँग रसबोरी मनमोहनि वशीकरन कन्हाई ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ श्रवण सुनत सुधि बुधि गइ मोरी नन्दललन करलइ चित चोरी बिरहा मदन तन दियो उपजाई ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी समानमात्रिक रागिनी काफी ॥
उठान खालीकी अनसरल खालीसे ॥

(६२४) नँदलला निरदई सखीरी ऐसी करके घतियां छतियां मसक दइ चुलिया मोरी तनक न जिय डरपतरी जाही से मैं न जाऊं यमुन जल भरन॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल खाली से ॥ वार बार बैयां गहत मग में मोरी ढीठ लँगर मुहिं गरवा लगावे ललनपिया सों मैं तो हारी मोहन सन ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी जोड़े की रागिनी काफी ॥
उठान खालीकी अनसरल से ॥

(६२५) आज लाज लई मुरारी मोरी चूनर बिगारी सारी सखि कछु कहि न बनिआवे पनघट पर झिगरोरी न मानो मोरी लपक झपक मटकी पटकीरे ॥ अन्तरा उठान खालीकी खालीसे॥ जोराजोरी करके तरके तरके भरके अंक कान्ह बिरचत अटपटि मोसे रारि आनि भल न बानि नँदकेललन नागरनट नटखट कीरे ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरी की खालीसे ॥

(६२६) बनड़ा उनींदारे नींदाभरे दोउ नैन ऐन ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालकी खालीसे ॥ दीप जोति लखि स्रोत स्रवत जल झुक झुक झुमत अचैन ॥ १ ॥ अँग अँगड़ात उबासी लै लै सम्हर न बोलत बैन ॥ २ ॥ अलि विलोक अलसानि ललन छवि बलिजावत रतिमैन ॥ ३ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी झँझौटी ॥

(६२७) चलु जारे छैला करु मत लँगरैयां तजु बैयां परुँ पैयां बलि जैयां जारे छैला करु मत लँगरैयां ॥ अन्तरा ॥ बरजत बहु मानत नाहीं ठठोली करत डगर माहीं नँदके ललन ये लड़-कैयां मोरे जिय न सुहैयां ॥ जारे छैला करुमत लँगरैयां ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(६२८) जानी जानी जानी नाहीं जात पियाके जियाकी बात ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालकी खाली से ॥ कहत कहा कछू करत और कछू रे छिन छिन रुचि पलटात ॥ १ ॥ कुबिजाके रस बस भये मोहन रे उनका वही सुहात ॥ २ ॥ ललन श्याम सखी बहु समझायो रे वह नहिं नेक लजात ॥ ॥ ३ ॥ इति ॥

क्यों बोलता यार बोलियां मैं तो हाजिर बँदियां चेरियां रे।

इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी कोशी ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(६२९) क्यों जोराजोरी कर करे बरजोरिया मैं तो चरन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चेरियां तेरियां ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ गहु न बैयां करक जायँगी चुरियां नरम कलैयां मेरियां ॥ १ ॥ नन्दके ललन परुँ पैयां बलिजैयां सब रँग तोर निहोरियां ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागभरण त्रैताल ॥

उठान समकी खालीकी खालीसे ॥

(६३०) गौर गात शशिवदन मदन भरी ॥ अन्तरा उठान समकी खालीकी खाली से ॥ कैसी ललनपिया भोरी भोरी भामिनि सोहनी मोहनी मूरत सलोनी छवि भरी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी राग भरण ॥

उठान समकी अनसरल से ॥

(६३१) चतुर चतुराई करके बात करे ॥ अन्तरा उठान पहिली की खाली की खाली से ॥ देखो जी ललनपिया ऐसी चलांक चित रस बतियन मोरा मनहरे बात करे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की समानमात्रिक राग भरण ॥

उठान समकी खालीकी खालीसे ॥

(६३२) जाओजी जाओजी मत मारग मोरी रोको ॥ अन्तरा उठान समकी खालीकी खालीसे ॥ जान जान नित आन कान्ह मोसे करत ललनपन लाजहु नहीं तोको ॥ १ ॥ इति ॥

बैरागी तोंबीमें का गंगाजल पिलवादे । इस तर्जपर ॥

ठुमरी रागिनी रैनिकी समानमात्रिक ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(६३३) मतजारे बालायौवनवाली रे पनघटकी मारग में हो यौवन ठगोरी ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ ठाढ़ोरी कन्हैया गुइयां कदमकी छैयांरे करत फिरत चितचोरीरे ॥ १ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नँदकोललन सखी रसिक रँगीलो रे बिरचत छलन कड़ोरी रे ॥ २॥

॥ ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

॥ उठान तीसरीकी खाली से ॥

(६३४) सैयां न आयो सारी रात सखी मोरारे॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ काहू सौतनियां सों नेहालगायो रे मोसन करके घात॥ १ ॥ नन्दललनकी प्रीति परेखी रे करत कपट को नात ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(६३५) सैयां ने गँवाई कहूं रात काहू सौतनकी सेजरियां रे गँवाई कहूं रात ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ हमसों छल बलकर सैयां अन्त बिलम रहेरे ललनपियाकी देखी बातरे गँवाई कहूं रात ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(६३६) अब तो न ऐहौं तोरे पास बेदरदी बलमारे ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ कर करार हमसों छलबलियारे कीन्हों अनत निवास ॥ १ ॥ नन्दललन तोरे अबहीं सों यह ढँगरे करु आगे की आस ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी ताल से ॥

(६३७) सुनरी ननँदिया मोरी बात सैयां बिनु मुहिंका ना सुहात मुहिंका नाहीं भात कछूरे दिन रात ननँदिया मोरी बात ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालकी खाली से ॥ अंग अनंग मोरे तीर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सम शालतरे उमँगि जवानी मोरे गात ॥१॥ नन्दललनपिया प्यारेमोहनबिनरे योंहीरे जवानी मोरी जात ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी ताल से ॥

(६३८) अब तो मैं जानी तोरी बात सैयां सौत घरजात ॥ सौतन घरजात मैं जानी तोरी बात मैं जानी तोरी बात ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालकी खाली से ॥ निशि जागत सौतन की सिजियारे ह्यां आवत परभात ॥ १ ॥ नन्दललन छलबल नहिं छांड़तरे निठुर न नेक लजात ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी ताल से ॥

(६३९) सोयेरी ननँदिया सारी रात सैयां सौतन के साथ ॥ सौतन के साथ सोयेगी सारीरात ननँदिया सारीरात ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालकी खाली से ॥ आज नई यह रीति निहारीरे अबना करिहौं वासों बात ॥ १ ॥ आखिर नन्दललन ललनहि हैरे कह जानै रसनात ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(६४०) कर कर के प्रीति की रीति अनरीति मीत अनरीते नीति काहेको चीत ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खाली से ॥ लखि लई तोर निरदई प्रीति गइ गइसी भई तुम्हरी प्रतीति ॥ १ ॥ जिय तरफरात अकुलात गात दिनरात जात बिन दरश बीत ॥ २ ॥ यह बानि ठान मत जान जान नादान न हौ तुम चतुर मीत ॥ ३ ॥ तन मन सनहूं जन नन्दललन वारत तुमपर हित धन समीत ॥४॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दादरा रागिनी खम्माच ॥

(६४१) निरदैया नहिं मानी निपट शठ सांवरे लँगर मोरी ॥ अन्तरा ॥ बरजतही मटुकी पटकाई भरन न दीन्हों पानी ॥ निपट शठ सांवरे लँगर मोरी ॥ १ ॥ बैयां पकर करकाई मोरी चुरियां चुलिय चुनर मसकानी ॥ निपट शठ सांवरे लँगर मोरी ॥ २ ॥ नन्दललन बड़ निलज सखीरी मगबिच बकत कुबानी ॥ निपट शठ सांवरे लँगर मोरी ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक तर्ज लखनऊ रागिनी मांझ काफी खम्माच॥
उठान तीसरी ताल से ॥

(६४२) मैंका नाहीं भावे तोरी ऐसी लँगराई रे॥ डगर चलत मोसे करत ढिठाई रे॥ अन्तरा ॥ लिपट चिपट मोरी गोरस गागर गेरी चुलिया चुनर सारी सारी मसकाई रे॥ १ ॥ निपट निडर नहिं मानत अनोखे छैला नँदके ललन तोरे कहा मन भाई रे ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी खम्माच ॥

(६४३) अब न सहोंगी हांजी निपट लँगराई मोहनकी ॥ अंतरा ॥ मग डोलत खोलत अँगियाबँद अब भल बसब न ह्यांजी॥ निपट लँगराई मोहनकी ॥ १ ॥ दधि माखन नहिं बिकन देत मम घर घर मारत भांजी ॥ निपट लँगराई मोहनकी ॥ २ ॥ नँदललनै यशुदहु नहिं बरजत अब जाऊं कहन कहांजी ॥ निपट लँगराई मोहनकी ॥ ३ ॥ इति ॥

दादरा जोड़े का रागिनी खम्माच ॥

(६४४) जान पड़ैगी आजी मोहन कुटिलाई तुम्हारी ॥ अंतरा ॥ ज्यों हटकत त्यों त्यों तुम अटकत मटकत मानत ना

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जी ॥ मोहन कुटिलाई तुम्हारी ॥ १ ॥ छीन झपट महि पटक म-टुकिया गटक गयो दधि ताजी ॥ मोहन कुटिलाई तिहारी ॥ २ ॥ जाय कहूंगी नन्दबबासों ललनरहे तब राजी ॥ मोहन कुटिलाई तिहारी ॥ ३ ॥ इति ॥

दादरा जोड़ेका रागिनी खम्माच ॥

(६४५) जारे निठुर बनमाली प्रीति पिय मोसे लगाउना॥ अंतरा ॥ प्रीति रीति को कठिन निबहिबो तैं बड़ कपटि कुचाली॥ प्रीति पिय मोसे लगाउना ॥ १ ॥ यासन भल दूरहि सन मिलबो ललन यही शुभचाली ॥ प्रीति पिय मोसे लगाउना ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा जोड़े का रागिनी खम्मात्र ॥

(६४६) बेदरदा बनवारी झपट झट बैयां गहतहैं ॥ अंतरा॥ जोराजोरी कर बाराजोरी नित ठानत अपनी कहत नहिं काहूकी सुनत है ॥ १ ॥ नन्दललन बड़ ढीठ भयो सखि हमसों वासों नेक ना बनत है ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी गौरी ॥

उठान खाली की तीसरी मात्रा से ॥

(६४७) विपिनविहारी ठाढ़ो यमुना तीर ॥ अंतरा उठान तीसरी तालकी खाली से ॥ एरी मेरी गुइयां मैं किस विधि जाऊं पनघट भरने नीर ॥ १ ॥ नन्दललनको को नहिं जानत ढीठ निपट बलबीर ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी गौरी ॥

उठान खाली की तीसरी मात्रा से ॥

(६४८) अरे मो रे रामा कह भइ यह गति बीर ॥ अंतरा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उठान तीसरी ताल की खाली से ॥ औचक कान्ह नगिन अवसर लखि लैगयो चुलिया चीर ॥ १ ॥ उघरत लाज तजब अब केहि विधि कालिन्दी को नीर ॥ २ ॥ बहु कुल जन व्रज लोग अपर जन निरखत नगिन शरीर ॥ ३ ॥ हाहा नन्दललन अनुकुलिये सुन त्रिय विनय गँभीर ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी गौरी ॥
उठान खाली की तीसरी मात्रासे ॥

(६४९) ऐसोरी अनारी फारी सारी हमारी ॥ अंतरा उठान तीसरी ताल की खाली से ॥ यमुना तीर शरीर श्यामने झिगड़ा झिगड़ी डारी ॥ १ ॥ नन्दललन मुरलीवारे सों हाहा कर कर हारी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी गौरी ॥
उठान खाली की तीसरी मात्रासे ॥

(६५०) तोसों अनारी कोऊ न जग दूजारी ॥ अंतरा उठान तीसरी ताल की खाली से ॥ नित अठलात लजात न तनकहु कह यह बानि तिहारी बनवारी वारी ॥ १ ॥ नन्दललनपिया परख तोहिंलिया निचपनको अधिकारी गिरिधारी हारी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी अमनी ॥
उठान तीसरी ताल से ॥

(६५१) मोरा रे बिदिशवा सैयांरे चैन नाहीं पड़े दिन रतियां ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ सूनी सेजरिया बिरहा सतावे उठत हूक मोरी छतियां ॥ १ ॥ निठुर ललन के पाले पड़ी हौं भेजत न लिख सुधि पतियां ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी अमनी ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(६५२) मोरा मन वश कीन्हों सुन्दर नारि देखी ऐसी श्यामली सुरत मतवारे नैनवा नया रँगसों बिहार जादू टुनवा मोहनियां सी दीन्हीं कछु डार ॥ अंतरा उठान खाली की तीसरी मात्रासे ॥ मृदुल बोलन अतिरसाल मदन फबन तन सुढाल ललनपनकी छवि विशाल चाल ढाल गज मराल सब रँग हो मन रँग निरख नइ बहार तरेहदार ॥ १ ॥ इति ॥

पिया झूम झूम निंदियां आई रे। इसधुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी खंधारी खम्माच ॥

उठान पहिली की अनसरल खाली से ॥

(६५३) अब तो लाज पिया के काज दरशी बदन जोबन अँग अँग बन ठन रस रँग छवि फब तन सुख समाज बरषी ॥ लाज पिया के काज दरशी ॥ अंतरा उठान तीसरी से ॥ नैन करन लागे नेह नागर आगर भये नये रसिक ललनपिया श्याम मीत मिल आज चतुर चंचल चलांक हिय हरषी ॥ लाज पियके काज दरशी ॥ १ ॥ इति ॥

छांड़ो लँगरवा मुरकि मोरी बाहीं रे। इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी अमनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(६५४) रात पियाने मोरी तनक न मानी रे ॥ ऐसी जोरा जोरी बराजोरी मोसे ठानी रे ॥ अँतरा उठान खाली की अनसरल खाली से ॥ लाज ससुरकी दिवरकी न कछु कीन्हीं सास ननँदि की न कानिरे ॥ ऐसो ललन पिया निलाज निलाज देखी सखी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सजन की नदानी रे नदानी रे पिया ने मोरी तनक न मानी रे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी अमनी खम्माच ॥

उठान तीसँरी की अनसरल से ॥

(६५५) मानो मानो जी मोरी बैयां न मरोरो रे मुरुकी जात बँगरी छोंरो छोंरोरे ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ नरम कलाई यदुराई मोरी बलखाई चुरियां करक चुभचुभ नसनस गईं ॥ लहक लहक दुख दरद होत कर करको जात कँगना मेरो मेरोरे मानोजी मोरी बैयां न मरोरोरे ॥ १ ॥ हाहा करजोर मिनती करत पैयां परुँ बलि बलि जाऊं मैं सांवरे ॥ मुहिं छेड़त नाहक नाहकहीं जिय ललन पिया तेरो चरन चेरो चेरो रे मानो जी मोरी बैयां न मरोरोरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(६५६) गवन मोरा सजनी पियाके घर आज ॥ अंतरा उठान समकी खाली की खाली से ॥ छूटत सुख नैहर सहेलिन समाज लिवाये जात डुलिया बलम साज बाज ॥ १ ॥ अरज तुम सैयां मोरे औगुन निवाज सुफलहोवें सजन सुहाग भाग राज ॥ २ ॥ मनाय कुल देव सकल सरताज ललनपिया मोरा चिरजीवै महाराज ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(६५७) पिया सों मिलन चली रसिक नवेली अली ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ सज शिंगार घुंघुआरी अलकैं झलकैं इतर मली ॥ अरुणारी अँखियन छवि कजरा सैन छली की छली ॥ १ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मुख मयंक गज चाल मदन तन कटि केहरि पतली ॥ बिच गल भल दमकै दामिनि सी गुंजमाल हँसली ॥ २ ॥ नवलगात जोबन चुआत मद नस नस रस प्रबली ॥ नन्दललन पिय रति मद माती प्रफुलित मोदकली ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(६५८) पिय सँग रात जगी छिनहू न पलकलगी ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ मदन त्यागरिपुता मितई कर आनँद प्रेमपगी ॥ बिरहानल संतोषि श्याम मिल व्यथा वियोगभगी ॥ १ ॥ बन ठन युगल रूप छवि नागर इकटक आंख लगी ॥ नन्दललनपिय युग युग जीवो मन रुचि सुखद अँगी ॥ २ ॥ इति ॥

॥ ठुमरी समानमात्रिक राग हमीर ॥

उठान खाली की अनसरल खाली से ॥

(६५९) सुन्दर श्याम सलोनारे कियो चितवन में कछु टोनारे ॥ अंतरा उठान खालीकी अनसरल खाली से ॥ जबसों नजर पड़ो मोरी आली तबसों हरि बिछुड़ोनारे ॥ श्यामगात शशि बदन मनोहर चितसों नेक टरोनारे ॥ १ ॥ हृदय चिह्न भृगुपद शोभापति रूप अमित नँद छोनारे ॥ मन लियो मधुरि सुनाय मुरलि ब्रज ललनपिया मनमोहनारे ॥ २ ॥ इति ॥

तिहारी नैनन समारही । इस धुनि पर ॥

॥ ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(६६०) मुरारी कह तोरी रजा रहीहूं वारी वारी तुम पर जान प्रान धन कहु पिय सच छल न बिरच प्रेमको परच तोरी रजारही॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अंतरा उठान खाली से ॥ कबतक प्रिय तरसावत रैहौ गृह वह निठुरपन तोर चरच अब कह तोरी रजा रही ॥ १ ॥ नन्दललन अब रोष निवारो उरधारो दया दरद सुजच अब कह तोरी रजा रही ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी गौंड खम्माच ॥

(६६१) रँगीले सैयां नेहा कर कियो बदनाम मिलत तुम नाहीं ये नीके न काम ॥ अंतरा ॥ हमसों रह्यो जात नहिं पल छिन तुम बिन रसिया श्याम ॥ १ ॥ बहु सिख देत न धरतधीर मन भइ रिपुप्रीति हराम ॥ २ ॥ घर बाहिर के कहत कुटिल सब धरो बावरी नाम ॥ ३ ॥ नन्द ललनपिय मेहर करो अब लखि जन दीन बिराम ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान खाली से ॥

(६६२) ऊधो ऊधम की धूम धाम रहि झूम झाम व्रजगाम श्यामकी ॥ अंतरा उठान तीसरी तालकी खाली से ॥ रहे बहुत दिना कुबिजाके धाम मुख चूम चाम घनश्याम अराम की ॥ कब तक अब ह्वै है नेकनजर जो मिटै बिथा व्रज गाम वामकी ॥ १ ॥ हमरी पालागन विनय बहुत कहियो माधव सों रामराम की ॥ अब क्षमाकरो अपराध व्याधभइ कुगति विपुल व्रजजन तमामकी ॥ २ ॥ पठईं पतियां कामिनि करोर चितचोर गौर नहिं एक दामकी ॥ बिरचत बालन हित योग भोग सौतनहि रीति यह कौन ग्रामकी ॥ ३ ॥ कर नेह नाव असवार तजत मँझधार प्रकृति यह कौन कामकी ॥ ऊधो अब नाहिं कछु ललन श्याम चतुरै कह सिख ज्याहि खबर आमकी ॥ ४ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बतादे सखी कौन गली गये श्याम। इस धुनिपर ॥

दादरा घनाक्षरी रागिनी खम्माच ॥

(६६३) अरे एरे सैयां छांड़दे गहु न मोरी बैयां परत तिहारी हूं पैयां बलि जैयां॥ एरे सैयां छांड़दे गहु न मोरी बैयां॥ अंतरा॥ नरम कलैयां मोरी सौ बल खैयां न करु जबरैयां निठुरैयां नँद के ललन तजु ऐसी लड़कैयां॥ एरे सैयां छांड़दे गहु न मोरी बैयां॥ १॥ इति॥

ठुमरी रागिनी परजकलांगड़ा॥

उठान तीसरी ताल की खाली से॥

(६६४) मोरी नई चुनरिया मसकदईरे॥ अंतरा उठान खाली से॥ अबहीं लाय पिया पहिराई मटक न मैली तनक भई रे॥ १॥ को गुन कीन्ह निडर नटनागर ललनपिया ऐसो निरदई रे॥ २॥ इति॥

ठुमरी राग कान्हड़ा॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(६६५) मुख चूम चूम लीं बलैयां॥ अंतरा उठान तीसरी तालसे॥ बरजत बुरी कहत कह सजनी उलट करत हमसों रिसैयां॥ १॥ नरम कलैयां गहि मुरकैयां सिसकैयां नहिं बोलि डरैयां॥ २॥ नन्दललन निरदई श्यामकी [निरखी निठुरैयां चतुरैयां॥ ३॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की राग कान्हड़ा॥

उठान खाली की अनसरल खाली से॥

(६६६) चल सखी आज सैयां मिलन॥ अंतरा उठान खालीसे॥ सजु शिंगार सोलहु सम्हार बिछुरे बहु दिनके ऐयां॥ १॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीवर वृन्दाविपिनविहारी नँदललनैपै बलिजैयां॥ २ ॥इति ॥

अब मोसे रार क्यों मचाई। इस धुनिपर ॥

॥ ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी तालसे ॥

(६६७) मोसे मत बोलरे कन्हाई तुम्हरी दुहाई अभी यशुदा से जाई कहिदूंगी दिठाई मत बोलरे कन्हाई ॥ अंतरा उठान पहिली तालसे ॥ तुम्हारी खुटाई हूं तो जानत मुरारी सारी नाहक करत मोसे लँगराई मत बोलरे कन्हाई ॥ १ ॥ नँदके ललनपिया अँचरा गहो न मोरा रोकै न डगर तजु लड़काई मत बोल रे कन्हाई ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली की खालीसे ॥

(६६८) अधर बांसुरी बाजी बाजी गुइयां उचटगई निंदिया भनक पड़ी कान ॥ अंतरा उठान सम की खाली से ॥ बेगिब-ताउ को गली अली चली जाऊं मदन जागो कल न देत मारत बान ॥ १ ॥ नन्दललनपिय दरश मातो जिय कहा मैं करूं बि-रहा बैरी कीन्हों नकबान ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी मल्लारी ॥

उठान खाली की अनसरल खाली से ॥

(६६९) प्रीति रीति उपजी तब सैयां हमरी तुम्हरी जबसों लरकैयां ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ अब अँग अँग रँग रँगे म-दन तन छवि फब नवछाई छवि सैयां ॥ १ ॥ कहां बसत निशि दिवस श्याम जब समुझ भई तब कीं निठुरैयां ॥ २ ॥ झलक न परत पलक यह मारग अब क्यों मारत नित तरसैयां ॥ ३ ॥ नन्द

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ललनपिया तुमपर वारी लेत रहत मन मनहिं बलैयां ॥४॥ इति ॥

॥ ठुमरी जोड़े की रागिनी मल्लारी ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(६७०) रीति प्रीति बिछुरी जग मैयां रसिक करन लागे निठुरैयां ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ दै तन मरो करो मनवारी हाथ न आवत यशु कोउ सैयां ॥ १ ॥ हरहर देख कीन्ह हरिसों हित सो अब कैसी करहि गुसैयां ॥ २ ॥ लोकलाज कुलकानि त्याग मन वच क्रम अर्प श्याम चितलैयां ॥ ३ ॥ जो सखि सांचि लगन मोरी है तौ करि है नंदललन सांचि मितैयां ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की समानमात्रिक रागिनी मल्लारी ॥

॥ उठान खाली से ॥

(६७१) मधुवन श्याम गये जब सैयां भुलत न सुधि पल छिन तब सैयां नींद न आवत दृग कब सैयां ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ करत अधिक हैरान प्रीति नकबान प्रान है बिनु उन सैयां ॥ खान पान पट भूषण अनहित कछुभावत नहिं हिय अकुलैयां ॥ १ ॥ मदन सतावत वदन विकल बिरहाकी बिथा निशि दिन तरसैयां ॥ नंद ललनपिय दरश परश बिन बचबन प्रान न सुख सरसैयां ॥ २ ॥ इति ॥

॥ ठुमरी जोड़े की रागिनी मल्लारी ॥

उठान खाली से ॥

(६७२) बात बातमें बात बनावे घातसों घातमें घात चलावे रात प्रात दिन रात न आवे ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ ऐसो निपट निठुर तरसावे झूठे बैन सदैव सुनावे नइ नइ नितप्रति सौत सगावे सौतनकी मुहिं सौत बनावे ॥ १ ॥ हित

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तो सुखहित कीन्ह श्यामकी प्रीति प्रान कह लेन सिधावे ॥ गाज परै ऐसी निठुरैयन नन्द ललन पिय नये छल छावे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी धानी ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(६७३) रसिया कैसी बजाई बँसिया प्रान हरलीन्हों उचट गई निंदिया सेजरिया न भावै मुहिंका श्रवण सुनत सुधि बुधि गइ हिराय गइ हिरायरे ॥ अन्तरा उठान पहिली तालसे॥ नारी नारी न्यारी न्यारी विकल करडारी सारी छैल खोजत फिरत नँद को ललन वन वन भ्रम रहि भुलाय रहि भुलायरे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(६७४) दरशनके काजरहे अटक नैन दिखलाजा सूरत सामलिया ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ दिनरैनि चैन नहिं पड़त मोहिं जिय तरफत है भई बावरिया ॥ १ ॥ नहिं खान पान कछु करत प्रान तन सूख सूख भयो लाकरिया ॥ २ ॥ वसुयाम के काम बिराम किये विरहा दुख बाढ़ो सागरिया ॥ ३ ॥ कह बात अनाथ सनाथ करो लै हाथ सुनादो बांसुरिया ॥ ४ ॥ लौलागि रही कहे ललनपिया हरि आनि मिलहु उर नागरिया ॥५॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी कौशिकी काफी ॥

उठान समकी अनसरलसे ॥

(६७५) आली धनि तोरेभाग पिया पग परसत निरखत ढँग सुढँग रँग सुरँग परसुपर दृग सुदृगसों भाव बरसत॥ अन्तरा उठान खालीसे॥ जग प्रिया तुहिं प्रभू जगावत बार बार तन मन वारत सावधानह्वै मिलले ललनपिया तुहिं बिन अतितरसत ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी राग कान्हड़ा दरबारी ॥

उठान खालीकी खालीसे ॥

(६७६) साजन मुहिंका चुलिया लादे छतियन मद उमँग आयो यौवन रस रँग चुआत छवि दरशात ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालसे ॥ सिन्दुरा कंघी फुलेल कजरा नैननको सजूंगी शिंगार सो छविदार आज तोरे काज बहुत दिनन पाछे मिली ललनपिया तुहिंका ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(६७७) निंदियाँ तजो करोरी नैना चार चार ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ भइ बहु बार द्वार खड़ी मैं रही पुकार । खोलौ न किवार दरवजवा के लीन्हे मार । कौन मोहनी दीन्हीं डार डार॥ १॥सांकरि चढ़ाय उत खोल पट दूजो प्यारे। सौत सों मिलन गये सखि श्याम नेह धारे। इत पिय वश प्रिय उत त्रिय पै वार॥ २ ॥ कह कछु मद पानकरि आये प्यारे सैयां। जासों मलीन सिजिया पै सोवो चुपकैयां। आज कहा तिहारो तारबार॥ ३ ॥ गोरे अँग अँगुरी धरत चौंक चौंक परे। छिनमें सिसक रिसखाय न एकहु सरे। युगल जगावें सखि बार बार ॥ ४ ॥ नित हरघड़ि सोवो तुमतो चपलतासों । आज कह नयो रँग ढँग मोसे सांची भाषो ।नाहीं मरूं कटारी मार मार ॥ ५॥ बेगि उठु जागु उरलागु मोरे भागभरी। मुहिंका तड़प तरसत बीतीं बहुघड़ी। तुहिंका टेर टेर गयो हार हार ॥ ६ ॥ कह लाग जान रिसठान रूठरहे कान्ह। ललनपिया की मिनतीमान मिलोजी आनि। निठुर यह छलबल ढँग बिसार ॥ ७ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

॥ ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी ॥

॥ उठान तीसरी की खाली से ॥

(६७८) बतियां ऐसी करो न मोसे बार बार सौतकी बात सखीरी मोपै ढार ढार ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ मोसे मत कछु कहु वाके मुख ओरि लखि छिनमें करैगी मोरी छार छार ॥ १ ॥ तुमतो रहोगी दूर मोपै दोष धरदेगी जानूं कुटिलके मैं तारबार॥२॥ मैं तो डरतहूं निबल वह सबल सखि दूजे धनी तीजे वह बहारदार ॥ ३ ॥ चलो अब ऐसी चरचाको फरचा करोरी कौन नफा बैर डार डार ॥ ४ ॥ नन्दललन पियाके कछुक यशु गाओ जग जीवन दिन चार चार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दादरा रागिनी बरुवा ॥

(६७९) मोरे मारा नैन नज़ारा लगा जिया तीररे लगा जिय तीररे लगा जिय तीररे ॥ अंतरा ॥ जख्म कलेजे लगा जिगर कोइ दवा न हो अकसीररे ॥ लगा जिय तीररे ॥ १ ॥ पल छिन कल नहिं विकल बिथासों सखि बेधन अधिक शरीररे ॥ लगा जिय तीररे॥ २ ॥ जाके लगे सखि सोइ जिय जानें बिथा कह जाने बेपीररे॥ लगा जिय तीररे॥ ३ ॥ श्याम मोहानियां डारगयो सखि निठुर छैल जादूगीररे ॥ लगा जिय तीररे ॥ ४ ॥ नन्दललनपिय दरश परसु बिन धरत न जियरा धीररे ॥ लगा जिय तीररे॥५॥इति॥

॥ ठुमरी रागिनी सिन्धुखम्माच ॥

॥ उठान समसे ॥

(६८०) रात उन बिन निंदिया मुहिं न आई रे ॥ अन्तरा उठान समकी अनसरल खाली से ॥ बिरहादेन दुखलागो ननँदिया तरफ तरफ रैनियां सारी गवाई रे ॥ १ ॥ ललनपिया ऐसे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निठुर सांवरे सों जान बूझ जिय लगन लगाई रे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक लखनऊ की धुनि रागिनी सिन्धुकाफी ॥

उठान तीसरी से ॥

(६८१) काको यह छैल मोसों रह्यो इतराई रे ॥ नैनन की सैननसों टेरत बुलाई रे ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ करको उतंग कर श्रवण निकट लाय अँगुरी उठावत लचावत लुकाई रे ॥ १ ॥ भौं मटकाय मुसकाय सिसकाय वोतो उरपै धरत हाथ नासिका चढ़ाई रे ॥ २ ॥ दशन दबावत अधर पुनि पुनि दोऊ ललनपिया चतुर करे चतुराई रे ॥ ३ ॥ इति ॥

ख्याल रागिनी परज ॥

रूपकताल उठान समसे ॥

(६८२) परस लीन्हींरी विहारी कहा करिये एरी आली यमुन जलसों भरी झारी अशुध कर डारी हमारी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ देवके स्नान कारण लाई मैं कर नेम धारण अस ब्यो-हारनसों सखी सौं नँदललनपियसों मैं हारी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी कलांगड़ा ॥

ठेका होली उठान तीसरीसे ॥

(६८३) पिय परदेश सिधारोरी किन सौतन मोह्यो ॥ अ-न्तरा उठान तीसरीसे ॥ दिन नहिं चैन रैनि नहिं निंदिया बिरहा वेधन दुख बाढ़ोरी किन सौतन मोह्यो ॥ १ ॥ नन्दललन पियहित रसमाती दूजे मदन शर मारोरी किन सौतन मोह्यो ॥ २ ॥ इति ॥

मछलिया बिंदिया लैगइमोर रे । इस धुनिपर ॥

दादरा रागिनी सिन्धु खम्माच ॥

(६८४) जोबनवां पियापै वारी कीन्हारे ॥ अन्तरा ॥ मृगदृग

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मीन कमल दल लोचन चितवन मन हरलीन्हारे ॥ १ ॥ मृदुल बोलन रँगरस भरी बतियां मानो सुधा भरदीन्हारे ॥ २ ॥ श्यामबरन तन बसत मोहनियां नन्दललन रँगभीना रे ॥ ३ ॥ इति ॥

दादरा जोड़ेका रागिनी सिन्धुखम्माच ॥

॥ (६८५) चलत मग डार गयो सखि टोना ॥ अन्तरा ॥ पलक झलक दिखलाय लियो मन निठुर नन्दको छोना ॥ १ ॥ चितसों टरत नहिं पल छिन सजनी सुन्दर श्याम सलोना ॥ २ ॥ मृदु मुसिक्याय लुभायो ललनपिय अब जिय जात रहोना ॥ ३ ॥ इति ॥

दादरा जोड़े का रागिनी सिन्धुखम्माच ॥

(६८६) प्रबल भल दई दई दुखदीन्ह ॥ लगाकर नैन चैन हरलीन्ह ॥ अन्तरा ॥ नई प्रतीति प्रीति कह प्रचरन प्रथमहि जियरा लीन्ह ॥ १ ॥ मैं नाहिं जानतही यह विष भरि समुझ सुधा हित पीन्ह ॥ २ ॥ सखि नँदललन तनक जानि जनिये अब मैं निठुरै चीन्ह ॥ ३ ॥ इति ॥

दादरा जोड़ेका रागिनी सिन्धुखम्माच ॥

(६८७) कलक यह कैसे जाय जिय कोरे। लगत सखि नीको न मैं को मैको रे ॥ अन्तरा ॥ पिय निरदई न मोहिं बुलावत जुबना उमँगरहोरे ॥ १ ॥ छतियन छवि रँग रस मद टपकत बिन पिय जियरा जरो रे ॥ २ ॥ रसिक भये चंचलदृग चितवन मनहुँ मतंग भयो रे ॥ ३ ॥ तरफरात सूनी सिजिया सखिसारी स.री रतियां जगो रे ॥ ४ ॥ विरहानल पल छिन न देत कल मनमथ बैरपरो रे ॥ ५ ॥ बाबुल ब्याह दई ऐसन घर लेयँ न मोरी खबरोरे ॥ ६ ॥ गाजपड़े नाई भाट निगोड़े पै लैगयो सगुन समधोरे ॥ ७ ॥ दई की मार पड़ै बम्हनापर जिन्ह यह ब्याह शोधो रे ॥ ८ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ललनप्रिया अब कैसे मिलब सुख परवश प्रान फँसोरे॥ ६ ॥ इति॥

ध्रुपद रागिनी भैरवी॥

चारिताल उठान समसे॥

(६८८) गजत मयंक भाल चिता भस्म तन विशाल लोचन रसाल व्याल जटाजूट गंग जाके॥ अन्तरा उठान समसे॥ मुंडमाल चन्द्रभाल व्यालन यज्ञोपवीत नीलकंठ अश्मशान वास रुचिर वाके॥ १ ॥ (अभोग) अंग अंग छवि भुजंग अर्धांगी गवर संग बाघम्बर शोभित तन कर त्रिशूल ताके॥ २ ॥ (भोग) नंदीगण असवारी मनमथमर्दन सदारी पद्म पदकी भक्ति बरहु नाथ ललनपियाके॥ ३ ॥ इति॥

ख्याल रागिनी पीलू॥

ताल त्योरा उठान समसे॥

(६८९) मोहन मोसों आज सखीरी मगमें जोराजोरी आ अटकोरी॥ अन्तरा उठान समसे॥ जातरही मैं सखि नीर भरनको अचरा गहि बैयां झकझोरी॥ मटकी झटक पटक मुरारी मोरी आनि अचानक अंकभरोरी॥ १ ॥ घुंघट पट चट खोल नटखट चूमत मुख हमरोरी॥ नँदको ललन लवार लम्पट मानत ना बहु भाँति निहोरी॥ २ ॥ इति॥

ठुमरी समानमात्रिक राग मारुआ॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(६९०) मतवारे तोरे रे जदुवाभरे दोऊ नैन॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से॥ चल चपला से चंचल चितवन मोहनि वशीकरन सैन॥ १ ॥ नन्दललन मनहरन मनोहर सुखनिधि मन्दिर मैन॥ २ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सांवरे की आज मन बसगई। इस तर्जपर ॥

ठुमरी २३ आवृत्ति की रागिनी खम्माच ॥

उठान खाली की अनसरल खाली से ॥

(६६१) क्या कहूं ढिठई सांवरे की बतियां निरख मोरी आली औचक उचक लपक झपक झटपट चटक मटक अटक अनारी मोरी मटकी झटकी पटकी धरन गेरी नटखटने वेगहि गरवा लगायो अठलायो मारगमें झिंझट करके अतिही खिझायो मुहिं गोरस लुटायो खायो ढरकायो घुंघटा उघार पट टार टार बार बार मुख सम्हार चूम चारु चारि बार नँदकुमार ऐसो गँवार चूनर फारि तार तार कर बिगारि ढीठ मुरारि कुंजन में सटक गयोरी गोरी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ ऐसी लँगराई कुटिलाई यों जनाई मोसे जिय सकुचाई मोरा कहत ढिठाई तोसे एरी ए दैया अब कहो मिसकरूँ मैं का भवन घोरनियां जिठनियां बैरिन मोरी निरख ननँदि सासू कुगति करैंगी सोरी पियसों कहैंगी कर धोय पीछे परैगो वो अधिक रिसाई जासों जिय घबराई मोरा ऐसो री चंचल कान्ह कियो नकवान प्रान घर घर ग्राम ग्राम भइ बदनाम आज लाजली निकाज नँदललन निरदई दई ॥ १ ॥ इति ॥

दादारा राग सारंग ॥

(६६२) हरबार हमारी हानि करत तुम्हरो सुतरी ॥ अन्तरा ॥ कुंज समीप नीप कदमन तर ठाढ़ो नन्दकुमार छीन लैली इँडुरी ॥ १ ॥ घुंघट उघार निहार बदन शशि जानि अकेली कान्ह अचानक अंकभरी ॥ २ ॥ भइ औचक भौचक गति मति गइ थरथराय तनगयो गिरी गोरस गगरी ॥ ३ ॥ दपट झपट गयो लिपट चिपट कर कँगन करकगयो मोर मुरकगई मोरी बँगुरी ॥ ४ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बेंदीहार माल मुतियन की अनमोली गिरगई नई दुलरी ति-
लरी ॥ ५ ॥ लै दधि छैल मैल मुखसानी चूनर चादर चीर चटक
चुलिया बिगरी ॥ ६ ॥ हटक हड़ी हठि तनक न छांड़ी हर विधि
हाहाकरी न मानी हटक हरी ॥ ७ ॥ नन्दललन के ललनपनको
चलन लखि अचरज हिय होत कान्ह कह बानि धरी ॥८॥ इति॥

दादरा जोड़ेका राग सारंग ॥

(६६३) हिरिये हरि तनु जन ओर छोर बेदरदगरी ॥ अंतरा॥
हौं आरतजन दीन दमोदर पतितन को पतिनाथ चहत दाया तु-
म्हरी ॥ १ ॥ लै जग जन्म भयो दुख भोगत तुम बिनु मदनगो-
पाल सुनैगो को हमरी ॥ २ ॥ तुम कृपाल करवाल कुकृति मैं छूटब
कठिन मुहाल जासु जस बानि परी ॥ ३ ॥ तुम सुधार, आये प्रभु
सबकी कह सुर मुनि नर नाग विदित प्रभुता सगरी ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी राग मल्लार ॥

उठान तीसरीसे ॥

(६६४) एरीमा उमड़ घुमड़ घन बरसे ॥ अंतरा उठान खाली
से ॥ कोयल बैर पड़ी मोरे सजनी पपिहा पिय धुन धारत रजनी॥
चौंक चौंक चित पड़त सजन बिन मैन मरोरत जिय तरसे ॥ मा
उमड़ घुमड़ घन बरसे ॥ १ ॥ दादुर मोहिं डरावत गुइयां हिय लर-
जत परसत घन फुइयां ॥ नन्दललन पिय अस ऋतु मइयां छोड़
अकेली गे घरसे ॥ मा उमड़ घुमड़ घन बरसे ॥ २ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी सोहिनी ॥

प्रबंध ताल उठान शूलताल सम से ॥

(शूलताल समसे) (चारिताल सम से)

(६६५) द्रीम तन नन ना ॥ द्रीम तनान त्रान धा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(शूलताल समसे) (चारिताल समसे) (शूलताल समसे)
निरतत मन मोहन ॥ ता थेई तता थेई ॥ सखा सखी संयुत ॥
(चारिताल समसे) (शूलताल समसे)
बाजत ढफ मृदंग झांझ ॥ तबल तँबूरा तराल ॥
(चारिताल समसे) (शूलताल समसे)
साज बाज विविध भांति ॥ अन्तरा ॥ कोइ कोइ गावैं गुनि ॥
(चारिताल समसे) (शूलताल समसे)
त्रिवट तराना चतुरँग रस ॥ सरगम सरसावैं ॥
(चारिताल समसे) (शूलताल समसे) (चारिताल समसे)
नाद सांगीत भेद ॥ ताल माल छावैं ॥ मधुरिमधुरि मुरलि तान॥
(शूलताल समसे) (त्रैताल खाली से)
मुहन मुद बजावैं ॥ बरण बरण सजें शिंगार
(चारिताल समसे)
ग्वाल बाल गण अपार ॥ श्याम सुन्दर गौर गात ॥ १ ॥
(शूलताल समसे) (चारिताल समसे)
द्वितीय अंतरा ॥ यमुन कुलन कदंब ॥ ढुरत पवन मन्द मन्द ॥
(शूलताल समसे) (त्रैताल खाली से)
रहस मंडल मँझार ॥ सुरपुर सम सुख विहार ॥
(चारिताल समसे) (झपताल समसे)
जै जै कार देव नारि ॥ तन मन सकल वारि ॥
(चारिताल समसे)
बरष सुमन जिय जुड़ात ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्रुपद राग बसंत ॥

ताल प्रबंध उठान समसे ॥

(६६६) द्वितीया को चन्द श्री गोविन्द तुमतो अबतो रहत दुर दुर दरशात सघन वसन ओट घनन करके ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ चपलन चपला चकानी कौंधन कौंधा लजानी गति बिहानी जल प्रवाह पौन गौन गति बिसरके ॥ १ ॥ (अभोग) उठान शूलताल समसे ॥ रोषित कछु जिय पिय धौं मन कोउ तिय दिय प्रफुलित सोइ पिय हिय मोद गोद भरके ॥ २ ॥ (भोग) उठान चारिताल समसे ॥ मनमोहन नँदकिशोर लखि न परत भेद तोर ललनपनते प्रीति जोर अब न तजिये मुहिं निदरके ॥ ३ ॥ इति ॥

सादरा रागिनी परज ॥

उठान समसे

(६६७) मदनलाल गोपी ग्वाल नालगण विशाल ॥ अंन्तरा उठान समसे ॥ अबिर केसर रोरी गुलाल रहे उछाल मुठिन घाल मस्तहाल ॥ १ ॥ रँगन डाल लाल लाल ऊदे नीले पीले अति रसाल जिय निहाल ॥ २ ॥ यशुदा ललन श्रीगुपाल बिरचत नव चाल फागवाल ख्याल ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग देश ॥

उठान तियाकी पहिली तालकी खाली से ॥

(६६८) एजू धरन धरत ठुमुक पगन निरतत गोपाल लाल ताताथेई ताताथेई छोमछाना नाना नाना ना ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ इत उत गोपिन समाज बाजत बहु साज बाज सुर शृँगार दप मृदंग धिक्किणानना ॥ १ ॥ बरन बरन बांसुरी सो बाजत बैनी विशाल उघटत नव कान्ह तान तोम ताना नाना नाना

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ना ॥ २ ॥ नन्दललन छवि त्रिभंगि अंग अंग द्युति अनंग लखि हो अनन्द चरण नूपुर झनके झानानाना ना ॥ ३ ॥ इति ॥

धुपद रागिनी खम्माच ॥

उठान समसे ॥

(६९९) धावत आवत ठुमुक चाल मन्द मन्द गति रसाल निरतत पिय प्यारी दोऊ नेहित गलबैयां सैयां ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ वृन्दावन सुखद सघन त्रिविधानन्दी चलत पवन राजत जहँ गोपी ग्वाल शीतल द्रुमछैयां सैयां ॥ १ ॥ बाजत करताल ताल ढप मृदंग चंग नाल गावत ग्वालबाल ख्याल हिय निहाल अतिसुहैयां ॥ २ ॥ ललन ललनी छवि अनूप लाजत रति रमण रूप सुर नर मुनि देव भूप निरखत बलिजैयां सैयां ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी काफी त्रैताल ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७००) कैसे कैसे आऊं तोरे पास पाइल मोरी बाजे सास जागे परी कैसी करूँ कैसी कछु बन नहीं आवे जिया मोरा सकुचाई ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल से ॥ आज बकस जोबन के रसिक कर जोरत तोरे मान लीजे मान लीजे एती बात मोरी प्राणपति बलिजाई ॥ १ ॥ कहत ललन पिया मानै न मनाये मन हठ करौ हमसन कैसे बनै कैसे बनै झूठी बतियन जानि करौ निठुराई ॥ २ ॥ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७०१) कैसे कैसे पनियां भरन जाऊँ रोकत मग नँदको छैल आली कैसी करूँ कैसी करूँ मानत नाहीं करूँ कौन यतन ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्तरा उठान खाली से ॥ अधिक दुलारो मात पिताको प्यारो कोई हटकनहारो जनि द्वार्काको नाथ ब्रजराज की शरन भयो ललनपिया जन ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७०२) हटोहटो छांड़ौ डगर कान्ह ठठोलीकर रार क्यों बढ़ाई घर जाओ घर जाओ नँदके कन्हाई मोसे करौ न ढिठाई ॥ अंतरा उठान खालीकी अनसरल से ॥ बाट चलत मोरी बैयां क्यों गहत हौ मांगत दान दधि नाहीं जानौं नाहीं जानौं कंसको राज तुम्हें पकड़ बुलाई ॥ १ ॥ कहत ललनपिया लाज न आवे मन छेड़त सखिन तुम चले जाओ चले जाओ अपने धाम तुम्हें देत समुझाई ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

॥ (७०३) हटो हटो मोहन रसिया देखेसे तोहिं जागत मदन तन प्रीति बाढ़े प्रीति बाढ़े मोरे मन माहीं ऐसी मूरति तिहारी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ प्रीति किये बनै जानि तोसे हरजाई पुनि ठगिया निठुर तुम कैसे पावें कैसे पावें पेश तुमसन बाज आई मैं मुरारी ॥ १ ॥ नैनन की बान बिन देखेना परत कल चंचल करत छल कर जोरकर कहे ललनपिया देउ दरश विहारी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

॥ (७०४) चलो चलो सखी भरन नीर कन्हाई अठलाई जो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ढिठाई कर लीजै सखी लीजै सखी घेर वाहि लाओ यशुदा तीर॥ अन्तरा उठान खाली से॥ जब जब हम तुम देत उलहिनोरी कहत यशोदा रानी नाहीं सखी नाहीं सखी कान्ह न होगो कोई और को बीर॥ १॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरलसे॥ आज पकड़ सनमुख यशुदा के वाहि वेगही लियावें धाइ निश्चै आली निश्चै आली देहुँ कराय तब धरे जिया धीर॥ २॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(७०५) ठाढ़े ठाढ़े रहो नँदके छैल तुहिका मैं शठ देत बताई अभी अब कहो अब कहो कौन है सहाई यहां तुम्हरो कन्हाई॥ अन्तरा उठान खाली से॥ यहां है कंसको राज अब कहो महराज चलै न एकहूं काज अबहीं ढिठाई सारी दूंगी मैं भुलाई एक छिनहूं न जाई॥ १॥ वादिन अकेली जान मेरो दधि लूट लीन्हों यौवनको रस लीन्हों नन्दके ललन मानौंगी न एको तोरी लूंगी मुरली छिनाई॥ २॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(७०६) देखो देखो आली यमुना तीर वृन्द व्रज ग्वालनको संग लीन्हें रचो आली रचो आली रहस रँगीलो आयो श्यामरो कन्हैया॥ अन्तरा उठान खाली से॥ बाजत तँबूर झांझ मृदंग सुर शृँगार गावत सो ग्वालाबाल ताता थेई ताता थेई नाचत कँधैया नीचे कदम की छैयां॥ भैरव दीपक श्रीराग मालकौश हिंडोल ललनपिया सुरीलो गावें सखी गावें सखी मेघ राग जिया देख हुलसैयां॥ १॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७०७) बाजी बाजी वंशी बैरिन श्याम सुनत अकुलाय उठोरी जिया एरी सखी सखी बेगि बताउ जाय मिलूं बनवारी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ श्रवन सों सुनि धुनि विकल विरह से मन मैन जागो मोरे तन ललन श्याम सनेही दरश बिना न मोहिं नेकहू करारी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७०८) चलो चलो सखी नँदके द्वार कन्हाई जनमेरी यशुदा के गृह एरी सखी एरी सखी सजु शृँगार भर दूबसों थार ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ कृष्णपक्ष रोहिनी नक्षत्र आठैं बुधवार जन्म लियो नँदलाल देवें सखी देवें सखी बधाई झिगड़ लावें हीरहार॥१॥ जुरत समाज धाईं नन्द के भवन आईं प्रेमरँग बरसाईं दीन्हीं सखी दीन्हीं सखी बधाई विमल पाये धन अपार ॥ २ ॥ दाई हँसि हँसि नेग मांगत करत रार बंदीजन भीर भार ढाढ़ी भिक्षुक ढाढ़ी भिक्षुक मचल रहे मांगें नेग चार ॥ ३ ॥ काहू गज अरब मिले वसन धन पायो जो जो जाके मन भायो वरमांगे वरमांगे ललनपिया दरश दीजै मुरारि ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७०९) झूलै झूलै सखी नँदको लाल हिंडोला व्रज कुंजन में राधे सँग एरी सखी एरी सखी डाले गलबैयां प्रिया प्यारो निहाल ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ हीरन की डांड़ी और मानिकके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खंभा लागे जापै दोऊ अनुरागे झुम्पे मूँगे मोतीयनु लागे रँगदार डोरी रेशमकी लाल ॥ १ ॥ मोरन चकोरन के शोर चहूं ओर घोर ललनपिया बहोर शीतल सुगंध मंद चले पुरवाई कूके कोकिला मराल ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़की रागिनी काफी ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(७१०) जाने जाने दे मुहिं मंदिर छैल नाहक मोरी रोकत डगर ठाढ़ो नाहीं माने नाहीं माने निपट अनारी ऐसो कुटिल कान्ह ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ घुंघट को पट खोल चूमत कपोल गोल करत मोंसे ठठोल डरे नाहीं डरे नाहीं काहूको बिहारी परी कहा तोरी बान ॥ १ ॥ आखिर जात अहीर जानो न पराई पीर ऐसे हैं तैं बिन पीर नोखो छैल नोखो छैल नँदको ललन करे काहूकी न कान ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़की रागिनी काफी ॥
उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(७११) देखो देखो सखी राम जात बनै प्रिया जनक नंदनी बारी बैस बारी बैस कोमल गात सँग लखन भ्रात ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ दशरथ प्रान त्यागे अवध के भाग भागे ललन बिरह दागे नर नारी नर नारी विकल भरत रोवै कौशिल्या मात ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़की रागिनी काफी ॥
उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(७१२) राजें राजें तोरे रूप नवीने रसिया तनु देहु बताई मोहिं किते कीन्हे किते कीन्हे विवरण भेष तुम बड़ेहो प्रवीने ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ जागे कहँ रैनि को सखी के प्रेम रस

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पागे काके बस अनुरागे सांची कहो सांची कहो ललन पियारे कासों केलि रस कीन्हे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७१३) करेकरे सखी मोहनरार सकल ब्रजग्वालनको सँग लीन्हे एरीसखी एरीसखी कैसीकरूँ कैसी मोरी रोकतगैल ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ चटक मटक मोरी माथेकी मटुकफोरी बहियां झकझोरी गोरी चूनरी झटकलीन्ही कीन्ही बराजोरी मग ही में छैल ॥ १ ॥ कहत ललनपिया मधुरीसी बतियन कर फेरें छतियन भई खिसियानी बाबानँदकी दुहाई देखो मोहन के फैल ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(७१४) छांड़ो छांड़ो मोरीबैयां श्याम करकगई चुरियां मुरारी सारी नाहीं मानो नाहीं मानो निपट अनारी नोखे छैला बनवारी ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ हाहाकर बलजाऊँ शीशपग तोरे लाऊँ ललनपिया मनाऊँ जानेदीजे जानेदीजे भवन बिहारी तुमजीते जी मैं हारी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७१५) माने माने नाहीं नँदको लाल छेंड़त नित ब्रजकी बाल बोलो ढीठ भयो ढीठ भयो निपट निडर रही लोचन न लाज ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ मोहन मतंग अंग ग्वालन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को लीन्हे संग करत नयेरी ढंग नाहीं जाने नाहीं जाने ललन पिया कठिन कंसको राज॥ १ ॥ इति॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी॥
उठान तीसरी की खाली से॥

(७१६) सुनो सुनो माई तुम्हरो कान्ह मांगत दधि जोबन को दान मोंसे माने नाहीं माने नाहीं हटक हुंकारी ऐसो निडर मुरारी॥ अंतरा उठान खाली से॥ एते भए बिरज में राजा और महाराजा बलवान सरताजा डाली नाहीं डाबी काहू दान की रीति भयो नोखो बनवारी॥ १ ॥ लपक झपक मोरी मटुकी दई पटक ललनपिया निडर लूट लीन्हो लूट लीन्हो दधि सिगरोरी कीन्ही कुगति बिहारी॥ २ ॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी॥
उठान तीसरी की खाली से॥

(७१७) लखो लखो सखी कान्ह तो नाहीं लखत कहूं यमुना निकट ठाढ़ो एरी सखी एरी सखी आवत न होय सबरहियो हुशियार॥ अन्तरा उठान खाली से॥ वेगही अन्हाइ के चलोरी सब गोरी घर ललनपिया जबर नाहीं सखी नाहीं सखी घर की डगर पड़ेगी दोशवार॥ १ ॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी॥
उठान तीसरी की खाली से॥

(७१८) सजे सजे समूह ब्रजराज बनाये बहुभांतिन रँगीले रूप एरी सखी एरी सखी खेलें घनघोरी होरी एक एक सोंरी॥ अंतरा उठान खाली से॥ इतर अबीरलिये हाथन गुलाल रोरी फिकैं रँगचहूँ ओरी इतग्वाल उतबाबजुरे यूथ दोनों फाग वि-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रजमचोरी ॥१॥ कोई रँगमारत भरत पिचकारी कोई ललन सुधि बिगोई कोई नाचे कोई गावे मृदंग बजावे हित चित सों भरोरी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी ॥
उठान तीसरी की खालीसे ॥

(७१९) हटो हटो काके निडर छैल औचक अटकत मगमाहीं मोसे डरो नाहीं डरो नाहीं काहूको अनारी ठाढ़े चूनरी को थाम॥ अंतरा उठान खाली से॥ कौन तोरी जात कहा नामहै तिहारो छैल बेगिसो बताओ मुहिंका थोरी बैस थोरी बैस एते छल जानो बसौ कहां कौन गाँम ॥ १ ॥ दृगनचलावो अठलावो गरवा लगावो ललनपिया न माने ऐसो ढीठ ऐसो ज्वानी को बल दिखाओ फारी चुलियाभिराम ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी ॥
उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(७२०) बसो बसो मोरे मन्दिर आज बिहारी करौ कृपाजी मुरारी मोपै सजिआऊँ सजिआऊँ सिजिया सुघर जापै सोवौ रैनभरि ॥ अंतरा उठान खाली से॥करियेसनाथ आजमोरेजिया की जो आस ललनपिया हुलास शुभघड़ी शुभलग्न पाई सुखदाई करौ कृपा की नजर ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(७२१) आयो आयो सखी ऋतु बसंत सघन बनफूले तरु नयेनये पशुपक्षी पशुपक्षी मगन सकल बोलैं मधुरेसे बैन ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ षट ऋतुराजको समाज सुसलोनीलखि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोहितहों मुनिचर व नंदकोललन वृषभानुजाजहांपै खेलैं फाग सुखदैन ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(७२२) लागो लागो सखी ऋतुबसंत बागन उपवन बनचहूं दिशि फूलिरहे फूलिरहे सुमन नियारे लाल पीले स्वेतकारे ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ कोकिला चकोर मोर करे शोर चहूं ओर भँवर गुँभारे घोर एरी सखी एरी सखी यमुना किनारे पंपिहा पियापुकारे ॥ १ ॥ डाली डाली पै बहार बसंत की छबिदार रही छबि फबि छाय एरी आली एरी आली ललनपिया बिनु हमारो जियाजारे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(७२३) सुनो सुनो मोरी बात छैल मजा क्या दधि लूट चाखन में हानि नाहीं मोरी कछू जामें मानौ थोड़ो गिरपड़ोई दहिया ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ तुम तौ हौ राजा नँदबबाके हौ पुत्रनामी जाको यश सरनामी कमी नाहीं कमी दधि माखनकी दैया तोरे मँदिर कँधया ॥ १ ॥ सीधे घर चलि जाओ मोसेमत लँगराओ ललनपिया जताओ लूटौ जनि लूटौ जनि मेरो नवनीत नीकी बात न है दैया ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(७२४) डरे डरे नाहीं नँदको लाल अनोखो छैल रसिया अनारी बड़ो ढीठ भयो ढीठ भयो ऐसोरी निलज दृग लाजन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निपट ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ भयोरी कुटिल कान्ह कहा कहूं वाकी बान काहूकी करै न कान ऐसो शठ भारी बाम नगिन लखत ठाढो यमुना निकट ॥ १ ॥ लेगयो लुकाय के चुराय चीर हमरोरी ललनपिया सुनोरी कहाकीजै कहाकीजै यतन नयोरी ढँग सीखो नागर नट ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खालीसे ॥

(७२५) जैसी जैसी चाहीं मोहन लाल करो वो जामें रहे जिया खुश तेरो मानो छैल मानो पर एती बात मोरी हाहाकरूँ सिरनाई ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ दधि को जो दान चाहो सो तो लेउ मनभायो पर मुहिंना खिजाओ मैंतो जानूं मैंतो जानूं ललन पियारे तोरी सारी चतुराई ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७२६) बनो बनो आली गंधिन नारि अनोखे किये सोलहू सिंगार छैला सोहै शीश सोहै शीश पचरँग सारी रची जची मेंहदी हाथ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ मोतिया गुलाब जुही केवड़ा चमेली खस इतर पिटारी लसे लीने अनमोल भाँति भाँति के इतर काढ़े घूँघट माथ ॥ १ ॥ गली गली टेरत सो हेरत रसिक नारि ललनपिया निहार मोहे लेत मोहिनी मुरत सुठि झांकी बांकी चितवनसाथ ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७२७) आयो आयो नाहीं अजहुँ बीर सजीवन लेन पठायो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हम बीती जात बीती जात रात सिगरी रे करें कौन सो उपाये॥ अंतरा उठान खाली से॥ शाखामृग प्रीति की प्रतीति न कछू किंचित चंचल चपल नित जामवंत सुग्रीव विभीषण कपीश भालु बैठे दुख पाये॥ १॥ होतही प्रभात प्राण भ्रात के जैहें निसर कहत सकल नर चलेनाहीं पुनि कछु एकहू चलाये कह होई पछ-ताये॥ २॥ सोई ततकाल आन प्रगटभे हनुमान सौमित्रि ललन प्रान दीन्हीं बूटी दीन्हीं बूटी सजीवन लाये बेग लखनजियाये३॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(७२८) गूंजें गूंजें सखी भँवरा भौंरि चकोर मोर शोर चहुं ओर घोर घिरे घन घिरे घन कारे अँधियारे भारे भारे वारिवारे॥ अंतरा उठान खाली से॥ गर गर गर गर गरज बरस घन दौरदौर दामिनि दमक औौर बहै बैरी बहै बैरी पुरुवा कठोर नींद आवे न निशारे॥ १॥ नंदके ललनबिन सिजिया भई अहिनु मदन दहावे तन बेधे डारे बेधेडारे बिरहा अपारे दुख सहोई न जारे॥ २॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(७२६) घिरे घिरे घन गगन कारे पपिहा पिया पिया धुनि धारे आली घर नाहीं घर नाहीं बलम हमारे तन अतन जगारे॥ अंतरा उठान खाली से॥ पिया बिनु दुखदाई ऋतुबरषा की आई बैरनि हमें न भाई कैसे पाऊं कैसे पाऊं ललनपियारे मन मोहन दुलारे॥ १॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(७३०) चलो चलोजी जाओजी नँदलाल सनेहाकर तोसे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पछिताई हौं तो जान लीन्हों जानलीन्हों निठुर कन्हाई हरजाई अधिकाई॥ अंतरा उठान खाली से॥ तुम बिनु बनवारी रैनियां गुजारी सारी तुम कुबिजा बिहारी छाँड़ो नाहीं छाँड़ो नाहीं कपट कमाई कह तोरे मनभाई॥ १॥ प्रीति भावकी जो रीतिजानत रँगीलो मीत शठ कह जाने नीति मैं तो जानूँ मैं तो जानूँ ललन पियारे तोरी सगरी ढिठाई॥ २॥ इति॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(७३१) सीखे सीखे नये नये ढँग श्याम छलन आये मोंसे चतुराई कर मैं तो जानूँ मैं तो जानूँ छल तुम्हरे सकल हटो चलो जाओ॥ अंतरा उठान खाली से॥ जानौ न नंदललन कंस को कठिन राज जान जो ये पाई बात पकड़ बुलाई भूलि जाउगे ढिठाई मत मोसे लँगराओ॥ १॥ इति॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी॥

उठान तीसरी की खालीसे॥

(७३२) छलो छलो मुहिंका मोहनलाल जात रहीही नीर भरन हौं तो संगलीन्हे संगलीन्हे सखन दसक ठाढ़ो बंशिवटतट॥ अंतरा उठान खालीसे॥ चोली बँद खोली अनमोली फारी सारी मोरी करी ऐसी बराजोरी गयो सखी गयो सखी कँगना करक छेड़ै छैल नटखट॥ १॥ ललनपिया मुरारी करे अनुचित भारी तोरो हरवा हजारी ऐसो ढीठ ऐसो ढीठ करी मोरी ख्वारी गयो कुंजनझपट॥ २॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७३३) कैसे कैसे सखी चंचल नैन रसीली रँगभरी मदमाती छवि गति गोथे गति गोये चपला चितौन छल भौन अँखियाँ ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ खंजन मधुप मीन मृग दृगसों विशाल ललनपिया निहाल प्यारी प्यारी सैनबान न्यारी छबिदारी मनमोहि रखियाँ ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७३४) छिपो छिपो सखी मोहनलाल कुंजन बिच देत न दिखाई वो तो देखो सखी देखो कही वेगही विहारी प्यारी बिकल हमारी ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ वन वन बागन औ कूपन तड़ागन सों पूछैं सखी बारी बारी देखे तुम देखे कहूं मोहन मुरारी ऐसे कहैं ब्रजनारी ॥ १ ॥ जम्बुन कदम्बन कदली अरु अम्बनके निकट सिधारीं सारीं देखो जोई देखो दुखि ललनपियारे वेग मिले आ विहारी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७३५) करुँ करुँ आली यतन कौन मोहन नित छेड़त चलत मग एरी आली एरी आली ऐसो दुखदाई देत नेकहू न कल ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ ज्यों ज्यों हटकोरी त्यों त्यों औरौ मटकत वोरी ललनपिया निहोरी डर नाहीं डर वाको काहू को तनक मोसे करै छलबल ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७३६) चलो चलोरी गोरी ऐसी गैल भरन यमुना सों जल बड़े भोर एरी बीर एरी बीर रविके प्रकाशे मिलजाय न कन्हाई॥ अंतरा उठान खाली से ॥ एक तो गोकुल पास मेरो तेरोहै निवास दूजे है फागुन मास नँदको ललन बीर बड़ो दुखदाई कर बैठै न ढिठाई ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७३७) सुनो सुनो मोहन मोरी बात छलत काहेको बिरचि छल बल लूटो चाहो लूटो चाहों माखन हमारो तोरी जानूं सारी घाती ॥ अंतरा ॥ जोरस गुपाल तोहे गोरस के मिस भाये सो तो मोहिं दरशाये ललनपनो न जाय तनक तिहारो लाज नैनन निपाती ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७३८) छांड़ो छांड़ो मोहन ब्रजको वास त्याग दियो सखिन सनेह दाप दास भये दास भये कुबिजा के जाके ऐसे निठुर मुरारी ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ करके करार गये अजहूं न आये श्याम कुबिजा के छाये धाम चैन नाहीं चैन नाहीं रैनि दिन काहू दियो भोजन बिसारी ॥ १ ॥ ब्रज कुंज धेनु बन ललन प्रिया सदन नीक न लगेरी मन टरेना टरेना ऊधो पल छिन टारी मूर्त्ति मोहनी विहारी ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(७३९) नाहीं नाहीं रही दृगन लाज दास भये कुब्जिजा के जाके हरि शीशधारी शीशधारी कलंककी मोट दाग कुल में लगायो ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ त्याग दियो हरिवास व्रजको सुख विलास ललन दरश आस कीन्हों नाहीं कीन्हों नाहीं तात को तरस दुखदारुण दिखायो ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(७४०) भजो भजो सखी शिवमहेश कैलासपती जक्तगुरु अविनासी नाम लिये नाम लिये कटें यमफांसी मिले स्वर्ग गति खासी ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ शीश सुरसरी सुख भरीसी जटा बिराजे तीन नेत्र वर राजे सोहैं शशि सोहैं शशि मस्तकके बीच दृगद्युति चपलासी ॥ १ ॥ मुंडनकीमाल उरव्यालन जनेऊ भारी चिता अंग भस्म न्यारी यती सती यती सती ध्यावैं शिवजी को रहें ऋद्धि सिद्धिदासी ॥ २ ॥ जाको वेद निगम अगम गीता श्रुति भानु करत पुरान गान गावे गुन गावे गुन ललनपियारे जिया परमुहुलासी ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(७४१) बनो बनोबनानृपको लालसजोरी शिर सेहरा सुभग अति भालसोहै भाल सोहै चन्दनकी खौर क्रीट कुण्डल श्रवन ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ जामारंग जरद सो सजे तन में विशाल गले।मुक्तियनमल बँधो आली बँधो आली कंगनाहाथ मेंहदीलाल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वरन॥ १॥ सज सज के बरात अवधसों सुखदाई जनकभवन आई सजी वेदी चारु चौक मोतियन पुराइ सिया ब्याही रामसन॥२॥ ललनपिया मगन नभसे झरैं सुमन सुर नर मोहैं मन बंदीजन सूत भाट मागधनि धन पाये मानिकरतन॥ ३॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(७४२) कैसी कैसी करूं आयो वसन्त भवन नाहीं कन्त हमारे प्यारे जागो आली जागो आली अङ्ग अनङ्ग दूजे बिरहा बिथारे॥ अन्तरा उठान खाली से॥ निशिदिन तरफ तरफ भई बावरीसी लागी तन दावरीसी कैसे पाऊं कैसे पाऊं ललनपियारे मनमोहन दुलारे॥ १॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(७४३) खेले खेले हेली नँदको लाल निकट वंशीवट यमुना के आली चले रँग चले पिचकारी भर भर इत ग्वाला उत गोरी॥ अन्तरा उठान खाली से॥ चोया रँगभीनो रँग इतर लसत हाथ ललनपिया हुलास मलेंतन मलेंतन आननसों रोरी मुख चंद्रमा चकोरी॥ १॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(७४४) धारी धारी रे आन बान कारे लोचन नाहीं लाज तिहारे हां रे दुखपावें दुखपावें नर नारी सारी चलो वेगि व्रज प्यारे॥ अंतरा उठान खाली से॥ सीखे कहा चाल कुबिजासी बाल मन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वसी कीन्हीं बात अपयसी नाहीं होंगे नाहीं होंगे असमुझवारे नंदललनपियारे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी ॥

उठान खाली से ॥

(७४५) राखो राखो मोरा मान कन्हैया मानो जी मोरी इतनी बिनती छैल लूटौना लूटौना माँगलीजै दधि मोसे तोरे वारी यदुरैया ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ तात मात भ्रात इन ढँगन सकल केरी पद्धति घटत तेरी नामधरें नामधरें तुम्हरो मुरारी जगमाँ लोग लुगैया ॥ १ ॥ इतनी अरज मोरी मानो प्रभू करजोरी ललनपिया निहोरी हूं तो दासी हूं तो दासी चरनकी चेरी बेरी बिपति नशैया ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(७४६) करूँकरूँ सखी कौन उपाय अनोखो छैल रसिया मोहन भयो माने नाहीं माने नाहीं काहूकी हटक ढीठ नँदकोकुमार ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ नन्दराइजी को यश जगबिच फैल रह्यो सुत नटखट भयो ललनपियारे ऐसो चंचल मुरारी करे मारगमें रार ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(७४७) गिरो गिरो मेरो कँगना छैल मरोरडारी बैयां क्यों अनारी मोरी कैसी करुँ कैसी घर किस विधि जाऊं मोरा बलम रिसाई ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ सास दीहै गारी मुहिंका

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ननँदि सो न्यारी न्यारी एही डरमोहिं भारी लाजलीन्हीं लाज आज ललनपियारे ऐसो चंचल कन्हाई ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७४८) परुं परुं तोरी पैयाँ श्याम जानेदे दधि बेंचन कारन मुहिं हाहा करुँ हाहा करुँ बिनती तिहारी मानो मानो जी हमारी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ हम ब्रजनारी नँदललन चेरी तिहारी टहल करनहारी काहे करौ काहे करौ झिगरो विहारी सारी गोरस तिहारी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७४९) मचो मचो आली ब्रजमें फाग फिकत रँग केशर केरे सरसे जुरे यूथ जुरे यूथ वीथिन बिहारें ग्वाला गोरी नँद-लाला ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ कंचन जटितसों कनक पिच-कारी भारी मारें तकन्यारी नारी मलैं मुख मलैं मुख रोरी हमझोली भरे थालन गुलाला ॥ १ ॥ ढोलक मृदंग डफ मुहचंग मँजीरा बाजें तम्बूरा सितार गाजें नाचें गावें मुसक्यावें ललनपियारे कोई अधिक निहाला ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७५०) आई आई सखी बरषा बैरी उमड़ घन घुमड़ गरज रहे थररथोम्ब दिरदिर नारे ताना नारे बाजें इन्दर नगारे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ गरज गरज गर गर बरष बरष घोर चले पुरवाई जोर हरे भये हरे भये विटप नियारे उगी नई नई

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

डारे ॥ १ ॥ करे मोर शोर बक दादुर चकोर अति पपिहा पिया रटत पशु पक्षी पशु पक्षी मगन सकल सुखी ललनपियारे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(७५१) आयो आयो सखी पावस मास हुलास हिया पशु पक्षी उपचारे मौज करें मौज करें यमुना किनारे बोलैं वचन सुहाये ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ भरे नीर चहुँओर सागर तड़ाग वन निरख उमँगै मन जागो आली जागो मैन श्याम विनारे केलि चाहना बढ़ाये ॥ १ ॥ नन्दके ललनपिया मोरे मन येही आस मिलो प्रभू हो हुलास मिट जावे मिट जावे तनकी तपत मन मगन होजाये ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७५२) भजो भजो आली श्यामा श्याम पवित्र मुख होई नाम लिये सेती स्वर्गगति स्वर्गगति वेगि मिलजाई येही सुफल कमाई ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ अघनु हरन सुख करन दलन दुख नितहि प्रसन्न मुख ललनपिया आरत स्वारथ करन दया-सिन्धु यदुराई ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७५३) काहे काहे नाहीं बरजो कान्ह अनोखो तुम्हरोई सुत छैला भयो छेड़े मुहिंका छेड़े मुहिंका डगरमें माई ढीठ ऐसो दुख-दाई ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ नीरके भरन काज गई यमु-नाको आज भेंटो आन ब्रजराज छीन लीन्हीं छीन लीन्हीं मटुकी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हमारी कीन्हीं कुगति कन्हाई॥ १ ॥ कहा कहूं तुम सौंरी अँखियाँ लजति मोरी, ललनपिया निहोरी कैसी करूं कैसी वासे एक न बिसाई करे ऐसी लँगराई ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७५४) भरो भरो सखीरी वेगि नीर गँभीर भीर ग्वालन की राज रही ठाढ़ो आली ठाढ़ो आली कृष्ण यदुराई करेगो आन दिठाई ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ अबहीं की बात यही चरचा बिरज रही ऐसो कृष्ण निरदई तोर दीन्हीं तोर दीन्हीं गोरीकी गागर चली एकु न चलाई ॥ १ ॥ औचक हठीलो आन नन्द को ललन कान्ह झिझट करै नदान माने नाहीं माने नाहीं हठको अनागी यासे चलिये बराई ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७५५) होवो होवो सखी शरन श्याम नशै जो नितकी झिगर झिझटहूँ मिले आली मिले आली नेक जिया चैन जामें लाज न तो जाई ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ तात मात भ्रातको वो अधिक लड़ैतो कान्ह कहा पैहौ बैर ठान माने ना उरहिनो साँच यशुमति माई यासों याही में भलाई ॥ १ ॥ कहत ललन-पिया येही है सुघर रीत करौ अब कृष्ण मीत होवे सखी होवे सखी जन्महूँ सुफल करें कृपा जो कन्हाई ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खालीसे ॥

(७५६) द्रीम तनाना त्रोम तनानाना पधम गारे धूकिट

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धातक धातक धातकिट तोम्बागिद घिघ धा किणान बा धानी धाम किन्ना ना ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ तारे ना द्रीम द्रीम तदीम तकधा तकधा धाकिट धानधा घिग् घिग् घाँण घिग् घिग् घाँण धा धा नी धा कथे ललन तराना ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी गौड़ ॥
उठान खाली से ॥

(७५७) ना माने ननदि बरजो मोर मुहनवा बार बार अटकत नागरनटवा पनियां जिठनियां भरन न दे घटवा ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ कुटिल कन्हाई कुटिलाई कर कर मोसे बहियां पकर करकायो कँगनवा ललनपिया ऐसो ढीठ लँगरवा मटकी झटक दई पटक धरनवा ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी गौड़ ॥
उठान खाली से ॥

(७५८) छांड़ो जी डगर मोरी ढीठ लँगरवा नीर भरत पर करत झिगरवा बाराजोरी हमरोरी तोर लियो हरवा ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ दूरही से देख मोरे आवत निकटवा अंचल गहत न लजत नटखटवा ललनपिया सखियन सनमुखवा हँसि हँसि मोहिं लगावत गरवा ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी गौड़ ॥
उठान खाली से ॥

(७५९) जाओ जी श्याम सौतिन के मितवा भोर भये आये मोर मँदिरवा न बोलूं न बोलूंगी मैं तोसे निठुरवा ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ सिगरी रैनि मैं तरफ गमाई तुम सौतन सो लगाई ख-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गनवा ललनपिया अब प्रीत जनावन क्यों आये मोरे पास लँग-
रवा ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी गौड़ ॥

उठान खाली से ॥

(७६०) कैसेके जाऊं नीर भरन पनघटवा रोकत डगर मोरी नंद कुँअरवा करत कन्हाई लँगराई नागर नटवा ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ निडर निलाज लिये सखन समाज साथ करत ठठोली मग चलत लँगरवा ललनपिया बरजो नहीं मानत ऐसोरी चंचल चित चपल मोहनवा ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी गौड़ ॥

उठान खाली से ॥

(७६१) डगर चलत मोसे करत झिगरवा ऐसो निडर निलाज निठुरवा घुँघटा खोल मुख चूमत लँगरवा ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ चटक मटक कर झिझट अनारी मोसे लपट झपट झटकायो अचरवा ललनपियारे मुहिका निरख नवेली नारि ठठोली करत हँस हँस नटखटवा ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी गौड़ ॥

उठान खाली से ॥

(७६२) छांड़ कलाई करको मोर कँगनवा गारीदै बैठोंगी मैं तोको लँगरवा काहेको बढ़ाई मगमें रार मोहनवा ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ ऐसोरी अनारी नाहीं मानत हटक मोरी बारबार बहियां गहत निडरवा ललनपिया ऐसो ढीठ नागर नटवा कर कुटिलाई मोरा छुवत जुबनवा ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी गौड़ ॥

उठान खाली से ॥

(७६३) ना ऐहौं सजन सिजिया तोर निअरवा तुम भये सौतन के मीत पिअरवा अब ना प्रीति तोसे करूंगी निठुरवा ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ वाही सौतन के जाओ मँदिरवा सिगरी रैनि जहँ कियो जागरनवा ललनपिया तुम्हरी सौंगँदवा न बोलूगीं तोसे नवनेइन ढँगनवा ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी गौड़ ॥

उठान खाली से ॥

(७६४) ना भावे निपट लँगराई मोहन की बात करत औंढँग छल बलकी अँगिया मसकदई दैया छतियन की ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ औचकै लपक झपक मोरी बहियां गही गरवा लगायो तोरी मालमुतियनकी ललनपिया निरखो तुम यह ढँग कान करत न नैक हटकनकी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी गौड़ ॥

उठान खाली से ॥

(७६५) देख सखी बालम की बतियां जाय लगे सौतनकी छतियां मैं तरफत उन बिन दिन रतियां ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ पिया हरजाई बिसराई सुधि मोरी आली ऐसी निठुराई मोसे करगयो घतियां मदन सतावे अतिजिया घबरावे मोरा ललनपिया तोरी देखीं पिरतियां ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी गौड़ ॥

उठान खाली से ॥

(७६६) सखिरी कहूंका निठुराई श्यामकी फाड़दई चुनरी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बहुदामकी तार तार करदई निकामकी॥ अन्तरा उठान खाली से॥ घुंघट उघार मुख निरख बलैयां लीन्हीं छतियां मसकदई चोली अभिरामकी ललनपिया चहुँदिश घर घर मोहिं श्यामरे कन्हैया निरदैया बदनामकी॥ १॥ इति॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी गौड़॥

उठान खाली से॥

(७६७) ना सैहौं सजन सौतनकी बतियां तुमतो छाँड़दई हमरी पिरतियां नाहक श्याम जरावत छतियां॥ अन्तरा उठान खाली से॥ निठुर मुरारी तुम बिन मोरा जियाआरी तुमतो सौतन सँग लगाईं अँखियां ललनपिया निशिदिन बिरहानल मदनदेत दुख मुहिं दिनरतियां॥ १॥ इति॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी गौड़॥

उठान खाली से॥

(७६८) बैरन बनमें बाजी कहूं मुरलिया सुनत मधुर धुनि व्याकुल भयो रि जिया कल न पड़त दहे मदन बिनु पिया॥ अन्तरा उठान खाली से॥ सोवतही सुखभरी निंदिया ननदिया श्रवन भनक परी खुलगईं अँखियां ललनपियारे अब सांवरे दरशबिन तनक चैन नहीं धरत धीर हिया॥ १॥ इति॥

ठुमरी रागिनी गौड़ खम्माच॥

उठान समकी खालीकी खाली से॥

(७६९) ठाढ़ो मनमोहन यमुनातीर नहिं भरन देत मुहिंका छैल नीर॥ मनमोहन यमुना तीर॥ अन्तरा उठान खाली से॥ ललनपिया ऐसो ढीठ श्याम मोसे करतरार मगमें निकाम नहिं मानत हटक छलिया बेपीर॥ मनमोहन यमुनातीर॥ १॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी गौड़ खम्माच ॥
उठान समकी खाली की खाली से ॥

(७७०) बाजी कहुं मधुवन में बँसुरी सुन श्रवन वदन सुधि बुधि बिसरी ॥ कहुँ मधुवन में बँसुरी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ नन्दललन बिरहा दुख माती बैरी मनोज दहावत छाती कल न परत छिन एक घरी ॥ कहुं मधुवनमें बँसुरी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(७७१) नागरी नेह नयोरी कर जोरी निदिया आजा पल छिनको ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ पिय वियोग तू मत तरसावे प्रिय नदान भोरी होरी ललनपिया निठुर श्याम प्रीति तोरी थोरी थोरी भई जात गोरी मोरी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी अमनी ॥
उठान पहिली से ॥

(७७२) ये निदिया जा ढूंढ़ला पिया मोरा ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ मैनबानसों प्रान अकुलावे बिरहा सतावे बिन मुरली मुकट वारे ललनपियाको भुरमाला गुनमानूं तोरा ॥ जा ढूंढ़ला पिया मोरा ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥
उठान तीसरी से ॥

(७७३) कँगन मेरो करसों करक गयोरे लाजकी बात कहा कहूं सखी आज करसों कर अँगसों अँग परसतहि नयो रे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ हमरी हरि कीन लाग ललनपिया कहो न

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जात अचरज डर ननदि सास बैरिन को भयोरे॥ १ ॥ इति॥

ठुमरी रागिनी सिन्धु खम्माच॥

उठान पहिली से॥

(७७४) नेक नजर नारि मोरा हरत प्रान बांकी बांकी चितवन बांकी नैन सैन सों॥ अन्तरा उठान पहिली की खाली से॥ नई छबीलीसी रँगीली छवि दरसत रस बरसत अतिबहार ललनपिया तनमन धन देतवार॥ १ ॥ इति॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी खम्माच॥

उठान समकी खाली की खाली से॥

(७७५) मोरे प्रभूको नित नाम अधार॥ अन्तरा उठान खाली से॥ हावभाव पूरन परेम सों राखूं तनमन वार॥१॥ अचल अगोचर अन्तर्यामी त्रिभुवन व्यापककार॥ २ ॥ जीवन के प्रतिपालक स्वामी दीनबन्धु करुणार॥ ३ ॥ जग कर्ता भर्ता सुख भक्तन हरन सकल भवभार॥ ४ ॥ ललनपिया शरणागत सेवक अब प्रभू करो सुखार॥ ५ ॥ इति॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी झँझौटी खम्माच॥

उठान समकी खाली की खाली से॥

(७७६) प्रणमुँ परमात्म परमपरवीन॥ अन्तरा उठान खाली से॥ जगदीशा त्रिभुवन प्रतिपालो सृष्टी रचना कीन्ह॥ १ ॥ बिदित विभू विश्वंभरनायक सदा भक्ति आधीन॥ २ ॥ प्राणपती प्रभु नित्य निरंतर सकलेश्वर रहे लीन॥ ३ ॥ कृत्य नवीन जगोजागर हरि सर्वान्तर गति चीन्ह॥ ४ ॥ भक्ति परा भगवंतहि की उर ललनपिया वरलीन्ह॥ ५ ॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी झँझौटी खम्माच ॥
उठान समकी खाली की खालीसे ॥

(७७७) अहो जगपति शुभमति दातार ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ सागर दया उजागर गति मति पूरनब्रह्म अपार ॥ १ ॥ तुम जीवन के जीवन स्वामी संकट हरन सुखार ॥ २ ॥ दीनबंधु बहु भांति कहावो अब जन ओर निहार ॥ ३ ॥ ललनपिया आरत दाया बिनु बरहु सुफल सुखसार ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी झँझौटी खम्माच ॥
उठान समकी खाली की खाली से ॥

(७७८) कृपानिधि कृपा नेक करो ॥ अंतरा उठान खाली से॥ तुम सत्य स्वरूप सुखदाई आरत वेग हरो ॥ १ ॥ जन अशक्ति बिनु भक्ति तिहारी सो मम हृदय धरो ॥ २ ॥ जग जन दीनबंधु प्रणपालक सो प्रण कह बिसरो ॥ ३ ॥ ललनपिया को बरहु सुफल सुख तुम्हरे शरण परो ॥ ४ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी खम्माच ॥
उठान समसे ताल त्योरा ॥

(७७९) वंद वंद पदार्विन्द गुविन्द आनँद कंदके ॥ गोकुल चंद विमंद मति सर्व्वोपरोत्तमचंदके ॥ अंतरा उठान सम से ॥ विश्वोद्धारक बहुसुखारक प्रणतजन जगवंदके ॥ मङ्गलेश परेश पूरन हरन हरि दुख द्वंदके ॥ २ ॥ (अभोग) प्राणनाथ कृपाल करुणा रूप सुजसनु वृंदके ॥ भक्तवत्सल सुफलदायक मन मनोर्थ अनंदके ॥ ३ ॥ (भोग) ललनपिय जन शरण यदुपति चरण हरि निर्द्वंदके ॥ नँद नंदके सुख कंदके सब फंद रिपुछल छंदके ॥ ४ ॥ इति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

॥ ध्रुपद रागिनी सिन्धु षट्ताल ॥

॥ उठान पहिली से ॥

(७८०) जय जगेश महेश पूरन ब्रह्म आनँद मयबना ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ निर्विकारी निरंकारी बहु मुखारी श्रुति भना ॥ अतिपुनीत सुनीतनायक जन हितू संकोचना ॥ १ ॥ (भोग) जगोद्धारक शान्तिकारक अतिसहारक जगजना ॥ ललनपियकौ भक्तिप्रिय जो बरहु ताको सुखघना ॥ २ ॥ इति ॥

॥ ठुमरी रागसिंदूरा ताल रूपक ॥

॥ उठान पहिली की खाली से ॥

(७८१) सैंयां रे होरी आई घर आजा अमैरैंयनकीडार पपिहा बोलनलागेरे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ प्रीत चुनरिया प्रेमरँगबोरूं जो मोहिं दरश दिखाजा श्याम सनेही ललनपियकी विनय मन को मान मनाजा ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग बिहाग ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(७८२) नाथ प्रबल जनगरीब तिहारो चरन शरन दीनता मोरी बिचारो ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ त्राहित्राहि तुहिं अब जनि बिसारों काम क्रोध लोभ टारों दुखितजान ललनमोहिं प्रभुनिरखारो ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७८३) जबसों सौतनके भये श्याम तबसों अँखियां बदलीरे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ चढ़ारहत चितवन नासाभौं भलवुलगत न अलीरे ॥ गृहआवत ठनगन नवठानत राचीबानभलीरे ॥ १ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सृजहुँशिंगार विविधरँगराचौं हरि हितकरन बलीरे ॥ लखत न नैन उठाय मोरतन भल अपराध दलीरे ॥ २ ॥ हिरैगई छत्ति-सहु कला कर भोजन भजन गलीरे ॥ निठुर सांवरे ललनपियासों कछु नहिं मोर चलीरे ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान समकी खाली से ॥

(७८४) बलमाने मुहिंका बोलन मारारे ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ अब न धरब सिजिया पग वाकी मोरा जिय जारारे ॥ १ ॥ त्यागदीहौं बसबो ससुरेको ह्यां न गुजारारे ॥ २ ॥ जारे कहरवा डुलिया सजाला मैके सिधारआरे ॥ ३ ॥ साससुर दिवराकी न मानूंगी ननँदी नकारारे ॥ ४ ॥ माई बाप चिरजीवौ ललनपिया मुहिं सुखसारारे ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी गौरी ॥

उठान खाली की तीसरी से ॥

(७८५) ऐसो बनवारी रोकै डगर हमारी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ जानत ना मानत ना मोहन कंस अदल अतिभारी ॥ १ ॥ बरजत बैयां गहत आनके ललनपिया झिगरारी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी गौरी ॥

उठान खाली की तीसरी से ॥

(७८६) ऐसोरी अनारी निरदैया कन्हैया बैयां गहत हमारी ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरत से ॥ मारगमाहिं मिलो मन-मोहन मसकी चूनरसारी ॥ १ ॥ ललनपिया पतिलई श्यामने सास निरख देगी गारी ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़े की रागिनी गौरी ॥
उठान खाली की तीसरी से ॥

(७८७) बँसिया बजावे मोहनलाल मुरारी ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ सही सुरीले राग रागिनी मुरली में दरशावे जिया ललचावे ॥ १ ॥ ललनपिया रसप्रीति बढ़ावे मदन जगावे सखीरी जादू भरी तान गावे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी गौरी ॥
उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(७८८) मुहिंका नाहीं भावे मोहन तोरी बात ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ डगर चलत झिगरो नित ठानत नाहक को अठलात ॥ १ ॥ ललनपिया तोहिं बरजों बहुविधि नेक न ढीठ लजात ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी परज ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(७८९) देखीं बतियां घतियां नटखटकी रार करत वोतो ढीठ लँगर ऐसो रोकत मग पनघटकी ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ दधिसों भरी मटुकिया हमरी चटक मटक भुइँ पटकी ॥ १ ॥ चटक चुनरिया झटक बिगारी ललनपिया अतिहटकी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी परज ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(७९०) देखी ढिठाई ढीठ नटवर की गोकुल गैल मोसे कुंजन के तट आली ठठोली करत मगबिच निधरकी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ अति नवीन लई छीन इँडुलिया बैयां गहत चुरियां

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दरकी ॥ १ ॥ ललनपिया ऐसो निडर कान्ह सखी लीन्ह बलैयां अधरकी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच मलार ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(७६१) ढीठ कन्हाई मोरी बैयां छाँड़दे नरम कलाई बलखाई मुरकी जात वँगरी गई मोरी बैयां छांड़दे ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ गारी दे बैठौंगी न मानत ललनपिया नोखे छैल गगरी गेरी ताड़दे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच अन्य धुनि ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(७६२) धनि सौतन धनि वाके भाग धनि धनि सुहाग धनि धनिरी ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ प्रीति पुरन सुख शरन बरन विधि धनि प्रतीति प्रचरनरी ॥ १ ॥ धनि आँखियां छवि लखत पीय रस पर बरसन बरसनरी ॥ २ ॥ धनि सिजिया फुलबन रतिकारी जापर सैन दुअनरी ॥ ३ ॥ यह अभाग हमरे की करनी ललनपिया बिछुरनरी ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच अन्य धुनि ॥

उठान तीसरी की खालीसे ॥

(७६३) जोहत बीती रात बाट सैयां की एरी सखीरी ॥ अन्तरा खाली से ॥ तरफ तरफ बिरहा दी मारी दइमारी अकुलात॥ मदन बान मारत तन बेधत बैरिन नींद हिरात ॥ १ ॥ खान पान पट भूषन अनहित वचन न बात सुहात ॥ ललनपिया माधो मुकुन्द बिनु रहि रहि जिय घबरात ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्रुपद षट्ताल रागिनी अल्हैया ॥
उठान समसे ॥

(७६४) पियाके बरन मोहें निको न लखागे जगत कोऊ कोटि रतिकलन कामशोभन वारिडारों श्यामली सूरति मोर मुकुटपर॥ अन्तरा उठान समके आगेकी दूसरी से ॥ उनके नेहन जियरा पागो रस बस मुहापरी रहात ललनपिया मुरली लकुट वारो नँददुलारो जीवन प्रान गिरिवरधर हमरो सुघर॥ १ ॥ इति ॥

प्यारी अबतो गले लगाले। इस धुनिपर ॥
ठुमरी रागिनी खम्बावति ॥
उठान समकी खाली की खालीसे ॥

(७६५) दया न तोरे जियामें रही पिया पग परसत बिनती करत कबसन तू ना इत चितवत तनक तक ॥ अन्तरा उठान खालीकी खाली से ॥ होरीके दिनन मान ठान बैठी गहिकेगुमान को तिहारी आनि बानि ललनपिया की माने राधे लाड़िली कही ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग सिन्दूरा झपताला ॥
उठान पहिली ताल से ॥

(७६६) चन्द्रवदन गात गोरे चतुर नारि आई शृंगार सजे ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ कोमल तन शिर सोहत चुनरिया ललनपिया छवि लख चपला लजे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी गौरी ॥
उठान खालीकी तीसरी से ॥

(७६७) काहे मातिलाई यह नगरी बिच आजरी ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ नित बेंचत मथुरा गली गोरसरे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आज परी कहा गाजरी ॥ १ ॥ यह ब्रज कुटिल कृष्ण रजधानीरे बचब न कोऊ कर लाजरी ॥ २ ॥ टेर न सकत तीव्र बानीसों रे दधि कस बिचबको काजरी ॥ ३ ॥ ललनप्रिया डर डरी ढीठ केरे बांकुरो श्रीव्रजराजरी ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी भैरवी ॥
उठान तीसरी ताल से ठेकाहोली ॥

(७९८) हरिसों कहो दुहिजाय मोरी गैया ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालसे ॥ रात सों रँभत बछरा गौ दोनों पान न करत जल तृण कछु दैया ॥ १ ॥ कबको भयो प्रभात हरिकी हेरुँहूं बाट कर में मैं लिये खड़ी क्षीरकी मलैया ॥ २ ॥ ललनपिया मैं वारी सखी तोरी बलिहारी करदे ये काज तोरी लूंगी मैं बलैया ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी भैरवी ॥
उठान समकी खाली की खाली से ठेकाहोली ॥

(७९९) बरज यशोदा रानी अपनो कन्हैया ॥ अन्तरा उठान समकी खाली की खाली से ॥ नीरको भरनवार कैसे निकसूं मैं द्वार मारग में रोकै ठाढ़ो नँदसुत दैया ॥ १ ॥ गृहकृत परी सब अभै न बिलोयो दधि भोजन भजन मैं बिलँबहोरी मैया ॥ २ ॥ हरिके डरनसन ललनपिया की सन ब्रजमें निभनपावें लोग ना लुगैया ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी त्योराताल ॥
उठान समसे ॥

(८००) तजे बनै ब्रजवास अब तो तजे बनै ब्रजवासरी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ रहे मधुवन छाय माधव बढ़त चित नित त्रासरी ॥ हरि कुबरि कूरसों जाइ उरझे करन हास विलासरी ॥ १ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भ्रमहु बन बन योगिन बन बिच साध योगाभ्यासरी ॥ हरि मिलब सजनी कठिन अब तपतु जहु लव संन्यासरी ॥२॥ वसन अभरन तन शिंगारनु त्याग सुख अवकासरी ॥ लय भस्मचिता रमाय सज मृगछाल सेलि लिबासरी ॥ ३ ॥ श्रवण मुंद्रालै सुमिरनी नामकी निज श्वासरी ॥ चलचल रमाओ धूनी वहि कुबजा भवन के पासरी ॥ ४ ॥ को सहै बिरहाको दुख दहै मदन हियरा हिरासरी ॥ गृह काम काज न सूझै भोजन भजन रहत निरासरी ॥ ५ ॥ अस जियबसों मरब भल सखि कौन सुखकी आसरी ॥ नँद ललन बिनु सतसङ्ग धिक तन जीव गोकुलनिवासरी ॥ ६ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खाली की तीसरी से ॥

(८०१) साधन मन लघुता नेमले निरखु साधुन वरत लघु पनहि सुयश सर्वशक्ति वरदायक भयेरी लघुतन हरि वामन बहोरि भृगुपद उर धरो कन्हाई ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ लघुसे दीर्घ दीर्घतासे द्युति बलसों बुधि बुधिसे विद्यासे बोधते गुरु गुरुते ज्ञान ज्ञानते रति हरिकी कृपा कृपाते दलन आवागमन ते मोक्ष मोक्षते स्वर्गपदवी ललनपिय लघुता जगमें सुखदाई ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग मालकौश ॥

उठान खाली से ॥

(८०२) सजनवारे तैंतो मोसे काहेको गुमान करे ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल से ॥ मीत सौतनके भये हूं जानूं आछी नीकी आछी नीकी नई वान्धेरे ॥ १ ॥ हमसों रूपवती अतीको सोतो कोउ लक्षित नरे अरे ॥ २ ॥ व्याहे गमन केरी लाज ललन पिया तोरेहि कर बिहरे हरे हरे ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी सोहनी इकताला ॥
उठान पहिली की खाली से ॥

(८०३) पिय कँगनवा मोरारे सुनरवाको बुला गढ़वादे ॥ अन्तरा उठान पहिली की खाली से ॥ पोंहची कड़न छन बाजूबन्द जोशन सुवरनको नवरतन मोल मँगादेरे ललनपिया मन को मानमनादे मानमनादे मानमनादे ॥ १ ॥ इति ॥

ध्रुपद सवारी चारताल राग देशमलार ॥
उठान सम से ॥

(८०४) अब घन गरजत बरसत मेहा सो आई ऋतु सावन की मोरे पिया ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ अगर चँदनके कमवारे खमवा झुकवन चलत बयरिया ए मोरे पिया ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥
उठान खाली की खाली से ॥

(८०५) न माने गुइयां मनवृति चपल तुरंग ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ जाय चढ़ो चाउन चित हरि हितरे वाहनरूप उमंग ॥ १ ॥ सुखतरु श्याम सुमन अँग अँग रसरे अलिमन रमत तरंग ॥ २ ॥ जबसों सुधा मुरली ध्वनि अचयनरे छिन उतरत नहिं रंग ॥ ३ ॥ हरिपदरति मदमौज ललनपियारे नितप्रति रहत मतंग ॥ ४ ॥ इति ॥

मछरिया बिंदिया लैगई मोररे। इस धुनिपर ॥
दादरा रागिनी बरुवा ॥

(८०६) पियासों जिया परसन चहत हमाररे यौवन उमँगो नहिं बदन सम्हाररे ॥ अन्तरा ॥ स्वपनन निशि नित चौंकचौंकपरूं नैन ननींद सुधाररे ॥ १ ॥ माई बापसों कहु मोहिं सजनी ससुरे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देहिं पधाररे ॥ २ ॥ ब्याहे गवनभई बहु बरसन सखि मनलागो ससुराररे ॥ ३ ॥ बिरहा धीर न लावत छिनहूं मनमथ बान प्रहाररे ॥ ४ ॥ तीरपरोसिन अपने बिरनसों मोर ये बिनती उचाररे ॥ ५ ॥ लिखदे पतिय सँदेश पियहि मुहिं लेजाय वेगि उबाररे ॥ ६ ॥ नन्दललन बिनु दरश दुखित चित उन बिनु जिय न कराररे ॥ ७ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी बरुवा ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(८०७) परै न गुइयां अनचाहतको संग ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ त्रिय न दीप भायें किंचितहू दाहत देह पतंग ॥ १ ॥ मुखमनकार बरत तमतर निजु असको कौन प्रसंग ॥ २ ॥ जबलौं दिवलरस तैलचमकहित अन्तरमत यकसंग ॥ ३ ॥ सूर कहन सत श्यामबसनपर चढ़त न दूजो रंग ॥ ४ ॥ मसल सांच चीकन घट पर कछु रहत न वारतरंग ॥ ५ ॥ ललनपिया जिया नेहचैं कबहुँ तो हरि हिरि हैं मम अंग ॥ ६ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी बरुवा ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(८०८) कठिन व्रत हमरेरी पालेपरो ॥ पति दई के हाथ निबहनकसरे ॥ हमरेरी पालेपरो ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खाली से ॥ प्रनकीन्हों मन हरिहितकारनरे मन बच क्रमसनरे ॥ हमरेरीपाले परो ॥ १ ॥ जप तप योग युगत जिया जेहीरे खोजन नितप्रतिरे ॥ हमरेरी पालेपरो ॥ २ ॥ खान पान सुखचैन न निंदियारे वसन न रुचिमनरे ॥ हमरेरी पालेपरो ॥ ३ ॥ अब प्रभु ललनपियापर निहरैरे विकल सुतुमबिनरे ॥ हमरेरी पालेपरो ॥ ४ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी बरवा ॥

उठान खाली की दूसरी से ॥

(८०९) न्हात नित नैनन नीर शरीर ॥ लेत सुधि पिय न मोर बेपीर॥ दृगसों नित न्हात शरीर ॥ अन्तरा उठान तीसरी की दूसरी से ॥ नेत्रपात्र भर भर जल तृषित अँसुवन धार गँभीर ॥ नित न्हात शरीर ॥ १ ॥ अंजन अरुण सिंदूर जावकी तनपट सृजित गहीर ॥ नित न्हात शरीर ॥ २ ॥ कोटि तिलक तन भाल रचाये गहि आसनहि अधीर ॥ नित न्हात शरीर ॥ ३ ॥ योग वियोग उसासन तापन भजन दरश रटतीर ॥ नित न्हात शरीर ॥४॥ वेगि मिलहु प्रभु ललनपियहि अघनाशन विपति समीर॥ नित न्हात शरीर ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी बरवा ॥

उठान खाली की खाली से ॥

(८१०) चहन चित साधन की यह टेक ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ हरि मग हेरि रहत नितप्रति कृत दरशन हेतहि एक ॥ साधन की यह टेक ॥ १ ॥ रसना चोंप नगार शब्दसों प्रभुयशु भनत अनेक ॥ साधन की यह टेक ॥ २ ॥ नासा श्वास उसांस होत उर हरि हित लखे न नेक ॥ साधनकी यह टेक ॥ ३ ॥ श्रवण सुनत सुख कृष्णचरित पुनि इन्द्रिन बानि प्रत्येक ॥ साधन की यह टेक ॥ ४ ॥ कबधौं ललनपियहि प्रभु मिलिहौं सुजन सनेही नेक ॥ साधन की यह टेक ॥ ५ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी पीलू ॥

(८११) ननँदियासों अब न बनब मोरे राम ॥ अन्तरा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दोऊकर श्रवण धरत कहूं टेरे नहीं कछु हमसोंरी काम ॥ अब न बनब मोरे राम ॥ १ ॥ लै पिया सँग घर बाहर रहिहौं में ना बसब यह धाम ॥ अब न बनब मोरे राम ॥ २ ॥ कै मैके रमजैहौंरी गुरिया फिर न लिहौं इत नाम ॥ अब न बनब मोरे राम ॥ ३ ॥ सासु ससुर दिवरा जेठा कछु बरजत ना यकदाम ॥ अब न बनब मोरे राम ॥ ४ ॥ गाजपरे नित रार निगोड़िन तनमन भईरे बिराम ॥ अब न बनब मोरे राम ॥ ५ ॥ ललनपिया अब कह तोरी मरजी श्रीपतिसुन्दरश्याम ॥ अब न बनब मोरे राम ॥ ६ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक राग देश ॥

उठान सम की खाली से ॥

(८१२) अनबोलारी मोसों लियो ननँदियाने निसकारन रुठ रोषगहेरी मुखफेरे न अँखियनहेरै ऐंड़त लखि ओंठन बिच कन धरनासिका भ्रू भाल बलकर कपोलन फुलै घुरकत दृगसों मुख चिरवत ठिमोनन बरति बोलन ठनिगननसनरी ॥ अन्तरा उठान सम की खाली से ॥ सास ससुर दिवरा जिठानि सन कर लगैयां बुझैयां नित जिय फरक डारन यतन कर मन उदितभइ इन ढँगन बैरिनि कठिन क्रोधिन आनजनि कोउ ललनपिय अब कैसे निभैगो रहब गृह इन ढँगनरी ॥ १ ॥ इति ॥

आस्ताई राग बिहाग ताल त्योरा ॥

उठान पहिली से ॥

(८१३) मोरी मोरकीसी रहन मोरी मोरकीसी रहन अँग अँग शुभग सोहन बरन पावन पखन बन ठन मुकुटमाथे श्यामसुन्दर धरन ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ कंठ कुमल कराल बहु उचस्वरन मृदुल बुलन श्रीराधारमन रसना रटन नच नच मदन खंडन भयनय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दिपद लखनि अँसुवन दृगन धारन गिरनलागीं धरन यह मम भाग ललन सुशरन माधवचरन ॥ १ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी भँझौटी ॥

(८१४) निंदिया नींदोरी निरदैया बेदरदी तनकगई बेदरदी तनकगईरे बैरिनियां काहू सवतियासन करके नेहा बिलमरहीरे करके नेहा बिलमरहीरे ॥ अन्तरा ॥ रजनी राजनिहर अँग अनँग बिरहा दहत दून सूनिसिजिया विकल जियरा ललनपिय श्रीकृष्ण श्याम कठिन सुधि बिसारदइरे कठिन सुधि बिसारदइरे ॥१॥ इति ॥

दादरा रागिनी पीलू ॥

(८१५) तोरी चितवन कीधौं जादूरे समलिया तोरी चितवन कीधौं जादूरे समलिया ॥ अन्तरा ॥ हिरन फिरन चपलासी चलन जीरा बेधगई रे बांकी सैन कटरिया ॥ १ ॥ दुरन लखन टुनवाको प्रकरन एरी तनु निहरन वशीकरन सागरिया ॥ २ ॥ चित सों टरत नाहिं नेकहू ललनपिया जिया बसगई तोरी श्यामली सुरतिया ॥ ३ ॥ इति ॥ दादरा रागिनी भँझौटी ॥

(८१६) हमारा क्या किया निस्तारा न भारा भक्तिका निर्वारा ॥ अन्तरा ॥ अपनो कर क्यों नहिं अपनावत कह अपराध निहारा ॥ १ ॥ अब तो मात मोर सुधिलीजै दामन गहा तिहारा ॥ २ ॥ जन सुखदेहु भक्तिवर मुहिंका भवसों कर निर्धारा॥३॥ जनम व्यतीत भयो बिनु दाया यह आश्चर्य अपारा ॥ ४ ॥ क्षमहु मात महरानी अब तो बिनवत ललनपियारा ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी धानी ॥

उठान तीसरी से ॥

(८१७) देखो मोरी ढरक न जाय गगरी ढीठ कन्हाई बैयां

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोरी छांड़दो मुरकी नरम कलाई मोरी दरक न जाय गगरी ॥ अन्तरा उठान पहिलीकी अनसरल से ॥ हूंतो जानत ललन तोरे ढँग बराजोरी मुहिंका भावत नेक न डरे निरखति ठाढ़ीं सखियाँ सगरी ॥ १ ॥ इति ॥ ठुमरी राग देश ॥

उठान तीसरी की पिछली से ॥

(८१८) सजन बिनु कछु न मोहिं सुहात ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल से ॥ जबसों श्यामभये मधुबनियाँ सुधिहु न आवत जात ॥ उनबिन खान पान रुचि नाहीं भावत कोउकी न बात ॥ १ ॥ ऐसे निठुर भये कुबिजा वश छांड़दिये सब नात ॥ ऊधौ नन्दललन कब मिलि हैं शोच यही दिन रात ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी राग देश ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(८१९) मैं तो मिनती करत कर जोर जोर ॥ अब वेगि मिलौ मुहिं नँदकिशोर तुम बिनु व्याकुल जिय रहत मोर ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ निशिदिन तृषा रहत दरशन की लगी रहत नित तुमसों डोर ॥ १ ॥ ललनपिया आधीन तिहारे करिये कृपा कटाक्षकोर ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक राग हीरकेदारा ॥

उठान पहिली की खालीकी खाली से ॥

(८२०) इतना सँदेशवा हमरारे ऊधव उन हरिसों जाय कहियो तुम बिनु विकल व्रजनार नँद यशुमति दुलारे ॥ अन्तरा उठान पहिली की खाली की खाली से ॥ अवधि दिन व्यतीते वीते मनके कार्य सुफल कीन्ह अब तो ललन दरशदे बिसारे सुधिना बनैगी प्रणतपाल प्राणनाथ प्राण अधारे ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी बरवा ॥

उठान खालीकी खाली से ॥

(८२१) बुरोरी गुय्याँ ओछनको सतसंग ॥ अन्तरा उठानतीसरी की खाली से ॥ ओछेकी प्रीत भीत बारू समरे छिन उतंग छिन भंग ॥ १ ॥ ओसन तृषा जात नहिं सजनी नीर पिये रुचिरंग ॥ २ ॥ नयको बीर हीरसों हितकर निदरको धनको ढंग ॥ ३ ॥ मान को मरबोहु सुघर ललनपिय जग श्रुति विदित प्रसंग ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी बरवा ॥

उठान खाली की खाली से ॥

(८२२) करै न गोरी निठुरको तू परसंग ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ मैं बहु नाच नची हारि हितकर देखलिये सबरंग ॥ १ ॥ विधिहि निबाहु करे ऐसनसों निहचै न कोऊ अंग ॥ २ ॥ चारदिना की चाँदनी पुनि तम उन सखि नोखोई ढंग ॥ ३ ॥ नन्दललनप्रिय जनमको छलिया भइ अनसिख मतिभंग ॥ ४ ॥ इति ॥

पद राग बिहाग सप्तपदी ठेका होली ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(८२३) वृथा मत ग्वालिन गाल बजाउ सरासर ऐसो न झूँठ बनाउ ॥ अन्तरा उठान समकी खाली से ॥ तैं जो कहत हरि अबहिं मिलो मोहिं अंकभरो कर दाँउ ॥ मेरो तो सुत पलना पर पौढ़ो निरखु न दृग अँधराउ ॥ १ ॥ नेक तो रहु आपे अपने में उभर न चलु इतराउ ॥ छोटो मुख बड़ वचन उचारति है तोरो कुटिल स्वभाउ ॥ २ ॥ भलो चहैं चलिजा गृह अपने आय न जाँय नँदराउ ॥ बलदाऊ कहुँ जानन पावैं तौ पाछे पछिताउ ॥ ३ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लाजगहो निचली रहु बावरि ना निजु कुलहि लजाउ ॥ बड़घर की धी बहू कहावत नेक तो जिया सकुचाउ ॥ ४ ॥ नेकसी बैस भरे तोमें अस छल सांची कहूँ सतभाउ ॥ तू जानत मैंही चतुर प्रपंचिन मोसों न पति खुलवाउ ॥ ५ ॥ मो सनमुखकी जाई लबारिन बातनु ना भुरमाउ ॥ तोसि अनेकन आवति मोंगृह चवाइन करन चवाउ ॥ ६ ॥ तैं मदमाति फिरत इत उतसों औरहि सँग अठलाउ ॥ मेरो ललन बारो नदान है वाको न दोष लगाउ ॥ ७ ॥ इति ॥

राग वसन्त ठुमरी ठाह दून ठेका होली ॥

उठान पहिली से ॥

(८२४) तैंतो मनमें तो दुबिधा सिधारे (दून) हो वंशीवारे जग दिखाउ हित होरी खेलन आये चित कहूं अनत धरारे हाँरे ॥ अन्तरा उठान समकी खाली से ॥ काहू सखीसों अवधि बदिआये ह्यां भार उतारन कों सिधाये ऐसी होरी मैं तोसे न खेलूँ ललारे ह्वांही जाउ जासों जियरा लगारे ॥ १ ॥ तोरे संग सखा कोऊ आज नहीं कछु होरी को साज समाज नहीं अकिले चलि आये रिवाज नई यहि साल भयो तोहिंकारे हाँरे ॥ २ ॥ चल देख लई तोरी प्रीति छैल मनको तोरे जाय न कपट मैल निजु गरजी ललन तू बड़ोई मैल मुख देखे को हित चितधारे हाँरे ॥ ३ ॥ इति ॥

टप्पा समानमात्रिक रागिनी आसावरी ताल झूमड़ा ॥

उठान खालीसे ॥

(८२५) आँखडियाँ लगि जाँदियाँ तब कछु न साणूँ बिसाँदियाँ ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ जाके लगे दी सोई जाँणदा बिथा साणूँ कै खजांणेदा माँडियाँ ॥ १ ॥ बिरहण दीगति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिरहण जाँणदी को जाँणे पीर पराँदियाँ ॥ २ ॥ खटके नैनों देदिल बिच्च मॉंडे साँवरी सुरत सुहाँदियाँ ॥ ३ ॥ ललनश्याम दरशण बिणु देखे जीवण कठिण जनाँदियाँ ॥ ४ ॥ इति ॥

आस्ताई राग भैरव झपताल समानमात्रिक ॥

उठान समसे ॥

(८२६) विमलामुखी शशिवदनी सुन्दरी उमा जगत जननि पार्वती सती पतिपतनी गिरिकुमारिका ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ अष्टसिद्धि नवनिद्धि करन करिवरवदन षटमुख सुपालिनि भक्तिवत्सल ललन उर बस कृपानिधि अम्बालिका ॥ १ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी टोंड़ी त्रैताल ॥

उठान खाली की खाली से ॥

(८२७) एहो लालन मुहिंका दरशदे तुम बिनु विकल रहत पल छिन ॥ अन्तरा उठान तीसरी की तीसरी से ॥ कबसों अरज करत करजोरत पग परत हाहा बिनती करत नेक न दया धरत जिया अपने श्याम ललनपिया कि ओर क्यों कठोर भये नँद-किशोर कठिन ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(८२८) अजहूं न लजहु अपनी कृत पै कैसी कैसी ये बान तिहारी है ॥ अन्तरा उठान खाली की दूसरी से ॥ राधानाथ कहावतहौ महिमा जगमाहिं प्रचारी है ॥ अब कुबरी कृष्ण कहैंगे सबै यह लाज न तोहिं मुरारी है ॥ १ ॥ रवि शशि सुन्दरि राधा रुक्मिणि तारागण व्रजनारी है ॥ नाहिं चपला खद्योत न कुबरी जासों तुम रुचि पारी है ॥ २ ॥ यमुनवारि व्रजनारि अमीली

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषसी ओस कुबिजारी है ॥ कहँ नवनीत छाँछ कुबरीसी कोटिन दासि अपारी है ॥ ३ ॥ किन बातनु अभिलाष तुम्हें हरि क्यों व्रजसुरत बिसारी है ॥ चेरी के चेरभये मधुबनियां ये कह श्याम विचारी है ॥ ४ ॥ चरचत रसिक वृन्दजन बिरचत ललन की धुनि बलिहारी है ॥ जान न परत गूढ़गति तोरी अद्भुत कला पसारी है ॥ ५ ॥ इति ॥

श्रद्धा रागिनी बरवा ॥

(८२९) दृगनभरि मारी पिचकारी प्रेमकीरे ॥ अन्तरा ॥ दृष्टि धार तीक्षण प्रहार कर रँगदई तनमन सारी प्रेमकीरे ॥ १ ॥ प्रिया ललन मोहिलियो मोहन मोहिं उनके रसबस वारी प्रेमकीरे ॥ २ ॥ इति ॥

॥ आस्ताई राग चन्द्रकौस ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(८३०) बिन मोहन यार कैसे कटैंगे दिन चलु गोकुल तज मधुपुर माधो मिलन अस यतनकर सजनीरी कोउ यतन ॥ अन्तरा उठान समकी खाली से ॥ हरिबल दोउ दृगके तारेभये ओट हमारे विरह मारेडारे हाँरे वैरी अक्रूर प्रकटो आन ललन जीवन प्रान कान्ह छिनमें न्यारे किये बरन ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(८३१) मुखदेखे की प्रीत के मीत रसिक तिनसों कह नेह लगावत है ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खाली से ॥ बैठे बैठाये अछ भल में नाहक की व्याधि बिसावत है ॥ १ ॥ थिरचित न एक के रसबस जो ऐसनसों कोउ सुख पावत है ॥ २ ॥ सखि मोर मान अतिनिठुर कान्ह उनके गुन सब जग जानत है ॥ ३ ॥ नहिं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोहकी मग स्परश किये अस ललनपै जिया ललचावत है॥ ४॥ इति॥ ठुमरी जोड़े की समानमात्रिक रागिनी झँझौटी॥

उठान तीसरी की खालीसे॥

(८३२) रहे हितको लोभी मन मोर सखी रसिकनु कर वेगि बिकावत है॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खाली से॥ हेरै दृग प्रेमकी दृष्टि जोई तेहिके बन्धन बँधि जावत है॥ १॥ हँसि हेर-दियो रसरीति सहित मन फिर न अटक कछु लावत है॥ २॥ हँसिहेर कह्यो मृदु वचन कहीं तौ जिय तन मनसों बलि जावत है॥ ३॥ अपनी तो बृती सतभाउ यही जोइ जस सोइ तस फल पावत है॥ ४॥ सतप्रेमरूप हरिकेरु ललन लौलावत सुख बर-सावतहै॥ ५॥ इति॥

ठुमरी राग सूहा॥

उठान समकी अनसरल से॥

(८३३) बलमारे चुनरिया मुहिंका मोल मँगादे बजजवा सों॥ अन्तरा उठान तीसरी की अनसरल से॥ मोलमँगादे सूहीसूही रँगवादेरे गुटवा सजादे अनमोल॥ रे चुनरिया मुहिंका मोल मँगादे० ॥ १॥ नइरँगीली चटकीलीसी ललनापिय किरन टकवादेरे सुडोल॥ रे चुनरिया मुहिंका मोल मँगादे० ॥ २॥ इति॥

ठुमरी समानमात्रिक राग केदारा॥

उठान पहिली को अनसरलसे॥

(८३४) कोकिलाकी कूकन सुन हूकन हिया उठनलागी झूँखन चलन लागी पवन पुरवा बिरहन दुखदेनलागी पावसऋतु बैरन री॥ अन्तरा उठान पहिली की अनसरल से॥ प्रबल दल बादल उमड़घुमड़ सजलमाते मधुरी गरज गरज बरसत लरजत हियादेख

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चमक चपलाकी चौंक चित परत अकेली सिजियापै नींद न निशिआवेरी ललनपिया श्याम सौतन्न जनधनरी॥ १ ॥ इति॥

ध्रुपद षट्ताल रागिनी मुलतानी॥

उठान समसे॥

(८३५) दासनको दास दासहौं तिहारोही तुम्हरीही हिया आसहै मोहिं खास खास॥ अन्तरा उठान समकी पिछली दूसरी से॥ प्रबलबलीन में बलीश अचल तू प्रताप तेरो ज्योति प्रकट जगत मध्य करता करतार जनसुखार ऐसोरी ललनपिया को देव देव भक्ति मुक्ति व्रजविलास॥ १ ॥ इति॥

ध्रुपद इकताला राग देश॥

उठान सम से॥

(८३६) जगजीवन श्रीजगन्नाथ यदुपती पती॥ अन्तरा उठान समसे॥ अमर जाको नाम धाम अलख अविगती गती॥ गुणवती प्रतापवान शुभमतीअती॥ १॥ (संचाई) श्रीपति ब्रजराजभ्राज योगीराज यतीयती॥ पुरनब्रह्म परमानन्द पुरुषोत्तम सतीसती॥२॥ (अभोग) अमितरूप कलाभेद पावत न रतीरती॥ सरस्वती श्रीभगवती श्रीपार्वती सतीपती॥ ३॥ (भोग) विंशति वसु पंच कोटि देव इस्मृतीश्रुती॥ शेश यशु मुनीश भनत ललन लघुमतीमती॥ ४॥ इति॥

आस्ताई इकताला रागिनी गौड़ खम्माच॥

उठान समसे॥

(८३७) मोर मुकुटवाला मोरारे मुरलीको बजैया कन्हैया मुहालियोरे॥ अन्तरा उठान समसे॥ पीतपट कटिसों काछे आछे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आछे भेषजाके मोहनी मुरति सोहनी सुरतिया जिया ललनपिया वशकियो यदुरैया मुहालियोरे ॥ १ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी मुलतानी चारताल ॥

उठान समसे ॥

(८३८) जागे जाके भाग जाके भौन जामिन जागे जाके जादोजी जिवन प्रानाधार मोरी सुधि गमाके ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ प्रबल यशु प्रताप ताके धनिरी धनि सुहाग वाके श्रीपति से कंथ पाके सोई हियासों लगाके ॥ १ ॥ (अभोग) अधर सुधारसको पान पावत बड़भागीहि जन पुरन पुराय जासु सुकृत बलि बलिरी वा अबलाके ॥ २ ॥ (भोग) धनि धनि वाको जिवन धन्य तात मातकेरि सुयश विलसत सुख मन मनाके परसत सँग ललनपियाके ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग तिलककामोद ॥

उठान तियाकी पहिलीकी खालीसे ॥

(८३९) जाको वेद ध्यावत व्यास ब्रह्मा बालमीकि शारदादि नारद गन्धर्व सनकादिक मुनिवशिष्ठ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ गौतम शुकदेव शुक्राचार्यजू मुनीश ब्रह्म गोरख गुन भनत शेश सहस्रवदन श्रेष्ठ ॥ १ ॥ अष्टादश पंच त्रिया सप्तकोटि देवपती योगीराज यती सती ध्यावत श्रीमुनि बलिष्ठ ॥ अमित जाकी महिमा अमित माया विस्तारि ललन खोज खोज हारे जगत जासु गति कलिष्ठ ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान खालीकी अनसरलसे ॥

(८४०) कृष्णराज महराजाधाज गोवर्द्धन धरनेवालाहै ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्तरा उठान खालीकी अनसरल से ॥ इन्द्रमानभञ्जन नँदनन्दन व्रजजीवन रखवालाहै ॥ गोपीनाथ मदनमोहन ग्वालनमें ग्वाल गुपालाहै ॥ १ ॥ मोरमुकुटवाला वंशीवाला लकुट कमरियावाला है ॥ दामोदर मुरलीधर माधव यादव वंशउजाला है ॥ २ ॥ नंद-नँदन व्रजराज सांवरो यशुमतिकुँवर कृपालाहै ॥ वासुदेव देवकी-चन्द मोहन मुकुन्द व्रजवालाहै ॥ ३ ॥ देवनपति श्रीनाथ दया-निधि दीनबन्धु प्रणपालाहै ॥ ललन शरण बुलाय चरणन प्रभु दीन्हों दरश दयालाहै ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान खालीकी अनसरल से ॥

(८४१) कृपानाथ श्रीनाथ कृष्ण गोलोकस्वामि गोपाला रे ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ गिरिवरधरन लाल यदुपति त्रैलोकनाथ व्रजवालारे ॥ भूमण्डल नरपालपती शाहनपति शाह विशालारे ॥ १ ॥ जक्त मुक्तिदायक सब लायक नायक सुरमाहिपालारे ॥ सप्तद्वीप नवखण्ड भुवन चौदह दश दिश रखवालारे ॥ २ ॥ नारायण नरसिंह नरोत्तम निर्भय नितहि निहालारे ॥ निरंकारज्योतिःस्वरूप आनन्दरूप उजियालारे ॥ ३ ॥ रवि शशिपति चैतन्य दयानिधि दीननहितू दयालारे ॥ अमित प्रताप ललनपिय वाके जनवत्सल नँदलालारे ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी राग देश ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(८४२) दरशन दीजै नाथ म्वहिंका विलँब न कीजै यशु लीजै इतना तनक अपनी कृपा सहज कीजै जनपै समुझ मन ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ कमल चरण की शरण रखलीजै मोरी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुमति करीजै कुमती हरलीजै नाथ ललनपिया तिहारो रखत सहारो तुम घटकी निहारो मैं तो भजत त्वहिंका ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समान रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(८४३) इतरावतहौ न लजावतहौ सनमुख सखियन लँगरावतहौ ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ बरजौं सोइ कामकरौ तुमतो ये निलजता अपन दिखावतहौ ॥ १ ॥ भल नाहिं लगौ इन ढँगन श्याम नाहकको नाम धरावतहौ ॥ २ ॥ गरुआपन गमै गँवार बनौ हलकापन अपन करावतहौ ॥ ३ ॥ चलिजाओ जनाओ न जानतिहूं तुम रसिक हौं ललन कहावतहौ ॥ ४ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी चिन झँझौटी ताल त्योरा ॥

उठान समकी खाली से ॥

(८४४) कलाई मुरकाय मुकरगये श्याम करत छल बतिया झूंठी राम राम ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ अँचरागहि गरवाडार बहियां छतियां मसकीं थाम ॥ दौड़ झपट पट घूंघट टारो चूम्यो मुख घूमघाम ॥ १ ॥ (अभोग) आज नइ नइ बात नये ढँग आवत नित इत गाम ॥ कैसे निभिहै मात सुन अब नीके नहिं यह काम ॥ २ ॥ (भोग) ललनपिय नँद ढीठ ढोटा चंचल चित मति खाम ॥ डगर बिच नित झिगर ठानत दुखित सब व्रजवाम ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी राग बिहाग ठेकाहोली ॥

उठान तीसरी की खालीसे ॥

(८४५) छैल तोरी नेक न गईरे नदानी ॥ अन्तरा उठान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खाली से ॥ बिन गुरु सीख मिलत शुभमत कहँ वेदन सांच बखानी ॥ निगुरोहि चतुरा बन बैठो दरशावत बुधवानी ॥ १ ॥ रसकहँ रसिक बनत रसिया तैं परत न तनकहु जानी ॥ जो रँग रँगत निरँगहि लागत चढ़त न किंचित पानी ॥ २ ॥ छल बल करत बनत छलिया अति छलबलिया बलवानी ॥ छलको छैल छटांक न जानत पासँगहूकी हानी ॥ ३ ॥ प्रीतिरीति की नीति न जानी मनमानी सोई ठानी ॥ प्रीति करनाहित अति आतुररहे समुझत हितहि कहानी ॥ ४ ॥ कछु दिन चतुर सखिन संगति करि सीखहु प्रीति प्रमानी ॥ तब ये जाल ख्याल में ऐहैं बीच न हो मत स्यानी ॥ ५ ॥ ये नहिं कान्ह खेल लरकनको बनै व नशै निदानी ॥ यह नँदललन रीति रस मग नहिं घरजानी मनमानी ॥ ६ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान पहिली ताल की अनसरल खाली से ॥

(८४६) नैन बान मारत सजनी कैसी लचक चलत चाल मध जोबन माती आली गुमान धारत सजनी कैसी ॥ अन्तरा उठान समकी अनसरल से ॥ चन्द्रमुखी मृगनैनी मृदुबैनी शोभा दरसत बरसत छवि रँगीली रसीली छबीली आली ललनपिया प्यारी प्यारी सारी साजे नई नोखी मुसिक्यान मधुर मधुर सुघरवान पै प्रान वारत सजनी कैसी ॥ १ ॥ इति ॥

आस्ताई राग मालकौश त्रैताल ॥

उठान तीसरी तालसे ॥

(८४७) पियकी नगरिया में जाय मनकी मनशा पुरोंगी आली आज ॥ अन्तरा उठान समकी दूसरी से ॥ विमलन सा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जूंगी साज सोलहू श्रृँगार साज बरन बरन भूषन वसन ललन श्याम हित सुजतने॥ १ ॥ इति ॥

सादरा रागिनी परज शूल ताल ॥
उठान समसे ॥

(८४८) साजन सँगाती हेत शंकर मनाती बेलपाती मँगवाती कंजजाती सम पाती सो ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ स्वच्छ ह्वि प्रभाती तिल तँडुल अर्गजाती फल फूल धूप लाती दीपबाती अर्पाती सो ॥ १ ॥ (अभोग) नेम जानि भाती पै कबधौं पी पाती दिन राती अकुलाती विरह बेधन कलपातीसो ॥२॥ (भोग) ललन हुलसाती कहुँ पाती तक आती तो छातीहू जुड़ाती भर श्याम अंक पाती सो ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी कहरवा ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(८४९) चलजानदे कान्ह न बात कछू रिस रोक रिसौन भई सो भई ॥ है लली वृषभान नदान बड़ी तुम मान करो न भई सो भई ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ कस मोहन श्याम सुजान बड़े। प्रिय त्यागहि बैठरहे अकड़े ॥ नहिं नीक न ये नितके झिगड़े। जो सुनै सो कहे हरि क्यों बिगड़े ॥ हिय सोच हरौ न भई सो भई ॥ १ ॥ रस रीति तिहारी ये कौन भली। बिन बातहि बैठत रूठ छली ॥ तोरे नेहकी श्याम नईहि गली । छल छंदन बंद कहौ असली ॥ हित सार जनौ न भई सो भई ॥ २ ॥ छिन बैर बिंधे छिन नेह निधे। छिन शील सुधे छिन सत्य सधे ॥ छिन ज्ञान बुधे गुण गूढ़ गुँधे । जन प्रीति बँधे रस रीति मधे ॥ रुचि कारे खुलौ न भई सो भई ॥ ३ ॥ मगहेर हिरास निरास भई।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शशि सों लौ जिम चकवा चकई ॥ तुम बिन प्रिय ललन विमोह छुई । चल मिल करिये आनन्दमई ॥ अब रार बढ़ौ न भई सो भई ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी से ॥

(८५०) तोरी नजरिया सैंया मारे डारे शिंगरवा में ना करिहों कबहुँ तोरे आगे ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खाली से ॥ त्याग दूंगी अँजना बिंदिया नहिं माथेहू धारूंगी त्रिय मंजना ना मुख तँबोल ललनपिया श्याम तोरे मारे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग अड़ाना ॥

उठान खाली से ॥

(८५१) बनीरी देख बनरी बनरे को मुदित गात अति वरण वरण विध ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ सुघर तासु शिर सारी शुभकारी शशिवदनि सरस शोभा निधान मनहारी चितवन मनमोहित ललन तन मन धन वारी बलिहारी छविनिध १ ॥ इति ॥

सादरा राग अड़ाना शूलताल ॥

उठान समसे ॥

(८५२) बनरी लुभाई बनादेख मोहना श्यामली सूरत मोहनी मूरत छवि फव नव निधि रसरँगसन सना ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ सुभग सुन्दर सजे श्रृँगार शीश वाम भाग पाग मोतियन लड़ सेहरे की द्युतिसोहना घना घना ॥ १ ॥ (भोग) प्रफुलित पिया पेख प्यारी तन मन धनदेतवारी भाग धन सुहाग पायो ललन शोभ-ना बना ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी राग सोरठ ॥

उठान समकी तीसरी से ॥

(८५३) अरी क्या बकै भौज बैना मेरे बलको तैं जानैना ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ वह गँवार ग्वाला केहिलायक मम सँग नृपसैना ॥१॥ छिनमें जीत रुक्मिनी ब्याहूं तैं भय मानैना ॥२॥ ममप्रताप जाहिर जगमें कह वाहि विदित हैना ॥ ३ ॥ सुनै कदापि गमन कुंदन मम कबहुँ वो आवैना ॥ ४ ॥ जानत वो हम का भलरीतन तैं कुछ सकुचैना ॥ ५ ॥ नंदललन कछु विघ्न करै तौ जियत न जावैना ॥ ६ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग बिहाग शूलताल ॥

उठान समसे ॥

(८५४) रघुवर रमापती रघुपति रघुवंशमणी राम रावरे राजीवदृग राघव श्रीरामचन्द ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ दशरथ के ललन लाड़िले कौशलधनी कौशल्या के सुत सुखदायक श्री आनन्दकन्द ॥ १ ॥ इति ॥

जननी प्रति प्रह्लाद उवाच ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागदेश जोगिया ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(८५५) जननी जगजीवन वृथा मोर जब परो वैर मोरे पितु कठोर तब कैस जियब मम हो बहोर ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खाली से ॥ नहिं जानपरै असि कौन खोर मोरी निपटहि दइ पितु मया छोर नित मोर मरन चहें सोंह तोर ॥१॥ तन वसन बांध दियो गिरिसों छोर तहां आय राम रखलियो दोर गजतर दबयो बच्यो हरि निहोर ॥ २ ॥ मोहिं जरयो आग्नि में कह्यो कशेर पुनिदियो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जलनिधि बिच मोहिं बोर अब अन्तसमै यह है निचोर॥ ३ ॥ मम वधन हेत अब तोर ओर पठयो पितु मुहिं दे गरल घोर हरि रखि हैं जिनसों मोर डोर॥ ४॥ तैं कछु न शोच भ्रम डार तोर हरि रक्षक नहिं मम दुखि है पोर सच ललनको जो हरि भक्ति थोर ॥ ५ ॥ इति ॥

प्रह्लाद प्रति जननी उवाच॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागदेश जोगिया ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(८५६) सुत मत ऐसी मुखसों उचार तैं धन जीवन मम प्रान अधार मैं जियोंगी काको मुख निहार ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ प्रभु रखो दियो पितु गिरिसों डार पुनि जरत अग्नि सों लियो उबार सोइ हरिहै दुख तेरो मुरारि ॥ १ ॥ जब पितु निधि बोरो तुहिं कुमार तेहि दुखसे तोर हरि कियो उधार गज पग तर दियो नहिं खस्यो बार॥ २ ॥ जनि सुत मलीन मनहो विचार जाको राम सहायक जग मँझार ताको कोउ कह करसके बिगार ॥ ३ ॥ हरिरक्षक भक्षक खल अपार सोई दिहैं तोर सब दुख निवार कछु तैं न ललन मन रख विकार ॥ ४ ॥ इति ॥

ध्रुपद इकताला राग कान्हड़ा ॥

उठान समसे ॥

(८५७) रुनुक झुनुक चलत चाल अतिप्रिय रुक्मिनियां ॥ चमकन चपलासी गात शोभा कछु कही न जात अँग अँग छवि मदन फवन दिपित विधु वदनियां ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ शोभित तन नील वसन संगम जनु दामिनि घन काम दुंदुभीसी पगन बाजैं पैंजनियां ॥ मुरि मुरि पितु तन निहारि धावत छिन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुनि अगारि दौरत किलकार मारि हँसन सुखसदनियां ॥ १ ॥ तोतर मृदुबैन ऐन जादू टुनवासी सैन कंजनैन स्रवत चैन चंचल चितवनियां ॥ सुधासिन्धु युग कपोल नासा बेसर अमोल विद्रुम द्युति अरुण अधर हीर सम दशनियां ॥ २ ॥ सुकृत पुण्यपुंज भूप उदित तासु अजिररूप सुखनिधि फल सुतानूप पूजित नृप रनियां ॥ लखि छवि रुक्मिनि रसाल ब्रह्मादिक इन्द्रबाल बरसें नभ सुमनमाल ललन सुयश मनियां ॥ ३ ॥ इति ॥

सादरा रागकान्हड़ा शूल ताल ॥

उठान समसे ॥

(८५८) हो हरी तुम सांचे मनके मीता आनमिलो जन कोरी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ मोरे तो जिया में तुमहीं बसतहौ प्यारे घरी पल छिन ना टरोरी ॥ १ ॥ नंदललन कबधौं चितलैहौ दाया तुमबिन बिकल हियोरी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी सर्पदा ॥

उठान समकी तीसरी से ॥

(८५९) जावोजी तुमतो सौतनके हौ मीत कान्ह जावोजी तुमतो जानलई रे तोरी छलबतियां सारी ॥ सौतनके हौ मीत कान्ह ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ बहुत छिपतना कपटकी प्रीति ललन अंत उदित हो ज्यों भोर भान ॥ तुमतो सौतन के हौ मीत कान्ह ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी ताल से ॥

(८६०) मोरी सेजरिया सैयां अब काहे आवत वाही सौतिनियां के मँदिरवा जावो जावो ॥ अन्तरा उठान तीसरीतालसे ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लाज आवत नाहीं तनक जियामें तोरे नाहक ललनपिया जियरा तरसावत ॥ १ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी झँझौटी ॥

(८६१) दारिहजरा रँग डारगयो सुदामा साँवरे को सखा मोपै ॥ अन्तरा ॥ जरकसी अँगिया नई नई सारी ललन अनारी चुनरिया मोरी सारी बिगारगयो ॥ १ ॥ इति ॥

आस्ताई त्रैताल राग अड़ाना ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(८६२) प्रबल प्रताप आपकोरी जानतनाहीं शठ मनमोरारे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ वेदपुराण रटो गीता श्रुति सुरनर मुनि गतिपाई न तोरी ललनसी मति मोर मूर्खताभरी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागसुहा सुघरई ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(८६३) कोइलिया मारे डारे कूकत सुनत कूक उठत हूक ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ पिया पिया धुनि धारे बैरी पपिहा मानत नाहीं ललन श्यामसों एती कहियो मोरीजाय वेगिमिलो मुहिंका सामलियारे ॥ १ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी सोहनी ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(८६४) आगमनो वसंत माई पियकी खबरिया कछु अजहूं न पाई ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरलसे ॥ एक तो पिय वियोग बिथा छाई दूजे अमराई आई कोइलिया कसाई कठोर कूक सुनाई हियरा हूक उठाई ॥ १ ॥ अन्तरा उठान पहिलीकी खालीसे ॥ पापी पपिहा पुकार मचाई पिय पिय रटलाई मदन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जगाई निंदिया गमाई ललनपिया कन्हाई सुधि बिसराई कुब-
रिया सों प्रीति लगाई ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा ठाहदून राग हमीर ॥

(८६५) धारी रे मोरी जान मटुकिया मोहन मुरारीने मोरी
देख सखी कैसी बनी प्यारी प्यारी पनिहारी वारी वारी व्रजनारी
सुकुमारी शोभावारी छवि न्यारीरे ॥ अन्तरा ॥ जानों मानों मद
छाको छैल बांको आज चालि चलिवेदे पनघट तट अस बोल मती
गुप चुप चुप चली चल मोरीमान नन्दललनकी छवि पेखन देहों-
गी सारी सारी पनघट पर व्रजवारी यहिबारी हाँहाँरी ॥ १ ॥ इति ॥

दादरा जोड़ेका राग हमीर ॥

(८६६) सारी दे मँगवाइ बजरवा सों बजजवा के बीर सों
मुहिंका ॥ अन्तरा ॥ बलमा अब न मानूंगी पलमादे रँगाय फा-
गुन आई होरी मोरी ये मनशायदे मनाय ललन श्याम सनेही
चिरंजीव दीर्घ आयु किरनबादला को काम कंदला भला सजाय
दे उढ़ाय ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्बावती ॥

उठान तीसरीकी अनसरल से ॥

(८६७) जानि हरि जानि हरि मन बिसार मैंतो श्यामली
सुरत पर तोरे बलिहार ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी अनसरलसे ॥
हूंतो चरन चाकरी उठाये निशि वासरकी तुम हमरे सरकार ॥ १ ॥
नन्दललन तुम जानत अन्तरकी झूंठ सांच सबही प्रकार ॥ २ ॥ इति ॥

होली रागिनी काफी ॥

उठान तीसरीकी अनसरल से ॥

(८६८) जारे जारे छैला मोपै नजरिया न डारे खेलोंगी तोसे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होरी न हांरे भला भलारे मोरी तुम बराबरवारे ललारे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ हूं सुकुमार निबल प्रबल तुमसों को कुदर करवावे मदन मदमाते ललन तुम को सरबर तोरी धारे ॥ १ ॥ इति ॥

होली जोड़ेकी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(८६६) निठुर सैयां मोरा जियरा ना जरावो सिखायो तोहिं बहुतही समझायो चितायो जतरायो मनायो तैं किंचितहू न चितलायो ॥ अन्तरा उठान सम की खालीसे ॥ हमसों सोंहकर कीन्हों सनेहा सो सब धोय बहायो नशायो प्रण गमायो वचन दै अपनो झुठायो नन्दललन आवतही फागुन सौतनसों जा हित लगायो ॥ सिखायो तोहिं बहुतही समुझायो त्रितायो जतरायो मनायो तैं किंचितहू न चितलायो ॥ १ ॥ इति ॥

होली रागिनी काफी ॥

उठान पहिली से ॥

(८७०) तुमतो दांउधरे सो मैं जानतहूं तोरी सारी चतुराई पहिंचानतहूं ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ सो तो न वशमें आऊंगी कबहूं तोरे मैं ये जियामें अनुमानतहूं ठानत हठ प्रमानत प्रन निज वचन ना अपमानतहूं ॥ १ ॥ औरन भरोसे न रहियो युवतिन के यहि नितप्रति रँग छानतहूं भानत सत ललन तुम छिओरनसों न प्रीति आनतहूं ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान सम से ॥

(८७१) छल कीन्हा सखि समालियाने कैसा मोसे प्रीति कीन्हीं कुबिजासों ढीठ जाके अबतो मैं कपट को नेहा सब वाको

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चीन्हा ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ रसिक रँगीलो गरबीलो यशीलो लखि नन्दललन को मैं जियावत तोरी दीन्हा ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी काफी खम्माच ॥

उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(८७२) रँगीले मदमाते नैना बांके ॥ कजरारे अरुनारे न्यारे अनियारे छवि छाके ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल खालीसे ॥ मोहनी वशीकरन धौं जादू छल बल विकट भरे मरजादू मदन सदन टुनवाके ॥ १ ॥ माधुरी मुरत सुसुरत सलोनी नन्द ललन मुख छवि अनहोनी सिंधु सकल उपमाके ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(८७३) मोहि लिया जियरारे हमारा वा वंशीवाले कृष्ण कन्हैया ने कैसा ये जादू कियारे हमारा ॥ अन्तरा ॥ नन्दललन छवि मोहनी मंत्र धौं वशीकरन बसियारे हमारा ॥ १ ॥ इति ॥

सादरा रागिनी भैरवी शूल ताल ॥

उठान समसे ॥

(८७४) निशान्त आवनदे क्षपाकर छिपजावनदे द्युति दुरजावनदे तम आगमन तही ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ शुचि शृँगार सारनदे पावन पटधारनदे मनै मोद पारनदे शंक निरवारतही ॥ १ ॥ (अभोग) कंथै बिलसावनदे यह खन बरावनदे श्रमित पी सुआवनदे गृहजन सोवतही ॥ २ ॥ (भोग) प्रीति दृढ़तावनदे नँदललनै ललचावनदे कामकष्ट पावनदे चलूंहूं तुरतही ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(८७५) मोसे करके मिताई श्रीकृष्ण कन्हाई सौतन वश

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भये भयेरे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ कोटि कही नहिं लाज लजाने बक झकहारी न एकहु मानै देखी निठुराई तोरे छल नये नये ॥ सौतन वश भये भयेरे ॥ १ ॥ लाख उपाय करो सच झूठे बानपरी जस जासु न छूटै नन्दललन तुम छलनुछये ॥ सौतन वश भये भयेरे ॥ २ ॥ इति ॥

आस्ताई राग भैरव तालरूपक समानमात्रिक ॥

उठान पहिली से ॥

(८७६) शिवसुत बसहु निरंतर मेरे ॥ सेवत सदा चरण मैं तेरे ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ अष्ट सिद्धि नवनिधिके दाता विद्यावारिधि सुखद घनेरे ॥ १ ॥ करिवरवदन रदनयक शोभित मोदक अदन सदन सुखकेरे ॥ २ ॥ फणि मणि मुकुट अलिन अलकावलि बालमयङ्क भालबिचमेंरे ॥ ३ ॥ लंबोदर श्रुति भुजबरदा शुभ विघ्न विनाशन जनदुखजेरे ॥ ४ ॥ आदिसनातन पूज्य पुरातन वन्दत निगम अगम श्रुति टेरे ॥ ५ ॥ उमाललन अनुकूलिये जनपै विनशहि बिपति तनक तुवहेरे ॥ ६ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी गारा ॥

उठान तीसरी से ॥

(८७७) काहे डगरिया में मुहिंका छेरे नन्द को ढीठ कन्हैया लाज न आवत तुहिंका ॥ डगरिया में मुहिंका छेरे ॥ अन्तरा उठान पहिलीकी खाली की खाली से ॥ तुहिं न नोखो यशुदाको ललन प्रिय बराजोरी तोरी न जावति सुहावत मुहिं नाहीं वाहीरे वाहीरे व्रजवासिन सों जा अटकु चटकु मटकु न मनमथ मद मेरे ॥ डगरिया में मुहिंका छेरे ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥
उठान खाली से ॥

(८७८) बराजोरी करके मोरी बैयां मरोरी कन्हैया ऐसो ढीठ सजनींरी ॥ का कहूं मानत नाहीं बैर परोरी मोरे मनमोहन वा नोखो छैल ॥ अन्तरा उठान समकी खाली से ॥ कैसे जाऊं पनघट यमुना भरन पानीरी आली नँदकोललन लरकपन दै लँगरत निलजवा रोकत गैल ॥ १ ॥ इति ॥

चौबोला ॥

(८७९) यमुनातीर सुहावन गोकुलनगरि बिराजत पावन॥ यहि लखि अमरावती लजावत सुर मुनि मोद बढ़ावन ॥ १ ॥ कोस चौरासी बीच बसत व्रज वेद वदत गतिदाई ॥ कनककोट द्युति पोट वोट सुख हाट चुहाट सुहाई ॥ २ ॥ वीथि पाथ चौड़ीहु चारु सब भौन भूरवर तुंगा ॥ अमितकिताके पुरित पताके मनहुँ कामकृत पुंगा ॥ ३ ॥ राजगलिन मृदुपुष्पन शोभित नलिका कनक लसाती ॥ तिनके सलिल सुगन्धित शीरे फलदा सुधा सुजाती ॥ ४ ॥ बसत तहां वसुदेव नन्द वर भागि देवकी यशुदा ॥ पूरणब्रह्म ललनह्वि प्रकट अखिल पुरन की वसुधा॥५॥ चामीकर महिराबित शोभित हाट बाट बहु द्वारे॥सोन कपाट ठाट रतनादिक घाटन घाट नियारे ॥६॥ कालिन्दी तट सब थल हेमिक गरज मेरुमन्दिरसम ॥ रतन यतन माणि काणि द्युति दीपित चित चोरन नाशत तम ॥ ७ ॥ भिन्न भिन्न भ्रमरित भूरिक भल नृमित निकेत रजत कहुँ ॥ तुपकन तोम तड़प ताड़िता तिमु कोटिन कोट सृजित कहुँ ॥८॥ उच्च उच्चसी स्वच्छ अटाइव घटा घटासी छहरैं ॥ विदित स्वर्ग सोपानिकावली विलसित ठहुँ ठहुँ नहरैं ॥९॥ खान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पान सामान समरके शिल्प औरहू परिचर ॥ सदारहें परिपूर्ण नृत्य नर्तक नर्तकी नटीवर ॥ १० ॥ द्वार द्वार नौबत नगार झर शंख सुतरि सहनाई॥ मागध सूत वदत बंदी यदुवंशिन विरदबड़ाई ॥ ११ ॥ सजत पुरी चहुँ दिश वन उपवन पुष्कर कूप बावली ॥ विपुल सुमनवाटिका मनोहर अलिगुंजन गति प्रबली ॥ १२ ॥ गज-शाला तुरंगशाला रथशाला गोशाला बहु ॥ वृषशाला सुधर्म्म-शाला सुरशाला बुधशाला चहुँ ॥ १३ ॥ दुर्गम यह वन इन्द्र वरुण यमकी गति नहिं कहभूपा ॥ युथप मतंग कुरंग घुरघुरत चक्ररथा-भानूपा ॥ १४ ॥ वृषभ शकट कहुँ उष्ट्र जुटाजुट महिषि सुरभि पय-धारी ॥ धौंरी धूमर काजर पीयर हरिणखुरी हरि प्यारी ॥ १५ ॥ सुभट समूह सुहात अनेकन बलबांकुरे अपारा ॥ श्रीहरि पूरणब्रह्म ललन जहँ विलसैं मौज मँझारा ॥ १६ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी मलार ॥

उठान तीसरी से ॥

(८८०) झूम झूम बदरवा बरसनलागे जागे मोरे भाग पिया के घर आवनके दिन दरसनलागे सखि॥ अन्तरा उठान तीसरी की तीसरी से ॥ बलि बलिगी जाऊं पिय पिय पुकार पपिहा सभागे नभ नगार गाजे बाजे चपला छवि चमक छाजै नन्दललन मि-लनहेतु अँग अँग सब फरकनहितनलागे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान पहिली से ॥

(८८१) तोरी सुरत मन बसगई रे मन बसगई रे कन्हैया श्यामरे बरनवारे मोरमुकुट मुरली बँधैया गिरिवर धरैयारे॥ अन्तरा उठान समकी तीसरी से ॥ तुमतो ललन निठुराई गहि लीन्हीं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मरब जियब तुमका का कोऊ जानै तोर बलैयारे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग बिहागरा ॥

उठान पहिलीकी अनसरलसे ॥

(८८२) जो कोई ध्यावे मनावे तुहिं सोई पावे सुख सम्पति सुत विद्या रूप दरशन स्वरूप ॥ अन्तरा उठान तीसरीसे ॥ सांचे सनेही सांची प्रीति के रसबस कीजिये कृपानिधि तनु कृपा मोहिं ललन आपुनो अनुरूप ॥ १ ॥ इति ॥

ख्याल राग कान्हरा ॥

उठान तीसरी की खालीसे ॥

(८८३) चितवन में कछु कर दियो टुनवां मनु डारी मोहनियां ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खाली से ॥ श्यामबरन यशुदा को ललनप्रिय मृदुल बोलन मुक्तासी दशनियां ॥ १ ॥ इति ॥

खेमटा रागिनी सोहनी ॥

(८८४) मन लाइये दयालजू दया गोविंद गुपालरे ॥ चहो आनन बानन में विमलानन भक्तकरो खुशहालरे ॥ अन्तरा ॥ जागत जानों हो वा गति जानोंहो भूत भविष्यत बरतिक काल निवाजतहौ जन जावत जीव जहान मुनी महिपालरे ॥ १ ॥ तादृश तामस तोरन तीव्रित तीव्रित तृष्णा तरंग तराल नन्दके लालनजू प्रतिपालन गोपिन गोकुल ग्वालरे ॥ २ ॥ अंबुज पाद की रेणु प्रसाद पुनीत हृदय बिच घाल निहाल सदा तोहिं ध्याय मनाय प्रफुल्लित ललन मोद विशालरे ॥ ३ ॥ इति ॥

होली दादरा रागिनी झँझौटीखम्माच ॥

(८८५) हमारा रँग दिया तन नँदलाला ॥ अन्तरा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जग दिखाउ हमरी चूनरपर रंग सहाना डाला ॥ १ ॥ धनि धनि नन्दललन तोरे वारी हौं गोरी तैं लाला ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी काफी ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(८८६) मोरा अँचरा पकर गारी दीन्हींरे साँवरिया सखीरीरी अरी ढीठ बाट चलत बराजोरी करत मोसों ॥ अँचरा पकर गारी दीन्हींरे ॥ अन्तरा उठान समकी खालीकी खाली से ॥ कैसे के जाऊं सखि भरन नीर यमुना पनिघटकी गैल रोकै छैल नँदको ललन बड़ निलज वाकी बान चीन्हीं ॥ अँचरा पकर गारी दीन्हींरे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान खालीकी खालीसे ॥

(८८७) वोही मोरारे जीवन प्रान प्यारा ॥ दुलारा नँदका वारारे ॥ मोरा जीवन प्रान प्यारा ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ वोहि शिर मारपखा वोही कुंडल नकबेसर हरियारारे ॥ जीवन प्रान प्यारा ॥ १ ॥ वोहि वारिजमुख भ्रू अलिगण गृह छाप तिलक धनुमारारे ॥ जीवन प्रान प्यारा ॥ २ ॥ वोहि खंजन दृग चल चितौन वोहि बीर बँसुरियावारारे ॥ जीवन प्रान प्यारा ॥ ३ ॥ मृदुल हँसन वोहि रस बतियाँ वोहि वोहि मुखचंद उजारारे ॥ जीवन प्रान प्यारा ॥ ४ ॥ वोहि त्रिभंगि छवि उरभृगु पद वोहि कटि केहरि ढँग न्यारारे ॥ जीवन प्रान प्यारा ॥ ५ ॥ पीताम्बर वोहि लकुट सुहावनि वोहि बागा अरुणारारे ॥ जीवन प्रान प्यारा ॥ ६ ॥ वोहि नँदललन सांवरा सुखनिधि दीनन जन रखवारारे ॥ जीवन प्रान प्यारा ॥ ७ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दूसरी ध्वनि ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झाड़झँझौटी ॥
उठान खाली की अनसरलसे ॥

(८८८) है घट में घट बाहर भीतर जाने विना नहिं होत मिलापहै ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ वारिज अण्डज स्वेदज व्यापक जड़ चैतन्य में जासु प्रतापहै ॥ १ ॥ है सब में सब से अलगहि बिलगहि नहिं माया किंच कदापि है ॥ २ ॥ अलख अगोचर ब्रह्म अनादी आदि पुरुष श्रुति वाक्य अलाप है ॥ ३ ॥ विंशति वसुशर कोटि अमर मुनि शेश सुरेश महेशहु जापहै ॥ ४ ॥ अज अजन्म अवतार भक्तिवश नन्दललन कीरति अनापहै ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की समानमात्रिक रागिनी झाड़झँझौटी ॥
उठान खाली से ॥

(८८९) अखिल असार विहार जक्त बिनु हरि सुमिरन धिक तिलक छाप है ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ जप तप मख व्रत नेम बृथाही तीरथ प्रजटन धर्म्म थापहै ॥ द्विज मुनि दातव सब कछुकरु बिनु प्रेम न प्रकटै आप में आप है ॥ १ ॥ दुर्लभ योनि महा मानुज तन मिलत भोग चौरासि तापहै ॥ त्यहि शठ लहि हरि भजत न पल छिन नितहि कमावत पाप शापहै ॥ २ ॥ तृष्णित विषय कबहुँ नहिं तुष्टत प्रीति प्रपंच असत्यहि जापहै ॥ अब कब ललन चेतिहै चितमें गयो समय नहिं मिलहि कदापि है ॥ ३ ॥ इति ॥ आस्ताई राग देश शूलताल ॥
उठान समसे ॥

(८९०) श्रीवृन्दावन सुखद स्थल रुचिर रमणीय मुक्तिधाम ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ विहरत युगलरूप पदपावन सेवत सुर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मुनि अष्टयाम ॥ १ ॥ कालीमदमर्द्दन मधुसूदन मम धन जीवन श्यामा श्याम ॥ २ ॥ पूर्णकला अवतारि भगवन जन आनँद-प्रद सकल काम ॥ कमला अधीश श्रीनँदललन पदपंकज पुनि पुनि प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

आस्ताई राग अड़ाना शूलताल ॥

उठान सम से ॥

(८९१) स्वामी इतनि मिनति मोरीमान जान जन दया दहेज दे मुहिं ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ कंसकदन खलमर्द्दन मधु-रिपु जगजीवन जननाथ कमलापति करुणाकर सागर श्रीनँद-ललन नमु नमु तुहिं ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी कलांगड़ा ॥

उठान पहिलीकी खालीकी खालीसे ॥

(८९२) धीर न लावतहै मन मेरोरी जब सों वंशीरस बैन सुनोरी एरी सखि ॥ अन्तरा उठान समकी अनसरलसे ॥ सुनियोरी मोरी मीत मिलापिनियां तीर परोसिनियां सर्वस गोरी गोरी नन्दललनसों कैसे मिलब हौंतो उनके रस पागो मनुआ ये मेरी सखि ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी बरुवा त्रैताल ॥

उठान खाली से ॥

(८९३) तोरी सुघरता मनमोहनी अनूप प्यारी मृगन दृगन जादू लहर कहरसी ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ वदन विलोकि फवि दामिनि मयंक छवि कोटिन मदन रति लजत गहरसी ॥ १ ॥ जीवन सुधन येरी नन्द के ललन केरी परमप्रिया पुनीत सुखद सुघरसी ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक ॥

उठान पहिलीकी खालीकी खालीसे ॥

(८६४) सुखद सलोनो यशुदा को छैल बाँको सखि सदन सकारेहि दुआरे आन भलको ॥ अन्तरा पहिली की खालीकी खालीसे ॥ निरख सुघर ताकी चोखी सी अनोखी झांकी सुधि न रही बिसर गई बुधिबलको ॥ १ ॥ मँदिरसों धीरत्याग ललन के अनुराग मिलन सिधाई मिस वंशीवट जलको ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी राग देश ठेका होली का ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(८६५) बदरवा तू रमजा देश बिगाने मोरा पिया परदेश न माने ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ गरजत गरज न और की जाने अपनीहि ताने ताने ॥ उमड़ान्यो घुमड़ान्यो डोलत बरजत त्यों अभिमाने ॥१॥ सावनरैनि भयावनि वैसेहि सोवत सेज उताने ॥ निंदिया मैन विरह दुखमाती यक दुखहो तो बखाने ॥ २ ॥ नन्द ललन बिनु भइ अधीरहूं तैं न पीर पर ध्याने ॥ हाहा विनय बहोरन मोरी मानजा निठुर नदाने ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी राग देश ॥

उठान समकी तीसरी से ॥

(८६६) कुबरियाने का ऐसा जादू डाला ॥ जिन्ह मोहिलियो नँदकोलाला ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ कौन यतन विधि रचन रचाई को पढ़ि मंत्र कराला ॥ दृगजोरतहि जोर हितलीन्हों चितचुरयो हरिहाला ॥ १ ॥ कुटिल कमीन हीन कुल केरी दीनन दीन रसाला ॥ चीन्ह कीन्ह कह चीन्ह श्यामने मन बसगइ वह बाला ॥ २ ॥ पूर्वजन्म वा प्रबलकमाई करदियो भाग

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निहाला ॥ गोपिनाथ तबतो कहाय भे कुबिजानाथ गुपाला ॥३॥ नंदललन बड़ गजब कीन्ह नहिं कीन्ह ये नेक खियाला ॥ चेरी के चेरेभये प्रभु यह कुलदाग न मिटब कुढाला ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी राग जोगिया ॥

उठान समकी तीसरी से ॥

(८९७) हमारा मन लैगयो मुरलीवाला बँसुरिया में का पढ़ि जादूसा डाला ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल से ॥ सोहनी सुरतियां वो मोहनी मुरतियां लखतहि भइ बेहाला ॥ १ ॥ श्याम गात जलजात सलोनो छवि त्रिभंगि विकराला ॥ २ ॥ चल चितौन रसभौन माधुरी मृदु मुसक्यान विशाला ॥ ३॥ नासावर बुलाक लटकनियां नगजड़ियां हरियाला ॥ ४ ॥ कारी सटकारी अहिनारी अलकन इतर उजाला ॥ ५ ॥ नंदललन छवि अमित मनोहर चितचोरन ततकाला ॥ ६ ॥ इति ॥

आस्ताई राग देश इकताला ॥

उठान समसे ॥

(८९८) भाई सो भई भईरे पिय मिलबे की आश मनमा रही मनमा रही सजनी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ आईरी घरी सो पाईरी घरी सो सुबरन की सुहाई घरी सो पियसों हरष परशु सरसु बिरहा बिथा गई गईरे ॥ १ ॥ मदन मिताई रिपुता विहाई श्याम सों सगाई हमसों कराई नँदकोललन भुजभरि उर अनँद मई ठई ठईरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी राग देश ताल त्योरा ॥

उठान दूसरी से ॥

(८९९) घिरि आयो बादरा बैरी हां गरजैरी बरसैरी हां ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्तरा उठान समसे ॥ पुरवा प्रबल झकोर झोरत तन मरोरत हैरी हां सँग दशदिशी लै ब्यार वृन्दन बेधत अँग अँग मैं री हां ॥ १ ॥ शीत सिताय दुखाय छिन पुनि उष्णताहि सृजैरी हां ॥ अकुलात गात न परत नैनन नींद कंथ बिनैरी हां ॥ २ ॥ चित चकात चितौत सखि चपला चंचल चमकैरी हां ॥ डर लगत सूनी सेज बिनु नँदललन जिय तरसैरी हां ॥ ३ ॥ इति ॥

दादरा राग देश ॥

(६००) रामकरै कहुँ नैना उरझैना ॥ अन्तरा ॥ जो कहुँ दृग सों दृग उरझाने कोटि यतन सुरझाये सुरझैना ॥ १ ॥ इन नैनन की चोट बुरी है घाव करेजवाके कबहुँ पुरैना ॥ २ ॥ जो नैनन के नेह बिकाने जनम जियत सो नात छुटैना ॥ ३ ॥ नंदललन यहि बर मांगत जन तुम पदरति अरु कछुक चहैना ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक राग देश ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(६०१) हमारे दृग रावरे नैन बसे ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खालीसे ॥ रावरी सूरत छवि रसमाते बिनुदेखे अधसँसे ॥ १ ॥ चारु चितौन अमिय मदमाती रसराती सरसे ॥ २ ॥ शीलसिंधु सुखदा चितवनमनु प्रीतिकी फेंट कसे ॥ ३ ॥ मृदुल बुलन वशिकरन मुहनियां अमि झर झरत हँसे ॥ ४ ॥ घुँघुआरी अनोखि अलकावलि इतर सुगन्ध लसे ॥ ५ ॥ गोरोचन भल भाल तिलक बिच रुचिर रोरि बिलसे ॥ ६ ॥ मनहुँ महेश त्रैशूल त्रिफलदा लहर त्रिवेणितसे ॥ ७ ॥ विधु मुख विमल वक्र युग भ्रूभ्रम मानहु राहुग्रसे ॥ ८ ॥ चख बड़ विशिष मनोभव बरुनी धनु पुट युगलजसे ॥ ९ ॥ श्रवण सुडौल ढरित सांचेवत कुण्डल मकर असे ॥ १० ॥ जड़ित

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जड़ाउ हीर मुक्तामणि दिपित कोटि रविसे ॥ ११ ॥ कंज कपोल पियुष पुष्कर नक शुकभा पेखि नसे ॥ १२ ॥ नक बुलाक मुक्ताहल झूमत मनु नृतभावभँसे ॥ १३ ॥ दंत पंक्ति द्युति तड़ित ओष्ठ लखि लाल लजैं भलसे ॥ १४ ॥ चिबुक चुहील चारु चीकन चित चोरनि छोरन से ॥ १५ ॥ कंबुग्रीव वृषकंध मृणालिक भुज कर कमलन से ॥ १६ ॥ चंपक फलित ललित अँगुरिनु नख जुहत अर्धशशिसे ॥ १७ ॥ उर भृगुपद छवि लसत अमितवर मोहत मुनिजन से ॥ १८ ॥ नवनीतोदर रुचित रुमावलि जनु अँग अनँगगसे ॥ १९ ॥ नाभि कुंड अमि उदर त्रिवलि धौं धार त्रिवेणि धसे ॥ २० ॥ कटि केहरि नितम्ब युग मनमथ उलट नगार हसे ॥ २१ ॥ उभय जंघ रंभा लघु गुल्फित पिंडरि सुदालिक्रमसे ॥ २२ ॥ पाद पुनीत पद्म पद अँगुरिन द्युति कपूर समसे ॥ २३ ॥ इन चरणन रति मँगत सदा जन नंदललन तुमसे ॥ २४ ॥ इति ॥

दादरा राग देश ॥

(६०२) दई निर्दैया सों नेहा लगैना नेहा लगैना कहूं नेहा लगैना ॥ अन्तरा ॥ निज गरजी पर पीरु न जानत ऐसन सों कहुँ जीरा फँसैना ॥ १ ॥ नंदललनके हित बलि जैये जोरत तोरत बार बिहैना ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा राग देश ॥

(६०३) राम करै कहूं जीरा लगैना जीरा लगै केहूंसे जीरा लगैना ॥ अन्तरा ॥ जीरा लगे फिर कछु न सुहावत घरी पल छिनहुं को चैन परैना ॥ १ ॥ यह जियराकी बान बुरी है बिनु हित कीन्हें याहि सरैना ॥ २ ॥ है न जगत कोऊ सांचो सनेही नेहलगै को क्लेश सहैना ॥ ३ ॥ आनपरै शिर बिपाति प्रीति तब एकहु युगति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बनाये बनैना ॥ ४ ॥ परवशपरि सुखमिलत न किंचित पर अधीन कोऊ नाथ करैना ॥ ५ ॥ नंदललन अनुकुलिये मोपर तुम बिनु जनकी कोऊ सुनैना ॥ ६ ॥ इति ॥

दादरा राग देश ॥

(६०४) रामकरै कहूं नेहा जुरैना ॥ अन्तरा ॥ यह नेहाकी सांकरी गलियां जनम जयतु कछु अंत लहैना ॥ १ ॥ निजु गरजी बहु रसिक हितू जग परदरदी कोऊ दीखपरैना ॥ २ ॥ दई न करै निर्दई सों कबहुँ हित पाले परैना निर्मोही सों मिलैना ॥ ३ ॥ निठुरहि नमस्कार दूरहिते हितकर आपुन कुगति करैना ॥ ४ ॥ श्रीनँदललन रँगीले पियाकी चरन शरन गहि कबहुँ तजै ना ॥ ५ ॥ इति ॥

ध्रुपद इकताला राग देश ॥

उठान समसे ॥

(६०५) नतियां घातियां कर पिशतियां कीन्हीं सुरतियां तज दीन्हीं सवतियां गातियां रतियां छतियां लीन्हीं छलकी बतियां चीन्हीं मतियां हमरी हीनी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ तुम निमितियां भई कुगातियां सगरी गतियां गातियां छीनी निजु बिसँतियां बहुजुगतियां त्तियां कुजातियां भइ अधीनी ॥ १ ॥ ललन लातियां लाखि चरितियां भइँ प्रतितियां आतियां हीनी हमरी पतियां लई का खुलै अपनी जातियां पतियां लीनी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी जैजैवन्ती ॥

उठान समकी खाली से ॥

(६०६) चलु अलाबेली झूलन्न झूलि आवें ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ मनकी मनशा सखि मन मनावें मन मनावें ॥ अंतरा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उठान तीसरी से ॥ सावन सुहावन मनभावनके घोस नन्दललन गरवा लावें हितकी नतियां मृदुल बतियां करके छतियां जिय जुड़ावें प्रसन्नता प्रसन्नता पावें ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी जैजैवन्ती ॥

उठान समकी खाली से ॥

(६०७) नित बराजोरी मोसे करत ना लजावे यशुदा तुम्हारो निडर कान्ह अभिरजावे न सकुचावे रारि मचावे ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ नंदललन बरजहारी विविध भाँति हमरी हटक मन न लावे छलकी बतियां करत घातियां छुअत छतियां अँग लगावे सुजन्नता सुजन्नता सुजन्नता न छावे॥ १ ॥इति॥

ध्रुपद इकताला रागिनी भैरवी ॥

उठान समसे ॥

(६०८) माधुरीमुरति सांवरी सुरतिवारे तारे दृगानके ॥ प्यारे तारे दृगानके ॥ दुलारे तारे दृगानके ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ नागिनी अलक शीशपै मुकुट जाल शिखि पखानके ॥ माथेपै तिलक मृगमद वर कंचन कुण्डल कानके ॥ १ ॥ भ्रू युग शिवधनुष बंकु लोचन बान सानके ॥ चल चितौन जदुवा जौन मोहत मन जहान के ॥ २ ॥ कल कपोल अतिसुडोल नक शुक सरसानके ॥ दंतपंक्ति चमक दमक तड़ित द्युति समानके ॥ ३ ॥ अरुण अधर अमि अगार उदधि क्रांति भ्यानके ॥ मृदुल बुलन मुहनी हँसन अधिपति वरवानके ॥ ४ ॥ मुख मयंकु तिलित चिबुक मनमथ मनु ध्यानके ॥ आसनमारि बैठरह्यो चोरन चितनु आनके ॥ ५ ॥ नीरद नीरज सम सुगात सुघर छविनिधानके ॥ नँदकेललन युग युग जियो व्रजजन धन प्रानके ॥ ६ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्रुपद इकताला रागिनी भैरवी ॥

उठान समसे ॥

(६०६) सोहनि सुरति मोहनि सुरति मोहि लीन्ह साँवरे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ नीप कुंजन कदम छैयां मैयां गोकुल गांवरे ॥ यमुना पुलिनु ठाढ़ बजै बँसिया कियो बेताबरे ॥ १॥ सुधि-बुधि कछु रही न मोहिं देहदशा बिहावरे ॥ नग्नभइ अनग्न मगन माति बेहिसाबरे ॥ २ ॥ सँग न सखी कहुँ मैं कहा मग न परै हियावरे ॥ दई दइ कर सुधरु सम्हर लै जल घर आवरे ॥ ३॥ अब तो गोकुल नीर भरन जाउँ मैं कोउन दांवरे ॥ नँदको ललन जादू-गरासों होनो जगु अभावरे ॥ ४ ॥ इति ॥

ध्रुपद इकताला रागिनी भैरवी ॥

उठान समसे ॥

(६१०) सैयां पैयां अपनी गरज परब तब बताऊंगी ॥ हाहा करब तब बताऊंगी हाहा करब तब बताऊंगी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ मदन मौज भई उमंग तब तुहिं ललचाऊंगी ॥ चाहे कितक मिनती करब अंग न फिर छुवाऊंगी ॥ १ ॥ हूं जो अगुन बाबुल जाई तुहिंका बहुखिजाऊंगी ॥ अपनी शपथ करत तोरे नीरे न नागिचाऊंगी ॥ २ ॥ जैस सवतहित भुलाने स्वाद तस चखाऊंगी॥ ऐस हित पलागों तोर ओर ना चिताऊंगी ॥ ३ ॥ बहुत खीज हारी तोसे कहँ लग समुझाऊंगी ॥ हौं न ललन अब कछु तुम सीख ज्यहि सिखाऊंगी ॥ ४ ॥ इति ॥

ध्रुपद इकताला रागिनी भैरवी ॥

उठान समसे ॥

(६११) बोलो न हमसों यह छिन पिया करो न मोसे मसकरी ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्तरा उठान समसे ॥ तुम न जानत परकी पीर क्यहि मन कस क्यहि घरी ॥ हमका हँसब बुलब नीक लागत नाहिं अस हरी ॥१॥ तुमतो अपनि रौज मौज माते अपनी गरजरी ॥ आवत मोर मँदिर जब न पावत कोउ सवतरी ॥ २ ॥ कह फल अस प्रीति माहिं तुमसे कवन कार्य सफरी ॥ अपनो अरथ काढ़ि फेरि लखि न परत झलकरी ॥ ३ ॥ हमहुँ नाम लिखहि लीन तुम हितू न मांझरी ॥ ललनु पनु हमार भा तुम्हार का बिगाररी ॥ ४ ॥ इति ॥

ध्रुपद इकताला रागिनी भैरवी ॥

उठान समसे ॥

(६१२) झुलन चलब हमहुँ तोर संग प्यारे नँदलला ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ सजि के आऊं शृँगार चारु यौवन द्युति झिलमिला ॥ ठहर ठहर करु न गहर जावो मती हलबला ॥ १ ॥ घर न कोऊ ससुर सास बानकभल बन्यो प्रबला ॥ हमरि तुम्हरि रसकी बातियां ह्वै हैं आज भल भला ॥ २ ॥ लुक छिप चलु निकर चलिये ब्रज वनतन छल छला ॥ निशि निवास करब कुंज केलि मेलि अंगला ॥ ३ ॥ युगल जियकी मनशा आज पुजई विधना दुखदला ॥ गोदि मोद भरि लगैहौं नन्दललन सांवला ॥ ४ ॥ इति ॥

ध्रुपद इकताला रागिनी भैरवी ॥

उठान समसे ॥

(६१३) सागरागई न गागरा हिरागयो घरा आपदा भई जियाको कौन दुःख आपरा ॥ १ ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ पीउ जीउ छोरिहै न सास बैरी सासुरा ॥ आपत्ति आज भइरे दइरे काकरारे काकरा ॥ २ ॥ या घराते वा घराहु पांवहू मैं ना धरा ॥ है

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अचर्य्यकीहि बात ख्याल आवै ना जरा ॥ ३ ॥ बापुरे नई ये बात ख्यात भई मंदिरा ॥ निसार कोऊ यों लियोरी नैनमेंको काजरा ॥ ४ ॥ तीर में परोस ना गली में चोर चाकरा ॥ धरुँ मैं काको नाम ग्राममें न कोउ उजागरा ॥ ५ ॥ ये तेरे ललनकी बान माठ माखनैभरा ॥ उठाय लायो चोरि भोर चित्तचोर सांवरा ॥ ६ ॥ इति ॥

दादरा राग बिहाग ॥

(६१४) मैं तो ऐसे बेदरदा के ना रहूंरे ॥ नारहूं नारहूं नारहूं रे ॥ अन्तरा ॥ मोसन रीति प्रीति सौतन सों ऐसी बिपतियां मैं ना सहूंरे ॥ १ ॥ आग लगै जरिजाय नेह अस ऐसी पिरितियां मैं ना चहूंरे ॥ २ ॥ मन आवे विष खाय मरूं मैं अपने जरेपै तोसे कहा कहूंरे ॥ ३ ॥ नन्दललन तोरे फन्दपरी का तोरी छल बतियों से नित्त दहूंरे ॥ ४ ॥ इति ॥

दादरा राग बिहाग ॥

(६१५) कान्हाकी लरकैयां मैं काकहूंरे ॥ काकहूं काकहूं काकहूंरे ॥ अन्तरा ॥ स्यान भयो अठलान न छांड़ै मोरी लीन्ह बलैयां औ लइ अँगहूंरे ॥ १ ॥ नन्दललन लरियात अधिक सखिवहु उभरैयां वहि बहुअहूंरे ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा राग बिहाग ॥

(६१६) सैयां सौतन के बुलवा मैं ना सहूंरे ॥ ना सहूं ना सहूं ना सहूंरे ॥ अन्तरा ॥ सिंधु गिरूं विष खाय मरूं चहि बार अँगरवा में प्रान दहूंरे ॥ १ ॥ तुम्हरेहि डाहन डहत मोर जिया निकसै न सैयां मैं बहु चहूंरे ॥ २ ॥ युग जीवो तुम युगल हितू हमरोहु गुसैयां औ कह कहूंरे ॥ ३ ॥ वाके सगे तुम तोर सगी वह उढ़रीहूं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

का दैया मैं कहँवहूंरे ॥ ४ ॥ देत ललन पन लाज न आवे न तोसी निठुरैयां निरखि महूंरे ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी राग केदारा ॥

उठान खाली की खाली से ॥

(६१७) मंद मानसे सुथिर अलबेली अलबेली भाँति परम प्रबल पुनीत पुंज प्रभानिधी नेति ॥ अन्तरा उठान पहिलीसे ॥ मौन माननी मनाये मलीनता मयंक जनु प्रभात भा भानु मानु रोष कोष अधर दन्त चापत कछु चित अचेत ॥ १ ॥ लोने विलोचनकी लखन नोखी नोखी निठुरतासे चोखी चोखी चितवन चितचोर जादू टोना मन्त्र मोहनी वशीकरन नन्दललन पियकी जिय प्रिय सुखनिकेत ॥ २ ॥ इति ॥

तैंतो मन में तो दुविधासी धारे । इस धुनिपर ॥

दादरा राग वसंत ॥

(६१८) मोरा मन मोहारे बँसुरियावारे ॥ अन्तरा ॥ सांवरी सुरतिया माधुरी सुरतिया पै वारी वारी जियरारे ॥ १ ॥ मोहनी मन्त्र धहुँ जादू टुनवाको धन नन्दललन रसियारे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी सरपरदा ॥

उठान समकी खाली से ॥

(६१९) जावो जी मन मैला करौना गुपाल मानों न मग चलत करत बरजोरी कुचाल मन मैला करौना गुपाल ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ कृष्ण न जानो नृप कंस घरकी मैं दासी जाय गुहारूं होवें मालुम हाल मन मैला करौना गुपाल ॥ १ ॥ नीर भरन मुहिं जाने दो नन्दललन वृथहिं पसारत झिगर को जाल मन मैला करौना गुपाल ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

निदिया तजो करोरी नैना चारचार ॥

इस धुनि पर ॥

ठुमरी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(६२०) कह परी तोरी नइ नोखी आन बानि मोरी दधि की मटुकि दई पटक कान्ह ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ तुम तो श्याम औगुण के धाम बिनु काम सतावत ब्रजकी बाम तोरे ललनपनसे नकवान प्रान ॥ १ ॥ इति ॥

होरी खम्माच ॥

का भयो नँनदी अनोखे पियाको होरी खेलत मोसे नईरे नईरे ॥

इस धुनि पर ॥

ठुमरी समान मात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान खालीकी खाली से ॥

(६२१) काहे हरि बिसरावत हमका हम तो नित प्रति ध्यावत तुमका ॥ अन्तरा उठान खालीकी खाली से ॥ तोर निठुरपन जात न नेकौ नहिं नाता कछु लाज शरमका। देखीउलटि रीति कछु तोरी जापक जन तेहि दुख हरदमका ॥ १ ॥ हरिजन बिमुख अघी जगजोई अन धन दूध पूत तिनु समका । द्विज द्रोहिन सुख संपति साविधि भोग सेवकन सोग परमका ॥ २ ॥ यह कह आनि बानि रुचि राची दया मया तुहि कछु न जुलमका। जनक जियत दुख ललन शंक यहि खुलत न कछु मोहिं तोर मरम का ॥ ३ ॥ इति ॥

नकटा रागिनी काफी खम्माच ॥

(६२२) नयन बाँन बाँकी तिरछी बरछी कटरिआ ॥ अन्तरा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हेरन हियकि हरन चित चोरन चितौनु गुरिश्रा। सैन सलोनी सलोनी अहोनी अनूप प्रभाव रवरिश्रा॥ १॥ जादू जुलुम जमात जुहै बसि करण सुखसागरिश्रा। नन्दललन मोहनि मूरति पै तन मन निउछावरिश्रा॥ २॥ इति॥

दादरा रागिनी जयनी॥

(६२३) होजायगा झिगरा हमारा तुम्हारा॥ न छेड़ोजीये ढँग नकारा तुम्हारा॥ अन्तरा॥ भूलन देत न भुलन कदमतर क्या ह्यां श्याम इजारा तुम्हारा॥ १॥ ह्यां पै बपौती ददौती न क्यहु कर झुलैं हम सदा ह्यां ठिहारा तुम्हारा॥ २॥ जानेथी धीरा गँभीरा तुम्हें हमतो जाउजी खलनपन निहारा तुम्हारा॥ ३॥ इति॥

दादरा रागिनी जयनी॥

(६२४) हमसे तुमसे न होगा गुजारारे॥ अन्तरा॥ तुम अपने मनके मौजी पिय सोइ मन मौजि हमारारे॥ १॥ हमतु-मीति रसरीति प्रीति के औरै तौर तुम्हारारे॥ २॥ चिरजिओ जागौ सुख अनुरागौ मौहिं न बैर तुम्हारारे॥ ३॥ खोजथकी नँद-ललन प्रेमि जग कोउ न मिलो हितवारारे॥ ४॥ इति॥

आस्ताई रागिनी खम्बावती झपताल॥

उठान समसे॥

॥ (६२५) नटवर नेरे पकर मेरो अँचरवारे गारीदूँगी तुहिका नाहीं मानत हटक अरे॥ अन्तरा उठान समसे॥ अठिलाति डगर बिच। निपटै लजात ना नंदकोललन कैसो नटखट निडररे॥ १॥ इति॥

ठुमरी रागिनी खम्बावती झपताल॥

उठान समसे॥

॥ (६२६) लँगर लँगरत निपट नाहीं मानत सखि डपट दौर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

झपट अँग लपट नई चूनर दई मसक॥ अन्तरा उठान समसे॥ नटखट निडर बिकट बांट परीरे जासु झिझट नन्दललन बड़ो लम्पट बाढ़ी वाहि बिपुल ठसक॥ १॥ इति॥

ख्याल राग विहाग॥

उठान खालीसे ठेका होलीका॥

(६२७) नैया मोरी कौन लगावै पार॥ अन्तरा उठान तीसरी से॥ जीर्ण नवैया कोउ न खिवैया बूड़तहूं मँझधार॥ १॥ तुम बिन कौन सहाय सँगाती तुवजन ललन दुखार कौन लगावै पार॥ २॥ इति॥

ठुमरी रागिनी परज॥

उठान समसे॥

(६२८) जानदे न जानदे न पनघटरी अपनी जानसौं मो सों मग मग बराजोरी करत लँगर मानत नाहीं मैं बहु बिधि सो बरजी वाको आली॥ अन्तरा उठान समसे॥ कासे कहूँ मैं जाय यशुदा माय नन्दराय उलट खिजत मुहिं रिसाय सोरहु कला बिसरी मतरी॥ तेरो मीत नन्द ललन तू चाहि प्रिय बरज देरी राधिका तिहारि शरन आय राखु मोर पतिरी॥ २॥ इति॥

आस्ताई राग सहाना कान्हरा रूपक ताल॥

उठान समकी खाली से॥

(६२९) ललना ललनी दोऊ झूलत झूलन॥ अन्तरा उठान पहलीसे॥ श्रीवृन्दाबनसुथल सुहावन यमुनपुलिन कदंब तरुतूलन॥१॥ सखिसलोनि सुकुमारि सखन छवि मनु फुलवारि अमित रँग फूलन॥ २॥ भूंखन झमक झुलावति झमकति झुक झुक झूम झूम गाति भूलन॥ ३॥ छकृत छकें छवि छहर छवीली विमल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिदारैं बिरहा शूलन ॥ ४ ॥ भरि उछाह उत्साहन माती राग मलार अलापहिं भूलन ॥ ५ ॥ रसिक शिरोमणि जोरि चिरंजी व्रज बनितन सखान अनुकूलन ॥ ६ ॥ प्रमुदित परम प्रबीन परसपर लखि लखि छवि फव नव समतूलन ॥ ७ ॥ देहिं अशीस ललन व्रज जन सब तन मन वारहिं प्राण अमूलन ॥ ८ ॥ इति ॥

ठुमरी राग नायकी कान्हरा ॥

उठान तीसरी से ॥

(६३०) झुक झुक झूम झूम झूलें वृन्दावन सघन मध्य दंपति मिल ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ रतन हिंडोरे रेशमिडोरें बिस्तर मखतूलें ॥ वृन्दावन सघन मध्य दंपतिमिल ॥ १ ॥ ललन लाड़िली लखि छवि व्रजजन तन मन सुधि भूलें ॥ वृन्दावन सघन मध्य दंपति मिल ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी समान मात्रिक राग विहाग त्रैताल ठेका होली ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(६३१) चलो सैयां सोरहें गहिगलबैयां ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ भइ अधरात विहात समय सुख फुलवन सेज सजैयां ॥ १ ॥ ढुरत सुगन्ध मन्द शीतल शुचि त्रिबिध समीर सुहैयां ॥ २ ॥ छिटकरही अमिचन्द चांदनी कोकिल बच अमरैयां ॥ ३ ॥ चाहत नैन सैन सुखमाते नन्दललन बलि जैयां ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी राग केदारा ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(६३२) वाही नगरिया में जायरैहौं जहँ छैल कँधैया बसे वाही सों नेहा लगैहौं ॥ नगरिया में जाय रैहौं ॥ अन्तरा उठान खालीकी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अनसरल से ॥ देखूंगी कैसो नटखट चलांक तुहिं सचैहौ सबही कहत नँदललनवां निठुर सों मैं सुख सृजैहौं ॥ नगरिया में जायरैहौं ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी से ॥

(६३३) मोरी सेजरियासैयां अब काहे आवत वाही सौतिनियांके मन्दिरवा जाओ जाओ ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ लाज आवत नाहीं तनक जियाको तोरे नाहक ललनपिय जियरा तरसावत ॥ १ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी पर्ज इकताले में ॥

उठान समसे ॥

(६३४) कवन भवन जागे जाय यामिन कामिनके साथ वाही के रस बस पागे अनुरागे करन लागे हमरे आगे छल बलरी श्याम ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ बाट हेरत रही हिराय सिगरी रैनिगई बिहाय नाहीं नाहीं आये श्याम तरफतभये चारि याम॥१॥ बदन मदन आयो जाग तान बान बेधन लाग बिरहा अनल तीव्र तपत पल न चैन परत राम ॥ २ ॥ नँदललन पिया प्यारे जीवन धनाहितु हमारे ॥ उन बिन कछु भल न लागे खान पान काम धाम ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी समान मात्रिक रागिनी सोहनी ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(६३५) काहे को रारि करत बनवारी ॥ नोखे छैल छजत छल धारी ॥ अन्तरा उठान तीसरी की अनसरल से ॥ मांगत दान कान्ह कैसो कहु यह कहँ से नई रीति संचारी ॥ १ ॥ दान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को नाम न कर कछु मिलिहै काहे वृथा बकवाद पसारी ॥ २ ॥ चलि जारे मग छांड़ हठीले नाहीं दीहों मैं लाखन गारी ॥ ३ ॥ बहु बिधि समझायों नहिंमानत नन्दललन पिय तोसों हारी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ठुमरी रागिनी अमनी ॥

उठान तीसरी से ॥

(६३६) छांड़ो जी अँचरवा मोरारे ऐसो ढीठ छैला छल बलिया बराजोरी करत मग चलत हठीलो हठ कर गहे गँवार अँचरवा मोरारे ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ पनियां भरत डगर चलत ठठोली करत काहू न डरत निपट निडर लँगर आली ललन पिया मैं वाकी बतियां घतियां चतुरैयां से गई हौं हार ॥ अँचरवा मोरारे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली से ॥

(६३७) बराजोरी करत निडर मग में रार ऐसो छैल छीन मटकी दीन्हीं मोरी डार ॥ अन्तरा उठान समकी खाली से ॥ बार बार घुँघटवाटार पटउघार मुखनिहार ललनापिया मोरी चटक मटक चूनर दइ फार ऐसो छैल छीन मटकी दीन्हीं मोरी डार ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी बरुवा ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

॥ इस ठुमरी के तालों की ज़रबों पर

अंक भी चिह्नित हैं ॥

४ १ २ ३ ४ १

(६३८) अरे हांरे मुरलिया वा रे सैयां रे पैयां परत मोरी बहि-

२ ३ २ ३ ४

यां छांड़दे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ सास नँनद मोरी घरसों

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आवाति ह्वै हैं देख निरख गारी देयगी ख्वारी करैगी मोर मानले मानलेघर जानेदे नन्दललन तोहिं बिनवों बल जैयां छांड़दे ॥ १ ॥

आस्ताई राग दरबारी कान्हरा ताल सूल ॥

उठान समसे ॥

(६३६) या हरी तुम सांचे मनके मीता आन मिलो जन सोरी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ मोरे तो जिया में तुमहीं बसतहौ प्यारे घरी पल छिन न टरोरी ॥ नन्दललन कबधौं चितलैहौ दाया तुम बिन विकल हियोरी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक घनाक्षरी रागिनी पहाड़ी दुरतलय ॥

उठान समकी अनसरल से ॥

तालांक मुद्रित ॥

(६४०) मोरे बलमारे तू मोरी खबरिया लेन जावेरे लेन जावेरे ॥ अन्तरा उठान समकी अनसरलसे ॥ निंदरिया मोहिं का रैना न आवतरे ललन श्याम सनेही तुम बिन जियरा मोरा अकुलावेरे मदन सतावे विरहा बैरी तरमावेरे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

तालांक मुद्रित ॥

(६४१) नन्द नटवारे छयल मोरी मान पनघटवा की गयल मोरी छांड़दे ढीठ कन्हैया बराजोरी मोसे न कररे ॥ अन्तरा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उठान पहिली की अनसरलसे ॥ सँग की सहेली पाछे आवत मोरी नँनदी सुजान अकेली न जान मोको तू कान्ह ललनपियारे एती बिनती मोरी मान निडररे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी खम्बावती ॥
उठान खाली से ॥
तालांक मुद्रित ॥

(६४२) बना बना जग जीवना साँवरी सूरत वारो मोहना सोहना ॥ अन्तरा उठान खाली की खाली से ॥ सोबरन को शिर मौर बिराजै सेहरा मुतियन की छवि छाजै कोटिन क्रान्त रवि शशि प्रकाश हीरन दी लड़ियाँ मणियाँ जड़ियाँ ललन अँग अनंग भावना भाव घना घना ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी जोड़ेकी रागिनी खम्बावती ॥
उठान खालीकी खाली से ॥

(६४३) नँदको ढीठ कन्हैया ऐसो ना माने एरी मोरीआली बाराजोरी करत रंग डारदेत निर्मुहिया शंक न आने पनघटकी मगबिच ठाढ़ो सखिसौं सखिसौं उतको ना जातैंरी एरी बीर फागुन को मास रँग मातो डोलतहोगो कहुँतो वोतो कठिन परैगो जल भरिबो घरको ऐबो गुइयाँ ॥ अन्तरा उठान पहिलीकी अनसरलसे ॥ चंचल चपल चटकै मटकै छल बलकी घात रचि जनावै सँग सखा निशंक जाके बाँके बाँकेगोकुलाके नन्दपुराके यशुदा ललनकी बलि बलि जैयांरी गुइयां ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(६४४) तोर लला कि थला विमला बुधि बीर बला की बला की बला है ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ प्रणतपला मुनि देवकुला अघ हारनजन अर्जुन यमला है ॥ १ ॥ नीति नला प्रबला सकला तारक शापित गौतम अबला है ॥ २ ॥ खल खटला दल पुंज दला विमुखनु कजला सुमुखनु कुशला है ॥ ३ ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खाली से ॥ कहुँ रामलला कहुँ कृष्णलला सँग लखनलला बलदेव लला है ॥ ४ ॥ अगला पिछला पिछला अगला अवतारत रूप अनेक भला है ॥ ५ ॥ चिरजीवो ललन युग मोद थला उत अवधलला इत व्रजगुपला है ॥ ६ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी झँझौटी ॥

उठान खालीकी अनसरलसे ॥

(६४५) तोर लला है कि अकला है कपट कला छल छन्द थला है ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ कुपथ चला धौं कुयशि नला है कुमति झला परपंच पला है ॥ १ ॥ कुढंग ढला फरफन्द फलाधौं रूपको कँगला पति अगला है ॥ २ ॥ पति गँदला झिंझट खटला अभला चिबला रिस गृह अनला है ॥ ३ ॥ चित चपला निधि स्यान थला प्रबला गुणि अरि अबला गुपला है ॥ ४ ॥ तब कुशला नँदललन भला बाढ़्यो व्रजकर अमला दखला है ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(६४६) नवला नवला नवलाकी बला अबला को हला मुहला मुहला है ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ विधि है

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कुशला न कियो प्रबला न थला पग देति छला पै छलाहै॥ १ ॥ कीरति कजला प्रपंच कुठिला चपला से चला प्रबला कुटिलाहै॥२॥ अमला दखला व्रज बांध चहैं अकिलापनकी बनि आई कलाहै॥३॥ मँगलामुखि कृत्यदला प्रबला ललनैपन लीक तुमहुँ कपिला है॥ ४ ॥ इति॥ ठुमरी रागिनी गौरी॥

उठान समकी खाली की खाली से॥

(६४७) सकल गुन गोविंद की बलिहारी लखन में लागत सीध अपारी ॥ अन्तरा उठान खाली से॥ यमुन गैलमें छैल भिटानो कौतुक तासु निहारी ॥ १ ॥ युवा जरा कह क्वाँरि रूप निधि सबसों हँसत अनारी ॥ २ ॥ कलसों हौं न जाउँ घर बाहर लेउँ लगा पनिहारी ॥ ३ ॥ नन्दललन सन लाज वचैबो विधि वशही हरबारी ॥ ४ ॥ इति॥

॥ आस्ताई राग मालकौश॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(६४८) निकसतहौ क्यों नाहीं बखरियाके बाहर ॥ अन्तरा उठान खालीसे॥ मटकी मोर चोर धर राखौ छिप बैठो पितु पाहीं॥ बखरियाके बाहर ॥१॥ पकरधरौं कहुँ यह अवसर तो देखलेहुँ तुहिं काहीं ॥ बखरिया के बाहर॥२॥ रहु भरोस नहिं नंद बबाके तुमहिं न बली व्रज माहीं ॥ बखरियाके बाहर ॥ ३ ॥ जान परैगी जबरई तुमका तुम अनीत जस ठाहीं ॥ बखरिया के बाहर ॥ ४ ॥ भुलै दिहौं सबलजन लँगरई जो भगवतने चाहीं॥बखरियाके बाहर॥५॥इति॥

ठुमरी रागिनी धूरियामलार॥

उठान तीसरी की खाली की खाली से॥

(६४६) घन घुमड़ गन घिरआये मद यौवन माते रँग ढँग

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नव छवि सुहाये बिरहीन के जलावन को सखीरी ॥ अन्तरा उठान समकी खाली से ॥ मन्द मन्दयुत सुगन्ध शीतल अतिपवन लाये बदर्वा बेदर्दा मोर ललनपिया कहूँ श्याम अनतछाये सखि ॥ १ ॥ इति ॥ आस्ताई रागिनी सोरठ ताल झूमड़ा ॥

उठान तीसरी से ॥

(६५०) अमरैयन की डार बोलत पापी पपिहारे पिया पिया ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ नींद न आवे रैनि सिगरी मोहिं द्दगसों बहत जल धार ॥ बोलत पापी पपिहारे पिया पिया ॥ १ ॥ (अभोग) पीर पराई काको पिक जानै है जिय कठिन कुठार ॥ बोलत पापी पपिहारे पिया पिया ॥ २ ॥ (भोग) वैसेहि बिरह विदेह सतावत बिन नँदललन दुलार ॥ बोलत पापी पपिहारे पिया पिया ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी अधरबन्द रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली से ॥

(६५१) सखि सैयां की सुरतियां जियरा हरे ऐसे नयना अनियारे कजरारे खंजन से खरे ॥ सैयां की सुरतियां जियरा हरे ॥ अन्तरा उठान समकी अनसरल से ॥ चारु हेरन चतुर अधिक ललित दसन हँसन न्यारी दरसत रस रँगसे ढँगसे कहि न सकत सुघरताई ललन छैल रसिया रँगीलोठाढ़ो तीर तरुतरे ॥ सैयां की सुरतियां जियरा हरे ॥ १ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी अलहिया चारिताल ॥

उठान सम से ॥

(६५२) शीशभुजंग गंगकी तरंग रमणीय राजत जटान मध्य बुद्धिकी प्रकाशनी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ पाणि त्रिशूल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जाके हरत शूल बिपताके अंग भस्म चिता रमी सकल अघ विना-
शनी ॥ १ ॥ (अभोग) प्रफुलित अति छवि सुहात ललित गात
डमरु हाथ बाजति धुनि नईभांति हृदय सुख विलासनी ॥ २ ॥
(भोग) नन्दी पै सवार संग अरधंगी सुकुमारि ललन प्रिया
निरख जोति मुहनी मनु हुलासनी ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग पूरिया ॥

उठान समसे ॥

(६५३) शीश सुरसरिता हरिता अघनगन करता कल्याण
रूप अतिअनूप सुहातरी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ जटाजूट मुकुट
माथे बांकी बांकी छवि अगाथे अरुण कमल नैन साजे मृगछाल
गातरी ॥ १ ॥ (अभोग) अंग अंग अतिभुजंग अर्धअंगी लीन्हे
संग शोभन उमंग सदन कर त्रिशूल हातरी ॥ २ ॥ (भोग)
लेपन तन भस्म चिता बाघम्बरासन स्थिता ललनपिया को
सनाथ करो तात मातरी ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग दिवसीपूरिया ॥

उठान समसे ॥

(६५४) चोरे न तोरे चुरैगी प्रतीतै जोरेहि जोरे जुरी जान
प्यारी है ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ तोरै न थोरै करोरै कहै कोउ
नशोरे कहीं नेह नातो दुलारी है ॥ १ ॥ (अभोग) तोरै बला तोर
एरी भटू मोर ललनैपनै छोर होवति अनारी है ॥२॥ (भोग) छोरे
छछोरैकेहैंगे सभी जो करी सो करी शूर शेखी कहारीहै ॥३॥ इति॥

ध्रुपद राग दिवसीपूरिया ॥

उठान समसे ॥

(६५५) चोरे चुरै केहु तोरे तुरै नेहु मोरे मुरै जेहु से लाग

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जावै ॥ अन्तरा उठान सम से ॥ कोरे घड़ा घृत घोरे घटै घाम घोरानलहुपै धरै त्यों दिखावै ॥ १ ॥ (अभोग) धोरेहुहो नीसरो प्रेमके जो मुनीदेवको ऐस सो ना डिगावै ॥ २ ॥ (भोग) तोरो नयो ललनै नेह नातो तैंतो सदा वामअंगी कहावै ॥ ३ ॥ इति ॥

आस्ताई राग निशिपूरिया इकताला ॥

उठान सम से ॥

(६५६) ललिता ललि अब न तैंतो मैं तुहिं शिक्षोंरी ॥ तैं कसकर बैठी शारि चन्द्रावलिसों री ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ माधो पूँछ्यो बखान मोसों कहु कृत सुजान तैंतो अतिज्ञानवान यह कह मति तोरी ॥ १ ॥ सकलही सराहत तुहिं वाहूही चाहत तुहिं अभ्यंतर दशा कोउ जानत ना गोरी ॥ २ ॥ दुरकर उरदुख प्रवीन नाहकहो मन मलीन हरिसों चल भेटु मेटु मनको मैल धोरी ॥ ३ ॥ कहु कर वहिदूं जुराय तोरे पगदूं पराय जामें हुलसाय तैं सो यतन मैं करोंरी ॥ ४ ॥ तोरे मोहन प्रधानु उनपर रखु बात मानु ललन प्रियाके सम हित तोपर तिनकोरी ॥ ५ ॥ इति ॥

आस्ताई राग मालकौश इकताला ॥

उठान समसे ॥

(६५७) तैं लखु सखि अपनि ओर ललिता लंपटिया ॥ वह लबार काहकरे तेरी सरबरिया ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ सुजनन सरलहि स्वभाव ओछन को तुच्छ भाव वा गँवार बौरी सुठि तोरी सम्बतिया ॥ १ ॥ (अभोग) तू गँभीर धीरमती जान-तिहों तौ प्रकृती तैंसी वोतो न होतो वासि तैं न हो त्रिया ॥ २ ॥ (भोग) मोमति चलु हिलमिल रहु जस भज तस भलइ पुरहु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ललन श्याम सेवति रहु तजु गुमान गुरिया ॥ ३ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी प्रभाती इकताला ॥

उठान समसे ॥

(९५८) ललिता तनु गई न तोरी अबलौं लरिकाई ॥ बौरी बनिजात बात बातनु अधिकाई ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ जीवन प्रान तोरे कान्ह तिनसों लरि आई ॥ कहँ सुजानता गई नदानता जनाई ॥ १ ॥ यह मति केहिकी लई नई नई ये रीति भई ॥ हरि अधीश किंकरीत फिर कस समताई ॥ २ ॥ समुझ बूझ भूल जात पाछे पछितात ज्ञात हानि लाभ निरखत नहिं यह कह चतुराई ॥ ३ ॥ आई हूं लेन पठयो कृष्ण यह सँदेश दयो है अतिबड़भागिनि तुहिं भुलत ना कन्हाई ॥ ४ ॥ चलिरी अबरी वेगि धाय चन्द्रावलि ले बुलाय ॥ दोउ चलि गहु ललन शरन क्षमाले कराई ॥ ५ ॥ इति ॥

आस्ताई राग मालकौश ठेका पञ्जाबी ॥

उठान खालीसे ॥

(९५९) चलुरी चलुरी सखि चन्द्रावलि चन्दमुखि चकोरी ॥ चातुरी सुजान मानु मान मत भरोरी ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ हरिसों न टारु हेत तुहिंका मैं करुँ सचेत ये सँकेत मेरो तुच्छ जानु ना जरोरी ॥ १ ॥ बुलवत तुहिं कृष्णराज व्रजपति महराजआज तू नराज कौन काज मोहिं तो कहोरी ॥ २ ॥ अचरज यह कौन मान समाचार यहि जहान जहाँ चारि पात्र होत खटकत तहँ सोरी ॥ ३ ॥ मुहिं गृह ललिता के जैबे वाहूको है मनैबे वे तोहु लै तोर मतो रूठ बैठी बौरी ॥ ४ ॥ तुम दोऊ यकसम अभीत करहु ना ये नीक रीत ललन सों तजि मीत फेर पछितैहो गोरी ॥ ५ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्रुपद रागिनी प्रभाती इकताला ॥
उठान समसे ॥

(६६०) गोविंद तुहिं बोल पठयो वेगि चलु किशोरी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ गुहिले जूड़ाको शीघ्र धारले शिरमौरी ॥ इतर मेल अलक मांग मोतियनु पुरोरी ॥ १ ॥ चन्द्रकला बेना वर मस्तक टीकोरी ॥ श्रवण आली बाली पात झूमका झिलोरी ॥ २ ॥ मृगदृग अंजन अँजाउ बेसर नकसोंरी ॥ बीड़ी मुख चाब दन्त मिस्सी मसलोरी ॥ ३ ॥ अधरन धर धड़ी धाँक छाके छवि छजोरी ॥ सुमन सम गुलाब गाल अरुणवत करोरी ॥ ४ ॥ अँग अँग को कर शृँगार आज अस भलोरी ॥ ललन देखु छकृतहों बलि जाय तो पै गोरी ॥ ५ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी बिलावल ठेका होली ॥
उठान पहिली तालसे ॥

(६६१) छायो जुबना उमँग छतियन मध मोरी सींदे दरजियारे अँगिया ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालसे ॥ जरकसि चुलिया रेशमि बँद टकिये करिये रँगीलीसी बखिया ॥ मोरी सींदे दरजियारे अँगिया ॥ १ ॥ (अभोग) मन मानी दूंगी निछावर तुहिंका राजी रखूंगी तोरा जिया ॥ (भोग) ललनपिया सों स्याँई न्यारिही दिलाऊँ तोहिं सुघर बनाई तू जो रसिया ॥ मोरी सींदे दरजियारे अँगिया ॥ २ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी बिलावल जोड़ेकी ठेका चांचर ॥
उठान समसे ॥

(६६२) रँगलादेरे मोरी सारी रँगेरे तू रँगलादेरे मोरी सारी ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ मन मानो रँग रँग लादे अबकी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अपनीहि रुचि अनुसारी रँगेरे तू ॥ १ ॥ (अभोग) नयो रँग नयो ढँग नई विधि रचलादूं बकसीस नियारी रँगेरे तू ॥ (भोग) ललनश्याम मनभाई तौ न जानूं क्या देहै मोरा कंथ हजारी रँगेरे तू ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खाली की खाली से ॥

(६६३) आज सुखवती युवती यक फुलबगिया में आई मृग-दृगी मुखशशिसी कान्ति सों उमगती अतीसो ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल से ॥ रुम रुप किये शृंगार मुकुर मुख निहार आरसी में आरसीन नारि मृदुल बोलन माधुरी हँसन ललन प्रिया भावती प्रफुलिती द्युतीसो ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक राग सहाना ॥

उठान समकी खाली से ॥

(६६४) मीत मोरे मुख जातहौ तुमतो कैसे बनब तुम बिन मोहिं अबतो ॥ अन्तरा उठान सम की खाली से ॥ तोरी सुरत लखि जियतहूं निशि दिन कैसे जियब अब तोरे बिछुड़बतो॥ १॥ हाय दई नाहिं नेह नात भल अस जग जन्मसे मरब सुलभतो ॥२॥ लै चल सँग मुहिं अपने ललनपिया फिर जिय चाहि तहँ तैं जग भ्रमतो ॥ ३ ॥ इति ॥

आस्ताई राग अड़ाना ताल त्योरा ॥

उठान समसे ॥

(६६५) ना थिरहै चित मोरारी हमसों न बोलरी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ तैं मन देख हँस्यो कर मोसों जरजाय नितकी ठठोलरी ॥ १ ॥ तैं रुचि अपनेहि जानु जियाकी का धरि कैसी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कल्लोलरी ॥ २ ॥ मुहिं सुहात कछु बात न यह छिन तो भायें करत मलोलरी ॥ ३ ॥ ललनश्याम हित दाहे सदा मुहिं क्यहि दिखाउँ जिय खोलरी ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी अमनी ॥

उठान तीसरी से ॥

(६६६) छांड़दे लँगरवा बैयां मोर मुरकि जात नरम कलाई करकीं चुड़ियां लँगरवा बैयां मोर ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ बरा-जोरी कर अँचरा पकर गरवा गहि लीन्हीं ॥ अँगिया मसकि ललन ढीठ निडर नँदकिशोर लँगरवा बैयां मोर ॥ १ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी अमनी ॥

(६६७) मानले लँगरवा वो देख ननँदि मोरी आवत मगमें कर ना झिगरवा ॥ अन्तरा ॥ वेगि बहियाँ पकर लीन्हीं तू न डरत मैं लजाति ललनपिया मिनती मान ज़ानदे मँदिरवा वो देख ननँदि मोरी आवत मगमें कर ना झिगरवा ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्बावती ॥

उठान खालीसे ॥

(६६८) रैनि गँवाय आये कहँ मनमोहन कौन सौतिया के घरगयेसोवन ॥ अन्तरा उठान सम से ॥ निशि गँवाय अब यहां भोर भयो निपट जानके मुहिं तरसावन आये ललनपिया कवन गुन लागे मोसे मुख मोरन ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी सोरठ ॥

उठान खाली की खालीसे ॥

(६६९) धरु मन धीर भजिये नंदकुमार ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ दुखभंजन रंजन मनमोहन हरण गोपिका चीर ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ब्रह्मादिक जाको यशुगावत भाषत वेद गँभीर ॥ १ ॥ जन वश नित बिनु दाम दमोदर करुणानिधि बलबीर ॥ जो सुख चहु नन्द ललन हितौ वहि हारन जग जनपीर ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी पीलू ॥

उठान खाली से ॥

(६७०) बड़ घरकी बहू बेटी लली रुचि का तोरे जिया प्रिया भाई भली ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ पर पियपर दृग दृष्टि डारिबो यह ना पतिव्रत केरु गली ॥ १ ॥ सज्जनकुल यहि रीति सारिबो अपनेहि पतिसों हित अचली ॥ २ ॥ उभर न चलु बाबुल गृह गुरिया देखु सकैहैं सखि अवली ॥ ३ ॥ यह ससुरो नाहिं समुझि बूझि चलु नहिं फजियत होयजैहै छली ॥ ४ ॥ ललनपने की बात न अलि भल इश्क न मुश्क छिपातु अली ॥ ५ ॥ इति ॥

सोहिला ॥

ठुमरी रागिनी बरुवा ॥

उठान तीसरी की खालीसे ॥

(६७१) मुहिं नंदा महरि सुत मोहिला रे ॥ मन मोहिला मोहिला मोहिला महरि सुत मोहिलारे ॥ अन्तरा उठान पहिली की खालीसे ॥ श्यामली सुरतियावारो । पटपीत सुभग तनधारो । मदन छवि सोहिलारे ॥ १ ॥ मोहनी मुरतियाँ मानों । जादू टोना चितवन जानों । अजब ढँग ओहिलारे ॥ २ ॥ कोइ टिको भाल हरि देवै । लै गोद कोई पद सेवै । मगन तज द्रोहिलारे ॥ ३ ॥ लखि पती रमा रमणीया । उरलै हुलसानी प्रीया । न कोउ यह जोहिलारे ॥ ४ ॥ लखि भाव उमा मुसक्यानी । प्रिय ललन मनहिं सनमानी । मचो ब्रज सोहिलारे ॥ ५ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बधाई ॥

ठुमरी राग कान्हरादरबारी त्रैताल ॥

उठान सम की खालीकी खाली से ॥

(६७२) आज नँद भवन बधाई बाजे । यशुमति गृह सुख सकल सम्पदा साक्षात प्रभु राजे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ कंचन रजत पात्र दूर्वा दधि । केसर कस्तूरी मेलित मधु ॥ अबिर गुलाल इतर नानाविध । वर्षाजिर नँदराजे ॥ १ ॥ बिमला रमा उमा सुर नवला । गवैं बधाई सब व्रज अबला ॥ कोइ डफ मृदँग बजावैं तबला । नव नगार गन गाजे ॥ २ ॥ तोरण ध्वज पताक चामर वर । छत्र बँदनवारी ढिग ढिगपर ॥ गजमुक्तनु पुर चौक मनोहर । सुरपुर सुख जनु आजे ॥३॥ निरतैं गुनि गंधर्व्व अलापैं । श्रुति प्रसंग बुध कवि यश जापैं ॥ नन्दललन व्रजजन्म धरापै । झरैं सुर सुमन समाजे ॥ ४ ॥ इति ॥

बधाई ॥

ठुमरी राग केदारनाथी ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(६७३) आज माई सरस बधाई बाजे ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ श्रीपति जक्तगुरु यदुराई । जन्मलियो व्रजराजे ॥ १ ॥ भवन चतुर्दश की सुख सम्पति । नँदगृह गोकुल राजे ॥ २ ॥ सुर सुरबधू बने ढाढ़ी ढाढ़िन । निरत बजैं बहु बाजे ॥ ३ ॥ नारदादि शारद वीणा धुनि । गगन दुन्दुभी गाजे ॥ ४ ॥ सुरपुर मँगलाचार सुमन झरि । बरसत सुरन समाजे ॥ ५ ॥ नन्दललन यशु भनत बन्दिजन । धनि घरि यह दिन आजे ॥ ६ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्रुपद रागिनी सोहनी इकताला ॥
उठान समसे ॥

(६७४) जय जय जगदेव हरे जय जय जगदेव ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ पुरणब्रह्म परमानन्द आनँदकन्द माधोमुकुन्द। मदनमुहन मधुसूदन कंसाराति वासुदेव ॥ १ ॥ (अभोग) तारण तरण कारण जगहारण दुखवारण अघ। कृपासिन्धु अति सुजान सुरपतीश महादेव ॥ २ ॥ (भोग) निर्विकार नारायण निरंकार नरसिंह तन। शेश श्रुति महेश ललन पावत नहिं तेरो भेव ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी खम्माच चौताला ॥
उठान समसे ॥

(६७५) बेला चमेली केतकी निवारी जुही मोतिया गुलाब दौना मरुवा मालती वसन्त मालरी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ मोगरा कुसूम केवरा कदम्ब कोयलीय गुलेदावदी कनेर कुन्ती कचनालरी ॥ १ ॥ (अभोग) गुल अनार गेंदादिक गहिरे गँभीर रंग चम्पा चांदनी सो चारु सेवती तमालरी ॥ २ ॥ (भोग) ललनप्रिया अमल कमल पुष्पन पुनीत पद्म पायँनलौं सजै अंग अंबिकाके मालरी ॥ ३ ॥ इति ॥

ख्याल रागिनी भूपाली ताल झूमड़ा ॥
उठान खालीसे ॥

(६७६) लाये कस जिय धीर उन बिन ये मोरी आली घरी पलक छिन नाहीं कटत मुहिंका भायें न आयें कोउ केरिबतियां गतियां विरह दी पीर नैनन नित स्रवत नीर ॥ अन्तरा उठान तीसरी ताल से ॥ मैन सतावे सखि सैयां कि सुधिआवे नींद

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

न आवे मुहिंका नन्दललन की मैं दरशमाती अकुलाती भइ अतिही अधीर ॥ १ ॥ इति ॥

पिया रूम झूम निंदिया आईरे । इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी खंबावती द्विगुणाक्षरावृत्तिका ॥

उठान खालीकी तीसरीसे ॥

इस ठुमरीमें तालांक भी मुद्रितहैं ॥

(६७७) [१]सलोने तोरि [२]श्यामली सुरतिया मुहानि [३]मुरतिया [४]मोरे मनभाईरे ॥ येजी [१]येजी यदुराई जिये [२]जीवन कन्हाई चल [३]चितौन धौं जदुवा [४]टुनवां सूजाईरे ॥ अन्तरा उठान समकी अनसरलसे ॥ लालारे जनि [३]जानि बिसार टुक [४]दृग निहार तोरे [१]बलि बलि [२]जाईरे नँद के ललन जन [३]अपनु जान मुहिले [४]अपनाई रे ॥ १ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी झँझौटी ॥

(६७८) नजरिया तोरी किधौं तिरछी तरवार ॥ अन्तरा ॥ नैन बान बरछी चितवनियां सैन कटरियाकी धार ॥ १ ॥ हँसन मोहनि मृदु बोलन वशीकरन सुरतिया जादू जुलुमवाकी मार ॥ २ ॥ नन्दललन पिय तोरी बलि जैये पिरतिया प्यारे तोरी मोरी प्रान अधार ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान खालीकी खालीसे ॥

(६७९) भरन गई पनियां जिठनियां मैं नाहिं ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ कहुरी सांच यह बात कहाहै को हरि सुत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

क्यहि काहिं॥ पनियां जिठनियां मैं नाहिं॥१॥ छेड़त छैल छबीलिनि छंदिनु धूमपरी ब्रजमाहिं॥ पनियां जिठनियां मैं नाहिं॥२॥ हूं नवेलि नई आई नगर यह ह्यां नवीन ढँग आहिं॥ पनियां जिठनियां मैं नाहिं॥ ३॥ श्रीनँदललन शपथ हौं डरगई कस ह्यां नारि खटाहिं॥ पनियां जिठनियां मैं नाहिं भरनगई॥४॥ इति॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(६८०) आज छलो छली मोहि॥ अचरज कह कहूं तोहि॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे॥ आयो सांझ श्याम गृह मोरे नारि भेषकर वोहि॥ मांगे सुमन अभूषन प्रियके मैं दैदिये बिनु जोहि॥ १॥ उहिछिन कीरति कुँवर किंकरी आई जांचन सोहि॥ तब हौं जान कपट कान्हाको चकि लखि वाकी खोहि॥ २॥ है नँदललन कुटिल बड़ सजनी ठग ठगइन अंबोहि॥ बिसरत बात घात नहिं वाकी ठग लियो बचरस मोहि॥ ३॥ इति॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी॥

उठान तीसरीकी खालीसे॥

(६८१) तुमना सगे काहू केर निमोही कान्हारे॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे॥ अपनेहि मनमौजी रुचिरौजी ऐसन सँग कब तेर॥ निमोही कान्हारे॥ १॥ कुल कि कानिकी कानि न किंचित लोक लाज दई गेर॥ निमोही कान्हारे॥ २॥ जान लियो भल भल भांतिनु तुहिं रूप अहेरि घनेर॥ निमोही कान्हारे॥ ३॥ ढिग है तोर न निकसो प्रेमरस छलबल केर कमेर॥ निमोहीकान्हारे॥४॥ सांच वदति ब्रजबाल हाल यह तुमनिजुगरजिन फेर॥ निमोही कान्हारे॥ ५॥ स्वारथ काढ़ कुढ़ावत जिय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुनि ये को सहै अंधेर ॥ निमोही कान्हारे ॥ ६ ॥ मिलनहुँ चहि इन ढँगन मिलैको बहु मिल तुहिं लियो हेर ॥ निमोही कान्हारे ॥ ७ ॥ एकबारहो ललन कहूं तौ जांचि लियो सौ बेर ॥ निमोही कान्हारे ॥ ८ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥
उठान तीसरीकी खाली से ॥

(६८२) रविनाकरेहो वासों प्रीत ॥ तोरी सौं गुइयां ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ जोरत तोरत बार न ज्यहिको त्यहिकी कौन प्रतीत ॥ त्रास मरै जग चहि अस हितुके सुनै न कानन गीत ॥ तोरी सौं गुइयां ॥ १ ॥ सहजहि नेह सगायत सब कोइ कठिन निबाहन रीत ॥ ज्यहि देखो स्वारथ गरजी हितु कोउ न अगरजी चीत ॥ तोरी सौं गुइयां ॥ २ ॥ औरन कौन गनै गिनती कह नर है ईश समीत ॥ नन्दललन केहु बांट अनीतहि सगै अँगै अरु मीत ॥ तोरी सौं गुइयां ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥
उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(६८३) सलोनी तोरी कौन परी यह बानि ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ ज्यों त्यों करगई श्याम सदन सोई आई ठनगन ठानि ॥ सुखद चन्द्र चातृक चितचोरनि यह कह कीन्हि नदानि ॥ कौन परी तोरी बानि ॥ १ ॥ तैं रसरूप रँगीलि लाड़िली सकल कला गुणखानि ॥ मंदतु प्रीति रीति मन्दाकिनि वैभव जक्त सुजानि ॥ कौन परी तोरी बानि ॥ २ ॥ सुनु प्रिय प्रीतम प्रेम पुंज निधि नूतन रीति न आनि ॥ नन्दललन जीवन धन लीकतु तिनसों तुहिं अस ग्लानि ॥ कौन परी यह बानि ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

॥ ठुमरी रागिनी बैसवाड़ा ॥
उठान तीसरी तालसे ॥

(६८४) अपन मिनतिकी करूं सुरत सैयां पैयां परन हा हा करन जोरन करन तन मन सों बलि बलि जा मारि मितैयां ॥ अन्तरा उठान पहिली की खाली से ॥ छुईमुई ते रसरीति गढ़ात न प्रीति पुढ़ात दृढ़ात नाहिं प्रतीति सुख किंचित सूजात न अपन तुम ललन अबहिं हो तियनु शरन सिखो रसिकपन राग रँगरस मिलन ढँग तब कीजियो केहुते मितैयां ॥ १ ॥ इति ॥

चलो हटो जावो मोरा अँचरा न छुवोरे। इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी काफी ॥
उठान तीसरी ताल से ॥

(६८५) मोसे ना बोलो जी ना बोलो जी दूंगी गारीरे ॥ करब खुआरी न्यारी न्यारी बनवारीरे ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ जानत तिहारी सारीहि हकीकत मुरारी चतुर खिलारी तुमहूं मैं न अनारी रे ॥ १ ॥ छलबलके भरोस रैहौना ज्वानी के रोस ललन-पनेको होस दीजिये बिसारी रे ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा राग काफी ॥

(६८६) सैयां छांड़दे अपनि लड़कैयां परूंपैयां परूंपैयां बलि बलिजैयां ॥ अन्तरा ॥ अब तु ललन तुम न कछुक नाहिं नदान नहिं नदान अतिसुजान कह सिखैयां हमरी कहन तुम्हरी सहन सुख सूजैयां ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग बिहाग ॥
उठान समसे ॥

(६८७) अपडर कुलडर परडर निंदरियां हौं केहिढब पियपर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सब कौन यतन नेहा सगाऊं मन मनशा मनाऊं प्रमोद जिय प्रबोध ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ पाक पुंज अमित मास विपुल वर्षगईं बिहाय बीतोजात बीतोजात जोबनवा कबधौं नन्दललन मीत मुहिं मितैहैं कपट शोध ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की राग बिहाग ॥

उठान समसे ॥

(६८८) थिरकरु थिरकरु पिया मनमोहनियां तैं केहिमिस मन माख कोटि यतन तुहिंका मिलाऊं धरि घरपियलाऊं प्रमोद प्रिय प्रमोद ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ कुलकी कान लाज ध्यान मनको मान त्रिविध पूरनेहा पूर मोद मूर बालमवा परसु नंदललन भल से तुहिं ढूँढ़ैहैं वर विनोद ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग बिहाग ॥

उठान पहिली की खाली की खाली से ॥

(६८६) कैसे कैसे ग्वियां उनकी प्रीति टूटै छूटै जियकी ब्याधा सगरो खेद धरि पल छिन बिनुदेखे ना चैन जियको मोरे री तनकहु ॥ अंतरा उठान तीसरी से ॥ दरशन तेहि विरह बधत परसन कह दरशन गति पुनि वियोग भये न बचब नन्दललन टूटे छूटे जियकी ब्याधि सगरो खेद धरि पल छिन बिनु देखे ना चैन जियको मोरे री तनकहु ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खंबावती ॥

उठान पहिली की खाली की खाली से ॥

इस ठुमरी के तालकी ज़र्बोंपर भी अंक दैदिये हैं ॥

(६६०) भरन गईं पनियां पनघट वाके घाट कालिन्दी के

कूखे कूले हरि डरन डरित जिया सुन एरी प्रिय ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ केलि करत हँसत क्रीडत नँदको ललन लखि नव थल दबकि सिधाई उलटे पगन यमुन जल भरा घरआ आयो अपने बसमें जिय ॥ १ ॥ इति ॥

हिंडोला राग कान्हड़ा ताल भूमड़ा तालांकमुद्रित ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(६६१) तोरे भोरे भोरे पन परे पनपत मनकी रुचि कछु न्याअरी न्यारी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ अनँदवति अनुकूल मोपर दयावाइन बकस प्रिय प्रिय सकरु मिनति हमारि बलि बलि नन्दललन पिया केरि शपथ सुनुरी प्यारी ॥ १ ॥ इति ॥

टप्पा रागिनी काफी समानमात्रिक ॥
उठान खाली की खाली से एक १ आवृत्ति में आस्ताई ॥

(६६२) रँगरहे रँग मेरावे ॥ मान मता सैयां ॥ अन्तरा उठान खाली की खाली से ॥ मोरमता समता सुखसागर तोरभला बहुतेरा वे॥ १॥ नन्दललन सौं सांच बदतहौं मोमन तेराचेरावे॥ २॥ इति॥

टप्पा जोड़े का रागिनी काफी समानमात्रिक ॥
उठान खाली की खाली से ॥

(६६३) तैं निमोही किन केरा वे ॥ चलजारे सैयां ॥ अन्तरा उठान खाली की खाली से ॥ बूझलियो सबविधि सबसों तुहिं तैं रँगेर छल हेरावे ॥ १ ॥ ललन नामको स्यान सागरा कूबरिया को चेरावे ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी गौरी ॥

उठान समकी अगली तीसरी से ॥

(६६४) इतै आ गोरस बेंचनहारी करत बड़िबेर से हेर तिहा-री ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ कल मँगयो नवनीत न लाई तैं कैसी व्यवहारी ॥ १ ॥ किनु बातनु सकुचात सलोनी लेन न चहत उधारी ॥ २ ॥ दुबिधा हो तौ नंदललन सौं लैजा दाम अगारी ॥ ३ ॥

ठुमरी राग गौड़ सारंग ॥

उठान खाली से ॥

(६६५) अपने जियाकी बिथा सगरी कहूं मैं कासों स-जनी ॥ उन बिन न चैन घरी पल छिन दिवस निशि भयो कठिन ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी अनसरलसे ॥ बीर तू अपने बीरसों एरी पतिया लिखा दे मँगवादे पियाको सँदेश ललन श्यामसों एती बिनती मोरी कहियो वेग मिलोरी नाहीं जावत आन तुम बिनरे प्रानपतिरी ॥ १ ॥ इति ॥

यक चतुर नारि कर कर शृंगार ठाढ़ी अपने द्वार जिय निकसो जाय ॥ इस धुनि पर ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरीकी खालीकी खाली से ॥

(६६६) वाही कुबजाके ये धामगये ये श्याम वाको बहु अराम सब सुफलकाम मोहिं सुख न एकहू दाम राम उन बिन न सोहत कछु काज काम ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ अपने करम करनीको भाग कहादेउँ मैं कोउ केहि विधि सों लाग विधि वाम भयो विविध विधिसों मोहिं सोइ ललनपिया विमुख श्रीघनश्याम ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ख्याल रागिनी मुलतानी ताल झूमड़ा ॥
उठान तीसरीकी खाली से ॥

(९९७) प्रभुता देत दिवावत बारि न कछु तुहिं लागत ॥ अन्तरा उठान तीसरीसे ॥ जापर करुणाकर तुम चितवत तासु दरिद दुख भागत ॥ १ ॥ (अभोग) भक्ताधीन प्रेमरसमाते तुमसों यह वर मांगत ॥ (भोग) ललन कमल चरनको चेरो बनो रखहु शरनागत ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच समानमात्रिक ॥
उठान तीसरी तालसे ॥

(९९८) मुहिं गुहिलादे मोगराको हार ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालसे ॥ एरे बीर मालिया घोरनियां न जाने सोने के टाका दूंगी चार ॥ गुहिलादे मोगराको हार ॥ १ ॥ ललनपिया राजी हो प्रमोद माने मोरा तोरा रे यही करार ॥ गुहिलादे मोगराको हार ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी बरुवा समानमात्रिक ॥
उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(९९९) माँडारे मन भाँदा बनरा ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ शिर कलँगीदा मौर बिराजै मणिमुक्तनुदा सेहरा ॥ १ ॥ ललन लाड़िली जीवन शोभा निवछावर जग सगरा ॥२॥ इति॥

ठुमरी राग कान्हड़ा ॥
उठान तीसरीकी अनसरल खाली से ॥

(१०००) मैया मोहिं मुरलिया लैदे ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ नन्दबबा सों दे मँगाय नहिं हाट जाय मैं लूं बिसाय मनम.ने दाम मुहिं दैदे ॥ १ ॥ मणि माणिक कंचन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बिहाय नहिं सोने रूपेकी मोहिं चाहि जस ललन मैं हूं लघु गात तैस लघु मोलकी बँसुरी बिसैदे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी राग कान्हड़ा ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(१००१) मोहिं माई मुरली मोल मँगादे ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरलसे ॥ भइ पुरानि मोरी बांस बँसुरिया अब नइ फेर बिसादे ॥ १ ॥ नन्द सों ललन लजात कहत यशुमतिसों करत विवादे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी राग सहाना ॥

उठान समकी खालीसे ॥

(१००२) ए मोरी मैया मुरली मैं मोल मँगैहौं ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरलसे ॥ बाँस बँसुरि मोहिं नीकि न लागे सुबरनकी गढ़वैहौं तेरीसौं मैया अब ना ये बँसिया बजैहौं ॥ १ ॥ नन्दबबा सों कहु मिनती मोरी नाहीं मैं रार मचैहौं सुनैरी मैया तब तोरा ललन कहैहौं ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी राग मालकौश ॥

उठान समकी अनसरलसे ॥

(१००३) कमरिया कांधे रही न मोरे मैया नन्दजू सों कहि दे मँगादे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ आई हिमन्त शिशिरसी ऋतु ललन कहत दैया पछमा पुरवा दखनाई उतराई बेहरै ब्यार दुख-दैया ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग मालकौश ॥

उठान पहिलीकी खालीकी खालीसे ॥

(१००४) लैदे कमरिया कारी कारी मुहिंका मैया ॥ प्यारी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्यारी न्यारी न्यारी ॥ अन्तरा उठान खालीकी खालीसे ॥ कारी कारी कमरी कमरी कीमतशि पुष्टरी पातरी नारी हारी मैया ॥ १ ॥ कारी कारी सकुचत सोचत तुहिं ललनसोंह दुबिधा का विचारी मैया ॥ २ ॥ इति ॥

आस्ताई राग हिंडोल ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(१००५) माल मुकुट मुक्का कलँगी को दाऊके मुकुट कैसो लीहौं मैं ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ तैं दुभाँतिन दुभाँति राखत तोरी प्रतीति न कीहौं अगड़ी पगड़ी शिर न सजहुँ माथे मुकुट दीहौं मैं ॥ १ ॥ नन्दबबा सों तोरी अनुचित जाहि सबै कहौंगो मैं तुव ललन सुसन भेदराखै प्रीति तोरि जचीहौं मैं ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(१००६) बतियां न बनाओ मोसे फेर फेर ॥ अब जान लियो तोरे जिया में फेर ॥ अन्तरा उठान खाखी की अनसरल से ॥ हौ अपने गरजी मतलबके प्रीति कि रीति न जानत जबके कब प्रतीतिहो फेर फेर ॥ १ ॥ तोरी तो प्रीति न छुटब सौतनसों मोर न हेत अस तोर गुननसों मन लेलियो मोर तस देहु फेर ॥ २ ॥ कानालियो तोरे अस हितसों सिख दइकी कृपा मोरे कर्म्मन दुख लिख अब ललनपिया तोरे परूं न फेर ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(१००७) बिन लाग सजन गये नैन फेर ॥ यह दिननको सजनी हमरे फेर ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ सुख सियरो दुख

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दीर्घप्रवाहन मीत प्रतैहि दैगये फेर ॥ बनी के बहुत त्रिन बनीको कोऊ न मोरे बानक को गयो बिगर फेर ॥ १ ॥ यन्त्रन यती सती मन्त्रन विधि बहु सन्तन दिहौ हाथ फेर ॥ पर करम करत सो टरत न छिनक गईं बीत वर्ष जग देत फेर ॥ २ ॥ है सहाय बिनु कृष्ण न कोई यतन जुगुति सब मनको फेर ॥ जब ललनपिया प्रभु करैं कृपा तब देत पलकमें दिवस फेर ॥ ३ ॥ इति ॥

यकताला रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली से ॥

(१००८) एजी एजी गुइयां रैनियां पिया न मोरे आये पिया न मोरे आये ॥ अन्तरा समकी अनसरल से ॥ बाट हेरत बीति निशा बिरह दहत बीस बिशा नैनन निंदिया नेक न आये नँदके ललन बिनु मैन सताये ॥ एजी एजी गुइयां रैनियां पिया न मोरे आये पिया न मोरे आये ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी सोहनी ॥

उठान खाली की खाली की खाली से ॥

(१००९) बरन बदनाम भई मैं न हितसों तोरे अचई मैं ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ हो न उचित तोहिं नँद के ललन जहँ प्रीति करी न कछु दिन निभई तैं ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी जैजैवंती समानमात्रिक ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(१०१०) कैसे कसक सखी जाय जियराकी पिय सों प्रीति भइ सौतिनियांकी ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ घरी पल छिन निशि नींद न आवत सुन सुन धुन पिया पिया पपिहा की ॥ १ ॥ कूक कूक हिय हूक उठावत बुरी बान परी कोइलिया

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

की ॥ २ ॥ कुटिल काम कीन्हे बिराम अब सही न जाय बिपता बिरहा की ॥ ३ ॥ ललन श्याम बिनु नीक न लागत कटब कैस रिपु ऋतु वर्षा की ॥ ४ ॥ इति ॥

दैया मुहिं मारेरे सौतन बोल। इसतर्ज़ पर ॥

ठुमरी रागिनी काफी ॥

उठान खाली की खाली की खाली से ॥

(१०११) रँगीले रसमाते सलोने नैन जादू टुनवासी बाँकी बाँकी सैन ऐन ॥ रसमाते सलोने नैन ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ मधुप मीन खंजन इन्दीवर लखिलजात शोभाकी पटतर भरे अमी गरल मद मान मैन ॥ रसमाते सलोने नैन ॥ १ ॥ छविनायक निधिशील सयाने नइ नइ नोखी चोखी बानें नन्दललन छवि निरखि चैन ॥ रसमाते सलोने नैन ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी काफी ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(१०१२) तिहारी प्यारी दृग चितवन चितचोर ॥ अमीली अँखियन द्युति मदन मरोर ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ मोहनी वशीकरन रसभीनी रँग ढँग प्रबल प्रवीनि नवीनी सैन ऐन जादूसी घोर ॥ प्यारी दृग चितवन चितचोर ॥ १ ॥ अमित अमोल लोल कलाकी नइ नइ आनि बानि छविछाकी नन्दललन प्रिय वारि तोर ॥ प्यारी दृग चितवन चितचोर ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी गारा ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(१०१३) नैनोंदीमार नैनोंदीमार सलोनी सैन कन्हैया डार गयो मोहनियां मोपै ॥ अन्तरा समकी अनसरल से ॥ नींद न

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

आवत नाहीं नन्दललन बिन कासे कहूं बिथा अपनी जाय सांच कहूं सखी तो पै ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़की रागिनी गारा ॥
उठान तीसरी की खालीसे ॥

(१०१४) कैसा मुरारि कैसा मुरारि ठठोली करत पनघट कि गैल मोसों बराजोरी कर मटकी दीन्ही डार ॥ अन्तरा उठान समकी अनसरलसे ॥ मानत नहिं बरजो ढीठ नँदको ललन ऐसो तैंतो निडर लजत नाहीं करत रारि बार २ अँचरा पकर बैयाँ गहत नैन डार सैन मार ॥ १ ॥ इति ॥

खेमटा बंगाली तर्ज़ रागबिहाग ॥

(१०१५) मोहिं जानदे छैला पनियां भरन बंशीबट पनघटवा केरे घाट हाहा तिहारी मैं हूं बलिहारीरे कुंजबिहारी रे जानदे छैला पनियां भरन वंशीबट पनघटवा केरे घाट ॥ अन्तरा ॥ बाट चलत न छेड़ो मुरारी तिहारी बिहारी न नीकी ये बान मुरक गई मोरी बैयां गुसैयां सौं ललन तोरे निरालेहि ठाट ॥ जानदे छैला पनियां भरन बंशीबट पनघटवा केरेघाट ॥ १ ॥ इति ॥

खेमटा जोड़े का ॥

(१०१६) मन कीजै न मैलारे नन्दके छैलारे वो ब्रजवारी गँवारी है नारि तोरी सौं माधो शिरोमणि यादोजी शोच न यादोजी ॥ कीजै न मैलारे नन्दके छैलारे वो ब्रजवारी गँवारी है नारि ॥ अन्तरा ॥ अबहिं ल्यावत खोज दुलारी तिहारी पियारी जो जीवन प्रान नाहक ललन जी थोड़ाकरै थिरु नैक मिलावत वाहि मुरारि ॥ रे कीजै न मैलारे नन्दके छैलारे वो ब्रजवारी गँवारी है नारि ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मुबारकबाद ठुमरी रागिनी ज़िला काफ़ी खम्माच
तर्ज़ थियेटर समान मात्रिक ॥
॥ उठान समकी खाली से ॥

(१०१७) मुबारकबादी शाहेज़ादी शाहेज़ादे की ॥ अन्तरा उठान समकी खाली से ॥ क्यासुघर सुघर सोने की घड़ियां भाग सुहाग राग रसभरियां। धनि धनि दरशन परसन बिरियां सुफल मुरादें यादेकी ॥ १ ॥ तन तन तन घन तंबू ताना पी बसंत बरषा प्रिय प्राना हित हिमंत रँग अँगलिपटाना छबि सोहै मरजादेकी ॥ २ ॥ धनि धनि सोहन मोहन वाचा नन्दललन बनरा रँगराचा। बनरी अमर रूप शुभजाचा शोभासुर संवादेकी ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥
उठान समकी खाली की खाली से ॥

(१०१८) मोहन मनमोहन मोहनियां प्यारे ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरलसे ॥ श्रीवृषभानु सुता धन जीवन सब सुख सिंधु सुखारे ॥ १ ॥ श्यामगात द्युति तिलक भाल भल तन भूषण-रत्नारे ॥ २ ॥ मुक्तमाल बनमाल सरोवर छबि चकवा दोउ न्यारे ॥ ३ ॥ भावति भा कटि काञ्चनि काञ्चन वर वंशी मुखधारे ॥ ४ ॥ निरख त्रिभंगि अनंगित अँग अँग रतिपति निकर निवारे ॥ ५ ॥ नन्द-ललन युग जियो सनातन यशुमति राजदुलारे ॥ ६ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी बागेश्वरी टोड़ी शूलताल ॥
उठान समसे ॥

(१०१९) हे हितकारी नेही शीलधारी सुखारी बनवारी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ जैजैकारी तिहारी वेदन पुकारी गुहारी बलिहारी ललनपिया सुर नर मुनि करतगान गुन अपारी ॥ १ ॥ इति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खाली से ॥

(१०२०) अलख रूप अनजीत जगतकरता कीरति नइरे ॥ जगतकरता कीरति नइरे ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरलसे ॥ आनँद करन हरन भवभारन जन संतन मनरंजनरे ॥ पूरणमाया बश वशीकरण प्रगटित आनँदमइरे। चहूँदिशि यश पूरणमइरे॥ १॥ जगपालन पोषण हितकारी बलकारी जगजीवनरे। सब लायक अन्तर्य्यामि स्वामि बरनी वेदन गइरे॥ ललनपिया शरणागतलइ रे ॥ २ ॥ इति ॥ ठुमरी जोड़ की रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(१०२१) भजिये जगजीवन परम मीत जनमन रंजनदइरे॥ सकल जनमन रंजनदइरे॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ विविध भांति पृथ्वी अकास आनँद बिलास करतार रचो। महिमा अपार नहिं परत पार खोजन बहुविधि भइरे ॥ मुनिन वेदन गति मति गइरे ॥ १ ॥ सकल सुखार सुहृद सब लायक दीनबंधु करुणामइ रे। अघ काम क्रोध मद लोभ हरो उपजै शुभमति नइरे ॥ ललन पिया हिया आनँद मइरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच समान मात्रिक ॥

उठान खाली से ॥

(१०२२) रखो लाज महराजधराज जगजीवन यदपि दयोरे॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ कामी मन मूरख मम ऐसो कुटिलहि काम कियोरे। क्रोध सों नेह बढ़ाय महाचित चिन्ता माहिं ढयोरे ॥ १ ॥ गहि गुमान अभिमानी मदसों दुष्ट कर्म्म परखोरे। लोचनकी दृष्टि सदैव ऐबसों बहुपातक कमयोरे ॥ २ ॥ ममता

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को मेली मन मानो लोहा लोभ गहोरे। सुतदारा भ्राता तात मात धन अपनो जान जियोरे॥३॥ मोही महा मरत मन ऊपर माया माहिं पगोरे। आशा अनुकूल निवास करत तृष्णासन तृषित तयोरे॥४॥ सतसों विमुख असतसों हित नित भाषत झूठगयो-रे। पापन की पोट पहारन के भारनसों भारि भयोरे॥५॥ लखि अनाथ के नाथ तुम्हें शरणागत आनिपरोरे। अघहरौ सकल दुख दीनबंधु ममओर तनक चितओर॥६॥ अबहीं लो कुमति रही सोलही अब सुमति सुजान बगेरे॥ द्विज दीन जान जन ललन पियहि दरसावो ज्ञान नयोरे॥७॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी खम्माच समान मात्रिक॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(१०२३) जयजय प्रभु पूरणब्रह्म पतितपावन दुखमोचन पापहरन॥ अन्तरा उठान तीसरी की खालीसे॥ अति शक्तिमान बहु गुणनिधान कल्याणरूप सुख वृद्धिकरन॥ जगजीवन ब्यापक बिश्व सकल सत्यः स्वरूप कृति श्रेष्ठ वरन॥१॥ गति अगम बुद्धिवर बिन प्रमाण मति सुमति खान यशशक्ति सदन॥ दीनन दयाल दुर्मती दलन शुभ मतीकरन जन मन रंजन॥२॥ अब जनि बिलंब कर कृपानाथ आरत अनाथकी सुन श्रवनन॥बरदेउ भक्तिजन ललनपिया शरणागत अरज करत तुमसन॥३॥इति॥

नैनोंदी मार नैनोंदी मार इस धुनि पर॥

ठुमरी रागिनी गारा॥

उठान पहिली की खाली की खाड़ी से

इस ठुमरी के तालांक भी मुद्रित कर दिये हैं॥

२ ३ ४ १ २ ३ ४
(१०२४) हूंचेरी तेरी चरनन केरीरे सांव रिया सोहनी सूरत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोहनी मूरत वारे रे प्राना धारेरे ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ शील सुघर वारूँ परम प्रीति वारूँ सुख सकल निवछार वारि डारूं नँदकेललन आनन्द सदन दरशन दे मुहिं दुलारे रे प्राना-धारेरे ॥ १ ॥ इति ॥

तुमतो सौतनकेहौ मीत कान्ह इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी सरपरदा ॥

उठान खालीकी अगली तीसरी से ॥

इस ठुमरी में भी तालाङ्क चिह्नित करदिये हैं ॥

(१०२५) तोरी मिनति करकर शिर धरधर पगपर परगई मैं हार मीत मुरारि ॥ अन्तरा उठान समकी अनसरल से ॥ नमाने सैयां देत लड़कैयां अब कौन यतन समझाऊं ललन तुहिं समुझ लियो अब कुछ तुम कियो चाहत मोसे बिगार मीत मुरारि ॥ १ ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान समसे ॥

(१०२६) बराजोरी बैयां गहि चुरियां दरकादईं ॥ करको करको कँगनवां गुइयां गयो हिराय ऐसी जोरा जोरी कीन्ही कन्हैया ॥ अन्तरा उठान पहिली की अनसरल से ॥ लाज न आवे ऐसो निपट ढीठ चंचल चपल सनमुख सखीन मोरा अँचरा पकर गरवा लईं बलैयां कान्ह ललनपिया बड़ो निरदैया दैया दैया ॥ १ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥
उठान समकी खालीसे ॥

(१०२७) न भावे सैयां तोरी छलबलकी बात ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरलसे ॥ हमसों बैर सवतसों नाता तोरा जिया पिया न लजात ॥ १ ॥ हौं जो कहत सिजिया सुख बिलसन वा दिन बेगि हिरात ॥ २ ॥ आन परे कहूं लोकलाज वश तौ तन मन अलसात ॥ ३ ॥ दइ न मिलै निमोही ललनपिया निठुरसों नाहिं बिसात ॥ ४ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी खम्माच ॥

(१०२८) लँगरैयां सैयां काहे लँगरैयां सैयां काहेकरे ऐसो बलमा नदान मोरी अँगिया मसकादई दैया ॥ अन्तरा ॥ तोरी नटखट परीका बान ललनपिया सुन सुजान ननदी निरख हँसैगी आन निपट निलज लइँबलैयां काहे मोरी लइँबलैयां काहे करे ऐसो बलमा नदान ॥ मोरी अँगिया मसकादई दैया ॥ १ ॥ इति॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(१०२९) जन जान निवाजो नाथ हमैं करि कृपाकटाक्षन साथ हमैं ॥ अन्तरा ॥ पचिहारो भ्रम २ चहुं दिशि जग बांधे अघ गन गाथ हमैं ॥ १ ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह माया भुलईं शुभ पाथ हमैं ॥ २ ॥ है प्रत्यक्ष कुकरमकी करनीं कायाकष्ट अगाथ हमैं ॥ ३ ॥ जन आरत अधीन करुणानिधि यशुमति ललन सनाथ हमैं ॥ ४ ॥ इति ॥

दादरा जोड़ेका रागिनी भैरवी ॥

(१०३०) अनुचितहि लखौ जो नाथ तुमहिं तबको जनके अपराध क्षमै ॥ अन्तरा ॥ तोरी अलक्ष माया मदमातो काम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

क्रोध वश जगत भ्रमै ॥ १ ॥ मम बिसात कह अधम अजापी कैस कुमति गुनज्ञान कमै ॥२॥ विहर रह्यो अभिमाननु वीथिनु तृष्णातुर मृष जात समै ॥ ३ ॥ नेमधरम सुकरम मन त्यागन जपतप सुमरनमें न जमै ॥ ४ ॥ अबकाकी गहुं आश शरणप्रभु लखत न कोउ सहाय हमै ॥ ५ ॥ नंदललन जन ओर निहारिये हरिये मम अपराध तमै ॥ ६ ॥ इति ॥

ठुमरी रागदेश ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(१०३१) गति मति हिराय गई सारी कलन । जोई दृष्टि परो मुहिं नंदनँदन । चित चाकित थकित भयो सखि तोरी सन ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ धरक गयो उर सकुची एक सँग थर थराय लागी देह कँपन ॥ आयो औचक अंकभर लीन्ह लँगर मुख बचन न निकसत हरिके डरन ॥ १ ॥ अब न जाऊं बंशी बट पनघट तट । यमुना निकटकी बिकट गलियन ॥ ऐसो ललनपिया नट खट नागर नट । नाहिंदेत काहूको वोतो नीर भरन ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी गारा खम्माच ॥

उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(१०३२) परेन गुइयां निरमोही सों हेत । सुजन सज्जन सिख समझ सुचेत ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरलसे ॥ औरन को सुख दुख नहिं हेरत निज गरजी जगजेत ॥ १ ॥ प्रीतिनु प्रान चहै बरु बर वानिन । उन मन मोहनलेत ॥ २ ॥ लगत लगन लखि परे न भला भल । अंत अमित दुखदेत ॥ ३ ॥ ललनपिया हरि हाथ बिकानो उन सोई मम हित नेति ॥ ४ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खालीसे ॥

(१०३३) निभै न गुइयां निर्मोहिनुकी प्रीति ॥ अरपुचहे तन मन धन सब रीति ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरलसे ॥ यकपै थिर न रमत कोटिन गृह। जिनकी नितये अनीति ॥ १ ॥ सत सों विमुख असत सों हित नित । असकी कौन प्रतीति ॥ २ ॥ अपने सुखन सुख दुखन दुख जिनका। दुसर दरद नहिं चीत ॥ ३ ॥ ललनपिया प्रभू शरण सनातन। उनसों कौन पुनीत ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(१०३४) दृगन नित नेहकी रीस रहे । न माने गुइयां मनहुं मतंग कहे ॥ अन्तरा उठान खाली की खाली से ॥ कुच कुचाय उभराय कंचुकी सों कुबिजात बहे ॥ १ ॥ उमँग आयो जोबन मदमातो जिया पिया सुखनु चहे ॥ २ ॥ कोउ कलधीर धरे न विकल मन हितकोही परन गहे ॥ ३ ॥ छिन न कटत निशि नींद न सिजिया मनमथ देहदहे ॥ ४ ॥ विरहा वैरपरो बिरहिनिके यक दुखहो तो सहे ॥ ५ ॥ मुहिं तो ललनपिया श्याम सुन्दर बिनु कोउ जगहितु न लहे ॥ ६ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी पीलू ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(१०३५) बुरीरे गुइयां परदेशी की प्रीति । मिलत सुख बिछुरत दुख बहु रीति ॥ अन्तरा उठान समकी अनसरल से ॥ कपटी कठिन मार हित बरछी घायल करगयो मीत ॥ १ ॥ अमि सम सुन सुख नेह लगायो भयो विष सो भय भीत ॥ २ ॥ ऐसे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हितहि पलागन मोरी निठुर की का परतीत ॥ ३ ॥ ललनपिया प्रभु प्रेमपगो उर तज छल छन्द कुरीत ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी तिलंग ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(१०३६) दुलहन दुलराय गई निपट ननँदी की कुटिल अटपटी बान आवतहि ठान लइ बात नई ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ निचिलि रहु उभर चल न प्रबल भल तुहिं जानि रूपछई ॥ चारदिनन केरी चांदिनि जोबन अपर अंधेर मई ॥ १ ॥ ललन लहोरील लुटे बड़न बहोरी सिख सुन किमि ढीठ भई ॥ नैहर न ससुरो ये ललनपियासों मिलदे सुख प्रबलदई ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी आसावरी ॥

उठान खालीकी खाली से ॥

(१०३७) कृष्णचन्द्र जागो बलदाऊजू के भैया ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल से ॥ प्रातभयो दिनकरहु प्रकाशो निशितम तीव्र नशैया ॥ बलदाऊजू के भैया ॥ १ ॥ ग्वालबाल गैयां लै ठाढ़े टेरत तोहिं कन्हैया ॥ बलदाऊजू के भैया ॥ २ ॥ मुख जल दन्तधावन करु लालन पानकरहु मधु दहिया ॥ बल-दाऊजू के भैया ॥ ३ ॥ नंदललनप्रिया दर्शन माती बलि बलि जाय तोरी मैया ॥ बलदाऊजू के भैया ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी धानी ॥

उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(१०३८) बैरिनभई हमरी सवत कुबरी बलमा बिलमा लीन्हों हमरारी गुइयां कौन यतनकर पाऊं पिय मैं अपना ॥ अन्तरा उठान पहिली की खाली की खाली से ॥ कोटि यतनकर हारी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पतीयांलिख सँदेश सैयां ना आयोरी आली बिरहा बिथाकी माती नन्दललन बिन खान पान नींदा हिरान सकल सुखरी ॥१॥इति॥

॥ ठुमरी राग देश ॥

उठान खालीकी खाली से ॥

(१०३९) निंदिया उनींदे नैना झुक झुक आवें॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से॥ चलुरी बीर सुख सेजिया सजावन प्रिय प्रीतम अलसावें॥ ऐंड़त बदन उबासि बासि मुख मीड़त दृग जलछावें॥ १ ॥ अर्ध निशाभइ सैन समय चहुँदिशि पहरू गुहरावें॥ ललनि ललन दोउ रसिक प्रेमनिधि चलु पलका पौढ़ावें॥ २ ॥ इति॥

॥ ठुमरी रागिनी सोरठ ॥

उठान खालीकी खाली से ॥

(१०४०) मनहुँ मग जुगवत निंदिया नैन॥ललित छवि आगर सागर चैन॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से॥ मीन मधुप मृग खंजन गंजन कंजन चपला मैन॥ गरल सुधा मद रँग रसराते जादू टुनवा ऐन॥ १ ॥ त्रिभुवन छवि अधीशपति स्वामी अँग द्युति अधिपति रैन॥नन्दललन अलसान यशोमति क्यों न करावत शैन॥ २ ॥ इति॥

॥ ध्रुपद इकताला रागिनी परज ॥

॥ उठान समसे ॥

(१०४१) हूंतो चरणशरणनाथ क्यों बिसराये जात साथ॥ व्रजके नाथ हूं अनाथ करु सनाथ दीनानाथ॥ अन्तरा उठान समसे॥ करके दास अपनो खास फिर काहे मुहिं देत त्रास॥ तुम बिन नहिं कोउ की आस जाको जाय गहहुँ हाथ॥ १ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ललनपन से नन्दललन बल भरोस तुम्हारोहि मन ॥ तन मन धन तुमहिं मुहन मोरे शिरमौर माथ ॥ २ ॥ इति ॥

धुपद इकताला रागिनी परज ॥

उठान समसे ॥

(१०४२) एरी मेरी सखि सुनु सुजान कह कहुँ तोसे गति बखान ॥ जबसों निरखो नँदको कान्ह सुधि बुधि मोरी सब बिहान ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ घर वर मुहिं कुछ न भावे खान पान नहिंसोहावे ननन निंदिया तनक आवे निशिदिन रहे विकल प्रान ॥ १ ॥ विरह बेधन बेप्रमान मदन बदन मारत बान बीतत पल युग समान बिसरत नहिं वाको ध्यान ॥ २ ॥ स्रवत रहत नैन नीर मन न धरत तनक धीर नन्दललनपिय बेपीर दरश मुहिं न देतआन ३ ॥इति॥

धुपद इकताला रागिनी परज ॥

उठान समसे ॥

(१०४३) पर डर कुल डर विचार मिलत मैं हरिसों न नार लखिपावे भरतार कहूं तो देय मुहिं घर सों निकार ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ मन तो नितहि चहत मोर कोउ विधि मिलै नँदकिशोर सांची कहत शपथ तोर पै सखि नहिं वश हमार ॥ १ ॥ तैं कछु रँगु रँग रँगीन रचु कोउ ढँग अस नवीन जानें न घरके प्रवीन मिलैदे मुहिं मीत मुरार ॥ २ ॥ नँदके ललन पियसों प्रीति तोरे बिन नहिं हो प्रतीति भलविधि तैं रसकी रीति जानत सखि सब प्रकार ॥ ३ ॥ इति ॥ धुपद इकताला रागिनी सोहनी ॥

उठान समसे ॥

(१०४४) नवल जोबन जगमगात देखी नवल नारि प्रात गजमरालगति सी चाल लखि तन मन सुधि भुलात ॥ अन्तरा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उठान समसे ॥ चमकत चमचम सो गात चपला चमकन चकात शशिहू शोभा सिरात सुबरन शरमात जात ॥ १ ॥ श्रवण कुँडल छवि अमोल गोल सुमुख अति सुडोल वर गुलाब से कपोल नइ नइ छबि फब सुहात ॥२॥ बरन बरन किये शृँगार भुषन वसन द्युति अपार मनहुँ कोटि रवि उजार रूप कान्ति लखि लजात ॥३॥ ललनपिया सौं सरबस मोहनि मुरति कियो मन बस सुमन झरत बोलन सरस हँसन में अमृत चुआत ॥ ४ ॥ इति ॥

ध्रुपद इकताला रागिनी सोहनी ॥

उठान समसे ॥

(१०४५) देखी तोरी चाल ढाल तुम छलनिधि नंदलाल मोरी तोरी नवनव गुपाल जाइयेजी जाइयेजी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ तुमको मीत बहु सुजान हमरोहु भगवान कान्ह जियति जोरही जहान दूंगी तुहिं दिखाइयेजी ॥ १ ॥ कीन्ह विधिने भलोही काम तुमहुँ मितई आन वाम हमकोहु भइ अतिआराम रामकी दुहाइयेजी ॥ २ ॥ करम करनि सबके साथ दुख सुख रघु-नाथ हाथ तुमसे हो सो करैगो नाथ जियरा ना जराइयेजी ॥ ३ ॥ कहकहूं सब विधि तिहारी हाहाकरि विनय हारी तुम्हरो ललनपन न जात कहँलग समुझाइयेजी ॥ ४ ॥ इति ॥

ध्रुपद इकताला रागिनी सोहनी ॥

उठान समसे ॥

(१०४६) भोरी भोरी युगल जोरी मुहनी मुरत ढँग नयोरी ॥ करत चितकी चोरी थोरी थोरी बैस छविकरोरी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ कमल दल नवीन नैन चितवन जादूको ऐन मुहनी वशीकरन सैन चैन मैन मदभरोरी ॥ १ ॥ भ्रकुटी बंक नवको

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अंक मुख मयंक निष्कलंक सूक्ष्मलंक छवि अतंक निरखत हिय होहरोरी ॥ २ ॥ बदन मदन फदनवृन्द मृदुल बोलन सुधाकन्द मधुरी हँसन निधि अनन्द नन्दललन प्रियाकिशोरी ॥ ३ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी सोहनी ॥

ताल रूपक उठान समसे ॥

(१०४७) गोकुलको गोपाल गगरिया गेर गयो गोरी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ पाछेहि लग डोलत सखि मोरे नटनागर नँदकोरी ॥ १ ॥ यशुदा ललन लवार कि लँगरन सो नकवान हियो बड़ोरी ॥ २ ॥ इति ॥

ध्रुपद इकताला रागिनी खम्माच ॥

उठान समसे ॥

(१०४८) दइरे दईरे मारेडारे कोकिल कूकन जिय निकारे उतसों पपिहा पिय पुकारे उठत हूकन हिय हमारे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ इतसों विरह दुसह दहन उतसों मदन वदन बेधन पुरवा धुरवा देवत कल न व्याकुल जियरारे ॥ १ ॥ सुनके बैरिन बँसुरी ताने तनमन सुधि नाहिं ठिकाने खान पान सुख सिराने दरशन बिन प्राण प्यारे ॥ २ ॥ सारी सारी रजनी विहावे नैनन निंदिया मुहिं न आवे नँदकेललन बिन न भावे घर वर अपनारे ॥ ३ ॥ इति ॥ बधाई श्रीनृसिंहजी की ॥

ठुमरी राग कान्हरा ॥

उठान पहिली तालसे ॥

(१०४९) धनि सुबरनकी घरि आज बधावा वाजेरी आली सुख निधि ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ सुखद सुन्दर समय गो धूलि नरहरि केहरि धरि रूप सुरसरताजे ॥ बधावा बाजेरी आली

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुख निधि ॥ १ ॥ प्रणित प्रह्लाद प्रभु पूरण सुआस नँदललन जन मन धन श्रीव्रजराजे ॥ बधावा बाजेरी आली सुख निधि ॥ २ ॥

ठुमरी राग अड़ाना ॥

उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(१०५०) शुभ घरि शुभ लग्न मुहूरत साधरी आई पिय मिलबे को सखी आज ॥ अन्तरा उठान पहिली की खाली से ॥ जाग भाग सखि सौं मोरे नंदललनमुहिं मिलौरे वारी वारी तन मनधन निवछावर कोटि कोटि मनमथ समाज ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी सुघरई ॥

उठान तीसरीसे ॥

इस ठुमरी में तालांक भी मुद्रित करदिये हैं ॥

३ ४ १ २ ३ ४
(१०५१) बलमारे मोरी खबरिया तूमने नालई ना लई रे
१ २ ३ ४ १ २
महाराज तरफत बीती सगरी रात बैरन भई निदरियारे ॥ अन्तरा
३ ४ १ २
उठान समकी खालीसे ॥ मीत मुरन लागे करके नेहासो अबहीं
३ ४ १ २ ३ ४ १
सौं सौतन रस पागे जाके मोरा इतना सँदिसवारे ललनपिया सों
२ ३ ४ १ २
ऊधो कहियो हांरे कहियो हांरे कहियो हांरे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खाली की खाली से ॥

(१०५२) नाथ कछु करनहिं मोहिं दिखायो ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ गहि तुव शरण जो कोउ पछितायो तब तुव कह यशु छायो ॥ जनको जोर तुमहिं लग स्वामी सो तुम मोहिं भुलायो ॥ १ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तुम पालन पोषन जगकारन यह श्रुति सांचहि गायो ॥ पै जो भक्त तो प्रेम प्रीति बश ताहि न कस अपनायो ॥ २ ॥ जो कछु कियो तासु फल पायो यह मुहिं सकल जनायो ॥ पै अगुई हौं चहत बनावन तासु न यतन बतायो ॥ ३ ॥ प्रेम वश्य तोहि कहत सबहि सो नित प्रति मैं तोहि ध्यायो ॥ एतेहु पै नहिं दया करत प्रभु तुम्हरोहि ललन कहायो ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(१०५३) तोरी नगरिया कैसे पइहौं जानत नाहीं आन गाम की बसनेहारी बनवारी भलारे मैं तो ॥ अन्तरा उठान तीसरी की अनसरल से ॥ विरचि दे अपनो ठिकान ठाम ठिहा ठीक बता मुहिं का श्याम मिललेउंगी तोहि तहँ आन ललन कर इतनी मेहर मैं तोरे बलिजैहौं ॥ नगरिया कैसे पैहौं ॥ १ ॥ इति ॥

आस्ताई राग मालकौंश ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(१०५४) माधुरी मूरत मन बसी मोहनि मोहनि सोहनि सोहनि सुरत सुघरसी ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल से ॥ क्रीट कुंडल मुकुट माथे सुहात मुक्तन की माल उर परी सुरँग भरी ललन लाड़िली शोभा सरोरुह से दृग मुख शशी ॥ १ ॥ इति ॥

टप्पा समान मात्रिक रागिनी भैरवी ॥

उठान खालीकी खाली से ॥

(१०५५) मांडे दिलों दां दिल जाण सानूं थांडा मुखड़ा मांडे मन भांदा ॥ अन्तरा उठान खालीकी खालीसे ॥ नैनोंदी चित-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वैंण मैंण वस करदी नक सिख रूप सुहांदा ॥ १ ॥ करजा जांणीं मांडे दिल बिच डेरा ललन थांडे बलिजांदा ॥ २ ॥ इति ॥

टप्पा जोड़ेका समान मात्रिक रागिनी भैरवी ॥

उठान खाली की खाली से ॥

(१०५६) ननदी निरदैया दैया दैया ॥ अन्तरा उठान खाली की खाली से ॥ नँदको कन्हैया अति निरमुहिया वैर परो वलभैया ॥ १ ॥ यमुणा दी पँणघट मग रोकतललन करै लँगरैया ॥ २ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी खम्माच ताल त्योरा ॥

उठान दूसरी तालसे ॥

(१०५७) मुख मोरो न श्याम दुलारे हांरे ॥ करि प्रीति न देहु दगारे प्यारे तोरी रीति कपट की कला सदारे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ हमसों कह दुख मिलत नित प्रति सवतिगृह जो पधारो हांरे ॥१॥ प्यारे छांड़के सुख नवनीत नागरिनु छांछ छकौ कुब्जिजा के जारे ॥ अपनो कर पुनि तजत लजत न कौन तिहारो ये मता छैलारे जारे तुमसो निठुर न नँदललन कोउ देख परति रसियारे हांरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(१०५८) सैयां उचित न ये लँगरैयां ऐसी काहे करत निठुरैयां ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरलसे ॥ दीख परी कह चूक हमारी सवत सों हितहि लगैयां ॥ १ ॥ इन बातन विष खाय मरोंगी कहिहों न कछु तुम सैयां ॥ २ ॥ ललनपिया तोरी श्याम सनेही अबलौ न गई लरकैयां ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोरे भोर आये सैयां। इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(१०५९) मैं तोरे वारी वारी सैयां परत तिहारी पैयां बलि बलि जैयां सैयां मैं तोरे वारी वारी सैयां ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ तोरी सुरतिया सोहैं मोहनी सुरतियां नख शिख सुघर सुहैयां मनभैयां ॥ तोरे वारी वारी सैयां ॥ १ ॥ प्रेम पिरतियां वशीकरनसी बतियां ललन श्याम तोरी शरन गहि रहियां रे मैं श्याम तोरी शरन गहि रहियां ॥ तोरे वारी वारी सैयां ॥ २ ॥ इति ॥ ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान समकी तीसरी से यानी समकी खाली की खाली से ॥

(१०६०) रखो प्रभु शरण गहे की लाज ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ तोरोहि प्रेम नेम हित चितकर औरनसों नहिं काज ॥ तुम जनकी मनकी सब जानत भक्तनके सरताज ॥ १ ॥ दीनानाथ दयाल दमोदर श्रीपति श्रीव्रजराज ॥ ललनके जीवन धन तुम मोहन मुहिं जन जानि निवाज ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी भैरवी ॥

उठान समकी तीसरी से ॥

(१०६१) सदा मैं तो शरण तोरी व्रजराज ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरलसे ॥ तोरिहि रीति प्रीतिको गरजी यहि मरजी मनछाज ॥ जहँ कहुँ सुनत तोर गुन यश प्रभु उमँग उठत सुखगाज ॥ १ ॥ है मन वच क्रम शुचि रुचिसों हित तोरि लगन महराज ॥ ललनपिया जन शरणागतकी तुम्हरेहि हाथन लाज ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़े की रागिनी भैरवी॥

उठान समकी तीसरी से॥

(१०६२) मोरी यही टेक राखो महराज॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल से॥ तोरोहि जग जानत जन मुहिंका धूम रही यहि आज॥ गावत तोर गुणानुवाद प्रभु नितप्रति यहि मुहिं काज॥१॥ जहँ जेहि योनि जन्म जग पाऊं तुमहिं भजहुँ व्रज-राज॥ सदा सदा हो भक्ति तिहारी ललन यही रुचिराज॥२॥इति॥

ठुमरी रागिनी भैरवी॥

उठान समकी खालीकी खालीसे॥

(१०६३) ए प्यारी मुहिंका वशाकियो सुरत तिहारी अनोखी तोरी दृग चितवन जादूवारी॥ अन्तरा उठान खालीकी अगली पहली मात्रासे॥ जबसों दृष्टिपरी इन नैनन धीर न तन मन धारी॥१॥ वेगि मिलहु अब रसिकशिरोमणि ललनपिया जियावारी॥२॥ इति॥

ठुमरी रागिनी भैरवी॥

उठान समकी अगली तीसरी मात्रासे॥

(१०६४) मुरारी मोरी व्रज बिच लाज लई॥ निरखु यशुमति सुतकी लँगरई मुरारी मोरी व्रजबिचलाजलई॥ अन्तरा उठानखाली की अनसरलसे॥ दधि मिस लेत उतार मटुकिया सखन को सौंप दईरे दई मोरी व्रज बिच लाज लई॥१॥ औरनको उधार दधि लाई अब कैसी करब दईरे दई मोरी व्रज बिच लाज लई॥२॥ पास न दाम छदाम न धामहुँ साख विहीन भईरे दई मोरी व्रज बिच लाज लई॥३॥ अब कैसे जीवन तेर करोंगी ललन श्याम निरदई रे दई मोरी व्रज बिच लाज लई॥४॥ इति॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान तीसरीकी खालीकी खालीसे ॥

(१०६५) एरी एमैया मोरीरे दधि की मटुक दई फोर कुटिल ऐसो यशुमति नन्दकिशोर दधिकी मटुक दई फोर ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खालीसे ॥ माखन की मोरी चिकनि मटुकियारे बाबुल केरि धरोर मैया मोरी रे दधिकी मटुक दई फोर ॥ १ ॥ धोखेहि आज आन इत विचरीरे बिसर गई मति मोर मैया मोरीरे दधि की मटुक दई फोर ॥ २ ॥ कंटक कान्ह भयो ब्रजवनितनु रे ललन लड़ैतो तोर मैया मोरीरे दधिकी मटुक दई फोर ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान समकी खालीकी खालीसे ॥

(१०६६) न सरबर तोरी मोरी मातु विचारु ॥ मैं नँदरानी दासानुदास तिहार ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल से ॥ तैं यशुधा बड़ वसुधा बारी मैं निरधनियां नारि एरी मेरी मातु विचारु ॥ १ ॥ सुबरन की अनमोल मटुकि मोरी छिन लायो कृष्ण कुमार एरी मेरी मातु विचारु ॥ २ ॥ बिन मारे मरजाउँगी मैया बलम दे गृहसों निकार एरी मेरी मातु विचारु ॥ ३ ॥ अब कोउ यतन ललन सों दिवैदे गइ बलिहारि तुम्हार एरी मेरी मातु विचारु ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खालीकी खालीसे ॥

(१०६७) रहत मोरेरे जियको पियाको अँदेश ॥ ये ऊधो मोरारे किस विधि मिटै कलेश ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खाली

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

से ॥ भइ सौतन कुबिजा रिपु ऐसीरे मोहेरी श्रीगोकुलेश जिय को पियाको अँदेश ॥ १ ॥ का रस रँग हित चित गुन पागी रे धौं कह निधि शोभेश जियको पियाको अँदेश ॥ २ ॥ टोना यंत्र मंत्र जादूगररे का वाकोही देश जियको पियाको अँदेश ॥ ३ ॥ ललन श्याम बिन विकल सकल ब्रजरे हेरत रहत सँदेश जियको पियाको अँदेश ॥ ४ ॥ इति ॥

आस्ताई राग सिंदूरा रूपकताल॥

उठान दूसरी की खालीसे ॥

(१०६८) समाये इन नैनन बिच मोरे श्यामा श्याम सदा रहियोजी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ दूजो न मोमन बसत माधुरो ऐसीही दाया बनाये रहियोजी ॥ १ ॥ यशुदा ललन तोरी बलि जैये यहि हित हेत निभाये रहियोजी ॥ २ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी गौरी ताल झूमड़ा ॥

उठान खालीसे ॥

(१०६९) मोरी खबरिया लीजियेजी श्रीयशुदा के लाल ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ तोरेहि चरनकी आश मुहिंका गोविन्द दीनदयाल ॥ १ ॥ ललनपिय प्रभु आरतजनको तो।बिनु कौन कृपाल ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी खम्बावति ॥

(१०७०) तजी मरयादा तजी मरयादा शहज़ादा तोरा श्याम ॥ अन्तरा ॥ नँदरानी तोरा लाल लाड़िला नित नये करत विवादा ॥ १ ॥ ललनकी लँगरई कासे कहूं मैं कोउ न सुनत फ़रियादा ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लँगरैयां सैयां काहे। इस धुनिपर ॥

दादरा रागिनी खम्माच ॥

(१०७१) कारी कमरियावारे कारे तोरी अटपटी बानरे कान्ह मटुकिया मोरी छीन बिगारी निपट अनारी निलज रे भारी नयो रसियारे भलारे॥ अन्तरा ॥ नीरभरन कारन जात निबल निरख करत घात नहिं डरात तू लँगरात ललन ढीठ बड़ारे तैंतो ललन ढीठ बड़ारे तैंतो ललन ढीठ बड़ारे ॥ १ ॥ इति ॥

ख्याल राग एमन ॥

उठान खालीसे ॥

(१०७२) जनम जनम कि मैं चेरी तेरी रे गिरिवरधरन लाल मुरारी मुरली मोरमुकुट कमरी लकुटियाधारीरे हूं मैं चेरी तेरी ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ करत रहत असमरण तोर चरननको ध्यान सबबेरी मनसों वचसों क्रम सों जान जन मुहिं ललन कहत तुमसों टेरी अरज मेरी दरस देरी हूं मैं चेरी तेरी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान पहिलीकी खालीकी खालीसे ॥

(१०७३) छांड़दो हमरी नगरियाको ऐबोजैबो नाहींतोकुगति करडारूंगी यक दिन तुम्हरी श्याम भूल जाउगे सगरो इतरैबो लँगरैबो ऐबोजैबो ॥ अन्तरा खालीकी अगली तीसरी मात्रासे ॥ तोरी यदुराई चतुराई ठकुराई ये ललाई न रहिबो पति बिगरजैबो जब अपने ललनपियसों जा यह कहिबो सुनैबो इतरैबो लँगरैबो ऐबोजैबो॥१॥ आस्ताई रागिनी अलहिया तालरूपक ॥

उठान पहिली तालसे ॥

(१०७४) गुहिगूंधो जूड़ोरी जासों बारभई मोहिं ॥ अन्तरा ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गृहद्वारेहि मिलगई ललिता मुहिं धायश्राय पकरोरी ॥ उबटन शीश मलाय न्हाय पुनि तब छोड़ो पीछोरी ॥ जासों बारभई मोहिं ॥ १ ॥ सखि साखी ह्याँकी ह्वाँकी बहु चालि तिनसों पूंछोरी ॥ यह जबरइ लँगरइ सब बाकी है न लाग कछु मोरी ॥ जासों बारभई मोहिं ॥ २ ॥ तोर सगी लखि हौं न कही कछु ललन प्रियासों तोरी ॥ तोसे कौन अधिक अरु जग में जीवन धन मुहिंकोरी ॥ जासों बारभई मोहिं ॥ ३ ॥ इति ॥

अथ जन्मबधाई श्रीनन्दलालकी ॥

राग बागेश्वरी कान्हरा त्रैताल ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(१०७५) सांवलिया सुन्दर कन्हाई ॥ जन्म लियो यशुदा गृह गोकुल ॥ सुखद समय अधरात योग लागत हरषण नक्षत्र रोहिणी ॥ तिथि आठैं बुधवार भादवामास सार सुख यदुराई ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ तिहुँ पुरकी संपति सुख सारे आन पधारे नन्दद्वार उश्वास कोटि रागिनी राग गन्धर्व्व त्रियां वनवधू वारि॥ गति गाथहिं गावैं बाधाई॥ १ ॥ त्रिविध समीर सधीर सुधारैं। शीतल मन्द सुगन्ध विहारैं॥ घन बौछारैं फ्वारैं डारैं। चपला चमक प्रकाशाति छिन छिन ॥ गगन दुन्दुभी घहराई ॥ २ ॥ त्र्योदश विंशाति कोटि देवभ्कर। ढाढ़िन वेष बनाइ आपवर ॥ वीथिन हाटन बाटन बिहरत। धावत आवत हरियशु गावति ॥ व्रज जन सारी लोगाई ॥ ३ ॥ ठहुँ ठहुँ ध्वज पताक फहरैं चहुँ ॥ बन्दनवारि सुहावनियां ॥ नटि निरतैं करतैं भावकैं भल। नन्द ललन छबिनिरखि हरषहिय ॥ धारहिं आनँद आथाई ॥ ४ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्रुपद राग वागेश्वरी चारिताल ॥
उठान समसे ॥

(१०७६) इन्द्र के नगारे भारे बाजैं धूमधारे न्यारे घनघुमण्ड सारे फत्रारें डारें मनमोद धारे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ त्रिविधा सुगन्ध मन्द सियरी समिर बिहारे निर्वारें ताप अघ बिदारें सुख समूह उपचारे ॥ १ ॥ चपला चहुँ चमक चारे अंधकारे नभ निवारे खग गुहारे तरुन डारें श्याम सुयशु संचारे ॥ २ ॥ अजर अमर गण अपारे सुमनझारें जय जय कारें ज्यहि छिन गृह नन्दललन व्रज सुखारे अवतारे ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी गौड़सारंग ॥
उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(१०७७) बालमारे नदान मोरी ज्वानी उमरिया बबुला विवह दई जनु का समुझ अचरज ये मुहिंकारि सखि ॥ अन्तरा उठान खाली की खाली से ॥ हमरो मनवां रसकेलि मातो पिया जानत नहीं रसकी बतियांहुँ अब कैसे निभै पति मोर ललनपति राखे सबरिया ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी गौड़सारंग ॥
उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(१०७८) बलमारे जवान मोरी बारी उमरिया कैसे धरुँ पग सिजियापै कोउ योग ना धरकत धक धक हिय ॥ अन्तरा उठान पहिली की खाली से ॥ अबकी ननँदी तू लैलै सुयशु मुहिंले बचाइ रति पिया सों कर करम नन्दललन की सौं चेरी तेरी रहूंगी नित प्रिय ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

॥ ठुमरी रागिनी छायानट ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(१०७६) सजन मन सम्हरनदे मेरो तब देखूंगी तेरो छल बल ये जोम जुलुमवारे मन सम्हरन दे मेरो ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ जानतहौं तोरी सांची प्रीति तुम सांचे सनेही नन्द ललनपिया जांचूंगी तुहिं सांचूंगी मैं मम मन चरण चेरो रे ॥ १ ॥

ठुमरी रागिनी छायानट ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(१०८०) कौन हित तुम नित मुहिं छेरो छैल नाहिं समझ परत कछु भेद तेरो मन केरो मेरो भ्रम निबेरो ये बखेरो मुहिं छेरो ॥ अन्तरा उठान पहिली की अनसरलसे ॥ हूं न प्रपंचिन नतेली नारि न बारवधू न बदनिहार मेरो न ब्रजडेरो नन्दललन फिर मोसे का काज हेरो मुहिं घेरो ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान खाली की खाली से ॥

(१०८१) लखत तोरे अब औरै ढँगरी ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ मद मतंगता सान स्यानपन रुचि पहिंचान खरी ॥ छल बल वशीकरन दृग चितवन टोना जादुगरी ॥ अब औरै ढँगरी ॥ १ ॥ गृह कृति त्याग राग कछु औरहि चितवृति चपल न री ॥ का कोउ रसिया के हित पागी ललनि प्रतीतिपरी ॥ २ ॥

बतादे सखी कौन गली गये श्याम । इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(१०८२) कान्हारे गँवार मैं तोरी ऐसी कुगति करिबो ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ दिखैगो सब जग हाल तिहारो तुहिं मालुम परिबो ॥ १ ॥ अब कि आये कहुँ मोर नगर तौ गुलचन मुख भरिबो ॥ २ ॥ छिन धरिबो पटपीत पिछौरी मुरलि लकुटि सरिबो ॥ ३ ॥ आंग नांग करि टरिबो निंदरिबो ललन न तुहिं डरिबो ॥ ४ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी भैरवी रूपकताल ॥

उठान समसे ॥

(१०८३) कमला कृष्ण मुरारी तोरी नगरिया न बसनेहारी समुझ बूझ बुलियो बनवारी चेरी तिहारी न कुंजबिहारी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ महि मन्दिर महीप देव दानवादि दक्ष भूत प्राणी गन्धर्व्व सर्व्व किन्नर मनुजादी—मधुपुर नरेश अखण्ड प्रचण्ड पूर्ण प्रबल प्रतापवान जाकी जग धूम ध्वाई फिरै दश दिशारी—जानत ना नन्दललन किंकरी मैं तिनकीहूं ज्यहि के बल शंकित चहुँ जीव जीवधारी यासों जताय दियो तुमकारी ॥ १ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग कान्हड़ादरबारी ॥

उठान समसे ॥

(१०८४) निरतत नन्दलाल संग सोहत ब्रजकी बाल नइ नइ गति चलत चाल थुन् थुन् थिरकिट धगतिट नगतिट धि-त्तड़ानधा ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ धिन् धिन् तकधा तधिन् धिन् तक तकधा कृधद्धिकिट धगतिट कत गिदगिन घेतिक धिकिट धित्तड़न्न गिद गिनधा धित्ता किणान तकधा धा क्रान्धा क्रान्धा धा क्रान्धा धा ॥ १ ॥ (अभोग) बांसुरी बजाय गाय तान तरँग उपजाय नादिर दिरदानी तुम दिर दिर दानी दीम तोम् तोम् तादिरना दीमतान ॥ २ ॥ (भोग) डौरु ढोल डफ ठउंकार डिम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

डिमि खंजरि नगार झांझ मँजिर झंकार बिगुल बेन बीन तास तूर तूरा ताम्बूर तोरही तरंग नसतरंग जलतरंग बीन रसबीन फूंक-बीन प्यान पखावज मृदंग मुरलि मुहनाल ताल करताल तबल तबला तोंबी तयूस सहनाई सितार सुरबहार सुरसिंगार सीठी सि-रोद सारंगी सरंदा सदा फरियाद चंग मुरचंग दारा चिकारा घड़ोंच घुंघुरु नफीरि घंट विजयघंट घरियाल कानुन सितार शंख शंखबीन भेरी दुंदुभी रबाब येते येते बाज बाजे बाजें साजे सब नीके साज मोद गोदहीके सबहीके नन्दललन प्रभा पेखि ब्रह्मादिक नारद शारद शंकर सुर सुरेश शेश नाग नर किन्नर गंधर्व वारत हिय हरष प्रान ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी धानी ॥

उठान समकी खालीसे ॥

(१०८५) उन बिन गुइयां मुहिंका ना चैनरी दरश देखे बिन अँखियां तरसें मोरी आली का कहुँ तोसे अपने जियकी बिथा मैं सारी कल न पड़त छिन ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ हूं तो विकल रहत विरह बेदना ते बीर बैरी मनमथ सतावे नंदललन पिय पिया कर गुजारूँ तड़प तड़प सगरी रैनरी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी धानी ॥

उठान तीसरी से ॥

(१०८६) मोरी मग निरखत ठाढ़ो छैलरी निडर सखि ऐसो नँदको ढीठ ढोटा नदान मोरे पाछेई पड़ो रहत नित ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ मुहिंका देख लँगर लँगरत मंदिर कैसे जाऊं पनघट सन रोके गैल मोरी छैल चलत सखि मैं तोरे संग ठहिर तनक ठहिर नन्दललन छलसों करदे निवृत ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी घनाक्षरी बोल दूनकी युगआवृत्तिक आस्ताई रागिनीधानी॥

उठान तीसरी की तीसरी मात्रा से ॥

(१०८७) न भावें छल बतीयां सजन्न तूम्हरी गइ प्रतीति प्रीति रीति की॥ परेखी तोरी कुटिल बानिरे नदानरे नदान गिरिवर गिरिधारीरे॥ अन्तरा उठान समकी खालीकी खाली से॥ हमसों करके सनेहा कीन्हों सौतन्न सन्न नँदकेललन मोहनवा तैंने खाय मरूंगी विष बलम तुमपै मैं कोइ घरीरे तुमपै मैं कोइघरी॥१॥इति॥

दादरा रागिनी धानी ॥

(१०८८) का रे छैल गैल मोरी रोके मगमें बराजोरी रचन लछन रहोरे ठानरे नदान ॥ अन्तरा ॥ जाको वाको ताके डोले ताको का तैंने मोपै नाके नाके यमुना के झांके ह्यांके भोर होत छोंर ललनपन नटोंके ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी धानी ॥

उठान तीसरी से ॥

(१०८९) तोरी दृग चितवन मोह्यो मनरी मोहनि वशीकरन जादू टुनवा सी सैन ऐन चैन दैन मँदिरवा मैन ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ प्रीति मन सृजाती मदकीमाती रूपरस चुआती ललनपन रँगराती मधुरी मधुरी हँसनरी ॥ १ ॥ इति ॥

चलो हटो जाओ काहे डारे गलबाहींरे । इस धुनि पर ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी काफीखम्माच ॥

उठान तीसरी तालसे ॥

(१०९०) काहे को निडर मग में रार बढ़ाईरे ॥ बराजोरी करके कलाई मुरकाई रे ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ चलो हटो जाओ घर मानोजी मोरी लँगर नाहीं तो मैं लूंगी तोरी मुरखी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छिनाईरे ॥१॥ सही मैं तोरी अनेक अब ना मानूंगी एक ललनपियाकी सौं तुहिंका देत समुझाईरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी काफीखम्माच ॥
उठान तीसरी से ॥

(१०९१) अँचरा पकर मोरी सारी मसकाईरे ॥ मानत नाहीं नाहींरे कुटिल कन्हाईरे ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालसे ॥ काहेकी न आनकानि तुहिंका रे कुटिल कान्ह रहोरी ठठोली ठान सकुच बिहाईरे ॥ १ ॥ ललनपने से बाज़ आवत न ब्रजराज छेंड़त निकाज लाज तुहिंका नहिं आईरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी काफीखम्माच ॥
उठान तीसरी से ॥

(१०९२) काहेको लँगर मोसे करत ढिठाईरे ॥ जानत मैं तोरी सारी सारी लँगराई रे ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालसे ॥ तुम जो हठीले सो हठीलीहूं मैं तोसे जादा नाहक जनाओ मोसे ऐसी कुटिलाईरे ॥ १ ॥ पितुके दुलारे तुम पियाकी मैंहूं दुलारी जासे मतछेंड़ो नहिं रारि बढ़जाई रे ॥ २ ॥ जानै न जनाओ ताहि ऐसी ठकुराई काहिहूं मैं न ललन जासों रहे लबराईरे ॥३॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी काफीखम्माच ॥
उठान तीसरी से ॥

(१०९३) नाहींरे नाहींरे तुहिंका ये लाज कन्हाईरे ॥ घूंघट उघारत न जिय सकुचाईरे ॥ अन्तरा उठान तीसरी ताल से ॥ ऐसोरी बेमारग न मारग मारग रोके गहिली नाजुक बैयां मुरकी कलाईरे ॥ १ ॥ ललनपने की बात मसखरी बतलात मुहिंका न सुहात तोरी ऐसी कुटिलाईरे ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़े की समानमात्रिक रागिनी काफीखम्माच ॥
उठान तीसरी से ॥

(१०६४) लीजै दधि दान कान्ह जेतो मन भाई रे ॥ सखन खवाओ खाओ तुमहूं कन्हाई रे ॥ अन्तरा उठान तीसरी ताल से ॥ और जो चाहत बात सोतो ना चलैगी घात नाहकही इतरात ज्वानी बल पाई रे ॥ १ ॥ जानत तुम्हारे ढँग औगुन जो अँग अँग बाँट में परी ललन तोरे लँगराई रे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की समानमात्रिक रागिनी काफीखम्माच ॥
उठान तीसरी से ॥

(१०६५) काहेको हठीले हठ करत ढिठाई रे ॥ कैसोरी अनारी सारी दीन्हीं मसकाई रे ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालसे॥ करो ऐसी मसखरी लगे जो जिया न बुरी लाड़िलो ललन तूही नोखो न कन्हाई रे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की समानमात्रिक रागिनी काफीखम्माच ॥
उठान तीसरी से ॥

(१०६६) कैसोरी निडर भयो निलज कन्हाई रे ॥ गगरी गिराई खाई दधि ढरकाई रे ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालसे ॥ कियो बड़ नुकसान कासे मैं भरूँगी हानि तोरी बदबानि कान्ह छोड़े न ढिठाई रे ॥१॥ अब न छोड़ूँ ललन लेचलूँ तोरे भवन नँद यशुदासों लूँगी गोरस धराई रे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की समानमात्रिक रागिनी काफीखम्माच ॥
उठान तीसरी से ॥

(१०६७) करे मन मैला छैला मोरा न कन्हाई रे ॥ कैसोरे रसिक निरमोही यदुराई रे ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालसे ॥ करके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुरीति प्रीति नन्दके ललन मीत काहे तज दीन्हीं मोसे मोहन मिताई रे॥ १ ॥ इति॥

चलत पवन गइसो अँगना बैरिन मोरी लग गई आँखरे। इसधुनिपर॥

ठुमरी रागिनी खम्माच॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(१०६८) ऊधो छल बल रँग ढँग औगुन तुम देख लिये मनमोहन के॥ अन्तरा उठान खाली से॥ पहिले तो प्रीति रीति सों जोड़ी अब कह लाग जान चित छोड़ी॥ ब्रजनायक राधा-नाथ पद्धि तज दास भये कुबरी सौतनके॥ १ ॥ हमरी तो लाग लगी हरिसों बेदरदी करदी बेदरसों॥ हम तरफत रहि गईं सब सखियां वो वासी भये कुबिजाके भवनके॥ २ ॥ ऊधो कौन यतन उनसरिये जाविधि दरश परश प्रभु करिये॥ नन्दललन पिय बिन न चैन निशिदिन बिरहा दुख सहत मदन के॥ ३ ॥ इति॥

ठुमरी रागिनी खम्माच॥

उठान खालीकी अगली तीसरी मात्रासे॥

(१०६९) यक नइसी नारि जोबन नवीन सैनन सों बान मारत प्रवीन गजकी चलत चाल ढाल शोभा सखीरी देख मोरे तन मनमें बस गई रे॥ अन्तरा उठान तीसरी की अनसरल खाली से॥ कमल दल दृग कजरा दिये बिन कजरारे कजरारे से जनात अतिसुहात गौर गात तापर रँगीली सुही सारी शशिवदन छटा न्यारी न्यारी प्यारी ललनपियासौं मोरे जिया में गस गई रे॥ १॥

ठुमरी रागिनी भूपाली॥

उठान खालीकी खाली से॥

(११००) लागो नेह लागनदे जागनदे भाग अपनो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जागनदे एरी आली कछुक दिन निबाहु कीजै हाव भाव रँग रस प्रीति रीति सीख लीजै चितमें दीजै ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालकी खाली से ॥ भईरी नदान ध्यान बिसर गयो कहां ज्ञान कौन बानि लई ठान मोरी आली मोरी मान ललनपिया प्रभु सुजान सों हित नितहि कीजै ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी तालांकमुद्रित रागिनी खम्माच ॥
उठान पहिली की खालीकी खालीसे ॥

(११०१) मोरा नेक नज़र मन वश कीन्होंरे हां श्यामली सुरत मतवारे नयन जादू टुनवा वशीकरन मोहनी सयन ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ श्याम गात द्युति दरशत कमल दल दृग कजरा दीन्होंरे हां नंदके ललनपिया तन मन सों वारी मुखसों वचन बोलत रँगभीनोंरे हां ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी जोड़े की रागिनी खम्माच ॥
उठान पहिली की खालीसे ॥

(११०२) नइ नारि नयो रँग ढँग छलबल वो देखो आली आई रँगीली छबीली छबिसों ॥ अन्तरा उठान तीसरी की अनसरल खालीसे ॥ नैनन की चलन फिरन चितवन चितचोर मन हरन हेरन निराली ए आली ललनपिया प्यारी प्यारी छबिपर वारी वारी मुख मयंक द्युति मुखड़ा अजब सों ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥
उठान खालीकी अगली तीसरी मात्रासे ॥

(११०३) मारत बान नैनन की सैन सखि भ्रकुटी धौं कमान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पलक बान तान वे प्रमान बांकी बांकी तिरछी तिरछी बरछी नजर घाइल करत॥ अन्तरा उठान पहिली की अनसरल खाली से॥ मृग दृग अंजन दिये रँग लिये शोभा अनूप रूप भूप ललनप्रिया की जिया बस गइ माधुरी मूरत॥ १॥ इति॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी खम्माच॥

उठान पहिली की खाली से॥

(११०४) नइ चलन नइ फिरन नैनकी सैनकी चितवन की हेरन की शोभा सखीरी॥ अन्तरा उठान समकी अनसरल खाली से॥ अँखिया अम्बु फांक जाकी नीरज द्युति दले मधूप मीन छीन दामिनि देख ललनपन की रँगीली बतियां करत सजनी हरत जीरी॥ १॥ इति॥

ध्रुपद राग बिभास चारिताल॥

उठान प्रथमा की खालीसे॥

(११०५) सघन वन फूले तरु नये नये दौना मरुवा गेंदा गुलाब बेला चमेली जुही मुतिया हिना हजारा केवड़ा सुगंधदार॥ घन वन फूले०॥ अन्तरा उठान समसे॥ द्रुम नवेली बेली अली झूम झूम झुक झुक रहिं रँग रस मदु भरी हरी हरी पपीहा रह्यो पुकार डार डार॥ घन वन फूले०॥ १॥ ललन ललानि लह लसन्त शोभित छवि नइ अनन्त ऋतु बसन्त कंथ नारि ढोरतब्यार चौंर चारु सुमन झार॥ घन वन फूले०॥ २॥ इति॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी सोहनी॥

उठान तीसरी से॥

(११०६) कमल दल दृगवर द्युतीले छवि छबीले रँग रँगीले कजरारे बिन कजरा के बांके बांके तिरछी तिरछी चपलासी चपल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

थानि॥ अन्तरा उठान तीसरी से॥ हेरन हिय हरत वेग मैनबान किधौं तेग नन्दललन पिय प्यारे के ढँग ढँगीले रँग रँगीले॥१॥

ध्रुपद रागिनी रामकली चारिताल॥

उठान समसे॥

(११०७) सांची सांची कहो बात कासों रात केलि कीन्हीं कौन भौन जागे प्रेमपागे को सखी के संग॥ अन्तरा उठान सम से॥ काके रंग रँगे उरसों उरलगे अँगे रैनि जगे डगमगे से धरत चरण आलस युत छजत अंग॥१॥ (अभोग) छिन छिन जमुहात नींद नीरज नैनन लहात सिमिट श्वास सारत तीव्र तोरत तनह्वै उतंग॥२॥ (भोग) होतही प्रभात कान्ह आये भय काको मान नन्दललनपिय सुजान तजत न छल बल के ढंग॥३॥

ठुमरी राग भैरव त्रैताल॥

उठान खाली से॥

(११०८) सब जग जगजन जागोरी तुम जागो मोहन-लाल॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल खाली से॥ भोरभयो द्युति भइ मलीन शशि दिनकर प्रगटन लागोरी मग चलत बटोही बाल॥१॥ कुंज कुंज दधि बेंचति भामिनि गौअन तुमहुं दुहावोरी चहुं बोलत काग मराल॥२॥ खोलो नैन मुकुर मुख देखो बैरिन नींद बिहावोरी अलसावन तज गोपाल॥३॥ जल गडुआ लाई तुम्हरे हित मुखधोवो छवि छावोरी तुहिं द्वार गुहारत ग्वाल॥४॥ ललनपियारे तुमपर वारी लालन दरश दिखावोरी दृग तरसत तुम बिन लाल॥५॥ इति॥ ध्रुपद राग भैरौं चारिताल॥

उठान प्रथमा की खाली से॥

(११०९) ये एजू आयेरी नन्द कान्ह नये नये भेष किये

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मुरलि अधर धारे बजावत॥ अन्तरा उठान समसे॥ ग्वालबाल सँग समाज बाजत बहुभाँति बाज प्रथम राग भैरव तान गावत॥ १॥ (अभोग) भाग धनि सुहाग हमरे श्याम आज इतै पधरे धनि धनि यह घरी लग्न अमित सुख सृजावत॥ २॥ (भोग) नन्दललन प्रिय गुपाल करु सनाथ दीनद्याल तनमन जन धन समेत वारत॥ ३॥ इति॥

ठुमरी समान मात्रिक रागिनी जौनपुरी टोंड़ी॥

उठान खाली से॥

(१११०) प्रातभयो बोले कगवा उठो उठो लाल अब जागोरी॥ अन्तरा उठान खाली से॥ उडुगन ज्योति मलीन भई मग चलन बटोही लागेरी॥ बाँगदेत चहुंओर मुरगवा खगवा शोर मचायोरी॥ १॥ अरुणाई छाई पूरब दिशि उदयभास्कर कीन्होंरी॥ गली गली में ग्वालिनि टेरैं दही दही दहिया लोरी॥ २॥ द्वारखड़े गण सखा गुहारत कहि कहि वचन सुहायोरी॥ बंशीवट गैयन बछरन को कहत चरावन आवोरी॥ ३॥ आलस विहय मज्जिये शशिमुख कछु मधु माखन खावोरी॥ मम धन जीवन ललन लाड़िले दरशन हिय हुलसावोरी॥ ४॥ इति॥

ठुमरी समान मात्रिक रागिनी भैरवी॥

उठान खाली से॥

(११११) बंशीको बजाके सुनाके सखी मन हरलीन्हों कर बावरिया॥ अन्तरा उठान खाली से॥ मोहनि मन्त्र वशीकरण तन्त्र धौं जादू टुनवाँ की सागरिया॥ १॥ षटरस सुधा स्वरन सुखश्रेणी नन्द ललन की बांसुरिया॥ २॥ इति॥

॥ ठुमरी रागिनी भैरवी ॥
उठान तीसरी से ॥

(१११२) तनक सुनाये जैओरे बँसिया के बजवैया ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खाली से ॥ बहुत दिना पीछे मोरे गृह आये हौ व्रज जीवन कान्हैया ॥ १ ॥ नन्दललन तुम युग युग जीवोरे जनमन आसपुरैया ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥
उठान पहिली से ॥

(१११३) अब मोसे बारबार ऐसो गँवार एरी सखी मग चलत रोकत मग चंचल चपल चित चलांक करत रारि ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ कहत ललन पिया माने न मनमोहन ॥ नट-खट इतउत ठाढ़ोही रहत नँदकुमार ॥ १ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(१११४) नैनोंका नज़ारा मारा परी मुसिक्याके दुबारा दुबारा परी रे ॥ अन्तरा ॥ दिखाके सुन्दर चांदसी सूरत फँसा लिया दिल हमारा परी मुसक्या के दुबारा दुबारा परी रे ॥ १ ॥ सचहै ललन पिया दिया न दिया दिल अपने का सबको इजारा परी ॥ मुसक्याके दुबारा दुबारा परीरे ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा जोड़ेका रागिनी भैरवी ॥

(१११५) माटी के मोल बिकाय जियरा खरीदारो सनम क्यों लेते नहीं ॥ अन्तरा ॥ है मोल मिल्लत पै बिकता दिलेमाल दाम रुपैया लेते नहीं ॥ तू नँदललन मेरी आंखों का तारा बेदरदों को हम दिल देते नहीं ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ख्याल रागिनी बरुवा झपताल ॥
॥ उठान समसे ॥

॥ (१११६) वारी सखी जोराजोरी बेदरदा ने गरवा लगाय लीन्हों मगमें मुरारी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ ऐसो लँगर दीठ ढिठई पसारत झिंझट में फारी चुनरिया हमारी ॥ १ ॥ नँद को ललन बड़ो निलज भयो सखि खिझावे सतावे सदा मुहिं बिहारी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी पीलू ॥
उठान खालीकी खालीसे ॥

(१११७) जारे बलमारे नाहीं करूंगी तोसे बात ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खालीसे ॥ रतियां सौतन के सँग जागत ह्यां आवत परभात ॥ नाहीं करूंगी तोसे बात ॥ १ ॥ यक तो तुम तरसावत मुहिंको दूजे मदन दिन रात ॥ नाहीं करूंगी तोसे बात ॥ २ ॥ नन्द ललन पिया निरदई तोसे बृथहि कियो हित नात ॥ नाहीं करूंगी तोसे बात ॥ ३ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी पीलू ॥

(१११८) यमुना कैसे जाऊं बीर मैं यमुना कैसे जाऊंरे ॥ अन्तरा ॥ डगर बगर छेंड़त छैल जल किसबिधि लाऊंरे मैं ॥ १ ॥ नन्दललनाप्रिय न माने सबकछु समुझाऊंरे मैं ॥ २ ॥ इति ॥

मोरारे वैरगिया जोगीरे इसधुनिपर ॥
ठुमरी रागिनी जंगला ॥
उठान तीसरी से ॥

(१११९) मोरीरे गगरिया फोरीरे नागर नटवा नटखट ऐसो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ढीठ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खालीसे॥ सांवलिया नन्दललन लाड़िलो लूटलई दधिगोरीरे॥ १॥ इति॥

ठुमरी रागिनी अमनी॥

उठान तीसरी से॥

(११२०) मोररे विदेशवा सैयांरे चैन नाहीं पड़े दिन रतियां॥ अन्तरा उठान तीसरी की अनसरल खाली से॥ सूनी सेजरिया विरहा सतावे उठत हूक हिया धड़कति छतियां॥ १॥ नन्दलखन पिया ऐसो निडर सखी लेत न सुधि नहिं भेजत पतियां॥ २॥ इति॥

कँगन मेरो करसों करक गयोरे इस धुनिपर॥

ठुमरी रागिनी खम्माच॥

उठान समकी खाली से॥

(११२१) मोहन मोसे मगमें लिपट गयोरे॥ सो कीन्हीं बराजोरी मोसन जोरा जोरी॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से॥ कर ढिठई ठगईकी बातेंरे मरोरी मोरी बैयां अधिक जोर सैयां कँगन मेरो करको गिर गयोरे॥ १॥ नन्दललन पिया बरजो न मानतरे ऐसोरी ढीठ भारी चूनर झट फारी अनारी मोरी अँगिया मसक गयोरे॥ २॥ इति॥

मार खाओगे सुनोजी इन ढँग श्याम औचक गयो मारग करगयो दौर इस धुनिपर॥

ठुमरी रागिनी खम्माच॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(११२२) मग डोलत मरोरी मोरी बैयाँ श्याम ऐसो ढीठ लँगरवा नागर नटवा॥ अन्तरा उठान खाली से॥ कुञ्जन समीप

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पाय झिंगरो करत धाय नेकहू नहीं लजाय मनमोहनवा ॥ १ ॥ यशुदाललन आली करे अनुचित चाली छैल छली बनमाली अति निठुरवा ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(११२३) तोरी हाहा करजोरी मनमोहनलाल चलो मतकरो बराजोरी मोसे जोरा जोरी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ लीजै दान दूनो दधि माखनको मोसे कान्ह पर लीजै एतो मान हमरो कहोरी ॥ १ ॥ हूंतो मैं तिहारी दास ललनपिया उदास करो कृपा खास शीश चरण धरोरी ॥ २ ॥ इति ॥

मैंतो तुम्हरे मिलनको आईरे श्याम सलोने सुन्दर प्यारे
नैन रसीले छलबलिया इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी खम्भारी अमनी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(११२४) मग चलत करत लँगराईरे सांवरो कन्हैया ऐसो ढीठ अनोखो छैला चंचल चपल चुलिया मोरी मसकाईरे चलत करत लँगराईरे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ औचक हठीले मोरी बैयां गहि मरोर डारी ललनपिया ऐसो निठुर मुरारी वोतो मानत न सखी करो कोटि चतुराई ॥ १ ॥ इति ॥

नैनन समारही तिहारी प्यारी निशिदिन आन बान जिया कचकी
कचक कुचिकी मचक उचक लचक अब इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खालीकी अनसरल से ॥

(११२५) आज धुनि सुनरी बांसुरीकी बावरी भई बिसरगई

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुधि बुधि तनकी आली मदन तन जगो उमँगरी कल न पड़त बिन दरश साँवरे के ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ हेरत मिलत नाहीं सांवरो कन्हैया मुहिंका कुंजन कदम चहुँ दिशि हेरआई दैया ललनपिया अब कह करूं यतनरी ॥ १ ॥ इति ॥

दधि बेंचन मैं ना जाऊंगी । इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(११२६) झूला झूलन मैं ना जाऊंगी काहेको कन्हाई बैया गहत जारे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ रूपकी नवेली हूं अकेली न सहेली कोई करत ठठोली सोई ज्यों ज्यों हटकत त्यों त्यों मानत नारे ॥ १ ॥ जानत कन्हाई हूं ढिठाई चतुराई तोरी करो लँगराई थोरी तुमहीं नोखे ललनपिया छैलारे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी मांझ खम्माच ॥

उठान तीसरी की खालीसे ॥

(११२७) छलबलिया छैल छल गयोरी वोतो साँवरी सुरत वारो सांवरिया ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ ठाढ़ी सबिरियां अपनी अटरियां आनि सुनाई मोहिं बांसुरिया ॥ १ ॥ बँसिया बजाय वश कियो नँदके ललन सुधि बुधि गइ भइ बावरिया ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी सिन्धु ॥

उठान तीसरी की खालीसे ॥

(११२८) निंदिया न आवे नैनोंदी ननदी मुहिंका प्यारे सैयां बिन पल छिन ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ नन्दललनपिया मितई सवतियारे ऐसो निपट कठिन ननदी ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी खम्माच॥

उठान तीसरीसे॥

(११२९) सैयांने गँवाई कहूंरात काहू सौतन की सेजरिया॥ अन्तरा उठान तीसरी की खालीसे॥ हमसों कपट कर अन्त बिलम रहेरे नन्दललन की देखी बात॥ १॥ इति॥

बतादे सखी कौन गली गये श्याम। इस धुनिपर॥

ठुमरी रागिनी खंदारी॥

उठान तीसरीसे॥

(११३०) सैयां मोरी मानले बतियां॥ अन्तरा उठान खाली से॥ सिगरी रैनि समुझावत बीती अबतो लगाले छतियां॥ १॥ नन्दललन पिया क्यों तरसावत कर सनेह नतियां॥ २॥ इति॥

ठुमरी रागिनी मांझ काफी खम्माच॥

उठान समकी खाली की खाली से॥

(११३१) दैया मुहिं मोरेरे सौतन बोल। कहे वचन कठोर विष घोल घोल मुहिं मोरेरे सौतन बोल॥ अन्तरा उठान खाली से॥ यकतो शोच मुहिं अधिक पियाको दूजे मदन तीजे विरहा बिथाको तापर सौतन की ठठोल मुहिं मोरेरे सौतन बोल॥ १॥ ललनश्याम को लाज न आवे तरसावे घरको नहिं आवे दुख कासे कहूं जिय खोल खोल मुहिं मोरेरे सौतन बोल॥ २॥ इति॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी मांझ काफी खम्माच॥

उठान समकी खालीकी खाली से॥

(११३२) भयेरी कुबिजा के मीत गुपाल। तजगये सकल हरि व्रजकीबाल कुबजा के मीत गुपाल॥ अन्तरा उठान खाली से॥ दधि माखन मिश्री अनरुचि कर छांछ खात वह दासीके घर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मन माने वाहीके ख्याल कुबिजा के मीत गुपाल ॥ १ ॥ बन ब्रज कुंज धेनु नहिं भावे ग्वाल बाल सगरी दुख पावे ललनपिया उन बिन बेहाल ॥ कुबिजाके मीत गुपाल ॥ २ ॥ इति ॥

चलत पवन गइ सो अँगना बैरन मोरी लगगइ आंखरे
इस धुनिपर ॥

ठुमरी समान मात्रिक रागिनी खम्माच ॥
उठान खाली की अनसरलसे ॥

(११३३) आज सखी सपनेमें रात बालमसों भेंट भईरे ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल खालीसे ॥ सोई ऐन चैनसे रजनी डाल पिया गलबांहरे मदन जगो इतने में सखीरी सोई आंख खुलगईरे ॥ १ ॥ क्याकहूं तोसे मैं सजनी ललनपियाकी बातरे वारी बलिहारी वह छबिकी बिसरत ना दईदई रे ॥२॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी मांझ काफी ॥
उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(११३४) जारे छलबालिया क्यों रारिकरे भयो निपट अनारी नहिं काहूको डरे छल बलिया क्यों रारिकरे ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल खालीसे ॥ छेंड़त मारगहीमें मुहिंका कुटिल कन्हाई लाज न तुहिका। कुंजन में देखत जबहीं औचकही अंक भरे ॥ १ ॥ ललनपिया भयो ढीठ कान्ह बिनतीकी करत नहिं नैक कानि। बरजोनहिंमानत एरीसखी चंचलचलांकझिगरे ॥२॥ इति॥

ठुमरी समान मात्रिक रागिनी सिन्ध खम्माच ॥
उठान समकी खालीकी खालीसे ॥

(११३५) सौतन बिलमायेरी हमारे सैयां आज ॥ अंतरा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उठान ॥ न आई मोहिं निंदिया सैयांबिन ननँदिया दैया सौत की सिजिया सोयेरी महाराज ॥ १ ॥ ललनपिया प्यारेबिन विरहा बिथारे मनमथ मारेडारे नाहिंभावे कछुकाज ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी सिंधुवी ॥

उठान खालीसे ॥

(११३६) नइ रारि नित करत कन्हैया मोसे न माने सजनी देखो मैं कहाँलग हटको ॥ अन्तरा उठान खालीकी अगली तीसरी मात्रासे ॥ डगर चलत छलत अँचरा गहत आज कौन यतनसों मँदिर जाऊँ ललनपिया ढीठ लँगरवा अटको ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरीसे ॥

(११३७) सोयेरी ननँदिया सारी रात सैयां सौतनके साथ ॥ सौतनके साथ सोयेरी सारी रात ननँदिया सारीरात ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खालीसे ॥ आज नई यह रीति निकालीरे अब ना करूँगी वासों बात ॥ १ ॥ नन्दललन पिया है बड़ो छलिया रे नीक ना निठुरसों नात ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खाली से ॥

(११३८) मैं आज पनघट गई सखीरी श्यामसुन्दर मुहिं गरवा लगायो छीन छैल मटकी पटकी दैयामोरी ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खालीसे ॥ वोतो निपट ढीठ नहिं मानत एरीआली बाट चलत मुहिंका छेंड़त बनमाली ललनपिया मैं कह कहूं वाके छलबल छतियां मसकदइ अँगिया नईनई ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी रागिनी गौड़ तिलंग ॥

उठान तीसरी की खालीकी खाली से ॥

(११३९) मैंका मत छेंड़रे कन्हाई तुम्हरी दुहाई अभी यशुदा सों जाई कहिदूंगी ढिठाई ॥ अन्तरा उठान खालीकी अगली तीसरी मात्रासे ॥ तुम्हरी खुटाई खूब जानत जानत मुरारी मैंतो नाहक करत मोसे लँगराई ॥ १ ॥ नन्द ललन प्रिया माने-ना हटक मोरी चल हटजारे याहीमें भलाई ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी खम्माच ॥

(११४०) गइरे मोहन मतिमारी तनक जनि जिय सकुचत है ॥ अंतरा ॥ डगर बगर लँगरात लँगरवा रोकत राह अनारी ॥ तनक जनि जिय सकुचतहै ॥ १ ॥ नन्द ललन तुहि लाज न लागत करत क्षुभित ब्रजनारी ॥ तनक जनि जिय सकुचत है ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा जोड़े का रागिनी खम्माच ॥

(११४१) रंग भरे पिचकारी मदन मदमातोही डोले ॥अंतरा॥ जैयो जनि कोउ युवति यमुन जल ह्वां हरिफाग रचारी ॥ मदन मद मातोही डोले ॥ १ ॥ हौं परगइरी आज वाके वश बोरदई तन सारी ॥ मदन मदमातोही डोले ॥ २ ॥ जलकी मटुकि मोरी गहि-कर बरजोरी रँग की गगर करडारी ॥ मदन मदमातोही डोले ॥ ३ ॥ नँदको ललन बड़ो रसिया रसिक पिया छलबलिया बन-वारी ॥ मदन मद मातोही डोले ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी बहार ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(११४२) जुबनन पर हाथ चलावे सुनु एरीसखी यकबात

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नई नैनन सों नैन लड़ावे ॥ अंतरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ ऐसो ढीठ निडर निरदई कान्ह मग चलत झिगर ठानत नदान॥ नहिं तजत ललनपन केरिबानि ज्वानीको जोम जतरावे॥ १॥इति॥

ठुमरी रागदेश ॥

उठान समकी खालीकी खाली से ॥

(११४३) मँदिर मुहिं जानेदेउ महराज ॥ अंतरा उठान खालीकी खालीसे॥ दीनानाथ रैनि रहीथोरी होगी सास नराज॥ १॥ हौं मिसरचि ले नाम ननँदि गृह आई तुव ढिगराज ॥ २ ॥ नन्द ललन पिय यहि हित बिनवत तुम्हरेहि हाथन लाज ॥ ३॥इति॥

ठुमरी रागिनी परज ॥

उठान पहिली से ॥

(११४४) देखो सखी नन्द नँदन को मैं कहँलग बरजूँ गोकुलगैल औचक आनि बैयां गहीमोरी नाहीं माने छैला ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ पनघट सों भरेनीर आवत थी मँदिर को मैं आली बनमाली गालीदै लिपट मटकी पटक झटक चीर उलट पलट घूंघट पट बलैयां लीन्हीं ललन पिया निरखो निठुराई मोहनकी ऐसो ढीठ भारी बराजोरीकर मोरामन कियो मैला ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी कलांगड़ा ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(११४५) ढरकादी गोरस की गगरी ऐसो ढीठ निडर नागर नटरी ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ व्रजकुंजन के निकटहि ठाढ़ो जहँ बरसाने की मगरी ॥ १ ॥ नँदको छैलगैल गोकुलकी रोकतकर झिगरा झिगरी ॥ २ ॥ निपट निलाज चपल छलबलिया लपक झपक बैयां पकरी ॥ ३ ॥ घूंघट पट खोलत मगडोलत मुख

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चूमत घूमत घुमरी ॥ ४ ॥ सुनरी माय तुवललन लाड़िलो छैंड़ करत नइ नइ नितरी ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरीरागिनीपरज ॥

उठानतीसरीकीखालीसे ॥

(११४६) मोंसे बतियां करत छलबलकी ढीठ ढिठाई नाहीं छांड़त छबीलो छैला बार बार विनती बलिबलिकी ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ सोय आये सौतन की सिजिया अब प्रभात मूरत झलकी ॥ १ ॥ ललनपिया मैं कहँलग बरजूं बिसरगई तुहि सुधि कलकी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरीरागिनीपरज ॥

उठानतीसरीकीखालीसे ॥

(११४७) अँखियन सों सैन चलावे भृकुटी मटकावे मोहिं देख अठिलावे खिजावे लँगरावे सुनुएरी ननँदिया कान्ह कुँवर जुबना पर हाथ लगावे ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ औचकही डारत गलबैयां बार बार मुहिं गरवालगावे। ललनपिया छैला छलबलिया मुख चूमत मुसक्यावे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरीरागबिहाग ॥

ठेकाहोलीउठानतीसरीकीखालीसे ॥

(११४८) प्रानपति अबआये परभात कर सौतन सों बात ॥ अंतराउठानतीसरीसे ॥ तुमबिन बिकल न कल मुहिं बालम तड़प गँवाई रात ॥ १ ॥ जाओ जी हटो चलो मोरी बैयां न गहो सैयां जनिछुओ हमरो गात ॥ २ ॥ वाही सौतन के मंदिर पधारो जहँ निशि जागत जात ॥ ३ ॥ मोंसे न बोलो घुंघटवा न खोलो मुहिं यह ढँग न सुहात ॥ ४ ॥ अब न बोलूंगी मैं तोसे बेदरदा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अपनी दुहाई खात ॥ ५ ॥ नंदललन पिया तुहि छल बतिया कौन सिखाई घात ॥ ६ ॥ इति

आस्ताईरागविहागशूलताल ॥

उठानसमसे ॥

(११४६) एजूहो कान्ह झगरो मत ठान निपट नदान ॥ अंतरा उठानसमसे ॥ जोर जनावत ज्वानि जतावत वृथाखिझा-वत ब्रज अबलान॥ १ ॥ तुहि न अनोखो छैला चोखो मारग मोरी रोकै ललनपन को ठान ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरीसमानमात्रिकरागकलांगड़ा ॥

उठानखालीसे ॥

(११५०) कहँरहे न जानोरी सखीरी श्यामसुन्दर मोरे अजहूं न आये अकेली सिजिया निदिया बैरनियां न आवे ॥ अंतरा उठान खालीसे॥सिगरी रैनि मगहेरत बीती विरहा व्यथा तन मदन दहावे ॥ १ ॥ हमरी ललन पिया नेक न मानत सौ-तनके घर नित रतियां गमावे॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरीरागिनीसोरठ ॥

उठानसमकीखालीकीखालीसे ॥

(११५१) पड़ी यह कौन तिहारी बानि जो छेंड़तहौ नित प्रति अबलान ॥ अंतरा उठानखालीकी अनसरलखाली से ॥ कल के कान्हभये रसिया अब मांगत जोबनदान ॥ जो छेंड़तहौ नित प्रति अबलान ॥ १ ॥ हमरे गोद खिलाये लड़का अब ह्वैगये जवान । जो छेंड़तहौ नितप्रति अबलान ॥ २ ॥ हौंनँदराय यशो-दहि जानत श्रीबलवीर सुजान ॥ जो छेंड़त हौ नितप्रति अब-लान ॥३॥ मैं दासी पुरबासिहि अबला तुम ब्रज पूज्य प्रधान ॥ जो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

छेंड़तहौ नितप्रति अबलान ॥ ४ ॥ लाज न लगत न तजत ललनपन कहँ तुव गुमगयो ज्ञान ॥ जो छेंड़तहौ नितप्रति अबलान ॥ ५ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी कहरवा ॥

(११५२) कुंजनमें औचक आनि कान्ह मुहिं अंकभरी ॥ अरे हांरे कान्ह मुहिं अंकभरी ॥ अन्तरा ॥ झपट दौड़ झपट झिझट कर झटको पट नँदलाल मसक दइ नइ चुनरी ॥ १ ॥ घूंघट उलट पलट पट अटपट नटखट नागर श्याम करी झिगरा झिगरी ॥ २ ॥ गोलकपोल सुडोल निरखमुख लईं बलैयां कान्ह गिरी बिंदिया हमरी ॥ ३ ॥ रोकत गैल छैल पनघटकी पनियां जान न दियो धरन पटकी गगरी ॥ ४ ॥ गागर तोर फोर टुकड़ा कर लई इँडुलिया छीन हीनमति अधिक हरी ॥ ५ ॥ बरजत ना सुत शीशचढ़ायो भल सिख सिखई मात निडर नागर नागर-नटरी ॥ ६ ॥ नंदललन लरकापन सारत करत प्रान नकवान तजत नहिं ढिठपनरी ॥ ७ ॥ इति ॥

कहरवा ॥

ठुमरीसमानमात्रिकधुनिचिलोनारागिनीराशी ॥

उठानतीसरीकीखालीसे ॥

(११५३) सुनिये ननँदी यकबात अरी दधिदानकी रीति नई सचरी ॥ अंतरा उठानतीसरीकी खालीसे ॥ ब्रजनँदको लाल अतिही कुचाल छेड़ेंछैल बाल नागरनटरी । बहुग्वालबाल लिये अपने नाल करें औढँग ख्याल लरकापनरी ॥ १ ॥ गोरस छिनाय कछुलीन्ह खाय छिनमें लुटाय पटकीगगरी । मग औचक आय ठगठगई लाय सारीमसकदई चुलिया सगरी ॥ २ ॥ निधि छन्द

छलन यशुदाको ललन अब बसब भल न गोकुलनगरी । जहँ ऐसरंग राजत कुढंग सुखको प्रसंग न कोऊ अँगरी ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरीरागिनीमलार ॥

उठानतीसरीतालसे ॥

(११५४) एरी मा उमड़ घन घुमड़बरसे ॥ अंतराउठानखालीकीखालीसे ॥ झींझीं करं झनकारे झिंगुरवा कूकत शोर मचावत मुरवा। कोयल कूकसुनावत सुनसुन श्यामाबिन जियतरसे॥१॥ चहुंदिशि घटा श्याम घहरानी देखत बही भई दीवानी । नंद ललन बिन विरहा सतावत मिलब कौन विधि हरिसे ॥२॥इति॥

ध्रुपदरागएमनकल्याण ॥

चारितालउठानसमसे ॥

(११५५) देवकी के नंदन जगबंदन कृपासिन्धु गिरिवरधर वासुदेव यदुपति जगदीश्वर ॥ अंतरा उठान समसे ॥ पूरणब्रह्म पुरुषोत्तम परमानंद परमेश्वर परमपर प्रवीन दीनबन्धु राधावर ॥ १ ॥ (संचाई) आदिदेव अतिपुनीत अलखरूप अज अजन्म कर्म्मरहित धर्म्मसहित यशुमति सुत नंदकुवँर ॥ २ ॥ (अभोग) मकसूदन माधौ मुकुन्द श्रीगोविन्द मदन मोहन मुरलीधर गरुड़गामी भक्तवसल अजर अमर ॥ ३ ॥ (भोग) गोपीनाथ सुरपति पति निरञ्जन निरविकार ललनपियापर मुरारि करिये करुणाकी नजर ॥ ४ ॥ इति ॥

ध्रुपदजोड़ेकारागएमनकल्याण ॥

चारितालउठानसमसे ॥

(११५६) नारायण नरोत्तम नरसिंह नरहरी नागर नवल निराधार निरगुण निजन्म निरंकारी ॥ अंतरा उठान समसे ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राधावर रामरूप गिरिवरधर धनुषधारी मोरमुकुट छत्रधारी अवध अधिप व्रजविहारी ॥ १ ॥ (संचाई) खगपतिपति जगपतिपति सुरपतिपति जपतपपति पर्म्म धर्म्म कर्म्मनपति लीलानिधि अवतारी ॥ २ ॥ (अभोग) पूरण ब्रह्म परमानन्द हारन द्वन्द कन्द छन्द गृहरिपु सुखदा गयन्द श्रीगोविन्द बनवारी ॥ ३ ॥ (भोग) नन्दनँदन यशुदाललन देवकि वसुदेव सुवन दशरथसुत कौशल्याकुँवर रामश्याम जनसुखारी ॥ ४ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी खम्माच ॥

इकताला उठान समसे ॥

(११५७) चन्द्रवदन गोरे गात गोरीरे ढँग नयोरी आई यक चतुर नारि सज शिंगार भोरी ॥ अंतरा उठान समसे ॥ नैन दोऊ कजरारे रँगरस भरे प्यारे प्यारे भौं कमान सैन बान बैस थोरी थोरी ॥ १ ॥ (अभोग) कोमलतन अतिगँभीर सोहतशिर सुभग चीर मदन भरी सुन्दर छवि छजत पोरी पोरी ॥ २ ॥ (भोग) नखशिख शोभा सुभाय ललनपन सु तब सुहाय रतिपति दामिनि लजाय अँग अँग रँग बोरी ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद जोड़का रागिनी खम्माच ॥

इकताला उठान समसे ॥

(११५८) मुख मयंक छवि अनूप आली निराली बदन मदन फबन दिपित दामिनि उजियाली ॥ अंतरा उठान समसे ॥ चंचल चपल चतुर नारी सजे सोलहू सिंगार नैननकी सैन मार मोहिनी सी डाली ॥ १ ॥ (अभोग) नस नस रस रूपरंग अँगिया कुच दोउ उतंग चलत गजकी चाल बाल यौवन मतवाली ॥ २ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(भोग) मधुरी मुरत प्रभा जैस नन्दललन ललन वैस माधुरी हँसन मृदुल बोलन अमिझर प्रतिपाली ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद जोड़का रागिनी खम्माच ॥

इकताला उठान समकी पिछलीसे ॥

(११५६) अब भवन गवन करन दे दुलारे हांरे वारी बलिजाऊं तोरे श्यामसुंदर प्यारे ॥ अंतरा उठान समसे ॥ सिगरी रैनि जागत भई सोवन नहिं नेक दई विविधभांति केलि कीन्हीं कहा मनमें धारे ॥ १ ॥ (अभोग) भयोरे प्रभात जात उडुगण द्युति डिगमगात बटोही बाट चलन लागे तमचुर उचारे ॥ २ ॥ (भोग) सास ननँदि बैरन मोरी निरख मोहिं लेयगी जोरी ललन पिया सों कहेगी वेगि यहि डर मुहिंकारे ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद जोड़का रागिनी खम्माच ॥

इकताला उठान समकी पिछलीसे ॥

(११६०) अब उन बिन नहिं परत चैन हां रे जियरारे बदन बेधनलागो जागो मदन बान मारे ॥ अंतरा उठान समसे ॥ अबहिं तक तो प्रभुकी आस आवन की रहि हमरे पास भइ व्यतीत आधीरात आये न प्रान प्यारे ॥ १ ॥ (अभोग) बिरहापीर अति गँभीर व्याकुल करदियो शरीर निंदिया बैरन भइ सखीरी बीती रैनि जारे ॥ २ ॥ (भोग) बोलन लागे पहरुआ सो सूनी सेज डरत जिया कैसी करुँ सखि ए दैया ललनपिया विनारे ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली से ॥

(११६१) जोराजोरी मोरी चूनर पै दीन्हों रँगडाल नैनन सों तकमारी पिचकारी नँदलाल ॥ अंतरा उठान तीसरी ताल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

से ॥ लँगर लँगराय लियो लिपटाय आय अबिर मेल मुख गुलाल ललन पिया ऐसो निडर गोपाल ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खाली से ॥

(११६२) नाजैहों नाजैहों आली यमुन भरन नीर ठाढ़ोरी कन्हैया होरी खेलत कुंजनतीर ॥ अंतरा उठान खालीकी खालीसे॥ अबहीं की बात गइ पनियां के काज मोरी गागर गेरी लँगर गरवा लगायो मुख मलो अबीर अतिशरीरबलकोबीर ललनपिया मोरो बोरो रँगसों चटक सुघर चीर ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खालीसे ॥

(११६३) सखि लखु नयेढंग नटनागर के ॥ छिपजात कुंजनमें अंक भरके ॥ अंतरा उठान खालीकी अनसरल खाली से ॥ बाटचलत मुहिं छलत छबीलो नयोरसिया भयो रंगरँगीलो बांट परीरे लँगरई लँगरके ॥ १ ॥ नन्दललन न ललनपन छोंड़त दधि लुटाय मटकी महिफोरत कहँलग कहुँ छलबल निडरके ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(११६४) उनबिन न चैन मुहिं पड़त आज ॥ जिय तरफरात दरशनके काज ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ सपनेहु सुख न सगावत सजनी पल छिन नींद न आवत रजनी बिरहाबिथा रहि जियपै गाज ॥ १ ॥ कौन घड़ी ह्वैहै मोरी आली ललनपिया जो मिलब बनमाली मदन बदन बेधत निलाज ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी॥

उठान समकी खालीकी खाली से॥

(११६५) पिया छायरहे सौतनके पास तनमदन सतावत जिय उदास॥ अंतरा उठान तीसरी तालकी अनसरल खाली से॥ बरषाऋतु आई दुखदाई उनाबिन मुहिंका कछु न सुहाई विरह देत निशि दिवस त्रास॥१॥ ललनपिया बिन दरश श्याम सुख बिसरगये दुख आठोयाम हरि मिलब कैस हिय हो हुलास॥२॥इति॥

दैया मुहिं मोरैरे सौतन बोल। इस धुनिपर॥

ठुमरी रागिनी मांझकाफीखम्माच॥

उठान समकी खालीकी खालीसे॥

(११६६) अदा अलबेली बांकीचाल छवि मदनभरी घूंघर वाले बाल॥ अंतरा उठान खालीकी अनसरल खालीसे॥ नैन नुकीले चितवन मारू अबरू कमांसी मुखड़ा माहरू ललनपिया जोबन कमाल॥ अलबेली बांकी चाल॥ १ ॥ इति॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी मांझकाफी खम्माच॥

उठान समकी खाली की खाली से॥

(११६७) तिहारी चितवन धौं टुनवा भरी॥ नैनन वशीकरन मोहनि जनु जादूगरी॥ चितवन धौं टुनवा भरी॥ अंतरा उठान खाली से॥ मृदुल हँसन मनु स्रवत सजीवन रस बतियां झरझरानि प्रसूनन नन्दललन छवि सोहत मनरी॥ चितवन धौं टुनवाभरी॥ १ ॥ इति॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी मांझकाफीखम्माच॥

उठान समकी खालीकी खाली से॥

(११६८) तिहारी चितवन चितचोरन लाल रँगीली गज-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गति मराल चपलासी चाल ॥ चितवन चितचोरन लाल ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ मदनभरी मूरत अलबेली अँग अँग प्रभा अनूप नबेली भ्रकुटि कुटिल घुंघुराले बाल ॥ चितवन चितचोरन लाल ॥ १ ॥ ललित मदनमोहन सुघराई ललनपिया जिय जन सुखदाई सांवरी सुरत मनु जादूवाल ॥ चितवन चितचोरन लाल ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी मांझकाफीखम्माच ॥

उठान समकी खालीकी खाली से

(११६९) रँगीली बँसिया धुनि बाजरही सखीरी चलु देख कहीं व्रज कुंज महीं ॥ बँसिया धुनि बाजरही ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ श्रवण भनक जबसन सुनपाई तनमनकी सब सुधि बिसराई मदन बेधन नहिंजात सही ॥ बँसिया धुनि बाजरही ॥ १ ॥ विरह धीर नहिं दे कोउ भांती नन्दललन पिय दरशन माती मानत न सखि मन मोर कही ॥ बँसिया धुनि बाजरही ॥ २ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(११७०) बार बार बलिजाऊं छबीले नेक बँसिया सुनादे रसीले ॥ अंतरा ॥ हाहा करजोर तोरे पैयां परतहूं शीश धरत चरनन पदभीले ॥ १ ॥ इतनी मिनती मोरी मान मोहनप्यारे काहेको गहत गुमान रँगीले ॥ २ ॥ ललनपिया तन मन सन वारी श्यामसुन्दर छबिनैन अमीले ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक धुनि लखनऊ रागिनी मांझकाफी ॥

उठान तीसरी से ॥

(११७१) चलो हटो जाओ काहेकरत ढिठाईरे ॥ मानत नाहींरे मोरी तनक कन्हाईरे ॥ अंतरा उठान तीसरी तालसे ॥ नीर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

न भरनदेत बहियां मोरी गहिलेत छांड़ोजी छांड़ोजी मोरी मुरकी कलाईरे ॥ १ ॥ कहां ये तिहारी बानि झिगरो करतआनि नँदके ललन तोरा जिय न लजाईरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी मांझकाफी ॥
उठान तीसरी से ॥

(११७२) हटो हटो जाओ जाओ डगर मोरी छांड़ोरे काहे को घूंघट पट उलट उघारोरे ॥ अंतरा उठान तीसरीसे ॥ करत ढिठाई लँगराई मोसे बारबार औचक उचक हाथ जुबना पै डारोरे ॥ १ ॥ ललनपनेकी बात छांड़त न अठलात मानोजी मानोजी मोसे रारि न बढ़ावोरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी मांझकाफी ॥
उठान तीसरी से ॥

(११७३) छांड़ोजी छांड़ोजी मोरा अँचरा कन्हाईरे काहेको कुटिल मगमें रारि बढ़ाईरे ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालसे ॥ कहे की करो न कानि नीकी ये न तोरी बानि कहां से सीखेहो कान्ह नोखी चतुराईरे ॥ १ ॥ गरवा लगावे नहिं जिया सकुचावे छैल छतियां छुअत मोरी चोली मसकाईरे ॥ २ ॥ ललनपिया रँगीलो ठठोली करे हठीलो नई नई नित मोसे करत ढिठाईरे ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी मांझकाफी ॥
उठान तीसरी ताल से ॥

(११७४) लँगर लँगरो न बतियां मोरी मानोरे ॥ डगर चलत मोसे ठठोली न ठानोरे ॥ अंतरा उठान तीसरीसे ॥ कही मैं बहुत भांत मानत न इतरात नेक नाहीं चितलाओ अपनीही तानोरे ॥ १ ॥ कठिनहै राज जाको जानत न तुम ताको कंसकी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मैं दासी जाको जग डर मानोरे ॥ २ ॥ जामों जनि अठलाओ सीधे घर चलजाओ पकड़ बुलाई भूलजाई इतरानोरे ॥ ३ ॥ ललनपिया सदैव चीन्हत तुम्हारे ऐब पाछे से परैगो इन ढँगन लजानोरे ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी मांझकाफी ॥

उठान तीसरी ताल से ॥

(११७५) चलो हटो जाओ छांड़ो छैल मोरी बाईरे मुरकी जात मोरी नरम कलाईरे ॥ अंतरा उठान तीसरी तालसे ॥ नित ही करत मोसे डगर में बराजोरी ललनपिया न मोरी मानत कन्हाईरे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(११७६) बाटचलत मोसे करतरी ढिठाई ढीठ लँगर चुलिया-मोरी मसकाई दौड़झपट छैल गरवासों लगाई ॥ अंतरा उठान समकी खालीकी खालीसे ॥ यकसांवरे कुँवर एरी लकुट हाथ लि-येरी चंचल चपल अतिचित चलांकमाई नैनवा लड़ावे भ्रकुटी दोऊ मटकावे ललनपियासौं आज दइ मुहिंका दी बचाई ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी काफी ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(११७७) जातरही यमुन पनियांको मैं माई दौड़झपट मोरे औचक निकटआई माई गिराई गगरीकन्हाई अठलाई ॥ अंतरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ बैयांपकर गलबैयां डारदीन्हीं अँगसों लिपटगयो निडरकर ढिठाई ललनपियासौं वासों अरज बरजहारी डगरबगर लँगरे लँगर न लजाई ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ढीठ कन्हाई मोरी बैयां छांड़दे । इस धुनिपर ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खंबावती ॥

उठान तीसरी से ॥

(११७८) ढीठ लँगरवा अँचरवा मोरा छांड़ श्यामसुन्दर सकुचत न तनक जिय ठठोली करत मोरी डगर रोकेठाड़ ॥ अंतरा उठान तीसरीसे ॥ नीरभरी मोरी गगरिया तोड़फोड़ महिदीन्ह पटक चटचटक मटक लिपटगात नँदकेललन माने न का करिबो चहतहै बिगाड़ ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी अमनी ॥

उठान तीसरीसे ॥

(११७९) काहेको लँगरवा कीन्हीं रारि बराजोरीकर अँचरा गहत मोगरे बार बार लँगरवा कीन्हीं रारि ॥ अंतरा उठान पहिली तालसे ॥ कुटिल कान्ह कुटिल बानि अतिनदान जान जान झिगरो करत ललनपिया मोरी माने न मुरारि लँगरवा कीन्हीं रारि ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग हमीर ॥

उठान पहिली से ॥

(११८०) चलत चाल अलबेली अलबेली कह कहूं सखी वाकी जोबनवा की छवि फबनव निरख मन बसगइ ॥ अंतरा उठान पहिली तालसे ॥ चन्द्रमुखी अतिमुखी नारि नवल गात मैनमद चुआत दरशात रस बरसत रँग सरबस ढँग ललनपिय प्यारी शोभा कहि न जात शीश सारी सुघर सरदइ ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी सोहिनी ॥

उठान खालीकी अनसरल से ॥

(११८१) रात सपन सखि दीन्ह दिखाई ॥ अंतरा उठान

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खाली से ॥ फुल बगिया बिच राजकुँवर यक सुघर छटा तन प्रगटो आई ॥ श्यामगात योबन चुआत रस रँग ढँग अँग अँग मदन निकाई ॥ १ ॥ बांके नैन मदन मदमाते बांकी चितवन अति सुखदाई ॥ श्रुति दृग होत परस्पर सजनी पलकमार चित लीन्ह चुराई ॥ २ ॥ कर अमीला मृदुवचन मनोहर सब रँग सों गयो जियरा लुभाई ॥ परसन हित मदनातुर भइ जोइ खुलत नैन नहिं दीन्ह लखाई ॥ ३ ॥ हा दइ भुलत न चितसन पलछिन वह मधुरी मूरत मनभाई ॥ नन्दललनपिय सांचे सनेही आनि मिलिय जम दुखित कन्हाई ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भँझौटी ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(११८२) छयल मनमोहन निपट छली ॥ अंतरा उठान तीसरी ताल की खाली से ॥ घात सो बात बात में छलबल मन वृत चली चली ॥ कुटिल लबार तोर लायक नहिं सुनु सुकुमारि अली ॥ १ ॥ निरसी बेदरदी चितचंचल चालतु चाल बली ॥ षटरस प्रीति रीति को जचिबो कठिन न है सरली ॥ २ ॥ मसल विदित जब लगि रसरँग अँग जोबन उमँग कली ॥ अलि सप्रीति रसलेत भगत पुनि झांकत वह न गली ॥ ३ ॥ यह कछु काम नीक नीकन के निज गरजी प्रबली ॥ कारज काढ़ अपुन पुनि वासों लेत नजर बदली ॥ ४ ॥ ऐसन सोंह प्रतीति प्रीतिकर नहिं सखि बात भली ॥ जलहित भिदत नचाहि जस तर कर चीकन माठ दली ॥ ५ ॥ तैं छोरी गोरी अति भोरी थोरी मति नवली ॥ आगे चल फल मिलब भलीविधि तोर प्रीति पहली ॥ ६ ॥ हरिचितलेत देत बदले कह मदन बिरह अनली ॥ जो दिन रैनि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देत न चैन छिन रहत जिया विकली ॥ ७ ॥ सुख दै दुख भव मिलत विविधविधि क्यहि हरिप्रीति फली ॥ ललनपिया सिख देत सखी सच मान नैन कमली ॥ ८ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी धनाश्री चारिताल ॥

उठान समसे ॥

(११८३) तुमसों बड़भागी कौन तुमसों अनुरागी कौन तुमसों सर्व्वत्यागी कौन हरिसों हितबनोई रहे ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ जाके श्रीकृष्ण मीत नित प्रति रहे पर्म्मप्रीति नायक सबलायक सहायक सगोई रहे ॥ १ ॥ (अभोग) तुमहीं राजन के राज तुमहीं महराजाधिराज तुम्हरो सुफल जन्म तुमहीं सुखी सुख सनोई रहें ॥ २ ॥ (भोग) सांवरे सनेही सेती ललनपिया की मिनती एती वरहु भक्ति प्रेम युक्ति आनँद उर घनोई रहे ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी मुल्तानी प्रबन्धताल प्रारंभ चारिताल से ॥

उठान समसे ॥

(११८४) कहां को श्रीराज आज महाराज साजसजे काके भवन हित उच्छाहन केरि होगी धूमधाम ॥ अंतरा ॥ प्रारंभ चारिताल उठान समसे ॥ काको सनाथ करन चलेहौ गुपाललाल काके सुहाग भाग जागे आज घनश्याम ॥ १ ॥ (अभोग) नयो नेह भयो कासों मनरातो को अबलासों जाके कारण सिंगार कीन्हे अति अभिराम ॥ २ ॥ (भोग प्रारम्भ शूलताल सम से) मुरलीअधर धारे दरशदेन पधारे प्यारे ललनपियापर नैक नजर कृपाकि कर ॥ (पुनः प्रारम्भ चारिताल समसे) हेरिये दयानिधान जीवन जन पूरण काम ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्रुपद रागिनी भीमपलासी चारिताल ॥
उठान समसे ॥
॥ (११८५) कुटिल कान्ह कुँवर तेरो अचरा गहत मेरो पनियां नाहीं भरन देत अंक लेत अलबेलो ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ कहांलौं उरहना लाऊं कौन कौन गुन गिनाऊं एरी मात एक बात होय तौ सहेलो ॥१॥ (अभोग) हाहा कर हार गई ऐसी नक-बान भई लोकलाज कुलकी कानि तजि नदान कान्ह एलो ॥२॥ (भोग) बरजत दधि मटकी झटकि छीन लीन्हि धरन पटकि नँदको ललन बड़ कुचलन ठानत मग बिचझमेलो ॥३॥ इति ॥

गिरगयो कहीं कांगना ढूंढ़ फिरी आंगना इसधुनिपर ॥
ठुमरी समानमात्रिक रागिनी सन्दोहा मांझ झँझौटी ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥
(११८६) मुहि मिलो सखी सुखना कह कहूं दुख अपना। अन्तरा उठान तीसरी तालकी खालीसे ॥ बारीबैस पिया ब्याह किया मोरारे लैआयो गवना ॥ भइ जुआन जब मोर उमरियारे मितईसौत सजना ॥ १ ॥ बिरहानल दिन रैनि दहत तनरे म-दनदेत कलना ॥ जिय पिय दरश परश रुचि राचीरे उमँगो जात जुबना ॥ २ ॥ चलु सखि कछु उपाय चल पूंछियेरे तीर बीर ब-झना ॥ नन्दललनापिया प्यारे मोहन बिनरे धीर धरत मनना ॥३॥

ठुमरी जोड़े की समान मात्रिक रागिनी सन्दोहा ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥
(११८७) आयो बलम घरना बीते बहुत दिना ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खाली से ॥ उमँगो जोबन योहीं बीतो जातहैरे बिन पिया कछु दरना ॥ १ ॥ विरह मैनदहे यहि जिय चाहतरे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

खाय गरल मरना ॥ २ ॥ सैयां सौत रसबस हूं तरफतरे भरूं कस दुखभरना ॥ ३ ॥ खान न पान न नींद बलमबिनरे कह जग जी करना ॥४॥ कैसे मिलूं पिय धाय हाय दईरे दिये बिधहू परना ॥५॥ नन्दललनपिय श्यामसुन्दर बिनरे कैसे ये दुख टरना ॥ ६ ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच मलार ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(११८८) चलुरी चलुरी मोरी बैयां छांड़दे दूर दूर मगमें चलु मोसोंरी आली जानलई तू हरिकी मीत रामरे ॥ अन्तरा उठान तीसरी ताल की अनसरल खाली से ॥ रसिक रँगीली है छबीली छल बलकरे मीठी मीठी बतियां बनाय निजु रँग धरेमोरे सँग माहीं तोरो कौन कामरे ॥ १ ॥ लाई दधि बेंचन बहाने बरसाने सें तो अब हरि मिलन कहत मोसे जाने तैंतो ललनपिया सों बड़ी कुटिल बामरे ॥ २ ॥ इति ॥

चलो हटो जाओ काहे डारे गलबांहींरे इस लखनऊ तर्जपर ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी मांझ काफी ॥

उठान तीसरी से ॥

(११८९) कैसोरे लँगर लँगरत न लजाईरे ॥ नरम कलाई मोरी गहि मुरकाईरे ॥ अन्तरा उठान तीसरी ताल से ॥ दपट झपट झट अँगसों चिपट चट अँगिया हजारी सारी सारी मसकाईरे ॥ १ ॥ नँदको ललनपिया तुही अनोखो रसिया जोबन जवानी मद में रहो भुलाईरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी माल काफी ॥

उठान तीसरी की अनसरल खाली से ॥

(११९०) बैर परोरी मोरे कुँवर कन्हाईरे ब्रजको बसब अब

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भयो कठिनाईरे ॥ अन्तरा उठान तीसरी ताल से ॥ बाट न चलन देत ठठोली करत नेति कैसे के सखीरी पति बचब बचाईरे ॥ १ ॥ नँद नँदरानी की कहानी का कहूं मैं गाय काहू की सुनत नाहीं श्रवण लगाई रे ॥ २ ॥ यशुदा ललन सौंरी जीतब को विधि गोरी वाके मुख लग कह पाइब भलाईरे ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान पहिली की खाली की खाली से ॥

(११६१) बांकी बांकी चितवन मन वश कीन्हा रे बांकी बांकी सैन बांके नैनन की आली जादू सो कछु कर दीन्हा ॥ अन्तरा उठान समकी अनसरल खाली से ॥ श्यामली सुरत अति अनूप चन्द्रवदन सुघररूप यशुदा ललन लाड़िले की छवि मोरा जिया हर लीन्हारे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग विहाग ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(११६२) सदा रँग तेरोही मन मानों ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल खाली से ॥ बहुतिक भाँति ज्ञानकी गलियन प्रेमसुधा बिथरानों ॥ जो तुव रँग बिच रँगो तासु जन नैक न अन्तर आनों ॥ १ ॥ तोरिहि गुण चरचा भल लागत तुवरस रूप लुभानों ॥ लोक विवाद विरोधी हरिजन सों नित रहत दुरानों ॥ २ ॥ जहँ ज्यहि सभा समाज गुनिन नृप तुव यशु लोप लखानों ॥ तब अतिही दुख मिलत मोर जिया तुव रस रहत तृषानों ॥ ३ ॥ विरह डोर सन लगो रहत मन तोर चरन लपटानों ॥ सुनत आनि मुख नाम तिहारो हिय हरियात सुखानों ॥ ४ ॥ जो कहुं ध्यान बटन इत उत चल तौ दुख मीतत मानों ॥ करत उसी सँग तुम यह रँग ढँग

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ज्यहि सँग नेह निभानों ॥ ५ ॥ ऐसी सरल रीति तुम सृजई परत न क्लेश उठानों ॥ यदपि कृपा कर लगहु कंठ कहुँ तौ किनु सुखनु बखानों ॥ ६ ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह वश बासा आशा बानों ॥ माया तम तृष्णा ममता अघ तुम बिन दुख न नशानों ॥ ७ ॥ कृपासिन्धु अशरन जन सुखदा यहि श्रुति सुर मुनि भानों ॥ नैक नजर लखि मेहर करिय प्रभु ललन आपनोहि जानों ॥ ८ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(११६३) तरफत भईं बरसन दिन रतियां पतियहु नहिं पीतम लिख पठई ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालकी खालीसे ॥ कह चूक भई व्रज त्याग दई कुबरी सँग प्रीति भली निभई ॥ १ ॥ तन श्याम को श्यामहि भावत है व्रजचन्द चकोर दशा चकई ॥ २ ॥ कछु लाग नहीं ऊधो उनकी संगत प्रभाव नहिं बात नई ॥ ३ ॥ किन ऊंचन को उन संग कियो नित नीचन की संगत रुचई ॥ ४ ॥ ऊधो तुमहूं सिख देत नहीं क्यहि मिस कठोरता श्याम लई ॥ ५ ॥ व्रज जीवत मृतक समान भई नँदललन वियोग ब्यथा न गई ॥ ६ ॥

ध्रुपद रागिनी परज ॥

चौताला उठान समसे ॥

(११६४) देख सखी बनिआये मोहनजू मनिहारी कर पिटारी चुरिहारी चुरियां रतनारी सारी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ अनुपम शृंगार किये कजरा बिच नैन दिये मृदुल हँसन मधुरि बोलन चाल चलत मतवारी न्यारी न्यारी सुरँगवारी शीश सुही सारी धारी ॥ १ ॥ (भोग) मुत्तियन उरमाल भाल बेंदी दीन्हे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विशाल सुखमयङ्क छवि रसाल चितवन चितचोर प्यारी ललन पिया बलिहारी तन मन धन प्रानवारी ॥ २ ॥ इति ॥

धुपद राग अड़ाना कान्हरा ॥

शूलताल उठान दूसरी से ॥

(११९५) आवत सखि मोहन संग ग्वाल गोहन युथप सोहन चलुरी चलुरी दौर दौर मारुपौर पटनु बाल ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ भगी बोगि मैं दुराय मुहिकहु सखिले छिपाय हा हा बलिहारि जाऊं निरखले न मुहि गुपाल ॥ १ ॥ माधव चित चपल बानि करि है नकब्रान आनि नँदको ललन निबल जान मोसन भिरि है कुचाल ॥ २ ॥ इति ॥

आस्ताई राग बिहाग रूपक ताल ॥

उठान दूसरी से ॥

(११९६) सेजपर सोइये श्यामा श्याम ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ फूलन सेज सजी अति सुन्दर चुन चुन कलिन ललाम ॥ फूलनके तकिया पट अभरन गुँथित रेशमी दाम ॥ १ ॥ कंघी मुकुर इतर जलझारी पीकदान अभिराम ॥ राजति बीड़ी पानदान में मधु मेवादि बदाम ॥ २ ॥ ललितादिक आरूढ़ प्रेम वत तत्पर करन गुलामि ॥ मुद चक झक थक रहीं ठगीसी चँवर करा व्रजबाम ॥ ३ ॥ व्रजधन श्याम सलोनी राधे कृपा-सिन्धु सुखधाम ॥ ललनपिया जन वरिय चरणरति वांछित पूरणकाम ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(११९७) बतियां काहे करेना गोरी चार चार ॥ बाँकी नई

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सी रँगीली छबिवारी नारि ॥ अन्तरा उठान खाली से काहेको पलक ढांक परी सिजिया मलीन बोलत न मुखसन मौनमाही खवलीन लई तैं निठुरतासी धार धार ॥ १ ॥ कह ऐसी मसकरी करी जो न नीक लगी कह चूक परी रूठरही न होत सगी बिनवै ललनपिया बार बार ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी काफी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(११६८) प्रियाको प्रिया जगावे कर प्यार प्यार ॥ तन मन धन मानो सखि वार वार ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ कबहूं दबावत चिबुक लघु करसन कबहूं कपोलन अँगुरिधर परसन ॥ कबहूं अधर गहे बार बार ॥ १ ॥ लाय हाथ माथ सहरावे छिन छिन बारी कबहूं डिगावत पकर शीश कहि प्यारी चूमत वदन पट टार डार ॥ २ ॥ छिनमें मसक कुच उरपै धरत हाथ अँचरा को इंच छिन दांपत वदन माथ चूमत हथेज़ी चुमकार मार ॥ ३ ॥ कबहूं बसन [illegible] लाड़सों करत छैल प्रेमयुति छिनमें करत जादू टोना फैल मन्त्रपढ़ झारैं फूंक मार मार ॥ ४ ॥ कबहूं निरखि छवि फब हरषित हीरे कबहूं युगलकर खींचत परस्पर देखें मुख दियना को बार वार ॥ ५ ॥ अब दयाकर खोल रिस गांठ जिय केरी हाहा करत बिनती मैं बलि बलि तेरी नैक नजर करु चार चार ॥ ६ ॥ भई बहु बार बार बार बार बार बारूं निठुर न लाई बार मन में मिताई धारूं ऐसो का नराजी तेरो बार बार ॥ ७ ॥ अब सब तजु मोरी लाग उर लागु प्यारी हँसि मुख बोल नँदललनपिया दुलारी ललनपने को दीजै टार टार ॥ ८ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्रुपद राग केदारा ॥
उठान समसे ॥

(११९९) बारो बारो कृष्ण थारो बरजत जनि यशुदा ज-नानि वन वन व्रज बीथिन गलिन डोलत फिरत मारो मारो ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ नेक न सकुच मन विचारो निपट कठिन जिय तिहारो ॥ पवन गमन निरखु निठुर कोमल बदन कियो उघारो ॥ १ ॥ (अभोग) करत लाड़ कौनसी बार हमतो तार यही निहारो ॥ कलको लड़का कुँवर कान्ह नजर डर न चितमें धारो ॥ २ ॥ (भोग) कुटिल नारि नर अपार नेहिन न गिन चतुर चारो ॥ नँदको ललनपिय दुलारो चिरजिये व्रजधन सुखारो ॥ ३ ॥ इति ॥

ख्याल घनाक्षरी रागिनी आसावरी ताल आड़ा चौताला ॥
उठान पहिली से ॥

(१२००) मधवा मँगाऊं पिय अधारो सदन सिजिय सजूं सिधारो फुलबगिया सों मलिया सों फुलवा मँगाऊं गेंदा गुलाब बेला चमेली केतकी निवारी जुही मोतिया को हरवा गरवा डारो मुकुर मुख निहारो काको प्यारो लगत रूप यहि है बदन थारो म्हारो ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ तुमतो नितहि आना ताना मारत रहतहौ सुजाना कान्हा आज मुकरके कर लाज काको करे वो सरताज नन्दललन पिय हमरी सों रूप सम्हारो ॥ १ ॥ इति ॥

यार समलिया तैं तो मन लीन्हारे तोरी सांवरी सुरत मोरे मनमें भावे चलो चलो श्याम जोबन रस लीन्हा। इस धुनिपर ॥
ठुमरी रागिनी खंदारीखम्माच ॥
उठान समकी खालीसे ॥

(१२०१) अयसी बँसिया बजाई मन वश कीन्हा तोरी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अधर धरन बांकी गहन करन आड़ी तिरछी परन अँगुरिन की चलन ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ बांकी रसीली सुरीली ऐसी तान लीन्हीं नईसी रँगीली धुनि सुनि जिया मोहा मोरा ललन पिया मैं वारी वारी तन मनसोंरी तोरी सुरतियां बतियां प्यारी चितवन ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी खंदारीखम्माच ॥

उठान समकी खाली से ॥

(१२०२) नई रँगीली सी छबीली त्रिया आई देखो हांरे हांरे नयो यौवन उमँग आछी निराली अति छवि फबकी सुघराई देखो ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ चन्द्रवदन मधुरी हँसन शोभा न्यारी बैसवारी दृगन नजरा कजरा दीन्हे ललनपियारे अति प्रवीन चितवन सुखदाई देखो ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी खंदारीखम्माच ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(१२०३) नैन चतुर चितवन मिलतहि भये गई सखीरी बिसर लाज अंक वेगही युगल हँसि हँसि हरष परसलये ॥ अंतरा उठान समकी अनसरल से ॥ नई रँगीली छबि अमित देख मन-मथ बहु वारि डारूं सुघर रूप ललनपियारे अँग अँग रँग ढँग सर-बस नये ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की रागिनी खंदारीखम्माच ॥

उठान पहिली से ॥

(१२०४) नैन तड़प तरसत बरसनभये एरी सखीरी सजन मिले ऐसे निठुर सुधि बुधि तज सौतन के भवन गये ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ जान बूझ परवश जिय किया सखीरी करके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नेह ललनपिय न मानी मोरी ऐसे निठुर सन दृग अटकन गये ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की समानमात्रिक रागिनी खन्दारीखम्भाच ॥

उठान समसे ॥

(१२०५) चारि नैन जब सन उनसन भये एरी सखीरी कल न परत मोहिं तड़प तड़प तरस तरस हरि वश भये ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ मैनसतावे विरहा बिथा बिकट नँदकेललन बिन नीको न लागे कछु कैसे के जिओंगी बिन दरश परश भये ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग देश ॥

उठान खाली की अगली तीसरी मात्रासे ॥

(१२०६) रँग बरसावत आई आलीरी बांके बांके नैना बांकी बांकी भ्रकुटि बांकी बांकी चितवन बांकी बांकी सैन छवि छाजतरे ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ श्यामली सुरतवाली छवि निरालीसी निराली चाल यौवन मतवाली भोली भाली व्रजकी ग्वाली ललनपियारे छवि लखि रतिपति मोहे चन्दकी चमक दामिनि दमक दाबतरे ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़े की राग देश ॥

उठान खाली की अगली तीसरी से ॥

(१२०७) दरशन लागे अब तो रँग ढँग तोरे छलत चलत छलबलकी चाल मोसे घतियां करके रतिया काके भवनवा जागे॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ अबहीं तक तो जान पड़ी न तोरी रीति प्रीति केरी नँदके ललन कपटी कान्ह जान लियो सौतनके रसपागे ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी समानमात्रिक राग देश ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(१२०८) अकेली मत जैयो गोरी गोकुल गैल ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ तू नवेलि नइ आई नगर यह जोबन जोम उछैल ॥ तोर कुशल हित सिख यहि दीजत हो न तोर मनमैल ॥ १ ॥ बीर बँसुरियावारो नँदको मिल न जाय कहुं छैल ॥ भूलजाउ जैबो पनघट पुनि है बड़ श्याम घतैल ॥ २ ॥ वह रसिया नँदललन उजागर नटनागर के फैल ॥ लखि न तजब बिन फन्द फँसाये दिखिहै पुनि व्रज सैल ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग देश ताल प्रबंध ॥
उठान आस्ताई शूल ताल समसे ॥

(१२०९) नटवर थारो नन्ददुलारो घुंघट पट हमारो टारो लुगरा लिपट फारो चीरन्यारो चीरडारो ॥ (अन्तरा उठान ध्रुपद चारि ताल समसे) हँस हँस मुख चूम चूम कीन्हिस धूम धमारो भारो (पुनः ताल त्योरा समसे) छतियां मसकि लगायो गरवा माल मुतियन तोरो हरवा (पुनः झपताल समसे) पनियां भरत कान्ह अकेली निबल जान (पुनः रूपकताल समसे) झिगर बहु कियो ललनपन लियो (पुनः झूमरा ताल उठान खाली से) बरज हारी मात मोहनवा न मानो मोरमुकुटवारो कियो चितदुखारो ॥ १ ॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(१२१०) रात पियाने ऐसा जादू कियारे गोरी लूटा हमारा रे बाला जोबन ॥ अन्तरा ॥ सासकी दुलारी ससुरकी मैं प्यारी ध्वुरा जेठा ननँदिया के प्रानों की धन ॥ १ ॥ बाबुल की सैंती धरोहर हमारी सारी सारी बिगारी अनारी सजन ॥ २ ॥ यशुदा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ललनकी लगनमें मगन वाके प्रेमै भुलानी रही सुधिहू न तन ॥ ३ ॥

ठुमरी समान मात्रिक रागिनी भैरवी ॥

उठान खाली की अगली तीसरी मात्रासे ॥

(१२११) आजरी बैरिनियां वंशी बाजी कहूं श्यामकी सुन भनक तनक न सुधि बुधि रही काज कामकी ॥ १ ॥ अन्तरा उठान खाली की अगली तीसरी मात्रासे ॥ सोती थी पियाके नीरे वेगिधाई श्याम तीरे तन बिथा बिरहा कीरे बाढ़ी दाह कामकी ॥ २ ॥ मीन मन बेहाल मेरा देरही बन वन में फेरा वंशीवाले का डेरना पाती मँगवो ठामकी ॥ ३ ॥ धीर बिलकुल है न प्यारी दिलको दारुन बेकरारी देमिला मोहन मुरारी दासीहूं बिनदामकी ॥ ४ ॥ सुन मेरी सजनी सँगाती मुझको जग चरचा न भाती नँद ललन दरशन की माती बावरी हरिनाम की ॥ ५ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी खम्माचमल्लार ॥

(१२१२) मोर मुकुटकी लटक छबि सनियां ॥ जियरा लुभाय लियो चितवनियां ॥ अन्तरा ॥ भ्रकुटि बंकु नैना चितचोरन शशिमुख छटा लजत दामिनियां ॥ १ ॥ श्रवण कुंडल नगजड़ित मनोहर मानों झलकति भानु किरनियां ॥ २ ॥ अधर मुरलिया रँग रसभीनी मदन तंत्र धुनि पग पैंजनियां ॥ ३ ॥ उर भृगुलता लसत पीताम्बर मदन फवन भल कमल बदनिया ॥ ४ ॥ नन्द ललन प्रिय रंग रँगीलो श्याम बरन तन बसत मोहनियां ॥ ५ ॥ इति ॥

दादरा जोड़ेका रागिनी खम्माचमल्लार ॥

(१२१३) क्रीट मुकुट वारे डारी मोहनियां ॥ गजब करत मृग दृग चितवनियां ॥ अन्तरा ॥ श्रवण कुंडल द्युति झलक कोटि रवि चन्द्रवदन तन पीत झुलनियां ॥ १ ॥ बारी बैस छवि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धाम मदन तन कोमल हाथ सुहात कमनियां ॥ २ ॥ रघुबर श्याम सलोनी सूरत कटि किंकिणि धुनि पग पैंजनियां ॥ ३ ॥ अवध ललन चिरजियो जबलगि जग सुखद जनन जानकी रमनियां ॥ ४ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी खम्माचमल्लार ॥

(१२१४) मचल रहो श्याम करत ठनगनियां मानत ना सिखवन नँदरनियां ॥ अन्तरा ॥ मांगत चन्द्र खिलौना मोहन देखो नँदसुतकी ढिठपनियां ॥ १ ॥ लेहु लाल मणि माणिक कंचन मनमानी सुबरन फिरकनियां ॥ २ ॥ भर लावत छिन छिन प्रभु लोचन गिर गिर पड़त गोद सों अँगनियां ॥ ३ ॥ उछल परत छिन छिन रिस कर कर छिन गहि फारत झटक झुलनियां ॥ ४ ॥ छिन अँचरा गहि लेत मातको छिन गहि झटकत नाक नथुनियां ॥ ५ ॥ दुखित भई नँदललन न मानत बहुविधि लाड़ लड़ै सनमानियां ॥ ६ ॥ इति ॥

कजरी रागिनी मांझझँझौटी ॥

उठान तीसरी ताल की खाली से ॥

(१२१५) लागो सावन मास सुहावन चलु सखि झूलैं झुलवा ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ झुलवा झूलैं यमुनाकूले तर कदमन बिरवा ॥ रेशमि डोर पटा रतनारे सज मुतियन झबवा ॥ १ ॥ सुघर शिंगार सुधार सजोरी उमँगे जोबनवा ॥ अँखियन अँजना आंज मांज मुख अँगिया अनमुलवा ॥ २ ॥ बँसुरी बीन रबाब मृदँग झनकावैं झांझनवा ॥ सारँग बरुआ देश मलारी गावैं सावनवा ॥ ३ ॥ हिलमिल सुघर सहेलि सलोनी सबहिनले बुलवा ॥ नन्दललनपिय दरशैं परशैं बरषावैं फुलवा ॥ ४ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कजरी जोड़ेकी रागिनी मांझझँझौटी ॥
उठान तीसरी की खालीसे ॥

(१२१६) पिय घर सावन में ना जैहौं कहिदो बाबुल से सखियां ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ मैके रहकर कजरि पुरैहौं तिजियां अभिलषियां ॥ सावन सुखद सनीनो बँधिहौं बीरन के रखियां ॥ १ ॥ नित नव सजूं शिंगार महावर मेहँदी करनखियां ॥ झुलवा झुलिहौं मन मन फुलिहौं सज फुलवन पखियां ॥ २ ॥ बेलपती शिव यती सती के पती चढ़ैहौं चउलखियां ॥ विश्वनाथ के व्रतकर करिहौं ठाकुर की झखियां ॥ ३ ॥ हरि दधिकादों भादों राधा अष्टमि पीयुषियां ॥ नन्दललनपिय जिया रिझै यह लहूं लाहु अँखियां ॥ ४ ॥ इति ॥

कजरी जोड़े की रागिनी मांझझँझौटी ॥
उठान तीसरी की खालीसे ॥

(१२१७) सुन्दर सावन का महिनवा चल सखि खेलैं काजरी ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ हँस मुख बोलैं करैं कलोलैं डोलैं मधुवनरी ॥ कुंजनकूलें झुलवा झूलें बनठन दुलहनरी ॥ १ ॥ युथप ललामा लै व्रजवामा जुबना उमँग भरी ॥ मधुवा पीवें युग युग जीवें धनि यह सुखद घरी ॥ २ ॥ फुलवा फूले ब्यार अतूले छायरही बदरी ॥ रिमझिम रिमझिम रिमझिम मेघवा बरषें बूंदनरी ॥ ३ ॥ रँग रसराती प्रेम पुराती सज चुहीलि चुनरी ॥ नन्दललन सों लाग लगावें पावें सुख दुलरी ॥ ४ ॥ इति ॥

कजरी जोड़े की रागिनी मांझझँझौटी ॥
उठान तीसरी की खाली से ॥

(१२१८) सैयां सोवें ना सेजरिया सावन योंही बीतो जाय ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्तरा उठान खाली से ॥ उमँगे जुबना मदन सतावे रही जवानी छाय ॥ सजना सौतन रँग रस मातो चले न एक उपाय ॥ १ ॥ विरह दुखावे चैन न आवे रहि रहि जिय घबराय ॥ नन्दललनपिय बिनु मुहिं गुरिया घर बाहर न सुहाय ॥ २ ॥ इति ॥

कजरी जोड़े की रागिनी मांझझँझौटी ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(१२१६) चलुरी चलुरी सखि फुलबगिया फुलवा बीने सुन्दर नारि ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ फुलवा बीनैं हरवा गूंथैं करैं गहनवा त्यार ॥ सुघर शिंगार सजें हम तुम दोउ सावनकेरि बहार ॥ १ ॥ यमुनानीरे कदमन तीरे झूलें झुलवा डार ॥ लाय लगन नँदललन से गुरिया गावें राग मलार ॥ २ ॥ इति ॥

कजरी जोड़े की रागिनी मांझझँझौटी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(१२२०) कजरी खेलै क्यों ना गुरियारे गुमनवा काहे कीन्ह ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ जो जीवै सो लहै लाहु यह जग जेन जीवन हीन ॥ बरस बरसके दिन सावनके बड़े भाग से चीन्ह ॥ १ ॥ उनख उदासी केरि उपासी काहे बदन मलीन ॥ चल मिलु नन्दललनपियसों प्रिय का भ्रमना मनदीन्ह ॥ २ ॥ इति ॥

कजरी जोड़े की रागिनी मांझझँझौटी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(१२२१) तोरी थोरीसी ऊमरिया गुरिया गजब करे ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ जुबनामाती रँग रसराती नैनन प्रीति भरे ॥ सैन चलाती हँसि अठलाती चंचलता अदरे ॥ १ ॥ मदन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मतंगी सब रँग रंगी कुंजनबिच बिचरे ॥ नन्दललनपिय रसिक शिरोमणि माती धूमधरे ॥ २ ॥ इति ॥

का भयो ननदी अनोखे पियाको होरी खेलत मोसें

नइरे नईरे इस धुनिपर ॥

होली समान मात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी से ॥

(१२२२) खेलत नित नइ होरी सखी मोरे विरहा संग खिलारी रहतहै ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ वियोग दुल्हैया बनीहि रहतहों संशयकी शिर सारी रहतहै ॥ १ ॥ चुलिया चुनरिया तरही रहतहै नैननसों झर जारी रहतहै ॥ २ ॥ घिरोहि रहत अन्देश अबिर घन सुखनु सुपथ अँधियारी रहतहै ॥ ३ ॥ गम गुलाल रहे गात गहगह्यो रंज रोरि रुचिकारी रहतहै ॥ ४ ॥ क्लेश कुमकुमन की घातनसों निपटहि जियरा आरी रहतहै ॥ ५ ॥ नँदललनहि प्रतिकूल लखत कछु पिय की सौत सँग यारी रहतहै ॥ ६ ॥ इति ॥

होली जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी से ॥

(१२२३) हैं चलरी जहँ गोरी खिलारी मुरारी रहतहै ॥ अन्तरा उठान तीसरी ताल से ॥ लैलेरी पिचकार प्रीति जो प्रेम रंग अधिकारी रहत है ॥ १ ॥ चाउको चँदन अतर आशाको चलु मलु जासु तुषारी रहत है ॥ २ ॥ गोविंद गुन गुलाल गठरी गहु ज्यहि मद में मतवारी रहत है ॥ ३ ॥ ले रति रोरि तोप तिन के तन जिनहित तैं मनमारी रहत है ॥ ४ ॥ चलु मलु अनँद अबिर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोहन मुख यह सुखकी यहिबारी रहतहै॥ ५ ॥ नन्दललन पियके मिलबे को यहि अवसर सुखकारी रहत है॥ ६ ॥ इति॥

होली जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी खम्माच॥

उठान तीसरी तालसे॥

(१२२४) फागमें लागलगाउ श्यामसों यह अवसर सुखकारी रहतहै॥ अन्तरा उठान तीसरी तालसे॥ मनमनसा पुराउ ज्यहिविधि चहि होरीमें अजबबहारी रहतहै॥ १ ॥ दोष अदोष होत सब यहिछिन रोषपरोस न प्यारी रहतहै॥ २ ॥ उरउछाह उत्साहन सों करु लाज निलाजिन न्यारी रहतहै॥ ३ ॥ खुलिये खेलिये नन्दललन मिल हँसि बुलबेकी बारी रहतहै॥ ४ ॥ इति॥

होली जोड़े की समान मात्रिक रागिनी खम्माच॥

उठान तीसरीसे॥

(१२२५) आवत फागुनमास सखी थिरु क्यों दुलरात दुलारी रहतहै॥ अन्तरा उठान तीसरी तालसे॥ गे दिनचारि लखूँगी तुहिका जैसतोरि दरदारी रहतहै॥ १ ॥ निकसजायगो सब इतरैबो बहु जुबना मतवारी रहतहै॥ २ ॥ अबहिं कानि कुल लाज लिपटुरी वह छिन लाज उघारी रहतहै॥ ३ ॥ वहिदिन तोर सराहूंगी रँगढँग जब व्रजधूमधमारी रहतहै॥ ४ ॥ जस तू रसिक तसनन्दललनप्रिय यह पुरमाहिं खिलारी रहतहै॥ ५ ॥ तोरिजोरि भलिमिलई बिधाता दिखिहौंकस रँगदारी रहतहै॥ ६ ॥ इति॥

होली जोड़े की समान मात्रिक रागिनी खम्माच॥

उठान तीसरी ताल से॥

(१२२६) आँक चुकीहौं नारि नबेली तुहिं यकव्रज रँगवारी रहतहै॥ अंतरा उठान तीसरी तालसे॥ सखिनशिरोमणि रसिक

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रसायन तुवकर व्रजपतिसारी रहतहै ॥ १ ॥ कुलव्रजजन तुहि रहत असीसत तोसन फागबहारी रहतहै ॥ २ ॥ हैकृपाल तो सुधि-बुधिपर प्रभु तोरि चतुरता न्यारी रहतहै ॥ ३ ॥ नँदललनहुं तुहिकै अदरावत तनमन सों सतकारी रहतहै ॥ ४ ॥ इति ॥

होली जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥
उठान तीसरीसे ॥

(१२२७) आगलगै जरजाय फागमोहिं पियबिन कछुनहिं नीकोलगतहै ॥ अंतरा उठान तीसरी तालसे ॥ एरी ए ननँदि मोरी जबसों बिछुरी जोरी तोरीसौं होरीकोनाम लिये जी जरतहै ॥ बिरहअनल नितजियरा दहतहै ॥ १ ॥ करूँमैं कहा यतन तजे न पिया सौतन नँदकोललन मोरी यक न सुनत है ॥ मिलन चहत कछुबश न चलतहै ॥ २ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी खम्माच मलार ॥
शूलताल उठान समसे ॥

(१२२८) निपटनिडर डगरबगर मारगमोरी छांड़छैला न गलबैयांडार बराजोरी थोरीछांड़ ॥ अंतरा उठान समसे ॥ बहु-विधि बरजो न माने कान्ह बड़ नदान कौन बानि ठानि नँद के ललन लड़कापनोरी जोराजोरी छांड़ ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी काफी खम्माच ॥
उठान पहिलीकी खालीकी खालीसे ॥

(१२२९) सखीरी मुहिंका निरदइनिंदीया न आई रे रात विरहाबिथासों रहीबिकल न कल जियपिय की मगहेरत रैनियां गवांई नखत गिनगिन ॥ अंतरा उठान समसे ॥ सोलहू सिंगार चारुबत्तिस अभरन सुधार सुमन सिजिया सैयां काज सुघरसी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सजाईरे सेजरियासजाई सोउभइ दुखदाईरे ॥ १ ॥ अवधबद न आये श्याम निरखु उनके कुटिल काम दामदाम कुलचिकाम तन सुधि बिसराईरे सुधिबिसराई नँदललनकी दुहाईरे ॥ २ ॥ इति ॥

॥ आस्ताई रागिनी आसावरी त्रैताल ॥

॥ उठान खालीकी अगली तीसरी मात्रा से ॥

(१२३०) चलिये मीत गोपाल जगावन ॥ अंतरा उठान तीसरी की खाली से ॥ गाय बछा की रछाकर ता सँग चलु बन धेनु चरावन ॥ दधि माखन मधु क्षीर छाक छकि प्रभु प्रसादि रस पावन ॥ गुपाल जगावन ॥ १ ॥ हीरा मोती पन्ना चुन्नी माणिक मणियां लड़ियां रतन की सुहावन ॥ ऐस मुरलियाकी तान प्रान धनहारिमुख सुन हुलसावन ॥ गुपाल जगावन ॥ २ ॥ नन्द ललन ब्रज जन धन जीवन जग अघ ओघ नशावन ॥ सुखद चरन इस्पर-शन करिये प्रभु दरशन मनभावन ॥ गुपाल जगावन ॥३॥ इति॥

सैयां तोरी पैयां लागूं बैयां न मरोर इस धुनिपर ॥

ठुमरी ठाहदून बोलोंकी रागिनी काशमीरी काफी ॥

उठान समकी खाली की खाली से ॥

(१२३१) गुइयां गुसैयां सौं कन्हैया बड़ो दधि चोर ॥ (अथ दून उठान खालीसे) सखन समाज लिये डोलत निलाज घर घर छैला ताकत फिरत भये भोर ॥ गुसैयां सौं कन्हैया दधिचोर ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ ऐसो गिरधारी नँद ललन अनारी दधि माखन को बैरी करे कपट करोर ॥ मोर घर फँदि आवे छीके ताखन निहारे घट गोरस उतारे चख जावेरी किशोर ॥ दे गैयां गरहैयां बछा छोर ॥ १ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी ठाहदून बोलोंकी रागिनी काशमीरी काफी ॥
उठान समकी खाली की खाली से ॥

(१२३२) तिहारी जादूवारी चितवन चितचोर ॥ (दून उठान खाली से) नैना अनियारे कजरारे रतनारे भरी मोहिनी बसीकरन टुनवां करारे ॥ जादूवारी चितवन चितचोर ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ सोहनी सोहनी सांवरी सलोनी छबि तोरी मधुरी मुरलि सुधि बुधि हरलई मोरी नँदके ललन पिय गजब कियोरी अस पलकमार बस कीन्हो मनमोर जादूवारी चितवन चितचोर ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी ठाहदून बोलों की रागिनी काशमीरी काफी ॥
उठान समकी खाली की खाली से ॥

(१२३३) मैंका मा ऐसी भावै बराजोरी तोरी कान्ह ॥ (दून उठान खाली से) कुटिल कन्हाई कैसी करत ढिठाई तैंतो नैक न लजाई करे जिय नकवान ॥ ऐसी भावै बराजोरी तोरी कान्ह ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ यमुन जागीर पनघटन के तीर नीर कहँ से भरन फिर जाये कोइ बलवीर यशुदा ललन बड़ो भयो कुचलन छेड़ै मग में सखिन मांगे जोबन को दान ॥ ऐसी भावै बराजोरी तोरी कान्ह ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी ठाहदून बोलोंकी रागिनी काशमीरी काफी ॥
उठान समकी खाली की खाली से ॥

(१२३४) चलोरी गोरी गोकुल गली को बरजोर ॥ (दून उठान खाली से) मती हो जो सखि तोर सुनु मैं कहूं निहोर सँग ले जनानो जोर बनता बटोर ॥ गोरी गोकुल गलीको बरजोर ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ निरख परें जो श्याम मुरली लकुट थाम पटनु पिछौरी छोर बनवें सलोनी बाम ॥ नँदके ललन वीर लेचल

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यशोदा तीर बोलै जो जरौ तो गाल गुलचन झोर ॥ गोरी गोकुल गली को बरजोर ॥ १ ॥ इति ॥

धुपद राग एमन कल्याण चारिताल ॥

उठान समसे ॥

(१२३५) पार ब्रह्म परमेश्वर परमहि दयाल भक्तवसल सुरन रक्षपाल ॥ अंतरा उठान समसे ॥ नरनायक नरोत्तम नरसिंह नरहर गिरिवरधर नन्दकुँवर श्रीगुपाल ॥ १ ॥ (अभोग) ब्रजपति ब्रज बधूपति श्रीराधापति यदुपति जगपति सुरपति पतिविशाल ॥ २ ॥ खगपति पति मुनिनाधिपति धर्म्मनुपति पशुपतिपति गुणपति नंदललन प्रिया कृपासिन्धु दीनद्याल ॥ ३ ॥ इति ॥

धुपद राग पूरिया ॥

चारिताल उठान समसे ॥

(१२३६) सप्तस्वर प्रगट कीन्हे सा सा रे रे गा गा मा पा धानी सा ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ तीनग्राम ताकी मूर्छना इकीस बाइस श्रुती दीर्घमध विलंपति लै राग भेद ताल सहित ठाह दून तासु दून तिगुन तीव्र ताल अधरकी दून दूनकी समता पुनि समताकी लै तीनों ॥ १ ॥ घात अनाघात सम असम कालको अकाल काल लै की अलय अभरनकी भरन चलन फिरन गलेकी तान लेन देन लाग डांट दपट झपट नोक झोक चतुरता ढिठाई सहित कर अलाप सही तान गान उपज ललनपिया गुरुको अदब कीजै हैं हरि अधीनो ॥ २ ॥ इति ॥

धुपद राग बिहाग ॥

चारिताल उठान समसे ॥

(१२३७) दूर दूर रहत श्याम रूठ रहे हौ मोसे कहा कवन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गुन बिसारी मोहिं बोलत मुखहू न बचन ॥ अन्तरा उठान सम से ॥ कौनलाग जान बैर ठानलियो मोसे कान्ह यकाएक सिगरी रीति प्रीति छांड़ दइरे मोहन ॥ १ ॥ प्रथम तो लगाय प्रेम तन मन रस बसहि कीन्हों अब तज किम विकल कीन्ह हीनभई गति मति मन ॥ २ ॥ कहो कौन प्यारी कीन्ह आज काल गुण प्रबीन ज्यहि हित मुहिं प्रानपति निरादर कीन्हि वरन ॥३॥ (अभोग) ऐसी कह बातभई रुषीरिष रगतनई असि तुहि नहिं उचित निरखुमोरि ओरि मदन मोहन ॥४॥ (भोग) जो जो चित चूकधरी सो तजकर कृपा हरी मैं तो सब बिधि अधीन ललन श्याम तोरी शरन॥५॥इति॥

ध्रुपद राग सूहा सुघरई ॥

शूल ताल उठान समसे ॥

(१२३८) तेरोहि रँग रँगो प्रिय लगोसो जिय अँगो ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ जैसी जैसी तोरी बानि तैसी तैसी धरुं ध्यान तेरोही गुनान गान करत भय भगो ॥ १ ॥ तोरेहि अधीनहूं नँद ललनपिया प्रवीन द्रवहु दीनबंधु दास तोरहितपगो ॥ २ ॥ इति॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान पहिलीसे ॥

(१२३९) निरमुहिया दैया मोरी मटकी पटकदई कान्ह ऐसो ढीठ मानी न कही हां ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल खाली से ॥ ललनपिया सौं अब कैसी मैं हांरे सास रिसाई देगी गारी मोरीलाज गइ हां ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरी तालसे ॥

(१२४०) चन्द्रवदन गोरे गात छबीली नारी छबि न्यारी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

न्यारी चितवन जादूवारी ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल खालीसे ॥ नइ नइ नारि रूपकार अँग अँग शुभ सजे सिंगार लखि बहार ललनपिय वारी वारी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समान मात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खालीकी खालीसे ॥

(१२४१) चलत चित चोरत चाल मदभरी ॥ पगन ठुमकैयां धरत मग मैयां ॥ अन्तरा उठान समकी खालीकी खाली से ॥ घूंघटपट टारे नैनन सैनमारे हेरन हिय हरत करत बसरी ॥ १ ॥ हँसन वशीकरन दशन हीर बरन सोहत मुख पानकी ललित छविरी ॥ २ ॥ वदन शशि प्यारी उमर अति बारी ललनपिया वारी बलिहारी मनरी ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान समसे ॥

(१२४२) गारी दीन्हीं मुहिंका समलिया न नीकी कीन्हीं जाय कहूंगी यशुदा सों मैं आज तोरी कौनबानि नटखट नटवर लीन्हीं ॥ अंतरा उठान समसे ॥ बार बार मगचलत करत मोंसे बराजोरी ठठोली ललनपिया ऐसी कीन्हीं ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान खालीकी अनसरल से ॥

(१२४३) श्यामसुन्दर की मधुर हँसन चितवन जिय बस गइरे ॥ आज चितवन जिय बसगइरे ॥ अंतरा उठान खालीसे ॥ कजरारे बिन कजराके रसरंग भरेनैना सजनी। मन बेगिहरत जादू सो करत दरशत छवि नइ नइरे ॥ सुघर दरशत छवि नइ नइरे ॥ १ ॥ कर वंशीवर अधरधारे स्वर तानलेत मधुरीधुनिसन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तनमन धनवारी ललनपिया छबि निरख छकृत भइरे ॥ श्याम छबि निरख छकृत भइरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥
उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(१२४४) इन नैनन की नइ देख बानि तनमन सुधि हरगइरे ॥ आज तनमन सुधि हरगइरे ॥ अंतरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ उत उलहत हैं रस रूपरंग इत सरसत प्रीतिभाव यक सँग दोउ चाहत दरशन परसन को हरषन हितचित लइरे ॥ दुहुन हरषन हित चित लइरे ॥ १ ॥ उत चाउ उछाउ उमंगभरी इत लाहु प्रवाह प्रभा अगरी घन दामिनिसी छवि ललनपिया निरखत आनँद मइरे ॥ दुहुन निरखत आनँद मइरे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥
उठान समकी खालीकी खालीसे ॥

(१२४५) सकुचि प्रिय पियको निरख सजनी धरकगइँ छतियां लजतभइँ अँखियां ॥ अंतरा उठान समकी खालीकी खालीसे ॥ तुरत उठभागी ननदि ढिगलागी झिमकलागी कँपन सो शशिबदनी ॥ १ ॥ न रति हितकारी उमर अतिबारी सोवत पिय सिजिया न पास रजनी ॥ २ ॥ पियाके डरमारे छिपतफिरैं सारे साजेरहे पगन में पायल बजनी ॥ ३ ॥ सोवत निशि कोरी सासके पास गोरी ललनपन मोहे छबि सुखसदनी ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ कुवँर अन्नप्राशन उत्साहिक पद ॥
ठुमरी राग कल्याण त्रैताल ॥
उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(१२४६) धनि ललनलाल अवतार सुखद शुभसगुन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सकल आनँद स्वरूपधर आगमने वहिबार निहद ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ चिरंजीव चिरजिओ सनातन जबलग महि नभ रबि शशि थापन अन्नपराशन दिवस आज धनि ज्यहि मिस नृपदरबार बिशद ॥ १ ॥ नन्दललन अनुकूल हमारे इष्ट-देव गुरु द्याल अपारे धन्यभाग बड़भागि मनोरथ उपज प्रमोद भये सब दुखरद ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच समानमात्रिक ताल झूमड़ा ॥

उठान समकी खाली से ॥

(१२४७) चतुर ऐसी गोरीसी उमर थोरीरे अजब छबिदारी निपट सुकुमारी ॥ अंतरा उठान समकी खालीसे ॥ हँसन अति बांकी दशन छबि जाकी जलज समताकी दमकवारीरे ॥ १ ॥ कमलदल नैना अरुणद्युति मैना बोलत मृदुबैना अमृत बोरीरे ॥ २ ॥ निरख शशिमुख ललनपिय सुख बिसर गयो दुख निकट सों रीरे ॥ ३ ॥ इति ॥

कंगन मेरो करसों करकगयो रे इस धुनिपर ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खालीकी खालीसे ॥

(१२४८) चलत मग बैयां मरोर डारी रे मुरक गई बँगुरी नरम मोरी नसरी ॥ अन्तरा उठान समकी खालीकी खालीसे ॥ करक गईं चुरियां कँगन करकोरी ॥ कलाई मोरी दुखत दरद भारी रे ॥ १ ॥ हटक सखि हारी न मानो छैल मोरी ॥ लगायो गरवा चोली चुनर फारी रे ॥ २ ॥ निपट निरदैया करत बराजोरी ॥ ललनपिया ऐसो मोहन अनारी रे ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥
उठान समकी खालीकी खालीसे ॥

(१२४९) निरखगोरी पियाको परम हुलसी ॥ झपट झट सैयां डारत गलबैयां ॥ अन्तरा उठान समकी खालीकी खालीसे ॥ परश अँग अँग सों निपट शुभ ढँगसों ॥ पकर कर करसों सिसक सों हँसी ॥ १ ॥ करत रसबतियां मोहनीसी मुरतियां ॥ मिलाये अँखियां सों अँखियां कमलसी ॥ २ ॥ युगल छबि छाजे दामिनि द्युति लाजे ॥ ललनपियाप्यारी छबि जिय में बसी ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी मांड (देशकी) ॥
उठान तीसरी से ॥

(१२५०) रात सों पिय सजनी न आये सौतन लुभाये कल न परत उन बिन मुहिंका ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ नींद न आये दूजे मदन सताये तीजे विरहा दुखाये नँदललन पिय जियरा तरसाये ॥ १ ॥ इति ॥

सामलियाकी लचकचाल मोरे जियमें बसगइरे इसधुनिपर ॥
ठुमरी रागिनी खम्माच ॥
उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(१२५१) नटवर नटनागर बांकी सैन चितवन मन हरलियोरे ॥ मोर चितवन मन हरलियोरे ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल खालीसे ॥ बांकी हँसन दशन द्युति बांकी बांकी निरखन नैननकी भौं बांकी बांकी चलन फिरन शशि मुख रँग ढँग नयोरे ॥ सुखद शशि मुख रँग ढँग नयोरे ॥ १ ॥ बांकी धरन मुकुट माथे पर बांकी भाल खौर चन्दनकी बांकी मुरली अधर बाज स्वर अमिरस उमयोरे ॥ सुघर स्वर अमिरस उमयोरे ॥ २ ॥ बांको रूप

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोहिनी बांकी बांकी झांकी मोहनकी छबि निरख हरष हिय ललनपिया जिय उन सँग फँस गयोरे ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागदेश मलार ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(१२५२) माई लरजतरी म्हारा हीयरा बिन बालम बिकल रहत घरि पल छिन छिन उन बिन घन गँगन आय छिनलाय बदरियां कारी कारी घुमड़त गरजत बरसत मिघवा ॥ अंतरा उठान खाली की अनसरल खालीसे बैरिनरी दामिनि डरपावत उत पपिहा पिय पिया रटत शुक दादुर मोर चकोर शोर सुन कोकिल कूक हूक उपजे इत मदन बिरह सों दुखित प्रान बिन नंद ललन पिय कल न परत जिय तरफत कैसे मिलब मितवा ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच मलार ॥

उठान पहिली से ॥

(१२५३) गेरगयो गवाँर बिंदिया माथे से मोरी घूँघरवा टार नकबेसर दीन्हींडार लिपट चिपट तोरो गलको हार ॥ अंतरा उठान खाली से ॥ बाट चलत जोराजोरी ठठोली कीन्हीं नँदको ललनपिया बड़ो लबार वाके ढँग निहार सकुचि न कछु कहि गइ मैं हार ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी परज ॥

उठान पहिलीकी खाली से ॥

(१२५४) अँखियां सखियनकी लाज कैसे जाऊं पियसों मिलन प्रीत किंकरलै सँदेश आयोरी इन ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ हिय अकुलात दरश काज लाज अरजरही गुइयां कैसी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करुँ नन्दललनपिय बिन मदन बिरह सतावे कल न परत छिन इन ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान पहिली की खाली से ॥

(१२५५) सखिश्याम पनघटकी मग बिचठाढ़ो कैसेके जाऊं पनियां भरन ए मोरी आली ॥ अन्तरा उठान पहिलीकी खाली से ॥ ना चली वह छली बीर सों मोरी ललनपिया प्रबली नवली हूं तो ना करुँगी ना करुँगी मैं रारि खाली ॥ १ ॥ इति ॥

हिंडोला ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(१२५६) झूलत युगल किशोर परसपर ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ छिन प्रिय पैंगन झूंक बढ़ावत मन्द हँसन चित चोर हित अदर ॥ १ ॥ गल बहियां गहिलेत रँगीलो निरख लाड़िली ओर परसकर ॥ २ ॥ मदन मतंग रसिक आनँद भर गावत राग हिंडोरसरसझर ॥ ३ ॥ घन गन गँगन बिराजत दामिनि बोलत हंस चकोर दिवस भर ॥ ४ ॥ ललितादिक सुकुमार सहेली इकटकरहीं निहोर हरष धर ॥ ५ ॥ नन्दललन वृषभानु ललनि छबिपर मनवारि करोर दरशबर ॥ ६ ॥ इति ॥

हिंडोला ॥

ठुमरी रागिनी झँझौटी ॥

उठान खाली की खाली से ॥

(१२५७) सलोनी राधे झुलवत ललिता श्याम ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ रूप रँग नागर मयंक मुख लजत

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कोटि रतिकाम ॥ १ ॥ परस परस्पर लेत बलैयां लै प्रिय प्रीतम नाम ॥२॥ मन्द सुगंध पवन शीतल सुठि ढुरवति मुरछल बाम ३॥ मधुर स्वरन मलार मुख गावत दम्पति छबि अभिराम ॥ ४ ॥ युगल किशोर ललनपिय छबि फब लखि हियहोत अराम ॥ ५ ॥

हिंडोला ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ताल रूपक ॥

उठान समकी खाली से ॥

(१२५८) झिझक झुक झूलत मदन भरी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ गरज घन लखि दामिनि द्युति प्रिय चकित चौंक परी ॥ झपट पट भुज बांह गहि हरि लिपट गइ अँगरी ॥ १ ॥ ढकत मुख पट करत घूंघट लखननहिं नभरी ॥ हँसत पिय ज्यों डरत प्रिय त्यों झुलन सुधि बिसरी ॥ २ ॥ परत पग पुनि कहत जनि जनि झूलन हित हठरी ॥ ललन प्रिय कुम्हिलाय जिय गइ बिसर गति मतिरी ॥ ३ ॥ इति ॥

हिंडोला ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ताल तिवरा ॥

उठान समकी खालीसे ॥

(१२५९) लाड़िली झूलत मान किये ॥ चिबुक चुटकी धर अधर तट झूलत मान किये ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ मन्द रस मुसिक्यात छिन छिन गुन गुनात गरे ॥ लेत पैंगन झूंक झुक झुक अति अनन्द हिये ॥ १ ॥ दशन अधर दबाय गोरी रूप जांच करे ॥ मुकर लै मुख निरखि हरषत नैन नेह लिये ॥ २ ॥ नये रँग ढँग सुछवि अँग अँग मदन मोद भरे ॥ ललनप्रिय शशि मुखपै वेंदी श्याम वरण दिये ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सखि श्याम पनघट की मग बिच ठाढ़ो इसके जोड़ेकी ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान समकी खालीसे ॥

(१२६०) सखी आज मैं पनघट कैसे जाऊं मोर मुकुट वारो लँगरैगो हमसे ढीठ ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालकी अनसरल खालीसे ॥ नवल गात यौवन चुआत बरसत रस रँग दरसत अँग अँग छवि युगल किशोर ललनपिया के छल बल नये नये नित ढँगन डराऊं ॥ आज मैं पनघट कैसे जाऊं ॥ १ ॥ इति ॥

मल्लार ॥

ठुमरी रागिनी धूरिया समान मात्रिक ॥

उठान खाली से ॥

(१२६१) गरज घुमड़ बरसन घन लागे श्याम सखी सौतन रस पागे अनुरागे सरवस मुहिं त्यागे ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ पपिहा धीर न लावत सजनी पिय पिय रटत जगावत रजनी कूक कूक कोकिल किलकारे हूक टूक हिय करत विभागे ॥ १ ॥ प्रबल चाप शर मदन चलावे विरह आग तन दून दहावे चपला चमकावे डरपावे नन्द ललन पिय बिन सुखभागे ॥ २ ॥ इति ॥

मल्लार ॥

ठुमरी रागिनी मलार ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(१२६२) पिय पिय पपीहा भनता बनता सनन सनन पवन पुरवा करत गरज गरज घन नीनीधा नीनीधा नीनीधा ॥ अन्तरा उठान खालीसे॥ लखि मतंग वरषा अनंग विरहा सतावे बन बन जोगन बन रम पिय ढूंढ़न ललनपिया श्याम काज सजु पट

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भगवा सखि कर तोंची उठा उठा उठा रे ॥ १ ॥ इति ॥

मल्लार ॥

ख्याल राग हमीर समान मात्रिक ॥

उठान खालीसे ॥

(१२६३) दमकि दमकि चपलारी चमके डरप डरप जिय जारी मोरी आली ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ गरज गरज घन घुमंड लगत बूंद कटारी नन्दललन पिय बिन जिय मदन विरह शाली ॥ १ ॥ इति ॥ मल्लार ॥

ख्याल रागिनी बहार ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(१२६४) बरसन लागी अँखियां ये बारिरी बिन दरश परश नहिं सखीरी चैन ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खालीकी खालीसे॥ ललनपिया निरमोही श्याम सों प्रीतिकरी गइ मैं हाररी ॥ बिन दरश परश नहिं सखीरी चैन ॥ १ ॥ इति ॥

ख्याल जोड़ेका रागिनी बहार ॥

उठान तीसरी की अनसरल से ॥

(१२६५) परसन लागो अँखियन नेहरी गेहरी करत देहरी शिथिल सुधि मे पियकी मेहरी जिमु न्हा गइ प्रेम रँग सँग ॥ लागो अँखियन नेहरी ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली की खालीसे ॥ विकल करत मन मदन विरह तन नन्दललनपिय बिन न चैन मम अँग ॥ लागो अँखियन नेहरी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समान मात्रिक रागिनी भँझौटी ॥

उठान खाली से ॥

(१२६६) घड़ि पल छिन गिन गिन काटत दिन बिन उन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मनमोहन सौतन दुख ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ बिलम वि-
देश रहे सजनी पिय बिपति रहत नितप्रति अतिही जिय ललन
पिया अब श्यामसुँदर सन कैसे मिलब दरशन परशन सुख॥ १॥

बंशी धुनिसों बजाय बाजत श्रीवृन्दावन रंग घुमड़रहो
सो घन गरजत बादल विमान । इस धुनिपर ॥

ध्रुपद रागिनी खम्माच चौताल ॥

उठान समसे ॥

(१२६७) बंशी बैरन बजाय मदनबान दियो बिधाय बिरहा
विष फौजलाय धाय धाय चढ़ो आन ॥ अन्तरा उठान समसे ॥
श्रवण भनक सुनत माई तन सुधि बुधि सब बिहाई नैनन निं-
दिया गँवाई कल न परत पलक प्रान ॥ १ ॥ अटपट पट पहर
चीर धावत भइ है अधीर पिया त्याग सिजिया भवन भ्रमत फि-
रत वन लतान ॥ २ ॥ नन्दललन मिलन मीत उमड़रह्यो प्रेम
प्रीत जैसे तम छावत घन बरसन जल आसमान ॥ ३ ॥ इति ॥

पिया मैं तो तुम्हरे मिलनको आई रे । इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान पहिली की अनसरल से ॥

(१२६८) नयन लागे नटवरसों मोर सखि निडरभयेरी नहिं
काहूको नेक डरत ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ लाज शरम सो
परम अनहित कर सांवरी सुरत मोहनी मुरतपै अटके अति ॥ १॥
नन्दललन रँग रसके माते नित हेरत रहत उनके दरशकी सुरत॥ २॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(१२६९) कर गहतहो प्रीति करत जो लला तो निबाहु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करन परिहै हमसों ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ नहिं खेल बनाय बिगार दियो यह नेह सनेह लगै दमसों ॥ १ ॥ यहि बात सुशीलनु सुजननु की जो कह्यो सो करो न टरो सम सों ॥ २ ॥ मनलै रस बसकर काज करौ तौ दूर रहो न मिलौ भ्रम सों ॥ ३ ॥ नहिं मसल मिलावन की जिय गौं दिन चारि की चांदनि पुनि तमसों ॥ ४ ॥ मन वच क्रम कर कहै ललनपिया यहि ध्यान धरो जो कह्यो तुमसों ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥
उठान तीसरी की खालीसे ॥

(१२७०) चलि जाओ श्याम हम देखलई तुम्हरी बतियां घतियां छलकी ॥ अन्तरा उठान तीसरी तालकी खालीसे ॥ नित औरन के निशि बसत जाय हमरी जराय छतियां हलकी ॥ १ ॥ हौं अति निलाज नहिं आओ बाज न बिनति की लाज बहु विधि कलकी ॥ २ ॥ जानति लबार तुमहौ गँवार दिन चारि प्यार पुनि रिपु झलकी ॥ ३ ॥ सतसंगति को नहिं चाउ चितै नित नीच प्रसंग रुची खलकी ॥ ४ ॥ है सांच कहन निरदइ को नेह रसबस जस प्रीति रीति अलिकी ॥ ५ ॥ अलि माइल रस रँग रूप चाख पुनि प्रीति तजत कमलन दलकी ॥ ६ ॥ जग नेह सराहन योग वही जिमु प्रीति उजागर पय जलकी ॥ ७ ॥ नँदललन निरखु वृति ऊंखहि तू समता सुखदा सबहिन फलकी ॥ ८ ॥ इति ॥

कजरी रागिनी देशकारकी मांझ ताल दादरा ॥

(१२७१) जो मनभावनको सावन में पाती तो लै सोती सैयां सेजरिया राम ॥ अन्तरा ॥ बम्हना को मुँह मैं घी मीठे से भरती उचरती बधैया बखरिया राम ॥ कुल के जो देवाकी सेवा मैं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करती औ रहती मैं चरनोंकी चेरिया राम ॥ १ ॥ नँदके ललन केरि दाया जो होती सबी सुख सँजोती मैं गोरिया राम ॥ सखियों से हिलमिल के झुलवा मैं झुल्ती औ खिल्ती पियासों कजरिया राम ॥ २ ॥ इति ॥

कजरी जोड़ेकी ॥

(१२७२) सैयां तो सौतनके पाले परेरी मुहिं भावें न सावन की रतियां राम ॥ अन्तरा ॥ रतियां न भावें निंदिया न आवे दुखावे मदन बैरी गतियां राम ॥ बिरहाकी मारी दुखारी मरतहूं कासेकरूं दोदो बतियां राम ॥ १ ॥ सखियां तो घरघरमें तिजियां मनातीं पुरातीं पियासे पिरतियां राम ॥ मैं निर्दयी नँदललनके पड़ी वशमें यह दुख दहे मेरी छतियां राम ॥ २ ॥ इति ॥

होली रागसारंग अष्टमात्री ॥

उठान पहिलीसे ठेकाहोली ॥

(१२७३) गोरी होरीमें कर लँगराई बैरपरोरी साजना ॥ अन्तरा उठान तीसरीसे ॥ सजनीरी सैयांकी गई चोरी भरन जल कोरी मोरी सारी चूनर मसकाई बैरपरोरी साजना ॥ १ ॥ प्रबलरे कृष्णछयल्ल रँगमातो मोसन अठलातो ऐसो नन्दललन अन्याई बैरपरोरी साजना ॥ २ ॥ इति ॥

जाओजी तुमतौ सौतनके हो मीत कान्ह । इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी सरपर्दा ॥

उठान समकी खालीकी खालीसे ॥

(१२७४) ननँदि मोरी मैं ना जाऊं यामुना निडर ऐसो करत ढिठाई मो से कुँवर कन्हाई दूजे छुवत चलत मगमें जोबना कान्ह मैं ना जाऊं यामुना ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी अनसरल खाली

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

से ॥ नन्दललन बड़जुलुमवा बांधे गरवाडार हरवा तोर करको कांगना मैं ना जाऊं यामुना ॥ १ ॥ इति ॥

ख्याल रागिनी भैरवी ॥

शूलताल उठान समसे ॥

(१२७५) शुभघड़ी लग्न मुहूरत मयंक योग योगिनी अभद्रा सुखदा सदा तिथी वासरे पाक ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ मँगसिरे सुमास पूर्ण षटऋतु विलास सरस हरषदायी आज दरश परश पाके भागवर सुहाग भोग योग भागवाले भागजागे अनुरागे नन्दललन मोरे प्रेमछाक ॥ १ ॥ इति ॥

कजरी रागिनी मांझझँझौटी ॥

उठान तीसरीसे ॥

(१२७६) हमसन करत पियरवा काहे रामा ना हरी ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ हम व्रजभामिनि तनद्युतिदामिनि सबगुण रस अगरी ॥ त्याग भोग दधि माखन मिसँरी अदरी छांछ कुबरी ॥ १ ॥ वनितन योग भोग सौतनको हरि माति को निदरी ॥ पै ऊधो मालुम भइ अब प्रभु तजदइ व्रजनगरी ॥ २ ॥ आगलगै जरजाय फाग अरु सावनकी कजरी ॥ हम नन्दललन यकसम सावन सरा न भादों हरी ॥ ३ ॥ इति ॥

कजरी जोड़ेकी ॥

(१२७७) राधारमण सुमिर मन मेरे तेरो सबकारज बन-जाय ॥ अन्तरा ॥ भोग चुरासी गांसी फांसी दुखरासी अधिकाय ॥ नरतनपाय अजहुँ नहिं सुमिरत हरिनाम सुखदाय ॥ १ ॥ यह जग आय कमाय पाप ममता मद में लपटाय ॥ नन्दललनपद पद्म हियेधरु आवागौन नशाय ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कजरी जोड़े की ॥

(१२७८) ऐले राधारमण शरणवा होरिया खेलल फागुन मास ॥ अन्तरा ॥ प्रेमरंग पिचकार प्रीति भर छिरकल सहित हुलास ॥ ज्ञान गुलाल अबिर आनँद को मल मुख भल अवकास ॥ १ ॥ रुचिर रोरि रस घोर छोर छल धरु हित हृदय अबास ॥ मारु कामना कुमकुम काया माया मोह निकास ॥ २ ॥ चन्दन बन्दन नन्दललन तन मलु अतरादि सुबास ॥ प्रेमानन्द मगन ह्वै हरि विधि विलसौ फाग विलास ॥ ३ ॥ इति ॥

कजरी जोड़े की ॥

(१२७९) मोरी लागल पिरतिया रे सांवरिया सँग बीर ॥ अन्तरा ॥ जासु कमल पद सेय सुरासुर लहत मुनी मन धीर ॥ अर्थ धर्म्म अरु काम मोक्ष पद पावत ध्याय गँभीर ॥ १ ॥ शंभु शेष सनकादिक नारद शारद सुमति गहीर ॥ भजत सुरेन्द्र उपेन्द्र नरेन्द्रहु ब्रह्मादिक रणधीर ॥ २ ॥ सातस्वर्ग अपवर्ग व्योम पृथ्वी पताल निधिनीर ॥ पंचभूत पंचीकृत पोषक पोषत सुमिर शरीर ॥ ३ ॥ द्वीप खंड पुर भुवन सिद्धगण शोधिस यहि ततबीर ॥ नन्दललन शरणागति आये व्यापत नहिं भवभीर ॥ ४ ॥ इति ॥

कजरी जोड़े की ॥

(१२८०) होरिया खेलकै सांवरिया दइ बावरियासीहि बनाय ॥ अन्तरा ॥ हुरिया खिलै हरी मति मोरी सुधि बुधि गइ बिसराय ॥ हरी हरी रहि कुंजलतन में हरी हरी गुहराय ॥ १ ॥ प्रीति गुलाल मलो मुख दीन्हों प्रेमरंग हनवाय ॥ नन्दललन मन मोह्यो मेरो वर बांसुरी बजाय ॥ २ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कजरी जोड़े की ॥

(१२८१) भोला भाला डमरुवाला गुरिया बसो मनमोर ॥ अन्तरा ॥ जटाजूट को मुकुट विराजै गंग तरँग शिर मौर ॥ कानन मुद्रा बीछी बाला भाल किसरिया खौर ॥ १ ॥ मदनकदन त्रैनेत्र ज्वाल युत माथे चन्द्र किशोर ॥ चिता भस्म अहि अभरन अंगित सुघर छवि तन गोर ॥ २ ॥ बैल छैल सँग नन्दी भृंगी योगिनि युथप करोर ॥ शृंगीनाद अधीश शिरोमणि अर्द्धांगी मागोरि ॥ ३ ॥ मृगछाला बाघम्बरवाला मुँडमाला गलघोर ॥ जगहित प्याला कर विष डाला काला कंठ बहोर ॥ ४ ॥ जासु सुरासुर सिद्ध सन्तजन सेवत चरण निहोर ॥ सोइ काशीपति विश्वनाथ सों लगी ललनकी डोर ॥ ५ ॥ इति ॥

कजरी जोड़े की ॥

(१२८२) भज मन कैलासी वासी अविनाशी सब सुखराशी भूर ॥ अन्तरा ॥ जाको नाम उदार चारि फलदा मनशा भर पूर ॥ वेद पुराण पुकार कहत यशु त्रिभुवन में मशहूर ॥ १ ॥ जासु जटा बिच वास मोक्षदा मात गंग सुखमूर ॥ जगहित गरल गले बिच राखो पीवत भांग धतूर ॥ २ ॥ चन्द्रभाल हग ज्वाल अंग मृगछाल खाल शार्दूर ॥ ज्यहि सुमिरत सुख सकल सगावत रहत आपदा दूर ॥ ३ ॥ डमरुनाद शृंगि धुनि सुनतहि उड़त अघन की धूर ॥ शंभु ललन हों मगन उमापति पूजेहि दें सुख पूर ॥ ४ ॥ इति ॥

कजरी जोड़े की ॥

(१२८३) गोरी होरीमें चलोगी गोकुल ओरी कुंज मँझार ॥ अन्तरा ॥ होरी खेलो सब सुख मेलो ममता मोह बिसार ॥ काम

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

क्रोध मद लोभ फांस तृष्णाको कर संहार ॥ १ ॥ प्रेम रंग सों रँगहु रँगावो गम गुलाल कर छार ॥ कुमति कुमकुमा फेंक करो आनँद अबीर बौछार ॥ २ ॥ रंजरोरिको दलमल डारो उर मत रखो विकार ॥ नन्दललन पिय दरशौ परशौ यही जन्म सुखसार ॥ ३ ॥ इति ॥

फाग राग सारंग ॥

(१२८४) होरीमें गोरी चोरी ना होरीमें ॥ अंतरा ॥ रँग ड-रिहौं सनिहौं गुलाल मुख थोरी मलिहौं रोरी ना होरीमें ॥ १ ॥ यह गोकुलपुर रसम यहीहै मोरी तोरी खोरी ना होरी में ॥ २ ॥ खेलत फाग नारि सकुचत क्यों तैं नदान कछु गोरी ना होरीमें ॥ ३ ॥ असि चकाय चमकत चपलासी आई मनु इत ओरी ना होरी में ॥ ४ ॥ क्यों अठलात बहुत मनमोहनहै कछु जोराजोरी ना होरी में ॥ ५ ॥ तुमहिं खिलारि रसिक चतुरा बड़ सो जनियो मुहिं भोरी ना होरी में ॥ ६ ॥ छिन धरिहौं पिचकारि पिछौरी चलिहै फिर कछु तोरी ना होरी में ॥ ७ ॥ औरन सों अटको चहि मटको मैं गुपाल कछु छोरी न होरी में ॥ ८ ॥ नन्दललन लड़ियाउ न मोसन छुइयो मोरी पोरी ना होरी में ॥ ९ ॥ इति ॥

व्रजकी धमार ॥

फाग राग सारंग ॥

(१२८५) होरी में जोराजोरी ना होरी में ॥ अंतरा ॥ तुमहिं खिलारि मुरारि अनोखे छोंड़त व्रज तिय कोरी ना होरीमें ॥ १ ॥ जब जानहुँ तुहिं यशुमति जायो चलु मधुवन की ओरी ना होरी में ॥ २ ॥ भुलहि न दूं सब रंग रचैबो तौ कहियो मुहिं गोरी ना होरी में ॥ ३ ॥ निजु पुरि निबल जानि वश अपने करियत सीने-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जोरी ना होरी में॥ ४॥ परि गये फन्द छैल कहुँ मोरे करब कुगति फिर थोरी ना होरी में ॥ ५ ॥ अब चहि जस नँदललन निब हिये ह्यां तो नगरिया मोरी ना होरी में ॥ ६ ॥ इति ॥

फाग राग सारंग ॥

(१२८६) चलिहै ह्यां सीनेजोरी ना होरीमें ॥ अन्तरा ॥ यह बांकुरो नगर बरसानो गोकुलनगरी तोरी ना होरी में ॥ १ ॥ मन मानों रँगिहौं रँगसों मलिहौं मुख रोरी थोरी ना होरी में ॥ २ ॥ कढ़िहौं कसर आज सब दिनकी लली बनै बिनु छोरी ना होरी में ॥ ३ ॥ अब नँदललन न छुरिहौं तुहिं जबलौं रुचि भरि है मोरी ना होरी में ॥ ४ ॥ इति ॥

फाग राग सारंग ॥

(१२८७) मोरी सुधि लिजिय बैलवाला होरीमें ॥ अन्तरा ॥ चोया चँदन प्रेम रँग न्हवऊं भंगपिलाऊं भरप्याला होरीमें ॥ १ ॥ मृगमद केसर कल कस्तूरी मलहुँ अबिर गुलाल गाला होरीमें ॥ २ ॥ मन्दारादि पुष्प सुरपुरसे लाय चढ़ाऊं चन्द्रभाला होरीमें ॥ ३ ॥ लेपहुँ चिता भस्म जो प्रिय तुहिं सजहुँ श्रुतिन बीछीबाला होरी में ॥ ४ ॥ विशद बिस्तरा बाघम्बर को ओढ़न को दूं मृगछाला होरीमें ॥ ५ ॥ शृंगी रजत त्रिशूल हेमको डमरु मढ़ाऊं हिरन खाला होरीमें ॥ ६ ॥ भूषन भुजँग मनोहर मुद्रा गल पहिरन को मुँडमाला होरीमें ॥ ७ ॥ आक धतूर चूर गांजाकी चरस चढ़ाऊं भरथाला होरीमें ॥ ८ ॥ बिसऊं विपुल वृषभवाहनको बनऊं त्यहि हित वृषशाला होरी में ॥ ९ ॥ त्रैदृग आंजनकाज सुराघृत लाऊं पार कजरकाला होरीमें ॥ १० ॥ अतर बोर बाती आरतिकर धूप अष्टगंधीवाला होरीमें ॥ ११ ॥ कामधेनुको क्षीरप्रसादी भोग

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लगाऊं कंदडाला होरी में ॥ १२ ॥ कमलगटा रुद्राक्षसुमिरनी रतनजटित अरपूं आला होरीमें ॥ १३ ॥ उमाललन पितु यहि ममरुचि तुहिं बनऊं होरी को लाला होरीमें ॥ १४ ॥ इति ॥

कजरी रागिनी मांझझँझौटी ॥

उठान तीसरी ताल से ॥

(१२८८) छाई सावन छवि मनभावनि मानो फागुनकी बाहार ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ रंगरँगीली सखियां साजे सुघर सुघर शृंगार ॥ झुलवा झूलैं दहि दुखशूलैं गातीं मधुर मलार ॥१॥ शीतल मन्द सुगन्ध त्रिविध सुखदायक बेहरै ब्यार ॥ रिमझिम रिमझिम मेघाबरसैं बुँदियन परैं फुआर ॥ २ ॥ मैना मोर चकोर कोकिला हंस हरेबा न्यार ॥ कहुं कहुं पिय पिय वन बागनबिच पपिहा रह्यो पुकार ॥ ३ ॥ लैलै बेला जुही निवारी फुलवा अमित प्रकार ॥ दै दृग नजरा कजरा गजरा गूंधैं गलको हार ॥ ४ ॥ कोइ कोइ तीजन सुखरस भीजन रीझन हित चितधार ॥ फुलवन पखियां ढोरति सखियां जोबन जोम अपार ॥ ५ ॥ सुखद सनीनो केर महीनो रँगभीनो त्योहार ॥ नन्दललन अनुकूल आजादिन धनिधनि भाग हमार ॥ ६ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी जौनपुरी ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(१२८९) बरनबरन की बानि भली तुम्हरी मनमोहन प्यारे ॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल खाली से ॥ कौनघरी विधि जन्म दियो तुहिं कठिन कठोर हियारे ॥ प्रेम प्रीतिको नेमानेमी लाजहु लाजन मारे ॥ १ ॥ तनमन मीत कपटको गरजी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अपनेहि रँग मतवारे ॥ ग्लानि न तुहिं इन छल बतियन पर नन्दललन रसियारे ॥ २ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी आसावरी ॥

उठान खालीकी खालीसे ॥

(१२६०) बटोहिया आयो आनँदकी खबर सुनावन ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ प्रीति प्रतीति दृगनसों दरशत सुन्दररूप सुहायो ॥ १ ॥ जानपड़त शुभघड़ी तिथि सायत भागउदय उपजायो ॥ २ ॥ ललनपिया प्यारे दुलारको दै सँदेश मुसिक्यायो ॥ ३ ॥

ख्याल रागिनी आसावरी ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(१२६१) हित शुभ गुणको अंश प्रपंच न जाने गुण को अंश ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खालीकी खाली से ॥ औ प्रतीति सतरूप विलक्षण लक्षित करत निशंश ॥ १ ॥ हाव भाव सुन्दर चलन व्रत दरश परश बहुरीति ॥ इतन में एक न गुन तुममें पुनि ललन मिलब का प्रशंश ॥ २ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी जौनपुरी रूपकताल ॥

उठान समकी खाली से ॥

(१२६२) सनद गुनदा समलिया मोर ॥ अन्तरा उठान सम से ॥ अपने पियकी गुन रसमाती भावत ना कोउ और ॥ १ ॥ रैनि दिना रीझत उनहीं सों लखि छवि फव चितचोर ॥ २ ॥ ललनपिया के प्रभुनायक तुम तन मन वारि करोर ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी जौनपुरी टोड़ी ॥

उठान खाली से ॥

(१२६३) हाथ तिहारे कौन बिकै जो बिकै सो बिकै न बिकूं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मैं बिकाये ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ प्रीति तिहारी कपट की बखरी जनि प्रतीति न बसूं मैं बसाये ॥ १ ॥ ह्वै गयो इस्परशा-स्परश समयकर अब कदापि न भ्रमूं मैं भ्रमाये ॥ २ ॥ दामन दर दामन तरदामन बहु दामन न बँधूं मैं बँधाये ॥ ३ ॥ तुमहीं न मीत प्रीति पुरवन हित तुमसे रसिक विधि बहुत बनाये ॥ ४ ॥ नन्द ललन तुम्हरे मनमानी सोतो करुं नहिं कोटि कराये ॥ ५ ॥ इति॥

ठुमरी रागिनी लहचारी ताल झूमड़ा ॥

उठान खालीकी खालीसे ॥

(१२६४) सजन कासे मनाऊं मन मनशाकी रीति ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ तुमतो रहत नित सदन सवत के करत सदा विपरीति ॥ १ ॥ विरहा अतन तायो पियरो परो भइ निंदिया अनमीत ॥ २ ॥ हाय दई तुमसे हितु मिल कर जीत भई अनजीत ॥ ३ ॥ अस किमि कठिन कठोर भये तुम नन्दललन ममभीत ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी राग कान्हरा ॥

उठान पहिली से ॥

(१२६५) दीरघ उठानसी अटपटी सी अलबेली चाल चलत नबेली नइ नइ नारी ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ मनमथ मद रस रंग ढंग चुआत छबि फब नव चन्द्र गात ललनपिया प्यारे सों परसन पधारी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक राग सहानाकान्हरा ॥

उठान खाली की अनसरल खालीसे ॥

(१२६६) पियापराध नहिं जानो हमरा बिसरो बार आवन को तुम्हरा ॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल खालीसे ॥ जह कारन सुख सेज न साजी दीपक बिन मंदिर तम रमरा ॥ बिसरो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बार आवन को तुम्हरा ॥ १ ॥ लखि आगम प्रिय मुरत अनँद पिय अंक भरत मनु शशि सुठि बदरा ॥ बिसरो बार आवन को तुम्हरा ॥२॥ राज रजो राजीहूं ललनपिया चिरजिओ मोर मुहन दृग कजरा ॥ बिसरो बार आवन को तुम्हरा ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी राग अड़ाना कान्हरा ॥

उठान खाली से ॥

(१२६७) कजरा कापर आंज़ूं बिंदिया माथ झलक अलक मुतियन की मांग सिंदुरा सुहाग मंजन मुख ताम्बूल किमि राजूं ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ रे मन मतंग मदमातो भ्रमत डोलत वृथा इत उत रँगीले ललनपिय प्यारे कृष्ण चरण लगु तो दुख सों भाजूं ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी राग दरबारी ॥

उठान तीसरी से ॥

(१२६८) कारी कारी कमरी लकुट मोरी कहां धरी मैया बतादे मोहिं ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खालीसे ॥ जनन मनन रंजन कारी रँग ढँग रस रागवारी दे हमारी मुरलिया री मात म्हारी ललन कमल चरन वारी तोरी ॥ १ ॥ इति ॥

टप्पा समानमात्रिक रागिनी काफी ॥

उठान खालीकी अगली तीसरी मात्रासे ॥

(१२६९) सामने न घण आंदा बे सैयां घरना बसदा मांडा ॥ अन्तरा उठान खालीकी अगली तीसरी मात्रासे ॥ थांडी उमँग मांडी प्राणदी बैरण थोर दिवस मांडी माणले साणूं पिय सँदेशवा पठांदाबे ॥ १॥ छिण छिण घुमण गरज चौकांदा छिण कौंधा लहकांदांबे झर बूंदन लांदा ॥ २ ॥ कोकिल कूक दुरांदा दादुर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पपिहा प्राण खिझांदावे बिन ललनपिया बिरहा सतांदा ॥ ३ ॥ इति ॥ ठुमरी रागिनी भूपाली ॥

उठान पहिली की खालीसे ॥

(१३००) जी राजी मोरा मदन को आगम लखि मन मतंग रहतरी आली ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी अनसरल से ॥ दृग रँग रस जांचन लागे पागे प्रेम प्रीति रसिक बने रहत गुइयां ललन पिय जिय बसो वनमाली रहतरी आली ॥ १ ॥ इति ॥

ख्याल राग एमन ॥

उठान खालीसे ॥

(१३०१) रे मोरे योगी आयो जाके गल मुंडमाल ओढ़े मृग-छाल भस्म चिताकी तन विशाल ॥ अन्तरा उठान खालीसे ॥ शीश पै जटाको जूट सोहत गंगकी तरंग तीन नेत्र ज्वाल बाल चन्द्र भाल छवि रसाल अंग व्याल ॥ १ ॥ अन्तरा उठान तीसरी से ॥ शृंगी धुनि नाद पुरित अर्धअंगी संग सोहत नीलकंठ गरल धारी द्वार मोरे ठाढ़ो नन्दीगण पै सवार डमरु की कर ढुंकार कृष्ण नामको अधार दरश भिक्षा चहत योगी सुन वच नँदरानि धाईरी गोद लैके ललन लाल वांछित फल लहि अभेव आशिर्वाद अमर देवि गिरिजा मनमुदित शंभु भये निहाल ॥ २ ॥ इति ॥

मल दीन्हा सखी समलिया अबिर मोरे । इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी खम्माच ॥

उठान तीसरीकी खालीसे ॥

(१३०२) कैसी कीन्हीं तैंने मोसे प्रीति कन्हैयारे कपटी क-ठिन कठोर निपट निरदैया मीत गुरन लागे करके नेहा सों अबहीं सों यह रँग ढँग करन लागे छलन लागे भलन लागे भलन लागे ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अन्तरा उठान समकी खालीसे ॥ चारि दिनन केरी चांदनि फिर अँधियारो पाख यह मसल न करु मितवा मोरे तुझ तोरी तो बात मैं जियसों जात मन समुझ ललनपिय मिनति मोर करु सांचो नेह नहिं तोर पलागे तोर पलागे तोर पलागे ॥ १ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग एमनकल्याण ॥

चारिताल उठान समसे ॥

(१३०३) काहूको दुशाला काहू मोतिनकी माला काहू तुरँग विशाला दै कीन्हिस निहाला है ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ काहू काहिं ग्राम धाम पीनस गज ताम दाम जड़ित जड़ाउ हीर माणिक कराला है ॥ १ ॥ (अभोग) काहूको खिलत खजाने सुख संतति मरदाने काहूको कियो नवाब बादशह नृपाला है ॥ २ ॥ (भोग) काहू को सुरेश नन्दललन प्रजेश कीन्हों तूही दयाल चतुरदशपुर रखवाला है ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरीकी खाली से ॥

(१३०४) तुम काहू के न हौ असके बसके रसके चसके हित जोरतहौ ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ रसरूप पदारथ देखो जितै बिन जूठ किये नहिं छोरतहौ ॥ १ ॥ लै स्वाद न वाद करो फिरतो यकसंगहि प्रीति को तोरतहौ ॥ २ ॥ अपनो मतलब कर दृग उठाय नहिं हेरत अस मुख मोरतहौ ॥ ३ ॥ चित चोरत छल नहिं छोरतहौ विष घोरत काहूके न होरतहौ ॥ ४ ॥ बहु रंग रँगौ जी ठगौ न अँगौ औरन लय मनन बटोरतहौ ॥ ५ ॥ झकझोरत बिरहामें बोरतहौ यह कह यशु ललन अरोरतहौ ॥ ६ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बारी मैंना जैहौं रे। इस धुनिपर ॥

ठुमरी रागिनी त्रिन ॥

उठान समकी खालीसे ॥

(१३०५) प्रान मोरारे पिय बिना घबरात कैसी करुं सजनी मीत समलिया सों नेहा लागो घरि पल छिन कल न देत बिरहा बैरी मनौज ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ कौन यतन करपाऊं सँदेश सपने में जबसे पिय देखे तब से जिया नन्दललन बिन तरसे मीन जलहीन जैसे घेरी दुख फौज ॥ १ ॥ इति ॥

ख्याल राग एमनकल्याण ॥

उठान तीसरी से ॥

(१३०६) देवदेव दान दे तू मुहिंका कमल चरण की भक्ति वरदान सो सनमान दे तू मुहिंका ॥ अन्तरा उठान पहिली की खाली से ॥ हूं मैं बल भरोस आसरे तोर जीवन तू मोर मोरी का लाग जान सुधि बिसारी नन्दललन श्रीविहारी ध्यावत मैं तुहिंका ॥ १ ॥ इति ॥

ख्याल राग एमनकल्याण ॥

उठान खालीसे ॥

(१३०७) सांवरी सुरतवारे सांवरिया मोरा मीत मुरारी मिलजा अबतो देर न कर ॥ अन्तरा उठान पहिली की खाली से ॥ इतनी बैस ध्यावत बीती तुहिंका मन वच सों क्रमसों नेक नज़र कृपा की कर निहरु ललन पिया बिनवत दास तोरा करे निहोरा ॥ १ ॥

ठुमरी रागिनी काश्मीरी खम्माच ॥

उठान पहिली की खालीकी खालीसे ॥

(१३०८) नाथ विधि हमरा बेड़ा पार लगैहौ बेंड़ा समय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कलिकाल का ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ भवनिधि गहरो अगम कुकर्म्म जल लोभकी नाव चढ़ो बिहरत सँग असत खिवैया मद बल्ली गहि थाह लत खुश थलकी नित अंतको चेत न कछुक नाथ असि अधम अजापी ललनपिया ताकी कब बिपति मिटैहौ ॥ १ ॥ इति ॥

आस्ताई रागिनी मुलतानी ताल तिवरा ॥

उठान समसे ॥

(१३०९) यमुना केर हनैबो तजु न नीको आली प्रबल वनमाली वाही डगरिया में डोलत रहतरी ॥ अन्तरा उठान सम से ॥ तैंतो अति चतुरई करत बहु प्रात जात सांच सो सबपै कोऊ दिवस मिलजाय तब पति जायगी छिनमें बिगर सुन एरी ननँदिया है अपनि लाज अपनेहि कर वोतो ललन नटखट का तू न जानतरी ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(१३१०) जब देखो तब नइ बात घात बिन परकी श्याम उड़ावतहै॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे ॥ ललितासौं आनि कही हमसों प्रिय तोपर आज रिसावतहै ॥१॥ ह्वां जाय लखो तौ कछू न कछू इतकी उत झूठ लगावतहै ॥ २ ॥ वाके दिठई कछु बांट परी इन बातन कह सखि पावतहै ॥ ३ ॥ भल बानि न नन्द ललनकी सखी ऐसेहि नित मोहिं खिझावतहै ॥ ४ ॥ इति ॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(१३११) तुम रसके रूप कहाय कृष्ण रसिकनके सब गुण

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोरतहौ॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीसे॥ समता को न भाउ न चाउ चितै लबराउ को लिये हिलोरतहौ॥ १॥ छल कोह न मोह न छोह बिछोहको जोह वियोग बहोरतहौ॥ २॥ जग नेहको खेह कियो अजहूं अनरीति उछाह न छोरतहौ॥ ३॥ रँग राचो न जान परै तुम्हरो क्यहि काज ललन हित जोरतहौ॥ ४॥ इति॥

ठुमरी जोड़ेकी समानमात्रिक रागिनी झँझौटी॥

उठान तीसरीकी खालीसे॥

(१३१२) इन ढँगन न प्रीति निभैगी श्याम अबहीं सों यह रंग दिखावतहौ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खालीसे॥ दिन चारहु प्रेम किये न भये इत उत जियरा भटकावतहौ॥ १॥ केहि अवधि सों नेह कियो हमसों उन बातन ख्याल न लावतहौ॥ २॥ निचपनकी न बानि तजो अपनी छलकी प्रभुता प्रकटावतहौ॥ ३॥ ललिचावत पर धन पै जो ललन क्यों निज धन हिये न लगावतहौ॥ ४॥ इति॥

ठुमरी रागिनी भैरवी॥

उठान खालीकी अनसरलसे॥

(१३१३) जन गरीबनिवाज शाह समलिया मोरमुकुट वाला मोरारे स्वामी॥ अन्तरा उठान समकी अनसरल खालीसे॥ दीनबन्धु दयासिन्धु आनँदकन्दरे गोकुल चन्द बन्दन जगजीवन प्रान ललन नन्द वारे कन्हैयारे प्राननाथ जन पति राखन अन्तर्यामी॥ १॥ इति॥

नृता मृदंगाक्षरी तराना समानमात्रिक राग मालकौश त्रैताल॥

उठान समसे॥

(१३१४) तुन्तिरकिट तिरकिट तक् तिरकिट तीं तात्ता तीं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ताता तीं ताता (अअअअ) तुन्तिरकिट तिरकिट तक् तिरकिट तीं ताता तीं तात्तिक्षिक्षिक्षाना तनना तिक्षिक्षिक्षाना तनन तनाना ताना॥ अन्तरा उठान समसे॥ तोमतनाना ताना ताना नारे नारे तनन तनन तन तदाआरे तनन नारे द्रिम द्रिम तोमतोम तदानी तदरे तदारेदानी दानी ओ दानी तादानी ताधा तकिणानधा थुंतिट्टेधा ताधा किणानधा किणानधा॥ १॥ इति॥

ठुमरी राग मालकौश॥

उठान तीसरीकी खालीसे॥

(१३१५) अपनो अवधिपै लूंगी मैं सैयां समुझ जिय सजनी खूब लेरी तोसे॥ अन्तरा उठान तीसरीकी खालीकी खाली से॥ अनत कहूं न जान पावे सीधो तुव घर सिधावे फाग खेल गहा जैयो पियकी मोहिं बैयां॥ समुझ जिय सजनी खूब लेरी तोसे॥१॥ तोरिहि मुहिं नेहचै जिय देखु हँसत ललन प्रिया इनकी तू जानतिहै ढँग ढँग में लँगरैयां॥ समुझ जिय सजनी खूब लेरी तोसे॥ २॥ इति॥ ठुमरी राग सूहा॥

उठान तीसरी की खाली से॥

(१३१६) मोरी कनक मुँदरिया खोगई बलमा ले ढुँढ़ाय अपनी सिजियापै देख कनक मुँदरिया खोगई॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरल खाली से॥ हीर जड़ित मानिक अमोल मोरी अँगुरि से का लइ सजन खोल नँदललन सच कहिदो भई सो भई॥ १॥ इति॥

ठुमरी रागिनी सोहनी॥

उठान पाहिलीसे॥

(१३१७) एएजी ननँदरानी सेजरिया मोरी ना सजो गारी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बकैगो तोरो बीरना मुहिं कहूं लखैगो जोरी बात यह ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ है यह अनरीति कृपा नेह तुम्हरो उर प्रकाश मानरी मत लजाउ दोष जामें लगत मोहिं ललनपिया प्यारेकी सौं तोहिं मैं डरात यह ॥ १ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान पहिली सें ॥

(१३१८) मन मनशा की काह कहत बलमा प्रानपती प्राना धार जीवनप्रान प्राननप्यारे हम तुम्हारे तुम हमारे समालियारे हांरे ॥ अन्तरा उठान समकी खाली से ॥ किमि दुराश्रो कारन कारे यशुदा ललन नँददुलारे तुम्हरे मनकी तुमहीं जानो कि धहुँ जानो वो विधनारे हौं तो निरख यही कितनो नेहा जिय तुम्हारे हिय हमारे ॥ १ ॥ इति ॥

ध्रुपद आशीर्वादी रागिनी अलहिया चारिताल ॥

उठान समसे ॥

(१३१९) प्रेमिक मुकुर सुरत कलइ लाजवाब जड़ी मढ़न कुशलपत्र पेखी शुभहित अथोरे की ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ रसिकनु सम भाव भावना आदर्श दर्श पर्श लगन दिन थोरे की जनात दिवस घोरे की ॥ १ ॥ (अभोग) प्रीति मुख मोरे की धौं दृग सों दृग जोरे की छिपात नाहिं चूनरि चित्त नेह रंग बोरेकी ॥ २ ॥ (भोग) तोरे मन मोरे की सुप्रीति उभय ओरेकीरे हृढ़ित नन्द ललन राखै ललित लगन जोरेकी ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी अलहिया चौताला ॥

उठान समसे ॥

(१३२०) उन्नति उतसाहनै उछाहनै उपावन रुचि रीति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

अंकुरावन भल भावनै भलाईं छै ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ आन बानि पावन मृदु मोदन उपजावन जौ लालसा लगावन धौं नेह के गुसाईं छै ॥ १ ॥ (अभोग) रसन की रसायन विषवादन बहावन बुधि बोध वृद्धि लावन प्रद प्रीती सवाईं छै ॥ २ ॥ (भोग) धनि धनि नँदललन तोर चहुँदिशि सुघराईं छाईं सकुचैं बड़ियाईं भनत तुम्हरी बड़ियाईं छै ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी सुघरई ॥

उठान तीसरी की खालीसे ॥

(१३२१) गागरिया मोरी गेरगयो ऐसो ढीठ कान्ह मुरली वारोरे ॥ अन्तरा उठान पहिली की अनसरल खाली से ॥ देख सखी कुंजन में जा छिपानो कहिं जाने न पावे नँदललनै लीजै घेररे ॥ १ ॥ इति ॥

दादरा राग देश ॥

(१३२२) बिन दरश परश श्याम ऊधो अब न सरब हो ॥ अन्तरा ॥ बिसरो सुख खान पान निशिदिनको चैन चैन निंदिया नैनन हिरान कल न परबहो ॥ १ ॥ कहिये हमसों जो भान तुमहीं सँग करें पयान जासों प्रभु जायँ मान सोई करबहो ॥ २ ॥ पठईं पतियां अनेक उन कियो नहिं ख्याल नेक निठुर नंदललन सौत कबधौं तजबहो ॥ ३ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी सिन्धुखम्माच ॥

(१३२३) हमारा सांवरा सरताज ॥ अन्तरा ॥ जासु भरोस रहत निशिवासर पूरन पूरनकाज ॥ १ ॥ लकुट कमरिया मुरली वाला जगजीवन व्रजराज ॥ २ ॥ आरतनाथ द्वारको किंकर ललन शरण महराज ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सांचे मनके मीता रघुवर सांचे मनके मीतारे। इस धुनिपर॥

भजन रागिनी खम्माच॥

उठान खालीकी अनसरलसे॥

(१३२४) मूढ़ सुधारु कर्म्म तजु तृषणा मिथ्या जक्क असाररे॥ अन्तरा उठान खाली से॥ अर्थनु लगि अनर्थ जनि करु सत संगहु असत्य बिसाररे॥ घोर निशा ममता चाविद्या मोह निद्रा करु क्षार रे॥ १॥ श्रीगुरु वचन प्रात दरशत ध्यानाम्बुहि तन प्रक्षाररे॥ काम क्रोध मद लोभ अंग मल विष्ठा मूत्रनु टाररे॥ २॥ कर दातुन उपदेश दन्त मुख गँध दुरवाक्यनु झाररे॥ विमल तड़ाग मज्जु सानँद शुचि घिरु दृढ़ आसन माररे॥३॥ भस्म अखण्ड लेप विषयनु तजु अन्तर शुद्धि सँचाररे॥ ज्ञान भानु भा दीक्षित ही जपु सोहं मन्त्र ॐकाररे॥ ४॥ लखु आतमा निज रूप उपाजै पूर्ण विराग अपाररे॥ श्रीनँदललन चरण रति लहु यहि तत्त्वमसी श्रुति साररे॥ ५॥ इति॥ दादरा राग देश॥

॥ (१३२५) सजनी सुजान श्यामसों क्यहि विधिसों मिलब-हो॥ अन्तरा॥ जब सन छाये गुपाल मधुवन कुब्री के नाल तब सन सुख सकल शान्त क्रान्त भयब्रहो॥ १॥ भोगिन भामिनि वियोग सौतनदइ सुख सँयोग आली हरिको यह योग रीति लहब हो॥ २॥ कहुँ चलु ऊधो से भेंट व्याकुल व्रज दुख दपेट कबलौं अब नन्दललन मेहर करबहो॥ ३॥ इति॥

॥ तराना रागिनी भैरवी॥

उठान खाली की अनसरल से॥

(१३२६) दीम तनूम तन देरना तदीयन तोम तोम तारे तदरे दिर दिर दिर तुम दिर दिर दिर दिर दिर तदानी उदितन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दिरना दीम तादियन तानाना दिर दिर तानानाना दिर दिर दिर-दिर तानानाना दिर दिर तानानाना तदीम ॥ अन्तरा उठान पहिली से ॥ ता तनाना तुम दिर तदियन तुम दिर दिर दिर तदियनरे तारदानी दारा दानीरे तोम तोम तदिरना दिरना दिरना तनानाना दीम तूम ताना देरना तदियन ॥ १ ॥ इति ॥

दादरा रागिनी भैरवी ॥

(१३२७) हमरे श्याम भये मधुबनियां ॥ अन्तरा ॥ चन्द्र वदन सी तज कामिनियां मन बसगइ कुबिजा सवतिनियां ॥ १॥
यह अनुचित अचरज कहें कासों हमका योग भोग कुबजनियां ॥२॥
लखु अवसर अवकास करमगति कुबरी कृष्ण करी महरनियां ॥३॥
सत समरथ नहिं दोष ललनपिय व्रज दुर्लभभे हरि दरशनियां ॥४॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान पहिली की खालीसे ॥

(१३२८) यशुदा के कान्ह रुक्मिनि के प्रान मुकुटधारी मोहनी मुरतवारे सोहनी सुरतवारे बनवारी तोरी बलिहारीरे ॥ अन्तरा उठान तीसरी की अनसरल खाली से ॥ मीत समलिया बसो भवन उर जन तुम दरशन मन की लगन निशिदिन ललन पिय प्रान अधारिरे ॥ १ ॥ इति ॥

दो० वर अमोघ दाता समुझ शंकर दयानिधान।
ललन शरणगत ह्वै बहुरि यह पद कह्यो बखान ॥

भजन रागिनी भैरवी त्रैताल ॥

उठान खाली से ॥

(१३२९) शम्भू दरश दिखादो हरिको शम्भू दरश दिखादो हरिको ॥ अन्तरा उठान खाली से ॥ निशिदिन चंचरीक मन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोहित रस भावत पग इन्दीवरको ॥ मन वच क्रम कर धारिए यह प्रण करहु सनाथ दीन किंकरको ॥ १ ॥ नितप्रति खोज क-रत परसन विधि तुमबिन शिक्षित कोउ न डगरको ॥ कृपा करहु जन जान सनातन हावभाव लखि मम अन्तरको ॥ २ ॥ बहु जन पतित किये पावन भव तारण भारण भीर गहिरको ॥ पामर की यहि अरज गरज गिरिजापति सकरहु वेगि अपरको ॥ ३ ॥ मम कुलदेव पूज्य जग जाहिर सोइ भरोस बल निश्चय वरको ॥ त्राहि त्राहि शरणागत शंकर ललन तिहारोहि चाकर घरको ॥ ४ ॥

दो० है आकुल विनयो ललन हरि रति दरशन हेत ॥
प्रकट स्वप्न शिव मन्त्र मुहिं दियो प्रमोद समेत १
शम्भु कृपा शुभमति भई पूरण मनशा मोर ॥
रही रहाई शोधि हैं जिय दृढ निश्चय घोर २

भजन रागिनी झँझौटी त्रैताल ॥

उठान तीसरी की खाली से ॥

(१३३०) शिव सों न देव दूजो दयाल पूरत पूरण सेवक सवाल ॥ अन्तरा उठान तीसरी की खाली से ॥ छिनकी छिनमें पलकी पलमें जनको जरूर करदें निहाल ॥ १ ॥ जिन अरज करी तिन गरज भरी प्रचरी हर वर गति सर्व्वकाल ॥ २ ॥ मोपर सहाय उर कृपालाय मनकी मनशा दइ पुरैहाल ॥ ३ ॥ जय जय महेश भोलेश भेष ललनै जन मिलवहु नन्दलाल ॥ ४ ॥ इति ॥

भगवत् की विनय ॥

ठुमरी समानमात्रिक रागिनी खम्माच ॥

उठान खाली की अनसरल से ॥

(१३३१) मोपति प्रभु तुम हाथ नाथ तुम कह चित धरो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धरोरे॥ अन्तरा उठान खालीकी अनसरलसे ॥ मन माने अव-लोक दयाकर चहि रिस करो करोरे॥तुहिं तज कहां जाउँ तुम बिन नहिं मोर सहायक कोउ जरोरे॥ १॥ हौं प्राचीन विदित पति-तनपति अजपा खरो खरोरे॥ विमुख रह्यो ताकोहि फल भोगत बैठरह्योसब कर चपरोरे॥ २॥ जैसोहूं तैसो अब निबहो भलो बुरो तुम्हरोरे॥ मातहि पिता सम्हारत सुतको बिगरे बनो बनो बिगरोरे॥ ३॥ हो अनाथके नाथ निवारहु नन्दललन जनको अदरोरे॥ अब सरकार तुम्हार द्वार दरबार के आनिपरोरे॥ ४॥

॥ ठुमरी घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥

उठान खालीकी अगली तीसरी मात्रासे ॥

(१३३२) करम कुबजा को कैसो कैसो जगो मोर मुकुटवारो हमरो पिय सांवरिया वाके रस बसहि पगो॥ अन्तरा उठान खाली की अनसरल खालीसे॥ करनी सुकृत सुभग कर्मनकी जग जन कीरे जान परत न कबहो उदित ललनपिया हरिके चरन अनु-रगो॥ १॥ इति॥

ठुमरी घनाक्षरी रागिनी भैरवी ॥

उठान पहिली तालसे ॥

(१३३३) अब तोरे औरहि दिन दुलरी न वीथिन बिहरैरी व्रज नगरी सो॥ अन्तरा उठान तीसरीकी अनसरल खालीसे॥ भयो तोरो अधिक सलोनोरी आनन लोचन शानधरी रे जोबन जोम जमावत आवत अँग अँग नइ छबिरी सो॥ १॥ क्यहुके जाय मतभवन लाड़िली अपनी न तज बखरी रे ह्यां के लोग फि-रत मदमाते फागुनके दिनरी सो॥ २॥ तोरे जोबनवाने धूमधरी है चहुँ दिश धूमपरी रे क्यहुकी दीठ कहुँ लगै न तुहिं मुहिं यह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

डर घरी घरी सो ॥ ३ ॥ पल पलकी मैं कुशल मनावत तू नहिं समुझतरी कहिनी अनकहिनी कहिहारी तैं तबहूं न डरी सो ॥ ४॥ निचलीरहु कुलकानि धारु चित नहिं नदान कुछरी नन्द ललन बटमार रूपको मिलतहि ले ठगरी सो ॥ ५ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी बरुवा झपताल ॥
उठान समसे ॥

(१३३४) बेगि दरश दिखलाजारे मुहिंका तोरे बिन जिय घबराय समलिया ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ बहुत गई रहिगइ पिय थोरीरे तामेहुं नितहि घटाय समलिया ॥ अब कबलौं तरसा-येहि रखिहौ तुम बिन कोउ ना दिखाय समलिया ॥१॥ हौं मन सों रुचिसों जन तेरो सब जग रह्यो जनाय समलिया ॥ तोरी शरण गहि दामन तुम्हरोरे मोरी सुधि दे ना भुलाय समलिया ॥ २ ॥ गरज बावरी है गरीबकीरे अरज करत गुनगाय समलिया ॥ है मोरी बात हाथ प्रभु तोरेहि जनकी देहु बनाय समलिया ॥ ३ ॥ तुम अन्तरघट की सब जानत तुमसों कछु न छिपाय समलिया॥ निज जन जान बेगि अपनावो ललनकी करहु सहाय सम-लिया ॥ ४ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी भैरवी चारिताल ॥
उठान समसे ॥

(१३३५) तूही को मानत मनावत अरु ध्यावत बसावत हियमाहिं गुननु गावत जुहारे नित ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ जा-नत जनावत अजानत जतावत अघावत न पावत तुव माया अपारे नित ॥ १ ॥ (अभोग) भावत भवावत सुनावत सुझावत सचावत जनन काहिं सुयशु सुधारे नित ॥ २ ॥ (भोग) नन्द ललन आपनाइये अधीन जनै मन रुचि मम पूर्णकीजै शरणहूं तिहारे नित ॥ ३ ॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्रुपद रागिनी सोहनी चौताल ॥

उठान समसे ॥

(१३३६) भ्रमनु को मिटावत जो गावत तिहारे गुण पापन नशावत जो ध्यावत यकबार नाम ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ हिया हुलसावत सुख संपति बढ़ावत नित बिपति दल बहावत परखावत शुभ धर्म्म काम ॥ १ ॥ (अभोग) कामना पुजावत हित भावना सृजावत प्रण प्रेमधार ध्यावत तेहि ध्यावत तुम अष्टयाम ॥ २ ॥ (भोग) नन्दललन तुमसों लौ लाय चारिफल कमाय औन गौन छूटजाय बासत वैकुण्ठ धाम ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग पूरिया चारिताल ॥

उठान समसे ॥

(१३३७) तुमहीं को जान मान ज्ञान भयो एतो मुहिं यशु को तुम्हारेहि मैं सदा सों रटतहों ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ भाषत पुराण हैं प्रमाण एक सत्य तुही आश गहि तिहारी पुनि कोउ को नहिं समुझतहों ॥ १ ॥ (अभोग) तुमहिं को गहायो हाथ जानिके तुहिं दीनानाथ औरन गहावत हाथ नाथ अब लजत हौं ॥ २ ॥ (भोग) नन्दके दुलारे ललन नेकही निहारो मोतन मोरी बनजाय फिरतौ जैसी मैं चहतहों ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग कुकब चारिताल ॥

उठान समसे ॥

(१३३८) एहो ब्रजईश जक्त जीवनेश गूढ़गुरु कब धहुँ सनाथ मोहिं करिहौ जन चरननको ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ बरस बहु व्यतीत भई भक्ती वर लाहा बिच जानहुँ अब कबधौं अवकास पैहौं दरशनको ॥ १ ॥ (अभोग) एती निठुराई तो न देखीहि न सुनी हौं तो तोरि तो दयालुता प्रसिद्ध अखिल जग जन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को ॥ २ ॥ (भोग) जैसे तुम भोरे प्रणपालहौ गुपाललाल वैसेही निहाल करो पूर्ण प्रण ललन को ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद राग पावस चौताला ॥
उठान समसे ॥

(१३३९) लगन लगाई सो लगाई अघ कर्म्म बीच वृथाही गँवाई बैस सारी तीन पनकी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ शिशु पन शिशुन संग खेलकै बितायो बहुरि जोमी जो जवानी की कमाई विषयनकी ॥ १ ॥ (अभोग) वृद्धापन ममता प्रपंच में बिताय रह्यो अजहूं न त्यागत मूढ़ बानि शठपनकी ॥२॥ (भोग) चेतरे अचेत सुमिरु यशुमति ललन नित चहै जो अराम कुशल अपने जीवनकी ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी धनाश्री चारिताल ॥
उठान समसे ॥

(१३४०) करहु काहे देरदार एती अब श्रीमुरारि दासनको काजह्वै सहाय बेगि सारिये ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ आसरो तिहारोही तिहारोही सहारो प्रभु अबतो निहारो दीन दारिद बि-दारिये ॥ १ ॥ (अभोग) आरत अनाथ केरि बिपता अगाथ नाथ दीजिये निवार कलुष आनँद प्रसारिये ॥ २ ॥ (भोग) चाहे जन भक्ति तोर चरननकी नन्दललन अपनो ललन जान कान्ह करुणा उर धारिये ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद रागिनी अलहिया चौताला ॥
उठान समसे ॥

(१३४१) जाऊं काके द्वारहूं अशक्त जन अपार नाथ सुर नर मुनि सारे आश धारे सरकारकी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ नारद सनकादि शुक तेंतिस कोटि देव वेद बिधना कुबेर वरुण शंभु यहि गुहारकी ॥ १ ॥ (अभोग) जलचरादि थलचरादि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वायू अकाश अवनि जड़ चेतन जीव जगत तुव भरोस कारकी ॥२॥ (भोग) तोसों सहायक सब लायक सरताज पाय बहुरि ललन आश करै कौने दरबारकी ॥ ३ ॥ इति ॥

ध्रुपद पावस रागिनी देशमलार चारिताल ॥

उठान समसे ॥

(१३४२) आयोरी सावन सुहावन दुरावन मोहिं आवन मनभावन कहिगयो सो न आयोरी ॥ अन्तरा उठान समसे ॥ दामन छुड़ावन को दाउँ यही पायो पति मोसन बिन लाग जौन दामन छुड़ायोरी ॥ १ ॥ (अभोग) छोड़ि मुहिं अकेलीही विदेश मन भाई सौत विरह शूल तन तुजाय मैनहूं दहायोरी ॥ २ ॥ (भोग) तरफरात नैन ऐन पिया पेखन को अचैन आली हौं नन्दललन कठिन कंथ पायोरी ॥ ३ ॥ इति ॥

ठुमरी रागिनी भैरवी ॥

उठान समकी खाली से ॥

(१३४३) न मानेगोरी तैं सिख मोर अरी॥ अन्तरा उठान खालीसे॥ डोलत फिरत इतहिं उत गृह गृह कइ तोरी बानि परी ॥ लखिलेगो कहुँ तात जो यह ढँग जियत न छोड़बरी ॥१॥ ह्यांके कुटिल कुचाल लोग सब हैं ज़ुलमी नगरी ॥ वैसेहि निभव न पावत कोऊ तैं बहु रूपभरी ॥ २ ॥ मैं बहु सिखै पढ़ै तुहिं हारी तैं नहिं कानि करी ॥ अब तैं कछु नदान जो न लाजत निचली रहत नरी ॥ ३ ॥ नीक न यह ढँग तोर लाड़िली कहुं जनाय सगरी ॥ अब जो चरन धरो घर बाहर कुशल न तो अलिरी ॥ ४ ॥ बहु विधि सही कुटिलता तोरी किंचित तू न डरी ॥ बिनु दंडे नहिं मानैगी नँदललनसी बानि धरी ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor